जीरो किलोमीटर

द जर्नी नेवर बिगेन...

शेफाली सचिन रसाळी

BlueRoseONE.com
Stories Matter
NewDelhi • London

BLUEROSE PUBLISHERS
India | U.K.

Copyright © Shefali Sachin Rasaili 2026

All rights reserved by author. No part of this publication may be reproduced, stored in a retrieval system or transmitted in any form or by any means, electronic, mechanical, photocopying, recording or otherwise, without the prior permission of the author. Although every precaution has been taken to verify the accuracy of the information contained herein, the publisher assumes no responsibility for any errors or omissions. No liability is assumed for damages that may result from the use of information contained within.

BlueRose Publishers takes no responsibility for any damages, losses, or liabilities that may arise from the use or misuse of the information, products, or services provided in this publication.

For permissions requests or inquiries regarding this publication, please contact:

BLUEROSE PUBLISHERS
www.BlueRoseONE.com
info@bluerosepublishers.com
+91 8882 898 898
+4407342408967

ISBN: 978-93-7542-487-1

Cover Design: Deepak Katheria
Typesetting: Manisha Rawat

First Edition: February 2026

कहानी समर्पित हैं –

उन सभी के लिए
जिन्होंने अपना प्रेम खोया,
और आज भी आगे बढ़ना नहीं सीख पाए।

प्रस्तावना

यह कहानी उन एहसासों से जन्मी है, जिन्हें शब्दों में बाँधना आसान नहीं होता।

ज़ीरो किलोमीटर प्रेम, बिछड़न और उसके बाद बचे हुए खालीपन की कहानी है, जहाँ रास्ते तो आगे बढ़ते हैं, लेकिन दिल कई बार पीछे ठहर जाता है।

यह पुस्तक किसी निष्कर्ष का दावा नहीं करती, बस उन सवालों को छूती है जो किसी अपने से बिछड़ जाने के बाद मन में उठते हैं। आशा है यह कहानी आपके दिल के किसी कोने को छू सके।

अध्याय 1

झीलों का शहर भोपाल,

जहाँ हर लहर अपने साथ न जाने कितनी प्रेम कहानियों की गवाही ले जाती है।

किसी किनारे पर वादे जन्म लेते हैं—साथ निभाने के, उम्र भर साथ चलने के, एक हो जाने के।

कुछ पूरे होते हैं, कुछ अधूरे रह जाते हैं।

ऐसी ही एक अधूरी कहानी है अवनी त्रिपाठी की,

अवनी, जो भोपाल शहर की रहने वाली थी, जिसने अपना बचपन और जवानी इन झीलों की छाँव में गुज़ारी थी। कहानी शुरू होती है शहर के प्रसिद्ध स्कूल संस्कार वैली से।

उस दिन आसमान में काली घटाएँ उमड़ आई थीं। मौसम जाने क्यों उदास-सा लग रहा था।

स्कूल की छुट्टी हो चुकी थी। मगर रूट नं. 9 की बस में अचानक खराबी आने की वजह से आज बच्चों को घर नहीं छोड़ा जा सका। जिन बच्चों को दूसरी बसों में भेजना संभव था, उन्हें भेज दिया गया, लेकिन कुछ बच्चों के लिए स्कूल प्रशासन को उनके माता-पिता को फ़ोन करना पड़ा।

अवनी का चार साल का बेटा आर्यम भी इसी स्कूल में यूकेजी क्लास में पढ़ता था। जब उसे स्कूल से कॉल आया, तो वह तुरंत अपनी कार से उसे लेने पहुँची।

जैसे वो स्कूल के बाहर कार पार्क करके उतरी, अचानक मूसलाधार बारिश शुरू हो गई। वह भागती हुई अन्दर पहुँची और सीधे यूकेजी की क्लास-टीचर नेहा मैडम से मिली।

नेहा मैडम हल्की मुस्कान के साथ बोलीं —

"आई ऍम सॉरी मिसेज श्रेष्ठ, आपको परेशानी उठानी पड़ी।, आज रूट नंबर 9 की बस में कुछ टेक्निकल प्रॉब्लम आ गई हैं इसीलिए कुछ बच्चों और उनके पेरेंट्स को परेशानी उठानी पड़ रही है।"

अवनी ने मुस्कुराकर जवाब दिया —“कोई बात नहीं मैडम ,और आर्यम का ध्यान रखने के लिए थैंक यू”

फिर बेटे की ओर मुड़कर कहा —“चलो बेटा, नेहा मैडम को बाय बोलो”

आर्यम ने कहा — “गुड डे मैडम”

“हेव अ गुड डे आर्यम, सी यू टुमॉरो”, नेहा मैम ने प्यार से कहा।

बाहर निकलते ही आर्यम ने अचानक अवनी का हाथ खींचा — “मम्मा … वो देखिए, अन्विका रो रही है।”

अवनी की नज़र नर्सरी क्लास के बाहर पड़ी। वहाँ एक छोटी-सी बच्ची अपनी टीचर का हाथ पकड़े खड़ी थी और लगातार रोए जा रही थी, उसका नाम था अन्विका सिंह|

अवनी का दिल पिघल गया। वह बिना एक पल गँवाए उसकी ओर बढ़ी और कोमल स्वर में बोली —

“अन्विका? बेटा, क्यों रो रही हो?”

अन्विका तुरंत अपनी क्लास-टीचर का हाथ छुड़ाकर अवनी की गोद में जा सिमटी और ज़ोर से गले लग गई। अवनी हैरान रह गई — “शिखा मैडम, इसे क्या हुआ, ये क्यु रो रही हैं?”

शिखा मैडम ने बताया — "मिसेज श्रेष्ठ, दरअसल इनके पापा को ऑफिस से आने में देर हो गई है। उनका फ़ोन आया था और उन्होंने मुझे बताया कि कार में कुछ प्रॉब्लम आ गई है। वो अभी आने ही वाले हैं, लेकिन ये लगातार पापा पापा पुकारते हुए रोये जा रही हैं।"

दरअसल, हाल ही में अन्विका का परिवार लखनऊ से भोपाल शिफ्ट हुआ था। उसके पिता का यहाँ ट्रान्सफर हुआ था और नर्सरी क्लास में उसका नया एडमिशन कराया गया था।

वो महज़ ढाई साल की नन्ही बच्ची थी। पहले ही दिन जब वो स्कूल आई थी, कुछ बड़े बच्चे उसे परेशान कर रहे थे। तब आर्यम ने आगे बढ़कर उसकी मदद की थी। तभी से दोनों में दोस्ती हो गई थी।

आर्यम, जिसके अपने कोई भाई-बहन नहीं थे, अन्विका को छोटी बहन की तरह चाहने लगा था। और अन्विका भी उसे भाई मानकर उसके साथ खेलती। उसने ही एक दिन अपनी मम्मी मतलब कि अवनी से अन्विका का परिचय कराया था।

जब अवनी ने पहली बार "अन्विका" नाम सुना था, तो उसके दिल में जैसे हल्का-सा कंपन उठ गया था। मगर उसने उस एहसास को महज़ इत्तेफ़ाक समझकर नज़रअंदाज़ कर दिया था।

वक़्त बीता और अवनी भी अन्विका को चाहने लगी। हर बार जब भी अन्विका के पिता स्कूल आते और बेटी को आर्यम के साथ पाते, उनके चेहरे पर संतोष झलकता।

हालाँकि, जब उन्होंने पहली बार बेटे का नाम "आर्यम" सुना था, तो एक पल को चौंके भी थे। मगर अपनी बेटी के प्रति आर्यम का स्नेह देखकर उन्होंने चैन की साँस ली कि इस शहर में कोई है जो उनकी बच्ची का ख्याल रखता है।

उस दिन अन्विका अवनी की गोद में ही सो गई थी। अवनी नर्सरी क्लास में बैठी रही। आर्यम उसके सूट का पल्लू पकड़े पास ही बैठा था। तभी भागता हुआ एक शख़्स कमरे में दाखिल हुआ।

"मिस्टर आरव, आप आ गए… आप काफ़ी लेट हो गए," शिखा मैडम ने राहत की साँस लेते हुए कहा।

अवनी उस वक़्त कुर्सी पर बैठी थी, पीठ दरवाज़े की ओर थी। लेकिन जैसे ही उसने "आऱव" नाम सुना , उसका दिल एक झटके से धड़क उठा। वो धीरे-धीरे पलटी और.... सामने आरव खड़ा था।

उसका चेहरा देखकर अवनी के कदम जैसे ज़मीन से जम गए।

वहीं आरव भी उसे देखकर पल भर के लिए सबकुछ भूल गया।

दोनों की नज़रें मिलीं। आँखों में हैरानी, सवाल और अनकही यादों का समंदर।

शिखा मैम ने औपचारिकता निभाई — "मिस्टर आरव, ये हैं मिसेज अवनी श्रेष्ठ… आर्यम की मदर. आपकी बेटी इनकी गोद में जाकर सो गई और अब मेरे पास भी नहीं आ रही।"

आरव धीरे-धीरे अवनी के पास आया। दिल की धड़कनें तेज़ हो चुकी थीं। उसने अन्विका को गोद में लेने के लिए हाथ बढ़ाया। मगर जैसे ही उसने उसे छूना चाहा, अन्विका ज़ोर-ज़ोर से रो पड़ी और अवनी से कसकर चिपक गई।

आरव ने बार-बार कहा —"अन्वी बेटा, मैं हूँ पापा… आ जाओ, घर चलना है।" मगर बच्ची ने "ना" कहकर और मज़बूती से अवनी को पकड़ लिया।

आख़िरकार शिखा मैम ने हल निकाला — "मिसेज श्रेष्ठ, आप मिस्टर आरव के साथ उनके घर तक चले जाइए। जब ये नार्मल हो जाये तो आप अपने घर लौट जाइएगा। आपकी कार मैं स्कूल ड्राईवर से कहकर इनके घर भिजवा दूँगी।"

अवनी ने बिना विरोध किए हामी भर दी। कुछ देर बाद वे सब आरव की कार में थे। पीछे की सीट पर अवनी, गोद में सोई अन्विका को थामे बैठी थी। बगल में आर्यम उसका पल्लू पकड़े था।

पूरे रास्ते दोनों के बीच कोई शब्द नहीं निकला। बस कभी-कभार आरव रियर-व्यू मिरर से अवनी का चेहरा देख लेता। वो अब भी उतनी ही मासूम और ख़ूबसूरत थी जैसे पहले थी।

घर पहुँचकर आरव ने कार का दरवाज़ा खोला। अवनी ने अन्विका को संभालते हुए अंदर क़दम रखा।

वो हल्के डर और झिझक के साथ बेडरूम में पहुँची और बच्ची को बिस्तर पर लिटा दिया। अन्विका अचानक बिचक गई और नींद में ही "मम्मा" कहकर अवनी का हाथ पकड़ लिया।

यह देखकर आरव हैरान रह गया। अवनी ने स्थिति संभाली और उसके बाल सहलाते हुए धीमे स्वर में लोरी गुनगुनाई। अन्विका चैन से सो गई। अवनी उठी और धीरे से झिझक के साथ बोली —"वो सो गई है… अब हमें जाना चाहिए।"

आरव कुछ नही बोला। बस उसकी आँखों में देखा और ख़ामोश रह गया। तभी अन्विका की दादी कमरे में आईं। "अरे बेटा, इतनी देर कैसे हो गयी आज?"

वो आगे कुछ कह पातीं, उससे पहले उनकी नज़र अवनी पर पड़ी - "जी….., आप……. कौन?"

आरव ने उन्हें पूरे घटनाक्रम के बारे में बताया। अवनी ने झुककर नमस्ते किया। दादी ने भावुक होकर कहा — "अरे बेटा आप रुको ना, चाय-नाश्ता करके जाना,

आपको बेवजह तकलीफ उठानी पड़ी, मेरी पोती के लिए आपने इतना किया, आजकल कौन करता है किसी के लिए इतना?”

अवनी हल्की मुस्कान लाई और बोली — “जी आंटी थैंक यू, लेकिन अब मुझे जाना चाहिए। आर्यम के पापा हमारा इंतज़ार कर रहे होंगे।”

अन्विका की दादी अचानक ठिठकीं और बोलीं — “कोई बात नहीं बेटा, फिर जरुर आना, कम से कम आप इतनी देर रुकी, वही बहोत हैं, वैसे भी ये मेरी पोती, ये तो बिन माँ की बच्ची है, प्यार की भूखी।"

अवनी ने हैरानी से पूछा —“बिन माँ की मतलब…? इनकी मम्मी अब इस दुनिया में नहीं…?”

दादी की आँखें भर आईं — “जिंदा तो है… मगर हमारे लिए मर चुकी है। अन्विका के जन्म के कुछ ही महीने बाद वो इस मासूम को छोड़कर किसी और के साथ भाग गई, मेरे बेटे को और इस बच्ची को अकेला छोड़कर। बड़ी पत्थरदिल औरत थी।”

अवनी ने एक क्षण के लिए आरव की ओर देखा। वो अन्विका के पास बैठा, उसके बाल सहला रहा था।

दादी की आँखों से आँसू बह निकले - “ना जाने कैसी बेदर्द माँ थी… मेरे बेटे की ज़िंदगी तबाह कर दी और इस बच्ची को माँ के साये से महरूम कर दिया।”

अवनी ने उन्हें सँभाला और सान्तवना देते हुए कहा — “मत रोइए आंटी, सब ठीक हो जाएगा।”

फिर धीरे से बोली —“अब मुझे चलना होगा।”

दादी ने कृतज्ञता से एक बार और कहा —“फिर जरुर आना बेटा, आपसे मिलकर अच्छा लगा।”

अवनी ने सिर झुकाकर “जी आंटी” कहकर नमस्ते किया| उसने एक अंतिम नज़र अन्विका और फिर आरव पर डाली, और बाहर निकल गई।

आरव खिड़की में खड़ा रहा, जब तक अवनी उसकी आँखों से ओझल नहीं हो गई|

जब अवनी और आर्यम घर पहुँचे, तब तक युग घर लौट चुका था। ड्राइंगरूम में बैठे-बैठे उसने दरवाज़े पर दस्तक की आहट सुनी और मुस्कुराते हुए बोला, - "अरे! आज इतने लेट कैसे हो गए तुम दोनों?"

अवनी ने अपने बैग को एक ओर रखते हुए, थके से स्वर में पूरे दिन का हाल सुनाया—स्कूल में बस की खराबी, आर्यम को लेने पहुँचना, और फिर छोटी अन्विका को गोद में लेकर उसके घर तक छोड़ने की बात।

युग ध्यान से सुनता रहा। अन्विका का ज़िक्र आते ही उसकी आँखें पिघल-सी गईं - "बेचारी बच्ची… अभी तो कितनी छोटी है वो। और तुम...," उसने अवनी की तरफ़ देख कर कहा, "तुममें अपनी माँ का अक्स देखती होगी। वैसे भी, तुम हो ही इतनी प्यारी कि कोई तुमसे मोहब्बत किए बिना रह नहीं सकता।"

अवनी बस एक हल्की-सी मुस्कान दे पाई। युग ने बात वहीं ख़त्म की और आर्यम को अपनी गोद में लेकर खेलने लगा। कमरा आर्यम की खिलखिलाहट से गूंज उठा।

इसी बीच अवनी की सास कमरे में आईं, माथे पर हाथ रखते हुए बोलीं— "अरे, अब तो चाय दे दो, आज तो चाय भी नहीं पी । मेरा तो सिर दर्द से फटा जा रहा है।"

अवनी ने तुरंत जवाब दिया - "जी मम्मी" और रसोई की ओर बढ़ गई।

उसकी सास का व्यवहार हमेशा ऐसा ही रहा था। युग ने परिवार के ख़िलाफ़ जाकर अवनी से शादी की थी, और काफी समय बाद ही उन्होंने अवनी को स्वीकारा था। जब तक युग के पिता थे, घर में एक संतुलन बना रहता था, पर उनके जाने के बाद उसकी सास के स्वभाव में बदलाव आ गया।

हालाँकि वे हमेशा कठोर नहीं थीं—कभी-कभी अवनी को कपड़े या गहने भी भेंट करतीं, बीमार होने पर ख्याल भी रखतीं। लेकिन उनकी आदत थी, गलती पर तुरंत टोका-टोकी करना, वह भी सबके सामने।

युग जब भी विरोध करता, अवनी उसे रोक देती, - "मम्मी की उम्र हो गई है, और पापा नहीं रहे इसीलिए वो ऐसी हो गई हैं।" और हमेशा मुस्कुराकर टाल देती।

अवनी एक बहुमुखी व्यक्तित्व वाली महिला थी। घर का काम, ऑफिस का काम, अपने उपन्यास की लेखनी, हर चीज़ को वह कुशलता से संभालती थी। रात को जब सब काम निपटा कर वह अपने कमरे में आई, आर्यम सो चुका था और युग

लैपटॉप पर कुछ ज़रूरी काम में उलझा था। अवनी चुपचाप बालकनी के पास जाकर खड़ी हो गई। बारिश की बूंदें अब भी हल्के-हल्के टपक रही थीं। आज अचानक आरव से आमना-सामना होने से उसका मन विचलित था।

आरव...... उसके अतीत का वह हिस्सा, जिससे बिछड़े हुए पाँच साल हो चुके थे। लेकिन पाँच साल बाद इस तरह सामने देखकर, मानो अतीत की सारी तस्वीरें उसके सामने जीवित हो उठी हों।

और अन्विका….. वह मासूम बच्ची। उसकी माँ ने आखिर उसे और आरव को क्यों छोड़ दिया होगा?

विचारों की लहरों में डूबती-उतरती वह खड़ी थी कि पीछे से युग ने आकर उसके कंधों पर दोनों हाथ रख दिए - “क्या बात है, अवनी? कहाँ खोई हो? उस बच्ची के बारे में सोच रही हो, ना?”

अवनी ने एक गहरी साँस ली और युग के सीने पर सिर रख दिया - “हूँ… लेकिन आप मेरे दिल की हर बात कैसे समझ लेते हैं?”

युग ने उसके सिर पर प्यार से हाथ फेरा - “बस समझ जाता हूँ। अब ज़्यादा मत सोचो। चलो, सो जाओ। वैसे भी थक गई होगी।”

अवनी ने आँखें बंद कीं। कभी-कभी युग का यह साथ उसे भीतर तक सुकून दे जाता था। दोनों सोने चले गए।

उधर आरव,

रात का खाना खत्म कर उसने अन्विका को सुलाया। फिर एक बीयर की एक कैन लेकर खिड़की के पास कुर्सी पर जाकर बैठ गया। बाहर हल्की-हल्की बारिश हो रही थी। हर बूंद उसके दिल में कोई पुराना जख्म उभार रही थी।

तभी बाजु वाले फ्लैट की बालकनी में खड़े शख्स के मोबाइल पर अचानक एक गीत बज उठा —

"चंद लम्हात के वास्ते ही सही, मुस्कुराकर मिली थी मुझे ज़िंदगी।

तेरी आगोश में दिन थे मेरे कटे, तेरी बाँहों में थी मेरी रातें कटी…"

ये चार पंक्तियाँ ही आरव के दर्द के तार छेड़ने के लिए काफ़ी थीं, इसे सुनकर उसकी आँखें भीग गईं।

“कमी क्या रह गई थी मेरे प्यार में अवनी…? जो तुम मुझे छोड़कर चली गईं, तुम्हारे बाद किसी को अपना भी ना पाया मैंने, और इसकी सज़ा… मेरी मासूम बेटी भुगत रही है।”

सोचते-सोचते उसका गुस्सा बढ़ता जा रहा था। तभी अन्विका नींद में बुदबुदाई— “मम्मा…”

आरव झट से उठा, उसके पास गया, उसके बालों को सहलाने लगा। धीरे-धीरे वही लोरी गुनगुनाने लगा, जो आज अवनी ने सुनाई थी। लोरी सुनते-सुनते अन्विका फिर नींद में खो गई। आरव ने उसके माथे को चूमा और उसके पास ही लेट गया। बाहर बारिश रुक चुकी थी, पर आरव के भीतर का तूफ़ान अब भी थमा नहीं था |

अध्याय 2

आर्यम और अन्विका के बीच की दोस्ती अब गहराती जा रही थी। दोनों की हंसी, उनकी मासूम शरारतें मानो बचपन के आँगन को फिर से महका रही थीं। एक दिन स्कूल में कुछ ऐसा हुआ जिसने सबको चौंका दिया।

दोपहर की छुट्टी के बाद जब बच्चे अपनी-अपनी बसों में चढ़ने लगे, अन्विका ने अचानक ज़िद पकड़ ली।

"मैं आर्यम भैया के साथ ही जाऊंगी! उन्हीं के घर! अवनी आंटी के पास"

स्कूल का पूरा स्टाफ परेशान हो गया, उसकी टीचर दिशा ने उसे बहुत समझाया, पर अन्विका का मन मानने को तैयार ही नहीं था। वो जिद्दी थी, आख़िरकार मजबूरन दिशा को अन्विका के पिता को कॉल करना पड़ा।

फ़ोन उठाते ही दिशा मैडम ने स्थिति बताई। आरव ने फ़ोन पर अन्विका को समझाने की कोशिश की—

"पापा की जान, तुम अपने घर जाओ बेटा, दादी तुम्हारी रास्ता देख रही होगी, जिद नहीं करते बच्चे"

पर अन्विका ने रूठते हुए कहा - "नहीं! मैं भैया के घर ही जाऊंगी! मुझे अवनी आंटी के पास जाना हैं| "

उसी वक़्त आर्यम ने फ़ोन लेकर मासूमियत से कहा— "अंकल, आप परेशान मत होइए, मैं अपनी बहन का पूरा ध्यान रखूंगा।"

उस नन्हें बच्चे की इतनी गंभीरता भरी बात सुनकर आरव मुस्कुराए बिना नहीं रह सका। दिल में कहीं हल्की-सी राहत भी महसूस हुई - "ठीक है बेटा, ध्यान रखना उसका। मैं रात को लेने आ जाऊंगा।", इतना कहकर आरव ने दिशा मैडम के साथ कुछ औपचारिक बातें करके उन्हें अन्विका को आर्यम के घर भेजने की अनुमति दे दी |

जब अवनी बस स्टॉप पर आर्यम को लेने पहुँची, उसने देखा कि उसके साथ अन्विका भी बस से उतर रही हैं, वो हैरान हो गयी|

"बेटा, तुम यहाँ क्या कर रही हो? तुम्हारे पापा-दादी कितने परेशान होंगे! तुम्हें अपने घर जाना चाहिए था।"

आर्यम ने तुरंत जवाब दिया— "मम्मी, ये मान ही नहीं रही थी। दिशा मैडम ने इनके पापा को फोन किया था। वो मन गए | वो रात को इसे लेने आएंगे।"

ये बात सुनकर अवनी थोड़ी विचलित तो हुई, लेकिन फिर बच्चों की बात पर अवनी ने स्कूल में कॉल कर पुष्टि की। सब सही जानकर उसने अन्विका को गोद में उठाया, दूसरे हाथ से आर्यम का हाथ थामा और घर की ओर बढ़ गई।

घर पहुँचे तो उसकी सास ने चौंककर पूछा— "अरे, ये किसका बच्चा ले आई तुम?"

अवनी ने अन्विका का परिचय और पूरा किस्सा बताया। सास को बच्चों से बहुत लगाव था। उन्होंने भी अन्विका को खूब दुलार किया। अवनी ने दोनों के कपड़े बदले, अन्विका को आर्यम के कपड़े पहना दिए। फिर उन्हें लंच कराकर सुला दिया।

अन्विका अवनी की गोद में ही सो गई थी। अवनी उसकी मासूम सूरत को निहारती रही - "हे भगवान, कितनी छोटी बच्ची है ये… बस डेढ़ साल का ही तो फर्क है आर्यम और इसमें। आर्यम पलभर के लिए आँखों से ओझल हो जाए तो मेरा दिल घबराने लगता है, फिर इस बच्ची की माँ ने कैसे पत्थर रख लिया दिल पर? क्या उसे कभी इसकी याद नहीं आती होगी? छोड़ने से पहले एक बार भी उसका दिल नहीं पिघला होगा?"

सोचते-सोचते कब अवनी की पलकों पर नमी उतर आई, उसे खुद पता नहीं चला। शाम को उसने चाय के साथ कुछ स्नैक्स भी तैयार कर लिए। दोनों बच्चों को परोसे। अन्विका चाव से खा रही थी।

तभी युग घर लौटा और अन्विका को देखकर ठिठक गया - "आर्यम, ये कौन है बेटा?"

अवनी रसोई से चाय लाते हुए बोली— "युग, यही है अन्विका। ज़िद करके यहाँ आ गई।"

युग ने चिंतित स्वर में पूछा— "लेकिन इसके पापा को तो पता है ना? वो लोग परेशान हो रहे होंगे।"

अवनी ने सहजता से कहा— "हाँ, दिशा मैडम ने इनके पापा को बता दिया था। रात को लेने आएंगे।"

तभी उसकी सास ने हंसते हुए कहा— "बहुत प्यारी बच्ची है युग ये! इतना बकबक करती है… और अवनी को तो छोड़ती ही नहीं।"

युग ने मज़ाक में कहा— "क्या बात है अवनी, ये तो तुम्हारी इतनी बड़ी फैन हो गई कि तुम्हारे पीछे घर तक आ पहुंची! देखना, कहीं ये तुम्हें हमसे छीन न ले!"

अवनी को उसकी बात चुभ गई। उसने गंभीर स्वर में कहा— "कैसी बातें करते हैं युग आप? बच्ची है वो। और मैं आप लोगों को छोड़कर कहाँ जाऊंगी?"

युग हंसते हुए बोला— "अरे, मज़ाक कर रहा था। चलो, कोई नहीं। तुम डिनर तैयार करो। इसके पापा-दादी भी यहीं से खाकर जाएंगे। देखे जरा, कौन हैं इसके पापा?"

युग की बात सुनते ही अवनी के दिल की धड़कन तेज हो गई। रात ढल रही थी, और किसी भी पल आरव उसके सामने होगा। एक अजीब बेचैनी ने उसे घेर लिया। उसने खुद को संभालने की कोशिश की और रसोई में चली गई। अनजाने ही उसने वो सब पकवान बनाए, जो कभी आरव को बेहद पसंद थे।

कुछ देर बाद डोरबेल बजी। अवनी के हाथ कांप उठे - "आ गये वो लोग, मुझे नार्मल रहना होगा, पता नहीं कैसे सामना कर पाऊँगी मैं आरव के सवालिया नजरो का?|"

युग ने दरवाजा खोला। सामने आरव और उसकी माँ खड़े थे। युग ने मुस्कुराते हुए उनका स्वागत किया— "आप जरूर अन्विका के पापा हैं और आप दादी?"

आरव ने सिर हिलाया। युग ने झुककर उनके हाथ जोड़े और उन्हें अंदर बुलाया। अपनी माँ से आरव की माँ का परिचय कराया। महिलाएँ आपस में बच्चों की बातें करने लगीं। आरव चुपचाप सोफे पर बैठ गया। युग उसके पास आकर बैठा और बातचीत शुरू की।

"आरव, नाम है न आपका?"

"जी, आरव सिंह।"

"हैलो मिस्टर आरव, मैं युग श्रेष्ठ।"

दोनों ने औपचारिक हाथ मिलाया।

"क्या करते हैं आप?" युग ने पूछा।

"मैं एक फाइनेंस कंपनी में रिलेशनशिप मैनेजर था। पहले लखनऊ में था, हाल ही में भोपाल ट्रांसफर हुआ है... प्रमोशन के साथ। अब डिप्टी मैनेजर हूं।"

"वाह! बढ़िया है। भोपाल अच्छा शहर है, आपको पसंद आएगा।" युग ने कहा।

आरव ने बस एक फीकी मुस्कान दी - "आप?"

"मैं सॉफ्टवेयर डेवलपर हूं, यही एक एमएनसी में।"

तभी अवनी आई। उसने आरव की माँ के पैर छुए।

सास ने तुरंत टोका—"अवनी, खाना तो लगा दो सबको। पहली बार आए हैं हमारे घर। अब तो अन्विका के कारण हममें एक रिश्ता बन गया है। अब तो आना-जाना लगा ही रहेगा।"

ना चाहते हुए भी अवनी की नज़र आरव से टकरा गई। आरव ने पलभर उसकी आंखों में देखा, फिर नजरे फेर ली। डिनर टेबल सज गया। आरव की माँ ने खाने की ओर देखा और बोलीं— "वाह! ये सब तो मेरे बेटे की पसंद का बना है! क्या बात है अवनी, आपको मेरे बेटे की पसंद कैसे पता चल गई?"

अवनी झेंप गई - "नहीं आंटी, ऐसा कुछ नहीं। मैंने तो बस यूं ही बना दिया। युग को भी पसंद है ये सब।"

आरव ने बिना कुछ कहे पहला निवाला खाया। पुराना स्वाद जीभ पर घुलते ही यादें उमड़ आईं। आंखों में नमी छलकने लगी, पर उसने उसे छिपा लिया।

कुछ देर बाद उसकी सास बोलीं— "खाना तो ठीक है, लेकिन अवनी, तुमने कुछ मीठा क्यों नहीं बनाया? क्या अब तुम्हें ये भी सिखाना पड़ेगा कि घर आए मेहमानों को मीठा भी परोसा जाता है?"

युग कुछ कहने ही वाला था कि अवनी ने बीच में ही रोक दिया— "नहीं मम्मी, बनाया है। फ्रूट कस्टर्ड । फ्रिज में रखा हैं, लाती हूं।"

आंखें नम थीं। उसने खुद को संभाला और फ्रिज की ओर चली गई।

पीछे से उसकी सास फिर बोलीं— "ये आजकल की लड़कियां भी न... हम ना बताएं तो इनको समझ ही नहीं आता कब क्या करना है।"

ये सुनकर आरव को बहुत बुरा लगा। पर वो चुप रहा।

आरव की माँ ने तुरंत कहा— "अरे, ऐसा क्यों कह रही हैं आप? भूल गई होगी वो। लेकिन जो भी है, बहुत प्यारी बहू है आपकी। हर किसी के नसीब में कहां होती है ऐसी बहू?"

इतना कहते-कहते उनकी आंखें भर आईं। उधर अवनी कस्टर्ड लेकर आई और सबको परोसने लगी। सबसे पहले बच्चों को दिया। अन्विका ने खुशी से ताली बजाई और खाने लगी।

जब अवनी ने आरव को कस्टर्ड परोसा, उसके हाथ अनजाने में आरव के हाथों से छू गए। एक अजीब-सी सिहरन दोनों के शरीर में दौड़ गई। घबराहट में अवनी के हाथ से सर्विंग स्पून छूटकर आरव पर गिर गया।

"अरे, क्या करती हो अवनी? देखो, इनके कपड़े खराब हो गए!" उसकी सास ने कहा।

"सो सॉरी… मैं…" अवनी बुदबुदाई।

आरव ने शांत स्वर में कहा— "कोई बात नहीं, मिसेज श्रेष्ठ। मैं धो लूंगा। मिस्टर श्रेष्ठ आप मुझे वॉशरूम दिखा दीजिए|

युग ने उसे वॉशरूम दिखाया।

लेकिन आरव के मुंह से मिसेज श्रेष्ठ सुनते ही अवनी को बुरा लगा ।

"क्या ये वही आरव हैं, जिसे मैं जानती थी? इसने मुझे एक झटके में पराया कर दिया, और करे भी क्यों न? मैं अब उसकी क्या लगती हूं? ना उसका मुझ पर कोई हक़ है… ना मेरा उस पर…"

उसकी आंखें भर आईं।

कुछ देर बाद सबने विदा ली। आरव ने जाते-जाते बस एक नज़र अवनी पर डाली। अवनी का दिल जोर से धड़क उठा, पर उसने नजरें झुका लीं—मानो कोई अपराधिनी हो।

दरवाजा बंद होते ही घर में फिर से बातें शुरू हो गईं—अन्विका, आर्यम, नए रिश्ते…

लेकिन अवनी, वो वहाँ होकर भी वहाँ नहीं थी। वह तो खो चुकी थी अपने अतीत की स्मृतियों में, जो बार-बार उसके वर्तमान पर दस्तक दे रही थीं।

घर लौटते समय कार में, आरव की माँ के मन में बार-बार वही दृश्य घूम रहा था – अवनी का वो मासूम चेहरा , और उसकी सास के ताने।

वो गहरी साँस लेकर बोलीं – "कुछ औरतें भी कैसी होती हैं ना, चाहे उन्हें जन्नत भी मिल जाए, तब भी संतुष्ट नहीं होतीं। अवनी की सास को ही देख लो, कितनी प्यारी बहू मिली है उन्हें, पढ़ी-लिखी, नौकरी करती है, पूरा घर संभालती है, फिर भी सबके सामने उसे ताने दे रही थी। जो भी कहना था, उसे अकेले में कह सकती थीं, बाद में कह लेतीं, लेकिन सबके सामने? उस बेचारी को कितना बुरा लगा होगा, फिर भी उसने एक शब्द नहीं कहा, मुस्कुराती रही, सब सँभालती रही। सब कुछ होते हुए भी शिकायत करना, आदत होती है कुछ लोगों की। उनसे पूछो जिनके पास कुछ नहीं होता..."

उनकी आवाज़ धीमी होते-होते काँप गई – "काश... अवनी जैसी मेरी बहू होती... पलकों पर बिठाकर रखती उसे| "

इतना कहते ही उनकी आँखें भर आईं। आरव ने चुपचाप उनका हाथ दबाया और बोला – "मत रो माँ... बस रहने दो।"

पीछे की सीट पर, छोटी-सी अन्विका गहरी नींद में सो चुकी थी।

कुछ देर बाद माँ फिर बोलीं – "वैसे, कितना टेस्टी खाना बनाया था उस प्यारी बच्ची ने... और फ्रूट कस्टर्ड तो बेहद लाजवाब था।"

आरव ने हल्की-सी फीकी मुस्कान दी – "हम्म...रहा होगा, माँ। मैं तो नहीं खा पाया।"

माँ के होंठों पर एक मीठी मुस्कान तैर गई – "और शायद इसी गिल्ट से उस बच्ची ने मुझे एक टिफिन थमाया है...फ्रूट कस्टर्ड का। बोली – 'मेरे कारण अन्विका के पापा कस्टर्ड नहीं खा पाए... ये उनके और अन्विका के लिए है।' अन्वी को बहुत पसंद आया ना, फ्रूट कस्टर्ड..."

आरव ने कुछ नहीं कहा। उसे ताज्जुब नहीं हुआ... अवनी को वो बहुत अच्छी तरह जानता था। हाँ, वो टिफिन जरूर देगी – यही तो उसकी आदत थी। लेकिन मन में कहीं गहराई में एक सवाल उठ ही गया – "गिल्ट सिर्फ कस्टर्ड गिराने का था... या मुझे छोड़कर जाने का ?"

गाड़ी घर पहुँची। अन्विका को गोद में उठाकर आरव ने सुलाया और थोड़ी देर बाद सीधा रसोई में चला गया। बीयर कैन निकालने ही वाला था कि नज़र उस टिफिन पर पड़ी –जो अवनी ने भेजा था।

वो एक पल को ठिठक गया। फिर धीरे से टिफिन निकाला। एक चम्मच भरकर स्वाद लिया। स्वाद... आज भी वही था, ठंडा, मीठा... और अतीत की कसक से भरा हुआ।

आरव की आँखें भीग गईं। उसने बिना कुछ कहे टिफिन वापस बंद किया और फ्रिज में रख दिया।

फिर बीयर कैन लेकर खिड़की के पास आकर बैठ गया। बाहर अंधेरा था, और भीतर उसकी स्मृतियों का तूफ़ान।

घूँट भरते हुए उसके मन में वही सवाल गूंज रहा था – "क्यों आई थीं तुम…? क्यों उसी कॉलेज में आईं जहाँ मैं था…?आना ही था तो मेरे वहाँ से जाने के बाद आतीं…मेरे आख़िरी साल में ही क्यों आईं तुम वहाँ…?

और आईं तो आईं… मेरे कमरे से होती हुई, मेरे जीवन तक क्यों आईं…? जब जाना ही था मुझे छोड़कर…"

उसने आँखें बंद कर लीं।

और खो गया... उन यादों में, जब उसने पहली बार अवनी को देखा था।

अध्याय 3

भोपाल का शिवाय इंस्टिट्यूट ऑफ़ मैनेजमेंट एंड टेक्नोलॉजी, यहीं से आरव का बीबीए का अंतिम वर्ष चल रहा था। आरव लखनऊ का रहने वाला था। पिता कपड़ों के व्यापारी थे, माँ गृहिणी, एक छोटा भाई अभय और एक बहन थी पलकी। आरव का बचपन लखनऊ में ही बीता, और बचपन से ही गुस्सा उसके स्वभाव पर हावी था। छोटी-सी बात पर लड़ाई-झगड़ा करना उसके लिए आम बात हो चुकी थी।

आठवीं कक्षा में तो उसने एक लड़के को इतना पीटा कि उसकी नाक ही तोड़ दी। वजह? उस लड़के ने उसकी पड़ोस में रहने वाली लड़की को, जिसे आरव बहन मानता था, प्रेम पत्र दे दिया था। ये बात आरव को बिल्कुल बर्दाश्त नहीं हुई। मामला इतना बढ़ा कि स्कूल प्रशासन और उस लड़के के माता-पिता ने आरव के माता-पिता पर दबाव डाला कि उसे सुधार गृह भेजा जाए। पिता चिंतित थे। उन्होंने भोपाल में रहने वाली अपनी बहन से बात की – आरव की बड़ी बुआ, जो एक अनुशासनप्रिय और समझदार महिला थीं। वह भोपाल के एक स्कूल में अध्यापिका थीं। उन्होंने आरव को अपने पास बुला लिया। नौवीं कक्षा से आरव उनका साथ रहने लगा।

यहाँ उसने धीरे-धीरे अपने गुस्से पर काबू पाना सीखा। कई दोस्त बने। बारहवीं के बाद आरव ने बिज़नेस एडमिनिस्ट्रेशन में आगे पढ़ाई करने का निश्चय किया। उसके कुछ खास दोस्तों ने शिवाय इंस्टिट्यूट में एडमिशन लिया था, इसीलिए उसने भी यही चुन लिया। कॉलेज उसके बुआ के घर से दूर था, इसलिए वह अपने दोस्तों के साथ कॉलेज के पास एक फ्लैट किराए पर लेकर रहने लगा।

उसके सबसे करीबी दोस्त थे – अनिल, संजय और राहुल। अनिल पढ़ाई में बहुत तेज था, हमेशा टॉप करता था, लेकिन उसमें एक आदत बेहद खराब थी – नई-नई लड़कियों को पटाने का शौक। उसका मासूम सा चेहरा लड़कियों को जल्दी आकर्षित कर लेता। कुछ दिन साथ घूमता, समय बिताता, फिर अचानक कोई न कोई बहाना बनाकर रिश्ता खत्म कर देता और नई तलाश में निकल पड़ता।

आरव को उसकी यह आदत बिल्कुल पसंद नहीं थी। कभी-कभी आरव उससे पूछता – "क्यों करता है ये सब? क्या मिलता है तुझे इससे? ऐसे किसी के जज़्बातों से खेलना अच्छी बात नहीं है।"

अनिल हँसकर कहता – "अरे यार, आजकल की लड़कियों में कहाँ प्यार-मोहब्बत बची है? इन्हें तो बस पैसे वाला, हैंडसम लड़का चाहिए, जो बाइक पर घुमाए, महंगे होटल में खिलाए, गिफ्ट्स दे। हमें भी क्या चाहिए? थोड़ा बहुत प्यार, एक-दो बार का साथ, रंगीन रात..... बस। न शादी की बंदिश, न कोई वादा। सब खुश।"

राहुल सिर हिलाता –"किसी दिन बुरी तरह फँसेगा तू। देख लेना।"

आरव बस हँस देता।

पढ़ाई के अलावा आरव को थिएटर का भी शौक था। लंबा कद, हैंडसम चेहरा, नियमित जिम करने वाला फिट शरीर – वह स्टेज पर अपने अभिनय से सबका ध्यान खींच लेता। भारत भवन, शाहिद भवन, रविंद्र भवन जैसे मंचों पर वह कई नाटकों का हिस्सा बन चुका था।

राहुल दुसरे कॉलेज में था, लेकिन वो आरव की बुआ के घर के पास ही रहता था और आरव के साथ ही फ्लैट पर आया था, वो बी.कॉम का स्टूडेंट था और किताबों का दीवाना था – उपन्यास पढ़ने का शौकीन। किचन की ज़िम्मेदारी ज़्यादातर आरव, संजय और राहुल पर रहती, अनिल किसी ना किसी बहाने से काम से बच निकलता।

अगस्त का महीना था। सेकंड इयर का परीक्षा परिणाम आ चुका था और थर्ड इयर की क्लासेज शुरू हो गई थीं। कुछ नए चेहरे कॉलेज में अपनी उड़ान भरने आए थे। कुछ नए विषयों के लिए कॉलेज में नई फैकल्टी भी आई थी। उन्हीं में से एक नाम था –**अवनी त्रिपाठी।**

अवनी ने हाल ही में इंदौर के प्रेस्टिज कॉलेज से एमबीए पूरा किया था। पढ़ाई में हमेशा अव्वल रहने के कारण उसे यहाँ असिस्टेंट प्रोफेसर के रूप में पढ़ाने का मौका मिला। अवनी सिर्फ पढ़ाई में ही नहीं, शास्त्रीय गायन और नृत्य में भी निपुण थी। कॉलेज ने उसकी इस बहुमुखी प्रतिभा को देखते हुए बिना अनुभव के भी उसे चुन लिया था।

उस दिन बीबीए थर्ड इयर के स्टूडेंट्स मल्होत्रा सर का लेक्चर खत्म होने के बाद खाली पीरियड में बातें कर रहे थे। तभी गुप्ता सर एक नई लड़की को लेकर क्लास में आए। सभी स्टूडेंट्स ने खड़े होकर उन्हें "गुड मोर्निंग" विश किया। सभी की नज़रें उस लड़की पर थीं।

गेरुआ रंग, दुबली-पतली काया, तीखे नयन-नक्श, गहरी काली बड़ी-बड़ी आँखें, कमर तक झूलते घुँघराले बाल। उम्र भी उनकी ही बराबर लग रही थी – बस एक – दो साल का अंतर रहा होगा। कई लड़कों ने सोचा – **नया एडमिशन है शायद।**

अनिल ने तो तुरंत आरव को कुहनी मारी – "मेरा नया क्रश! अब साल-दो साल मज़े में कटेंगे।"

आरव ने कोई प्रतिक्रिया नहीं दी। उसका ध्यान सिर्फ उस लड़की की आँखों पर था – **वो मासूम आँखें जिनमें एक अजीब सा डर और उलझन छिपी थी।**

गुप्ता सर ने परिचय दिया – "स्टूडेंट्स, ये हैं आपकी नई मैनेजमेंट फैकल्टी – मिसेज अवनी त्रिपाठी।"

अवनी ने हल्की झिझक के साथ बोलना शुरू किया – "गुड मोर्निंग स्टूडेंट्स मेरा नाम अवनी त्रिपाठी हैं। मैंने हाल ही में इंदौर के प्रेस्टिज कॉलेज से एम.बी.ए. पूरा किया है। आई होप, आपको मेरा पढ़ाने का तरीका पसंद आएगा।", उसकी आवाज़ में घबराहट के साथ-साथ मिठास भी थी।

स्टूडेंट्स ने तालियों से उसका स्वागत किया।

अनिल ने धीरे से आरव के कान में कहा – "अरे यार… ये तो टीचर निकली। सारे अरमानों पर पानी फिर गया। इसे देखकर तो सपने में ओयो का कमरा नंबर तक बुक कर चुका था।"

अनिल के एक दोस्त आशीष ने हँसते हुए टोका – "टीचर ही नहीं, शादीशुदा भी है। देखो ज़रा, गले में मंगलसूत्र है।"

अनिल ने गौर से देखा, उसका चेहरा उतर गया और धीरे से गुनगुनाने लगा –

"छन से जो टूटे कोई सपना…"

आरव हल्का सा मुस्कराया।

लेक्चर शुरू हुआ। लेकिन आरव की नज़रें एक पल के लिए भी अवनी से हट नहीं रहीं। उसने देखा , अवनी की गर्दन पर गहरे नीले निशान थे। अनिल को इशारा किया तो वो धीरे से फुसफुसाया –

“नई-नई शादी होगी … पति की मोहब्बत के निशान होंगे।”

आरव चुप रहा, लेकिन आशीष ने धीमे स्वर में कहा – “नहीं… ये प्यार व्यार के निशान नहीं, कुछ और हैं।”

आरव के मन में एक टीस सी उठी। उसने खुद को संभाला और पढ़ाई पर ध्यान दिया।

शाम को जब वह फ्लैट पहुँचा तो अनजाने में ही उसके ज़ेहन में अवनी का चेहरा घूम रहा था। उसके साथ ऐसा पहले कभी नहीं हुआ था। उसने उस विचार को झटकने की कोशिश की और थिएटर के लिए निकल गया।

उसे क्या पता था कि यही मुलाक़ात उसके जीवन की सबसे गहरी कहानी लिखने वाली है।

आजकल कॉलेज का माहौल बदला हुआ था। अब तक जहाँ हर लेक्चर में स्टूडेंट्स को बस कड़े और रुखे प्रोफेसरों का सामना करना पड़ता था, वहीं जब से अवनी ने पढ़ाना शुरू किया था, सब कुछ बदल गया था। उसकी आवाज़ में एक ऐसी मिठास थी जो सीधे दिल तक उतर जाती थी। न कोई बनावटी कठोरता, न कोई झिड़क। वह उम्र में भले उनसे एक - दो साल बड़ी थी, मगर उसकी मिलनसार स्वभाव और सहज हंसी ने उसे उनके लिए "टीचर" कम, "दोस्त सी” ज़्यादा बना दिया था।

क्लास में सब स्टूडेंट्स उसकी क्लास अटेंड करने में उत्सुक रहते। अनिल, जो क्लास का टॉपर था, जान-बूझकर उसके सामने और ज़्यादा पढ़ाकू बनने की एक्टिंग करता। वैसे तो पढ़ाई में तेज़ था, मगर अवनी के सामने वह बार-बार फालतू सवाल पूछता, नोट्स का बहाना बनाता, ताकि उसके पास जा सके। अवनी, अपनी मासूमियत में, उसकी इस हरकत को सच मानती और धैर्य से हर सवाल का जवाब देती। लेकिन जब वह ऐसे बहाने बनाकर उसके सामने खड़ा होता और चोरी-छिपे उसे घूरता, तो आरव के मन में कुछ बेचैनी सी उठती।

कई बार उसने अनिल को समझाने की कोशिश की—"वो तेरी अब तक की गर्लफ्रेंड्स जैसी नहीं है। संभल जा | वो शादीशुदा है, टीचर है। इस गन्दी सोच को निकाल दे अपने दिमाग से।"

मगर अनिल कहाँ मानने वाला था। वह हँसकर कहता— "देख लेना, इसे भी बिस्तर तक लाकर रहूँगा।"

ये सुनते ही आरव का खून खौल उठता। ऐसा लगता जैसे किसी ने उसके दिल में नुकीली सुई चुभो दी हो। कुछ कह नहीं सकता था, बस मन-ही-मन खुद को तसल्ली देता कि ये लड़की अनिल जैसे इंसान के इरादों का शिकार नहीं होगी। अवनी वैसी नहीं है। भोली है, मगर इतनी नहीं कि किसी के झाँसे में आ जाए।

आरव ने कई बार नोटिस किया था—लेक्चर के बीच में अवनी अचानक कहीं खो जाती। अपनी बड़ी-बड़ी आखों से वो शून्य में ताकती रहती, स्टाफ रूम में अकेले खिड़की के पास खड़े रहना, लाइब्रेरी में किताबों की आड़ में आँसू पोंछना—ये सब आरव को बेचैन कर देता। कितनी बार मन हुआ उससे पूछे—"क्या तकलीफ़ है आपको?" लेकिन छात्र-शिक्षक की मर्यादा उसे रोक देती।

दिन यूँ ही गुज़रते गए और बीबीए पाँचवे सेमेस्टर के एग्ज़ाम्स आ गये। अवनी ने अपने स्टूडेंट्स के लिए पूरी जान झोंक दी। महत्वपूर्ण प्रश्न, पुराने प्रश्न-पत्र, शॉर्ट नोट्स—सब कुछ मुहैया करवाया। जब एग्ज़ाम्स के डर से बाकी स्टूडेंट्स बेचैन थे, वह उनके लिए ढाल बनी खड़ी थी। एग्ज़ाम ख़त्म होते ही सेमेस्टर ब्रेक लग गया।

ब्रेक का मतलब था—आरव के लिए थिएटर में पूरी तन्मयता से डूब जाना।

इन्हीं दिनों उसे एक प्ले ऑफर हुआ, जो एक चर्चित उपन्यास पर आधारित था। उपन्यास का नाम था—**"अधूरी दास्तान",** और इसकी लेखिका थी **महक**, जो खुद भी बहुत युवा थी। एक ऐसी लड़की, जिसने समाज की बंदिशों, जात-पात और अधूरे प्रेम पर इतनी कच्ची उम्र में इतना गहरा लिख दिया था कि उपन्यास चर्चा में आ गया। आरव को उस नायक का किरदार निभाना था—वो लड़का जिसे अंत में अपने प्रेम से बिछड़ जाना पड़ता है।

रिहर्सल के दौरान ही वह कई बार भावुक हो उठा, मगर जिस दिन उसने मंच पर पूरा रोल निभाया, उस दिन वो अन्दर से कुछ टूट सा गया। मंच पर जब नायिका को खोने का दृश्य आया, तो उसकी आँखों के आगे बार-बार अवनी का चेहरा घूमने लगा। वह खुद को समझाता रहा—

"ये क्या हो रहा है मुझे? अवनी मेरी टीचर है… ये गलत है… ये महज़ एक प्ले है… असल ज़िंदगी नहीं।"

फिर भी उसकी आँखें गीली होती रहीं। और जब उसने मंच से झाँका, तो दूर कोने में अवनी बैठी हुई दिखी। उसने खुद को समझाने की कोशिश की कि ये उसका वहम है, बस कल्पना, और ध्यान वापस अभिनय पर केंद्रित कर दिया।

प्ले ख़त्म होने के बाद आरव सीधे अपने फ़्लैट लौटा। कमरे में दाख़िल होते ही बिस्तर पर औंधे मुँह गिर पड़ा।

संजय और राहुल ने खाना बना लिया था। **संजय,** लखनऊ का रहने वाला, आरव का बचपन का दोस्त था। क्लासेज में कम ही आता क्योंकि होटल में नौकरी करता था, मगर आरव की आत्मा को वह किसी किताब की तरह पढ़ सकता था। उसने देखते ही समझ लिया—“आज ये अंदर से टूटा हुआ है।”

राहुल ने जबरन कहा—"खाना खा ले यार, फिर बर्तन भी साफ़ करने हैं।"

संजय ने राहुल को रोक दिया—"छोड़ उसे, अभी मत छेड़। कुछ चल रहा है इसके अंदर।"

बाकी सब खाना खाकर अपने-अपने कमरों में चले गए। देर रात संजय उसके पास आया— "क्या हुआ आरव? हम जानते हैं, तुम कुछ कहोगे नहीं, लेकिन हम समझ रहे हैं। बोल दो, मन हल्का हो जाएगा।"

आरव ने करवट बदले बिना कहा—"कुछ नहीं, आज का प्ले, उस रोल ने मुझे अंदर तक हिला दिया।"

"ऐसा क्या था उस प्ले में?"

आरव ने गहरी सांस भरी— "कहानी छोटी सी है, एक लड़का-लड़की एक-दूसरे से बेपनाह मोहब्बत करते हैं। साथ जीने-मरने की कसम खाते हैं। लेकिन जात-पात, समाज—सब उनके बीच दीवार बन जाते हैं। लड़की के पिता शादी से इंकार कर देते हैं। लड़की, वो बाप की इज़्ज़त, समाज में बदनामी के डर से, अपने प्यार को छोड़ देती है। और वो लड़का… वो तो जीना ही भूल जाता है उसके बिना। उसकी दुनिया उजड़ जाती है। उधर, लड़की की शादी ज़बरदस्ती एक बड़े घराने में तय कर दी जाती है। लेकिन अपने प्यार से की गई बेवफ़ाई का बोझ सह नहीं पाती। शादी से कुछ दिन पहले ब्रेन हेमरेज से मर जाती है। सब खत्म। न लड़की रही, न उसकी

शादी हुई, न उसका प्यार बचा। और वो लड़का ज़िंदगीभर अकेला, टूटा हुआ। बताओ, क्या मिल गया उसके माँ-बाप को?"

आरव की आवाज़ भर्रा गई। उसने मुँह ढक लिया, फिर अचानक फट पड़ा— "क्यों होता है ये हमारे समाज में, संजय? क्यों..? अगर कोई लड़का-लड़की एक-दूसरे के साथ खुश हैं, अपना जीवन साथ बिताना चाहते हैं, तो किसे तकलीफ़ है? किसकी इज़्ज़त चली जाती है इसमें? माँ-बाप की नज़रों में बच्चे सिर्फ तब तक अच्छे हैं जब तक वो उनकी हर बात मानें। उनकी अपनी कोई चाहत नहीं हो सकती क्या? प्यार करना गुनाह क्यों है यहाँ? इतनी बड़ी सज़ा क्यों है इश्क़ की? प्यार करने पर क्यों टूटती हैं ज़िंदगियाँ? क्यों लोग सिर्फ **'क्या कहेगा समाज'** में अपने बच्चों की खुशियाँ कुचल देते हैं?

संजय चुपचाप सुनता रहा। फिर धीरे से मुस्कराया— "बेटा, हम समझ रहे हैं तुमको प्यार हो गया है।"

उसने आरव के बाल सहलाए और कमरे से निकल गया।

उसकी बात सुनकर आरव लंबे समय तक छत घूरता रहा। मन में सवाल गूंजता रहा— "क्या सचमुच मुझे अवनी से प्यार हो गया है?"

कुछ दिनों बाद रिजल्ट्स की घोषणा हुई।

बीबीए पांचवे सेमेस्टर का भी रिज़ल्ट आया और हमेशा की तरह अनिल ने टॉप किया। मगर इस बार अनिल के लिए ये रिज़ल्ट सिर्फ़ नंबरों का खेल नहीं था, ये एक बहाना था, अवनी के क़रीब आने का।

रिज़ल्ट्स आने के तुरंत बाद उसने अवनी को एक बेहद भावुक सा मैसेज भेजा – "हैलो अवनी मैडम! आज आपकी मेहनत और लगन के कारण मैं अपनी परीक्षा में सफल हो पाया! ये आपकी ही मेहनत का नतीजा है कि मैं क्लास में टॉप कर पाया। आपके सब्जेक्ट में मेरे सबसे बेहतरीन नंबर आए। आपके दिए हुए मटेरियल ने बहुत मदद की। आप जैसी सहयोगी टीचर मुझे आज तक जीवन में नहीं मिली! आपको जितना भी आभार दूँ वो कम ही रहेगा। मैं आपका दिल से अहसानमंद हूँ और एक छोटी-सी भेंट आपको देना चाहता हूँ। मैडम, क्या आप मेरे हाथ की बनी एक कप कॉफ़ी पीना पसंद करेंगी? प्लीज......"

मैसेज पढ़कर अवनी ठिठक-सी गई। मैसेज बहुत भावुक था, मगर किसी स्टूडेंट के साथ अकेले कॉफ़ी पीना उसे ठीक नहीं लगा। उसने तुरंत रिप्लाई किया – "बधाई हो अनिल ! ये सब तो तुम्हारी मेहनत का परिणाम है कि तुम हर बार क्लास में टॉप करते हो। लेकिन तुम बार-बार इसका श्रेय मुझे दे रहे हो, ये तुम्हारा बड़प्पन है। हम तो टीचर्स हैं, हमारा काम ही है स्टूडेंट्स की हर संभव मदद करना ताकि वे जीवन में आगे कुछ अच्छा कर सकें। तुम्हें एक बार फिर से रिज़ल्ट्स के लिए बहुत-बहुत बधाई… लेकिन मैं अकेले तुम्हारे साथ कॉफ़ी पीने नहीं आ सकती… सॉरी, अनिल।"

मैसेज पढ़ते ही अनिल ने तुरंत अपना प्लान बदल डाला।

"अरे नहीं मैडम, आप ग़लत समझ रही हो। मैंने आपको अकेले इन्वाइट नहीं किया है। मैंने कॉलेज की उन सभी फैकल्टीज़ को अपने फ़्लैट पर इन्वाइट किया है, जिन्होंने मुझे आगे बढ़ने में सहयोग दिया। आपको यक़ीन न हो तो मैं आपकी बात अभिजीत सर से करवा दूँ?"

अवनी को थोड़ी झिझक हुई – "अरे नहीं, उसकी कोई ज़रूरत नहीं! मैं कोशिश करूँगी, अनिल। वैसे कब आना है और कहाँ?"

अनिल की आँखों में शिकार पर झपटते भेड़िए-सी चमक आ गई। उसने तुरंत अपने फ़्लैट का पता और शाम का समय भेज दिया, और साथ में एक लाइन और जोड़ दी – "आपका बेसब्री से इंतज़ार रहेगा मैडम, ये पार्टी स्पेशली आपके लिए है।"

ये पढ़कर अवनी को अजीब-सा लगा - “स्पेशली मेरे लिए?”

शाम का समय मतलब घर पहुँचना देर रात, ये सोचकर उसके भीतर घबराहट की लहर दौड़ी। लेकिन फिर उसने खुद को समझाया – "और भी तो फैकल्टीज़ होंगी वहाँ, अनिल इतना आग्रह कर रहा है, मेरा ना जाना उसे बुरा लगेगा |"

और इसी सोच के साथ शाम को वो बिना किसी फैकल्टी से कन्फर्म किए अनिल के बताए पते पर निकल पड़ी।और यही उसकी सबसे बड़ी गलती थी – उसने कन्फर्म नहीं किया।

इधर अनिल ने चालाकी से बाक़ी सबको अलग-अलग बहानों से बाहर भेजकर घर आने के लिए मना कर दिया था। उसे पता था, आरव थिएटर से देर रात ही लौटेगा। मतलब फ़्लैट पर वो और अवनी अकेले होंगे। और अनिल के मन में तो

पहले से ही तय था – कुछ इमोशनल ड्रामा करके अवनी को अपने जाल में फँसाना है।

अनिल पहले कई लड़कियों के साथ ये चालें खेल चुका था। लेकिन अवनी के लिए उसके भीतर एक अलग ही जुनून था। पहली बार वो किसी लड़की को अपने फ़्लैट पर लाने वाला था। उसकी प्लानिंग फ़ुलप्रूफ़ थी।

अवनी को आने में समय था, अनिल अवनी को प्रभावित करने उसके लिए गिफ़्ट लेने मार्केट गया हुआ था तभी दरवाज़े की घंटी बजी।

आरव उस समय घर पर था। आज उसका कोई प्ले नहीं था, बस जिम करके लौटा था।

उसने दरवाज़ा खोला – और सामने अवनी खड़ी थी। वो समय से थोड़े पहले आ गयी थी |

आरव एक पल को चौंक गया –"आप??? आप यहाँ?"

अवनी थोड़ी हड़बड़ाई – "अनिल ने यहाँ कुछ फैकल्टीज़ को बुलाया है, एक छोटी-सी कॉफ़ी पार्टी। उसने कहा जितनी फैकल्टीज़ की मदद से उसने टॉप किया, उन सबको बुलाया है अपने हाथ की कॉफ़ी पीने।"

आरव की आँखों में एक पल में सब साफ़ हो गया - "अच्छा? तो बाक़ी फैकल्टीज़ कहाँ हैं?"

अवनी का चेहरा फक पड़ गया – "कोई नहीं आया?" उसने तुरंत पूर्वी मैडम और अभिजीत सर को फ़ोन किया तो उन्होंने अनिल के इस तरह के किसी भी इनविटेशन की बात को नकार दिया |

आरव का स्वर तल्ख़ था – "किसी को बुलाया हो उसने, तब न कोई आएगा। और क्या कहा उसने? अपने हाथ की कॉफ़ी? कॉफ़ी का डिब्बा भी पता है उसे किचन में कहाँ रखा है?"

अवनी का दिल डूब गया। उसने खुद को ठगा हुआ महसूस किया - "वो कहाँ है? मुझे उससे बात करनी है!" – उसकी आवाज़ काँप रही थी।

"पहले आप अंदर आ जाइए, प्लीज़।" – आरव ने शांत स्वर में कहा।

अवनी घबराते हुए भीतर आई। आरव ने उसे सोफे पर बैठने का इशारा किया और तुरंत स्पीकर पर अनिल को कॉल लगाया।

"हाँ बोल!" – उधर से अनिल की आवाज़ आई।

"कहाँ है तू?" – आरव का लहजा सख़्त था।

"मैं बाहर आया हूँ किसी काम से। तू कहाँ है?"

"मैं घर पर हूँ।"

"क्या?! तू घर पर क्या कर रहा है? तू तो थिएटर गया था ना?" – अनिल की झुँझलाहट साफ़ थी।

"आज मेरा प्ले नहीं था। मैं जिम करके लौट आया।"

अनिल बेकाबू होकर बोला – "यार तू… तू भी न… सारा प्लान ख़राब कर देगा मेरा। तू जाना घर से बाहर… कहीं भी चला जा प्लीज़।"

"क्यों?" – आरव की आवाज़ अब बर्फ़-सी ठंडी थी।

अनिल झिझका – "अरे समझा कर न यार। मैंने किसी को बुलाया है फ़्लैट पर… मेरी डेट है उसके साथ। क्या पता आज ही पट जाए। लेकिन तू भी ना , प्लीज़ जा ना वहाँ से पहले।"

"किसे बुलाया है तूने?" – आरव का सवाल सीधा था।

अनिल को पता था, अगर उसने अवनी का नाम लिया तो आरव फट पड़ेगा। उसने बात घुमा दी –

"अरे है एक, मेरी नयी गर्लफ्रेंड। आने वाली होगी, उससे पहले निकल जा वहाँ से।"

आरव ने नज़र उठाकर अवनी को देखा। उसकी आँखों से आँसू बह रहे थे… लगातार।

अगले ही पल उसने आरव के हाथ से फ़ोन छीना और चीख़ पड़ी – "तो ये थी तुम्हारी प्लानिंग? और मैं? मैं भी कितनी बेवकूफ थी ..... तुम्हारी मीठी-मीठी बातों में आ गई! तुमने मेरा भरोसा तोड़ा है अनिल! डोंट यू एवर ट्राय टू टॉक टू मी!"

उसने कॉल काट दिया और वहीं सोफ़े पर बैठकर फूट-फूटकर रो पड़ी। आरव पहले तो झिझका लेकिन फिर धीरे से उसका कंधा थामा, "प्लीज़… शांत हो जाइए।"

कुछ देर में जब उसका रोना थमा, आरव ने कहा – "अब आप आ ही गई हैं तो कॉफ़ी पी लीजिए, अच्छा लगेगा आपको।"

अवनी ने मना किया, मगर तब तक आरव किचन में जा चुका था। अकेली रह गई अवनी ने मेज़ पर पड़ी एक किताब उठाई- "अधूरी दास्तान… बाय महक", शीर्षक पढ़कर उसके चेहरे पर हल्की-सी मुस्कान आई।

तभी आरव दो बड़े मग में कॉफ़ी लेकर आया।

उसने अवनी को मुस्कुराते देखा – एक पल को उसकी नज़रें अवनी पर ठहर गईं।

मगर अगले ही पल उसने खुद को झटका और कॉफ़ी थमाई – "लीजिए।"

अवनी ने किताब रखते हुए पूछा – "आरव, तुम नॉवेल पढ़ते हो?"

"नहीं, मैं नहीं पढ़ता। राहुल पढ़ता है… उसे बहुत शौक़ है। लेकिन ये वाली… मैंने भी पढ़ी है। मेरे दिल के बहुत क़रीब है ये।"

"इसकी राइटर को जानते हो?"

"हाँ, कोई यंग लड़की है… महक। नाम से जानता हूँ, देखा नहीं कभी।"

"ओह… अच्छा। बाय द वे, नाइस कॉफ़ी।"

कुछ देर दोनों के बीच लंबी ख़ामोशी रही।

तभी अवनी का फ़ोन बजा। उसने स्क्रीन देखी – "हसबैंड", वो घबरा गई, बैग उठाया और जल्दी से दरवाज़े की ओर भागी।

कॉल रिसीव करते ही उधर से गरजती हुई आवाज़ – "साली! कहाँ गुलछर्रे उड़ा रही है? मैंने लेट आने का क्या कहा, तू पहुँच गई ऐश करने?!"

अवनी हड़बड़ाई – "नहीं मैं बस एक दोस्त के घर आई थी, कॉफ़ी पीने।"

"दोस्त या आशिक? जल्दी घर आ… आज बताता हूँ तुझे!"

अवनी कुछ नहीं बोली। बस फटाफट बाहर निकल गई।

आरव दरवाज़े तक आया। उसके कानों में अभी भी वो भारी आवाज़ गूँज रही थी।

"तो ये है अवनी की उदासी का कारण? क्या… होगा अब …?"

ये सोचते ही उसकी रूह काँप गई। वो देर तक वहीं खड़ा उसे जाते हुए देखता रहा, मन में एक अजीब-सी टीस लिए।

आरव के मन में वैसे ही तूफ़ान मचा हुआ था। कमरे में बेचैनी से टहलते हुए वह बार-बार वही दृश्य याद कर रहा था—अवनी का आंसुओं से भीगा चेहरा, उसका टूटना। तभी दरवाजे की घंटी बजी और अनिल वापस फ्लैट पर आया। जैसे ही उसने दरवाजा खोला, आरव का गुस्सा फट पड़ा। उसने बिना कुछ सोचे अनिल की कॉलर पकड़ ली।

"तुझे बोला था ना… तुझे कितनी बार समझाया था कि वो वैसी लड़की नहीं है!" आरव की आवाज़ गुस्से से कांप रही थी। "फिर क्यों खेला तूने उसके साथ इतना घटिया खेल? पता है, कितनी रोई वो मेरे सामने फूट-फूट कर!"

अनिल कॉलर छुड़ाते हुए झल्लाया, "तूने जानबूझकर कॉल स्पीकर पर डाला था ना? सब समझता हूँ मैं। चाहता तो साइड में जाकर बात कर सकता था तू। क्यों किया ऐसा? और वैसे भी, तुझे क्यों फर्क पड़ता है अवनी के दुखी होने से?"

"फर्क?" आरव के चेहरे की नसें तन गईं। "फर्क मुझे हर बार पड़ता है, अनिल। हर बार जब तू किसी मासूम को अपने झूठे वादों से छलता है। हर बार रोकता हूँ तुझे। लेकिन इस बार?" उसकी आवाज़ भर्रा गई। "तुझे अंदाज़ा है, उसके घर देर से पहुंचने पर उसके पति ने क्या-क्या सुनाया होगा उसे? वो लड़की तेरे झूठ पर भरोसा करके आई थी यहाँ , कि कहीं तू नाराज़ ना हो जाए और तेरे दिमाग में उसके लिए इतना गंदा इरादा था?"

अनिल ने कंधे उचकाए, "तो ठीक है ना। चली गई ना वो? कुछ हुआ तो नहीं ना। छोड़ मुझे।" कहकर वो खुद को छुड़ाता हुआ किचन में चला गया और बीयर की बोतल निकाल ली।

राहुल ने हल्का सा कंधे पर हाथ रखकर कहा, "छोड़ यार आरव, जब तक इसे कोई बड़ी ठोकर नहीं लगेगी, नहीं सुधरेगा ये।"

संजय भी सोफे पर बैठते हुए बोला, "हाँ भाई, जाने दे। ऐसा ही है ये। तू मत परेशान हो।"

लेकिन आरव को चैन कहाँ था। उसके मन में बार-बार वही ख्याल उठ रहा था—कहीं अवनी का पति उसके साथ कुछ गलत न कर दे। उसकी आँखों के सामने बार-बार अवनी का वह आंसुओं से भरा चेहरा घूम रहा था। वह चाहता था कि अपने हाथों से उसके गाल थामकर उसके आँसू पोंछ दे, कहना चाहता था—"तुम

अकेली नहीं हो"—पर उसकी अपनी सीमाएँ थीं। रात भर करवटें बदलते हुए उसने नींद नहीं ली।

1–2 दिन बाद रिज़ल्ट्स के ठीक बाद से ही छटवे सेमेस्टर की क्लासेस शुरू हो गईं। जब आरव, अनिल और बाकी सारे स्टूडेंट्स कॉलेज पहुँचे, तो उसने नोटिस किया—अवनी क्लास में नहीं आई। उसे एक अजीब सी बेचैनी ने जकड़ लिया, लेकिन उसने किसी से इस बारे में कुछ नहीं कहा, खासकर अनिल से तो बिल्कुल नहीं। दिन भर सोचता रहा—"वो क्यों नहीं आई होगी? कहीं कुछ हो तो नहीं गया? उसने जॉब छोड़ तो नहीं दी? मैं क्यों इतना सोच रहा हूँ उसके बारे में?"—यह सवाल बार-बार उसके मन को कुरेद रहा था।

अगले दिन स्टाफ रूम से बाहर निकलती अवनी की झलक मिली, तो उसके सीने से जैसे बोझ उतर गया। लेकिन जब क्लास में अवनी लेक्चर लेने आई, आरव की नज़रें उसकी हर हरकत पर थीं। उसने देखा वो जान-बूझकर अपने खुले बालों से चेहरा ढक रही थी। उसके चेहरे पर थकान सी झलक रही थी। और जब उसने ध्यान से देखा, तो बालों के पीछे झांकते उसके गालों पर गहरे नीले निशान साफ दिख रहे थे।

आरव के भीतर जैसे कोई ज्वालामुखी फट पड़ा। उसे समझने में देर नहीं लगी ये उसी रात का असर था। उसी आदमी का, जिसे दुनिया उसका पति कहती है। क्लास खत्म होते ही वह तेज़ कदमों से उसके पीछे गया। खाली कॉरिडोर में उसे आवाज़ दी—"रुकिए!"

अवनी रुक गई। धीरे से पीछे मुड़ी। उसके ठीक सामने आरव खड़ा था।

"क्या बात है, आरव?" उसने आँखें चुराते हुए पूछा।

आरव उसके पास आया। धीरे से उसके चेहरे पर झूलते बालों को हटाते हुए बोला, "ये क्या है? किसने किया ये सब?"

अवनी उसकी नज़दीकी से घबरा गई। उसने घबराकर नज़रें झुका लीं।

आरव की आवाज़ धीमी थी, पर भीतर आग धधक रही थी - "मुझे पता है ये किसने किया। ये उसी दिन के निशान है ना, जब आप मेरे फ्लैट पर आई थी? और करने वाला कोई और नहीं… आपका पति ही है, हैं ना?"

अवनी कुछ नहीं बोली। उसकी आँखें बस भर आईं।

आरव का गुस्सा दर्द में बदल गया - "इतनी पढ़ी-लिखी हो, समझदार हो, फिर क्यों सहती हो ये सब? क्या मजबूरी है आपकी? अगर है भी… तो कम से कम एक बार उसे धमकी दो। बता दो कि आप उससे डरती नहीं हो और उसके खिलाफ डोमेस्टिक वाओलेंस का केस करोगी। और हाँ, अपने पेरेंट्स से भी शेयर करो। यकीनन, आपने अभी तक उन्हें नहीं बताया होगा।"

उसने आखिरी बार उसकी भीगी आँखों में देखा, और फिर चुपचाप चला गया।

अवनी वहीं खड़ी रही। पहली बार, किसी के शब्दों ने उसके भीतर कुछ तोड़ दिया था, या शायद कुछ जगा दिया था। वो देर तक आरव को जाता देखती रही—उसके कदमों की आहट दूर होती गई, लेकिन उसके शब्द उसके दिल में गूंजते रहे।

अब हर रोज़ आरव कॉलेज आता और उसकी नज़रें बस अवनी को तलाशतीं। जब भी वह उसे क्लास में स्टूडेंट्स के बीच हंसते-मुस्कुराते देखता, उसके भीतर एक सुकून उतर आता |

उधर, अवनी के पति हिमांशु कुछ दिनों के लिए ऑफिस के काम से शहर से बाहर गए हुए थे। इन दिनों अवनी के चेहरे पर कुछ और ही रौनक थी। जब भी हिमांशु घर पर न होता, वह अपने आपको हल्का, आज़ाद-सा महसूस करती—मानो किसी ने सांस लेने की इजाज़त दे दी हो। इन दिनों वह कॉलेज में खुलकर हंसती, क्लास के बीच कभी-कभी बच्चों के साथ मज़ाक करती, उसकी आंखों में थोड़ी चमक लौट आई थी।

लेकिन ये आज़ादी बस कुछ दिनों की मेहमान थी। जैसे-जैसे हिमांशु की वापसी की तारीख़ नज़दीक आने लगी, अवनी के दिल में एक अजीब डर घर करने लगा। उसे मालूम था, "अब फिर वही तूफ़ान लौटेगा"

अवनी एक पढ़ी-लिखी और सुसंस्कृत परिवार से ताल्लुक रखती थी। उसके पापा, श्री अशोक त्रिपाठी, भोपाल में ही सिंचाई विभाग में बड़े पद पर कार्यरत थे। माँ, मीरा त्रिपाठी, भले ही गृहिणी थीं लेकिन पढ़ी-लिखी थीं और पहले एक प्राइवेट स्कूल में टीचर भी रह चुकी थीं। घर में तीन बहनें थीं—सबसे बड़ी अनामिका, फिर अवनी, और सबसे छोटी अवंती।

तीनों बहनें पढ़ाई में अव्वल थीं। अनामिका फाइन आर्ट्स में निपुण, अवनी गायन और नृत्य में माहिर, और अवंती खेलों में आगे। उनके माता-पिता ने उन्हें कभी

किसी कमी का एहसास नहीं होने दिया। हर फैसले में, हर सपने में वे बेटियों के साथ मजबूती से खड़े रहे।

जब अवनी आठवीं में थी, उसके पापा का तबादला ग्वालियर हो गया था। बारहवीं के बाद अवनी ने भोपाल और इंदौर से पढ़ाई जारी रखी। तभी अनामिका की शादी एक अच्छे घर में हो गई। उसी परिवार में उसका एक दूर का देवर था—हिमांशु द्विवेदी। देखने में स्मार्ट, पढ़ाई में एमबीए कर रहा था, और परिवार भी संभ्रांत। अनामिका ने अपने परिवार में उसका रिश्ता अवनी के लिए सुझाया।

अवनी शादी नहीं करना चाहती थी। उसके सपने बड़े थे—एमबीए पूरा करके अपने पैरों पर खड़ा होना चाहती थी। लेकिन माँ का दबाव बढ़ता गया—"इतना अच्छा रिश्ता बार-बार नहीं मिलेगा।"

मजबूरी में अवनी ने 'हाँ' कर दी। इंदौर के प्रेस्टिज कॉलेज से एमबीए की पढ़ाई करते हुए ही उसकी शादी तय हो गई।

शादी के शुरुआती कुछ महीने ठीक थे। हिमांशु का व्यवहार सभ्य लगता था। पर जैसे ही उसकी नौकरी भोपाल में लगी और वह अवनी को अपने साथ वहाँ ले आया, उसका असली चेहरा सामने आने लगा।

हिमांशु एक रंगीन-मिज़ाज आदमी था। रात-रातभर पब, डिस्को, शराब और औरतों में डूबा रहता। जब अवनी ने विरोध किया, तो उसने हाथ उठाना शुरू कर दिया। पहले तो हर बार माफी मांगता, "नशे में था… गलती हो गई… मैं तुमसे बहुत प्यार करता हूँ।" लेकिन धीरे-धीरे माफी भी छोड़ दी। अब वह बिना किसी कारण के उसे मारता-पीटता।

अवनी सब कुछ सहती रही। वजह? माँ-पापा की इज़्ज़त। "कहीं मेरी वजह से घर की बदनामी न हो, कहीं छोटी बहन की शादी में दिक्कत न आ जाए |"

उसके पापा ने उन्हें भोपाल में एक आलीशान फ्लैट दिला दिया था। शायद यही वजह थी कि हिमांशु उसे छोड़ता भी नहीं था—उसे मालूम था कि अवनी सामाजिक बंधनों में बंधी है और वह चाहकर भी उसे छोड़ नहीं पाएगी।

आखिरकार, अवनी ने नौकरी करने की अनुमति मांगी। यह सोचकर कि शायद कुछ वक्त बाहर रहने से उसका मन हल्का होगा। और तभी उसकी ज़िंदगी में इस कॉलेज ने कदम रखा—और अनजाने में, आरव ने भी।

आरव की बातों ने उसके भीतर कहीं एक छोटा सा सहारा बना दिया था। उसने मन में ठान लिया था—"अबकी बार हिमांशु ने हाथ उठाया, तो मैं चुप नहीं रहूँगी।"

एक शाम, कॉलेज के बाद अवनी अपनी स्कूटी से घर लौट रही थी। आसमान में बादल घिर आए थे। अचानक रास्ते में उसकी स्कूटी बंद हो गई। उसने लाख कोशिशें कीं, पर स्कूटी स्टार्ट नहीं हुई। तभी हल्की-हल्की बारिश शुरू हो गई।

वह परेशान सी स्कूटी के पास खड़ी थी कि तभी पीछे से एक बाइक आकर रुकी। आरव था। उसने बिना कुछ कहे बाइक साइड में लगाई और उसके पास चला आया।

अवनी ने स्कूटी छोड़ दी, जैसे कह रही हो—"अब तुम ही देख लो "

आरव ने दो-तीन बार किक मारी, लेकिन स्कूटी नहीं चली। उसने तुरंत एक मैकेनिक को फोन लगाया और स्कूटी वहीं से सर्विसिंग के लिए भिजवा दी।

बारिश तेज़ होने लगी। आरव ने एक नज़र अवनी पर डाली। वो पूरी तरह भीग चुकी थी। उसके घुंघराले बालों में अटकी पानी की बूंदें मोतियों सी चमक रही थीं। उसके भीगे चेहरे पर कुछ ऐसा था जो आरव को भीतर तक हिला गया।

"मैं आपको छोड़ दूं?" उसकी आवाज़ में अजीब सी कोमलता थी।

अवनी ने बस हल्का सा सिर हिला दिया।

आरव बाइक पर बैठा। अवनी चुपचाप पीछे आकर बैठ गई। उसने उसका पता बताया और आरव ने बाइक स्टार्ट कर दी।

रास्ता लंबा था। जब भी कोई स्पीड ब्रेकर आता, आरव बाइक धीमी करता, फिर भी कभी-कभी झटका लगता और अवनी सहसा उसका कन्धा पकड़ लेती। उस एक पल की पकड़ से आरव के भीतर एक अजीब सी सिहरन दौड़ जाती। वह खुद को संभालता रहा, मगर उसके दिल की धड़कनें बेकाबू थीं।

आखिरकार, वे अवनी के अपार्टमेंट पहुंचे। अवनी ने उतरते हुए कहा, "अंदर आ जाओ… कॉफ़ी पीकर जाना।"

आरव हल्के से मुस्कुराया, "फिर कभी।"

वो चला गया । अवनी वहीं खड़ी रही, उसे जाते हुए देखती रही—उसकी पीठ, उसकी बाइक की लाल लाइट दूर अंधेरे में गुम होती गई। उसे नहीं पता था, फ्लैट

के अंदर से दो जोड़ी आंखें सब देख रही थीं—और ये नज़ारा, थोड़ी देर में बहुत कुछ बदलने वाला था।

अवनी जैसे ही अपने फ्लैट पर पहुँची, उसने देखा, गेट का लॉक पहले से खुला हुआ था। उसके भीतर एक सिहरन दौड़ गई। उसने धीरे से दरवाज़ा खोला। जैसे ही अंदर कदम रखा, उसकी आशंका सच साबित हुई।

सोफ़े पर हिमांशु बैठा था। हाथ में बीयर का गिलास, सामने सेंटर टेबल पर कुछ खाली बोतलें। उसकी आंखों में वही नशे का लाल रंग, वही तिरस्कार भरी नज़रें। अवनी ठिठक गई। हिमांशु ने उसे देखा, एक धीमी, व्यंग्य भरी मुस्कान उसके चेहरे पर उभरी। उसने गिलास से एक लंबा घूंट लिया और बोला,

"आ गई? अपने यार के साथ गुलछर्रे उड़ा कर?"

अवनी का चेहरा पीला पड़ गया, लेकिन उसने हिम्मत जुटाई।

"हिमांशु, आप ग़लत समझ रहे हैं। मेरी स्कूटी खराब हो गई थी। वो मेरा स्टूडेंट है। रास्ते में देखा मुझे परेशानी में, तो बस छोड़ गया घर तक।"

हिमांशु ज़ोर से हँस पड़ा—एक कड़वी, जहरीली हँसी - "तू और तेरे बहाने! बढ़िया है। अब बताता हूँ तुझे"

इतना कहकर वह उठ खड़ा हुआ। उसकी चाल में लडखडाहट थी, पर गुस्से का नशा ज़्यादा हावी था। वह अवनी की ओर बढ़ने लगा, उसके होंठों पर गंदी गालियाँ थीं।

"वो साला हरामखोर... दूसरों की बीवी को अपना माल समझता है? आवारा कहीं का! और तू... तुझे भी उसके साथ मज़ा आता है, हैं ना?"

अवनी का खून खौल उठा।, आरव के बारे में ये शब्द सुनकर | उसकी आँखों में आग भर आई।

हिमांशु ने हाथ उठाया, जैसे हर बार उठाता था। लेकिन इस बार, उसका हाथ हवा में ही थम गया।

अवनी ने उसका हाथ पकड़ लिया, ज़ोर से। उसकी आवाज़ गूंज उठी— "बस हिमांशु! अब और नहीं। बहुत सह लिया मैंने। अगर आज के बाद मुझे छुआ भी ना, तो सीधा पुलिस स्टेशन जाऊंगी। डोमेस्टिक वायलेंस का केस करूंगी तुम पर। फिर सड़ते रहना जेल में पूरी जिंदगी!"

कमरे की हवा ठिठक गई। हिमांशु वहीं जम गया। पुलिस केस? जेल? यह सुनकर उसकी सांसें अटक गईं। उसने अवनी की आंखों में देखा, वो आंखें जो कभी डरती थीं, आज आग बनकर जल रही थीं।

पहली बार उसने देखा कि यह वही अवनी नहीं रही जिसे वो सालों से तोड़ता आ रहा था। तभी डोरबेल बजी। हिमांशु ने दरवाजा खोला। बाहर मैकेनिक खड़ा था - "सर, मैडम की गाड़ी ठीक हो गई है। बाहर पार्क कर दी है। ये रही चाबी। हज़ार रुपये का बिल है। कैश देंगे या ऑनलाइन?"

हिमांशु ने अवनी की ओर देखा। अवनी दरवाजे तक आई, उसके चेहरे पर न डर था, न कोई घबराहट। उसने फ़ोन निकाला, ऑनलाइन पेमेंट किया, चाबी ली और बिना एक शब्द कहे किचन की ओर चली गई।

हिमांशु वहीं सोफ़े पर धंसकर बैठ गया। उसका दिमाग सुन्न हो चुका था।

अवनी भीतर से मुस्कुरा रही थी। "काश, ये कदम मैंने पहले उठा लिया होता।"

उसके भीतर एक अजीब सी राहत, एक ताक़त जन्म ले चुकी थी। उसने मन ही मन आरव को धन्यवाद दिया। "उसकी बातें, उसकी हिम्मत, शायद उसी ने मुझे आज ये ताकत दी।"

उधर, आरव अपने फ्लैट पर पहुंचा। बिस्तर पर लेटते ही आँखें बंद कीं, लेकिन नींद नहीं आई।

हर बार, वही चेहरा सामने उभरता—बारिश में भीगा हुआ अवनी का चेहरा। उसके गीले, घुंघराले बालों में अटकी बूंदें, उसकी बड़ी-बड़ी काली आँखें, उनमें छिपी न जाने कितनी कहानियाँ। उसका सहसा कसकर पकड़ लेना |

आरव का दिल तेज़ धड़कने लगा। उसने करवट बदली, खुद से बुदबुदाया—"क्यों मैं उसकी तरफ इतना खिंचा चला जा रहा हूँ? क्यों वो इतनी अपनी सी लगती है? ये ग़लत है। मुझे ऐसा नहीं सोचना चाहिए। वो मेरी टीचर है, और सबसे बड़ी बात, वो शादीशुदा है। उसकी अपनी ज़िंदगी है।"

उसकी आँखें भर आईं। तभी कमरे का दरवाज़ा खुला। संजय और राहुल अंदर आए।

"क्या बात है भाई? आजकल कहां खोए रहते हो?" राहुल ने पूछा।

संजय ने चुटकी ली— "हमको तो लगता है इसको प्यार हो गया है!" और जोर से हँस दिया।

राहुल उछल पड़ा—"अरे सच में? कौन है? कैसी दिखती है? नाम क्या है? तुम्हारे कॉलेज की है क्या? बता ना!"

आरव हल्की हंसी हंसकर टालने लगा - "अरे ऐसा कुछ नहीं है, ये तो फालतू बकवास करता रहता है।"

संजय ने गंभीर चेहरा बनाया - “बिटुआ, तुम्हारे चेहरे की लाली बता रही है, तुम प्यार में हो।"

आरव कुछ पल चुप रहा, फिर गंभीर स्वर में बोला— "अभी तो मैं खुद नहीं जानता कि ये जो मेरे दिल में है, ये प्यार है भी या नहीं। शायद बस उसकी फिक्र है, और वैसे भी, वो मेरे लिए ऐसा कुछ नहीं सोचती होगी। उसकी अपनी पर्सनल लाइफ है।"

बाहर खड़ा अनिल ये सब सुन रहा था। वह कमरे में दाखिल हुआ और तंज कसा— "हमें ज्ञान देते हो और खुद उसके लिए ऐसे सोचते हो? बड़े महान हो यार तुम!"

आरव की आंखें सख्त हो गईं - "मैं जो भी सोचता हूँ, पर तेरी तरह घटिया नहीं हूँ।"

अनिल हंसा—"अरे वाह! जैसे तू कोई भगवान है। प्यार करेगा लेकिन लड़की को छुएगा ही नहीं क्या?"

आरव सीधा उसकी आँखों में देखता हुआ बोला— "प्यार सबसे पहले रूह से, आत्मा से, स्वभाव से होता है। जिस्म का मिलन तो बस एक प्रतीक है—समर्पण का, सम्मान का। लेकिन तू? तू बस अपनी हवस मिटाने के लिए प्यार का नाटक करता है।"

अनिल मजाकिया अंदाज में हाथ जोड़कर बोला—"आरव बाबा, आपकी जय हो!" और उसके पैरों में गिरने की एक्टिंग करने लगा।

राहुल और संजय उसकी नौटंकी पर हँसने लगे।

"वैसे अनिल, तू आजकल कहाँ बिजी रहता है?" राहुल ने पूछा।

अनिल शरारती अंदाज़ में बोला— "लड़कियों की कमी नहीं है। एक गई तो दूसरी आ गई। लेकिन इस बार जो मिली है ना, वो थोड़ी अलग है। उसकी बातें, उसकी आँखें, प्लान तो बहुत करता हूँ कि आज उसे किस कर ही लूँगा, फिर धीरे-धीरे उसे अपने पास ले ही आऊंगा। लेकिन जब भी उसके साथ होता हूँ ना, पता नहीं क्यों, कुछ नहीं कर पाता। बस उसके साथ बैठकर उसकी बातें सुनने में मज़ा आता है।"

संजय ने मजाक किया—"बाबू, कहीं तुम भी प्यार-व्यार में तो नहीं पड़ गये?"

अनिल तुरंत बोला—"नहीं बाबा, मुझे ये प्यार का चक्कर नहीं चाहिए। बहुत दर्द होता है इसमें। रोना-धोना, दिल टूटना, ये सब मुझसे नहीं होगा। मैं तो टाइमपास में खुश हूँ—थोड़ा वक्त साथ बिताओ, फिर हम अपने रास्ते, वो अपने रास्ते। न शादी का झंझट, न कोई ड्रामा।"

राहुल ने गंभीरता से कहा—"तेरे कहने से क्या होगा? प्यार सोचकर थोड़ी होता है। वो तो अपने आप हो जाता है, और जब तक हमें अहसास होता है, तब तक अक्सर वो हमसे दूर जा चुका होता है।"

अनिल हंस पड़ा—"साला, आज सब क्या भांग-वांग के गोले खाकर बैठे हो क्या? एक से एक प्रवचन दे रहे हो। चलो , खाना खाने, भूख लगी है। जिसे देखो, प्यार पर ज्ञान पेल रहा है।"

सब हंसते हुए खाना खाने चले गए। लेकिन आरव वहीं बैठा रह गया। उसके भीतर अब भी वही चेहरा घूम रहा था—बारिश में भीगी हुई अवनी।

डिनर के बाद राहुल अपने कमरे में चला गया, हमेशा की तरह एक मोटी सी नॉवेल हाथ में लिए।

अनिल अपने फ़ोन में खोया हुआ था, नई गर्लफ्रेंड से चैट कर रहा था। ड्रॉइंग रूम में सिर्फ़ आरव अकेला रह गया था।

बालकनी में खड़ा, ठंडी रात की हवा में भी उसका मन बेचैन था। आकाश में फैला चाँद भी आज उसे कुछ अधूरा सा लग रहा था। वो सोच रहा था –“क्यों हर बार जब मैं आँखें बंद करता हूँ, तो वही चेहरा सामने आता है? बारिश में भीगी हुई वो, उसकी आँखें, वो मासूम मुस्कान, क्यों?”

तभी पीछे से किसी ने उसके कंधे पर हल्के से हाथ रखा।

आरव ने पलटकर देखा—संजय खड़ा था।

आरव मुस्कुरा दिया, जैसे मजबूरी में।

संजय ने धीमे स्वर में पूछा – "एक बात पूछे तुमसे?"

आरव – "पूछो।"

संजय –"वो, अवनी है ना?"

आरव के चेहरे पर हल्की सी मुस्कान आई - "तुम्हें कैसे पता चला?"

संजय ने गहरी सांस भरी – "बचपन के दोस्त हैं यार। तुम्हारे चेहरे की हर लकीर पढ़ सकते हैं| और जिस दिन तुम अनिल से भिड़े थे ना, उस दिन ही हम समझ गये थे कि तुम उसके लिए कुछ फील करते हो। फिर कहते क्यों नहीं उससे?"

आरव ने निगाहें चुरा लीं, आवाज़ भारी हो गई – "क्योंकि नहीं कह सकता। पहली बात… वो शादीशुदा है।

दूसरी बात… वो हमारी टीचर है। और सबसे बड़ी बात… मेरी माँ। वो तो अलग ही हमें कसम वसम खिलाकर भेजा है कि किसी से प्यार-व्यार के चक्कर में मत पड़ना, शादी उनकी मर्ज़ी से करनी है।

माँ का वचन टाल नहीं सकते | जानते हो संजय , कैसा लगता है? दिल में चाहत हो… और उसे पाने का हक़ ही न हो। संजय… ये कैसी ज़िंदगी है? जिसे चाहो, उसे पा नहीं सकते। बस दूसरों की मर्जी पर चलो। माँ-बाप जैसे कहें वैसे करो...। और फिर … वो शादीशुदा भी तो है… उसका पति है… उसकी अपनी ज़िंदगी है। और मैं कौन?कोई नहीं।"

संजय कुछ पल चुप रहा, फिर धीमे से बोला – "फिर भी … तुम खुद को उसकी तरफ खिचे चले जाने से रोक नहीं पा रहे हो, है ना? जानते हुए भी कि कितनी सीमाएं हैं?"

आरव ने सिर झुका लिया – "हाँ, यार। कितना समझाऊं खुद को… लेकिन दिल है कि मानता ही नहीं।

सोचता हूँ बस ये सेमेस्टर खत्म हो जाए, एमबीए किसी और कॉलेज से करूँगा। आँखों के सामने नहीं होगी, तो शायद भूल जाऊँ।"

संजय ने एक तीखी नज़र डाली –"और अगर तब तक कोई बड़ा बवाल हो गया तो? क्या करोगे?"

आरव ने उसकी तरफ देखा, आँखों में दर्द था – "नहीं जानता, संजय। फिलहाल बस खुद को समझा रहा हूँ, कि ये एकतरफ़ा सफ़र है, बेटा। रोक लो खुद को, वरना टूट जाओगे।"

संजय ने उसके कंधे पर थपकी दी – "चलो, सो जाओ। रात बहुत हो गई है, कल कॉलेज भी जाना है तुम्हें।"

दोनों कमरे में चले गए। लेकिन आरव की आँखों से नींद कोसों दूर थी।

अगले दिन, कॉलेज पहुँचे तो आरव की नज़र अनजाने में स्टाफ़ रूम की ओर चली गई। वहाँ मीटिंग चल रही थी। अवनी अन्दर थी। और अजीब बात, आज वो बहुत खुश नज़र आ रही थी।

अवनी की नज़र भी बाहर खड़े आरव पर पड़ी। कुछ सेकंड के लिए दोनों की आँखें टकराईं। आरव जैसे किसी खयाल से जागा और तुरंत नज़रें चुरा लीं, जाने को मुड़ा।

अवनी के कदम खुद-ब-खुद उठे। वो मीटिंग से 'अर्जेंट काम' कहकर बाहर निकली। आरव सीढ़ियाँ चढ़ रहा था, तभी पीछे से उसकी आवाज़ गूंजी – "आरव, ज़रा ठहरो।"

उसके होंठों से अपना नाम सुनकर आरव का दिल जैसे गिटार की तारों सा झनक उठा। वो रुका और पलटा। अवनी उसकी ओर बढ़ रही थी। उसके हर क़दम के साथ आरव की धड़कनें तेज़ हो रही थीं।

अवनी सामने आकर बोली –"आरव, मैं तुम्हें थैंक्यू कहने आई हूँ।"

आरव थोड़ा चौंका – "अरे, थैंक्स किस बात का? आपका घर मेरे घर के रास्ते में ही पड़ता है, तो छोड़ दिया बस।"

अवनी ने सिर हिलाया, "नहीं, आरव, कल वाली बात के लिए नहीं।"

आरव और भी हैरान – "तो फिर किसलिए?"

अवनी ने नज़रें झुका लीं, हल्की सी मुस्कान उसके होंठों पर थी।

"वो जो तुमने एक दिन कहा था ना, कि अगर मेरा पति मुझ पर हाथ उठाए, तो मैं उसे धमकी दे दूं।"

आरव का चेहरा गंभीर हो गया - "हाँ, तो?"

अवनी ने गहरी सांस ली - "कल मेरे पति ने तुम्हें मुझे छोड़ते हुए देख लिया।"

आरव के चेहरे पर चिंता की लकीरें उभर आईं। बिना सोचे-समझे उसने अवनी के कंधों को पकड़ लिया – "अवनी! उसने तुम्हें कुछ किया तो नहीं ना ?"

उस पल आरव भूल गया था कि वो उसकी टीचर है। अवनी का पूरा शरीर सिहर उठा। उसने पहली बार उसकी आंखों में सीधे देखा – वहां अपने लिए सच्ची चिंता थी, स्वार्थ रहित।

अगले ही पल आरव को अहसास हुआ।उसने हाथ छोड़ दिए। हड़बड़ा गया – "मेरा मतलब, अवनी मैडम, आप ठीक तो हैं ना?"

अवनी उसकी इस मासूमियत पर हंस पड़ी - "हाँ, आरव, मैं ठीक हूं। जब हिमांशु उल्टा-सीधा बोलते हुए मुझ पर हाथ उठाने ही वाला था, तो मैंने उसका हाथ पकड़ लिया और उसे 'डोमेस्टिक वायलेंस' की धमकी दे दी। तब से वो डरा हुआ है।"

वो हंस दी। फिर कुछ गंभीर हुई - "और इसी के लिए तुम्हे थैंक्स कहने आई थी। काश, तुम मुझे पहले मिले होते, आरव।"

थोड़ी देर रूककर आरव ने उसकी आंखों में झांककर पूछा – "कितने पहले?"

आरव के इसे अप्रत्याशित सवाल से अवनी का दिल जोर से धड़क उठा। वो घबरा गई।

"आरव... वो वो ....मेरा लेक्चर है... मुझे जाना होगा।"

और वह मुड़कर चली गई। आरव वहीं खड़ा उसे जाता देखता रहा। लेकिन इस बार, उसकी बातों ने अवनी के अन्दर कुछ हिला सा दिया।

स्टाफ रूम में बैठी अवनी बार-बार उसी पल को जी रही थी – उसकी आंखें, उसकी पकड़, उसकी चिंता,

"ये मेरे साथ क्या हो रहा है? नहीं! मुझे ये ख्याल दिमाग से निकालना होगा। वो मेरा स्टूडेंट है बस इसलिए उसे चिंता थी मेरी।" - पर उसके दिल की धड़कनें, उसकी बात नहीं मान रही थीं।

दिन में कॉलेज में ऐलान हुआ – "दो दिन बाद कॉलेज पिकनिक है। लोकेशन – पचमढ़ी। हर क्लास से कुछ स्टूडेंट्स वॉलंटियर रहेंगे लिस्ट और फीस के लिए।"

अनिल उछल पड़ा - "सर, अपने दोस्तों को ला सकते हैं? जो कॉलेज के न हों?"

"नहीं," अभिजीत सर बोले, "सिर्फ कॉलेज स्टूडेंट्स के लिए है पिकनिक।"

अनिल का चेहरा उतर गया। आरव की ओर मुड़कर बोला –"यार, वो नहीं जाएगी तो मैं भी नहीं जाऊंगा। लेकिन तू जरूर जा, तेरी फेवरेट मैडम तो जाएंगी ही।"

आरव चुप रहा।

शाम को फ्लैट पर लौटे तो डिनर के दौरान पिकनिक की बात छिड़ी। संजय बोला – "आरव, तुम्हें जाना चाहिए। ये तुम्हारा लास्ट ईयर है। फिर कहां ऐसे मौके मिलेंगे? लाइफटाइम मेमोरीज़ होती हैं ये।"

आरव ने कंधे उचका दिए - "तुम भी तो चल नहीं रहे यार, मैं वहां अकेला क्या करूंगा?"

"मुझे होटल से छुट्टी नहीं मिल रही," संजय बोला। "सेलिब्रिटी आ रहे हैं परसों, किसी को ऑफ नहीं।

लेकिन अनिल तो जा रहा होगा ना?"

"वो पगला गया है," आरव ने हंसते हुए कहा, "कहता है, मेरी गर्लफ्रेंड नहीं जाएगी तो मैं भी नहीं। उसकी गर्लफ्रेंड हमारे कॉलेज की नहीं है।"

संजय हंस पड़ा - "ओह, तो फिर राहुल भी नहीं जा पाएगा।"

"मैं बोर हो जाऊंगा वहां। इससे अच्छा थिएटर जाकर नेक्स्ट प्ले की प्रैक्टिस कर लूंगा।" आरव बोला

संजय ने आंख मारी - "क्यों बोर होने लगे, बे? जाओ, थोड़ा अवनी का भी ध्यान रख लेना।" और हंसकर चला गया।

अवनी का नाम सुनते ही आरव के चेहरे पर मुस्कान तैर गई। उधर रात में अवनी भी करवटें बदल रही थी। उसके मन में भी आरव की बातें गूंज रही थीं। ना चाहते हुए भी दोनों एक-दूसरे की ओर खिंचे चले जा रहे थे। जैसे कोई अदृश्य डोर हो, जो उन्हें मजबूती से बांध रही हो।

दो दिन बाद कॉलेज का माहौल बदला-बदला सा था। सुबह-सुबह ही पूरा कैंपस गुलजार था। केवल वही स्टूडेंट्स उपस्थित थे जिन्होंने पिकनिक के लिए रजिस्ट्रेशन करवाया था। बाकी सभी को छुट्टी दे दी गई थी।

कैंपस के गेट के पास दो बड़ी-बड़ी लग्ज़री बसें खड़ी थीं। लड़के-लड़कियों के हंसी-मजाक, फोटोज़ और सेल्फिस खिंचवाने की होड़, टीचर्स के निर्देश और हल्की-हल्की ठंडी हवा।

बसों में सीट के हिसाब से स्टूडेंट्स का विभाजन किया गया था। मगर आखिरी समय में कुछ और स्टूडेंट्स फीस लेकर आ धमके। उत्साह से भरे इन स्टूडेंट्स को रोक पाना मुश्किल था।

बस-इंचार्ज बने बनर्जी सर ने लंबी सांस लेकर कहा – "जाने दो यार, लास्ट ईयर है इनका, क्यों मन तोड़ें? पर सीट नहीं बची तो खड़े खड़े ही जाना पड़ेगा।"

और सब बच्चे 'ओके सर, थैंक यू!' कहते हुए बस में चढ़ गए।

आरव जिस बस में था, उसी में अवनी भी बैठी थी। ये सोचकर ही उसके दिल की धड़कन थोड़ी तेज हो गई थी। बसें पचमढ़ी की ओर रवाना हो गईं। रास्ता हरा-भरा था, पेड़ों से छनकर आती धूप और ठंडी हवाओं के झोंके। स्टूडेंट्स ने सफर को मज़ेदार बनाने के लिए बस में अंताक्षरी शुरू कर दी।

दो टीमें बनीं – एक फैकल्टी की, दूसरी स्टूडेंट्स की।

फैकल्टी की ओर से पुराने क्लासिक गाने – 60s, 70s, 90s – जो शायद ही किसी स्टूडेंट ने पहले सुने हों। कई स्टूडेंट्स ठहाके लगाते, मज़ाक उड़ाते।

स्टूडेंट्स की टीम न्यू जेनरेशन के हिट गाने गा रही थी – डीजे बीट्स, रैप, रोमांटिक नंबर्स।

कुछ देर बाद फैकल्टी टीम पर 'ल' अक्षर आया। लगभग सारे गाने खत्म हो चुके थे। फैकल्टी में सन्नाटा।

स्टूडेंट्स ने काउंटडाउन शुरू कर दिया – "टिक टिक वन… टिक टिक टू…"

गिनती चार तक पहुँची ही थी कि अचानक अवनी की मधुर आवाज़ गूंजी –

"लग जा गले कि फिर ये हसीं रात हो न हो…

शायद फिर इस जनम में मुलाक़ात हो न हो…"

बस का हर कोना मानो थम सा गया। उसकी आवाज़ में ऐसी मिठास, ऐसी गहराई थी कि किसी ने भी उसे बीच में रोकने की कोशिश नहीं की। अवनी ने गाना पूरा गाया |

आरव उसे देखता ही रह गया – हर शब्द उसे अपने दिल की धड़कन सा लगा। मानो अवनी ये गीत उसे ही समर्पित कर रही हो।

गीत खत्म होते ही बस तालियों की गड़गड़ाहट से गूंज उठी।

स्टूडेंट्स चिल्लाने लगे – "वाव्व! अवनी मैडम , यू आर अमेज़िंग!"

अवनी थोड़ी झेंप गई। पर बार-बार उसकी नजरें अनायास आरव की ओर उठ रही थीं, और आरव बस मुस्कुरा कर उसे देख रहा था|

कुछ देर बाद बसें पचमढ़ी पहुँच गईं। बसें एक रिजॉर्ट के बाहर रुकीं।

बनर्जी सर ने सख्त निर्देश दिए – "बहुत दूर मत भटकना, नाश्ता 10 बजे और लंच 1 बजे है। अपने-अपने ग्रुप्स में रहना।"

स्टूडेंट्स छोटे-छोटे ग्रुप्स में आसपास घूमने निकल पड़े। हर कोई सेल्फी लेने, वीडियो बनाने में लगा था।

आरव चुपचाप सब से दूर, एक वाटरफाल के किनारे बैठा था। पानी की धार का शोर, ठंडी हवा और अकेलेपन का एहसास, उसके भीतर एक अजीब सी हलचल थी।

उसी समय अवनी वहाँ आ पहुँची।

उसने हल्के आश्चर्य से कहा – "क्या बात है आरव? यहाँ अकेले क्यों बैठे हो? बाकी सबके साथ घूम नहीं रहे? आगे भी बहोत सुन्दर नज़ारे हैं |"

आरव ने नजरें उठाईं – अवनी उसके सामने खड़ी थी।

हल्की हवा में उसके खुले बाल उड़ रहे थे, जैसे हवा उनसे खेल रही हो। उसका आसमानी रंग का दुपट्टा हवा में लहराता मानो पूरे आसमान को ढक लेना चाहता हो।

आरव ने उसकी आंखों में देखा – वो गहरी, काली आंखें। और अनायास उसके होंठों से निकल पड़ा –

"मेरे लिए इस वक़्त, इससे ज्यादा मनमोहक नज़ारा और कोई नहीं।"

अवनी ठिठक गई। कुछ क्षणों तक वो बस आरव की आंखों में देखती रह गई। फिर जैसे होश में आई। तभी पीछे से अभिजीत सर की आवाज़ आई – "अरे मैडम, चलिए। बनर्जी सर बुला रहे हैं।"

अवनी पलटी। जाते-जाते उसने एक बार फिर पीछे मुड़कर आरव को देखा – वो अब भी उसी गहराई से उसे देख रहा था। उसने बिना कुछ कहे तेज कदमों से आगे बढ़ना ही बेहतर समझा।

लंच के बाद रिजॉर्ट के पार्क में खेलों का आयोजन हुआ। लड़कियों के लिए डम्बशराड्स, लड़कों के लिए क्रिकेट। कुछ देर बाद सब थककर हरी घास पर बैठ गए।

तभी एक स्टूडेंट बोला – "अभिजीत सर, अवनी मैडम, प्लीज़, आप दोनों का एक डुएट हो जाए!"

बहुत मना करने के बाद भी दोनों मान गए। एक स्टूडेंट ने गिटार बजाने की जिम्मेदारी ली।

दोनों ने गाना शुरू किया –

अभिजीत सर:

"अभी ना जाओ छोड़ कर कि दिल अभी भरा नहीं
अभी-अभी तो आई हो, अभी-अभी तो...
अभी-अभी तो आई हो, बहार बनके छाई हो
हवा ज़रा महक तो ले, नज़र ज़रा बहक तो ले"

अवनी:

"सितारे झिलमिला उठे, चराग़ जगमगा उठे
बस अब ना मुझ को टोकना
बस अब ना मुझ को टोकना, ना बढ़ के राह रोकना
अगर मैं रुक गई अभी तो जा ना पाऊँगी कभी"

दोनों साथ में:

***"बुरा ना मानो बात का, ये प्यार है, गिला नहीं
हाँ, यही कहोगे तुम सदा कि दिल अभी भरा नहीं
हाँ, दिल अभी भरा नहीं नहीं, नहीं, नहीं, नहीं"***

गीत का एक एक शब्द आरव को अपने दिल के इजहार सा प्रतीत हो रहा था|

पूरा माहौल सुरों में डूब गया। गीत खत्म हुआ तो तालियों की गूंज हुई।

वापसी के वक्त अवनी वॉशरूम गई थी, लौटते-लौटते बस में एक भी सीट खाली नहीं बची।

कुछ स्टूडेंट्स उठे – "मैडम, आप यहां बैठ जाइए।"

अवनी की नजर पीछे खड़े कुछ स्टूडेंट्स पर पड़ी, जो सीट न मिलने की वजह से खड़े थे, आरव अपनी सीट एक लड़की को दे चूका था और अब, वो भी खड़ा था , अवनी ने बैठने से मना कर दिया और अनायास ही सीधे पीछे खिचती सी चली गई, जहां आरव खड़ा था।

वो ठीक उसके सामने खड़ी हो गई। बस स्टार्ट हुई, तो एक झटका लगा – अवनी पीछे गिरने वाली थी कि आरव ने उसे थाम लिया। उनकी सांसें एक-दूसरे से टकराईं।

अवनी ने धीरे से कहा – "थैंक यू…"

आरव बस हल्की मुस्कान में रह गया।

तभी स्टूडेंट्स फिर जोर-जोर से बोले – "अवनी मैडम , एक और गाना हो जाए … प्लीज़!"

अवनी ने इस बार बिना इंकार किए गाना शुरू किया –

"दिल चरखे की इक तू डोरी…

सूफी इसका रंग…

इसमें जो तेरा ख्वाब पिरोया…"

गाते वक्त उसकी नजरें बार-बार पीछे आरव पर टिकतीं।

अभिजीत सर ने बीच में अगला हिस्सा गाया –

"दिन तेरे बिन अब जी ना पाए…

तेरे पहलू में ही रह जाऊं...”

और आरव ने चुपचाप अपने मोबाइल में ये पूरा पल रिकॉर्ड कर लिया – शायद इस पल को अपने दिल के किसी कोने में हमेशा के लिए सहेजकर रखना चाहता था।

गीत खत्म हुआ। एक लड़की ने मज़ाक में कहा – “सर-मैडम , आपकी वॉइस इतनी मैच करती है, आप दोनों शादी कर लीजिए!”

अभिजीत हंसकर बोले – “पागल हो क्या? घर तुड़वाओगी हमारा? हम दोनों शादीशुदा हैं।”

सब हंस पड़े।

पर ये मज़ाक अवनी और आरव के दिलों पर चोट कर गया।

अवनी को मानो जैसे किसी ने खुबसूरत सपने से झकझोरकर उठा दिया हो और उसकी आंखें भीग आईं।

आरव को उस क्षण अहसास हुआ कि वो जिसे अपना मान बैठा हैं, असल में वो उसका हैं ही नहीं, वो कुछ कदम पीछे हट गया।

बस कॉलेज पहुँची। सब उतरने लगे। अवनी वहीं खड़ी रही, आरव को जाते हुए देखती रही – जैसे कहना चाहती हो –**“तू थोड़ी देर और ठहर जा...”**

आरव भी एक बार पीछे मुड़ा, उसकी आंखों में वही अनकहा दर्द था। वो बिना कुछ कहे वहाँ से चला गया।

रात का सन्नाटा शहर पर उतर चुका था। अवनी अपने फ्लैट में पहुंची तो थकान से बदन टूटा जा रहा था, लेकिन मन? मन तो एक अजीब बेचैनी में डूबा था। बार-बार उसकी आंखों के सामने वही पल घूम रहा था—जब आरव ने उसकी ओर देखकर वो शब्द कहे थे – "इससे मनमोहक नज़ारा क्या हो सकता है मेरे लिए?"

उसके लफ्ज़, उसकी नज़रें, जैसे उसके दिल की दीवारें खुरच गई हों। अवनी बेड पर बैठी थी, मगर दिल की धड़कनें मानो कानों में गूंज रही थीं। उसने आंखें बंद कीं, पर जैसे ही बंद कीं—आरव का मुस्कुराता चेहरा, उसकी वो गहरी आंखें सामने उभर आईं।

"ये क्या हो रहा है मुझे…?" उसने मन ही मन बुदबुदाया।

"नहीं अवनी... ये गलत है। वो तुम्हारा स्टूडेंट है, और तुम? तुम शादीशुदा हो। खुद को संभालो।"

पर दिल कब तर्क मानता है? वो तो बस धड़कता है और आज उसकी धड़कनें बेपरवाह थीं।

उधर, आरव भी अपने फ्लैट पर पहुंचा, लेकिन नींद तो जैसे उसकी पलकों से मीलों दूर थी। उसने बैग रखा, शर्ट के बटन खोले और सोफे पर धंस गया। कुछ देर यूं ही छत को ताकता रहा, फिर मोबाइल उठाया।

गैलरी खोली और स्क्रीन पर पिकनिक की तस्वीरें एक-एक कर उभरने लगीं। उसने वो वीडियो चलाया—जिसमे अवनी और अभिजीत सर का बस में रिकॉर्ड किया हुआ का गीत था, उसकी मधुर आवाज़ कमरे में गूंज उठी।

आरव अनायास ही मुस्कुरा दिया, तभी पीछे से एक हाथ उसके कंधे पर आकर पड़ा। वो चौक पड़ा और घबराहट में मोबाइल नीचे गिर पड़ा। मुड़कर देखा— अनिल खड़ा था, होंठों पर शरारती मुस्कान लिए।

अनिल मोबाइल उठाते हुए - "ओह्ह्ह माय गॉड, बात यहां तक पहुंच चुकी है? और हमें खबर भी नहीं, भाईसाहब?"

आरव ने तुरंत मोबाइल उसके हाथ से छीन लिया - "ऐसा कुछ नहीं है, अच्छा गाती है वो, सबने बनाए हैं उसके वीडियोज़।"

अनिल: "हां, सबने बनाए होंगे। लेकिन सब लोग घर पहुंचकर, कमरे में एक कोने में बैठकर, बार-बार ये विडियो देख रहे होंगे क्या ? क्यों?"

आरव ने नज़रें झुका लीं। होंठों पर एक फीकी मुस्कान थी, पर आंखों में बेशुमार स्वीकरोक्ति।

अनिल ने उसके कंधे पर थपकी दी, इस बार बिना मज़ाक के बोला— "देख भाई, मैं तेरे जितना दर्शनिक नहीं हूं, लेकिन इतना समझता हूं कि तू उसे चाहने लगा है। और ये जो तू महसूस कर रहा है ना ये खेल नहीं है। सुन, ये एकतरफ़ा प्यार है और इसका कोई भविष्य नहीं है। तू मेरी तरह भी नहीं है कि 'एक गई तो दूसरी आई' वाला बंदा हो, अगर ये रिश्ता नहीं बना ना तो तू बहुत रोएगा, टूट जाएगा तू, सोच ले अच्छे से। वरना खुद को संभाल नहीं पाएगा।"

आरव चुप रहा। पहली बार अनिल की बातें उसे चुभने के बजाय सच लगीं। दिल मान रहा था कि ये सच है, और सच कभी-कभी कितना तकलीफ़देह होता है।

"मैंने कभी किसी लड़की के लिए ऐसा महसूस नहीं किया, और जब किया तो उसके लिए जो मेरी कभी हो ही नहीं सकती।"- सोचते-सोचते उसकी आंखें नम हो आईं। उसने सिर दीवार से टिका लिया और मन ही मन तय कर लिया— "बस अब और नहीं। एग्ज़ाम तक किसी तरह खुद को काबू में रखूंगा। फिर कॉलेज बदल दूंगा। दूर चला जाऊंगा। शायद भूल जाऊं उसे |"

लेकिन ये "शायद" ही उसकी सबसे बड़ी कमजोरी थी।

एग्ज़ाम शुरू होने में अभी तीन महीने थे। और इन तीन महीनों में आने वाला था कॉलेज का कल्चरल इवेंट और फ़ाइनल ईयर का फ़ेयरवेल पार्टी।

दोनों मौकों पर अवनी ज़रूर मौजूद होगी। और वो? उसे यकीन था कि इन आयोजनों में अवनी से नज़दीकी कम रखना उसके लिए आसान नहीं होगा। क्योंकि अब उसे महसूस होने लगा था—शायद अवनी का दिल भी उसके दिल की धड़कनों का जवाब देने लगा है।

उसका दिल बैठने लगा। उसने गहरी साँस ली और मन ही मन ठान लिया— "एक्ज़ाम तक, बस तीन महीने, संभाल लूँ खुद को। उसके बाद एमबीए के लिए कॉलेज बदल लूँगा। दूर हो जाऊँगा, शायद यही सही होगा हम दोनों के लिए।"

कमरे में एक अजीब सा बोझ भर गया।

अनिल कब का अपने कमरे में जाकर सो चुका था। आरव ने भी बत्ती बुझाई, पर नींद अब भी आँखों से दूर थी। बाहर रात गहरी होती जा रही थी और भीतर दोनों के दिलों में उठते सवालों का शोर बढ़ता ही जा रहा था।

अध्याय 4

अगले दिन से ही आरव और अवनी – दोनों के व्यवहार में परिवर्तन आ गया। कॉलेज कैंपस में अब दोनों आमने-सामने आने से कतराते। बीबीए छटवें सेमेस्टर की क्लास लेते समय अवनी पूरी कोशिश करती कि उसकी नज़रें आरव से न टकराएँ। और आरव? वो भी बस सिर झुकाए कॉपी पर निगाहें गड़ाए रहता।

कॉरिडोर में, लाइब्रेरी में, कैंटीन में – कहीं भी अगर अचानक टकरा भी जाते तो दोनों ऐसे नज़रें फेर लेते जैसे एक-दूसरे का अस्तित्व ही न हो।

लेकिन कहते हैं ना – जिस चीज़ से जितना दूर भागो, वो उतनी ही शिद्दत से आपके करीब आती हैं।

यही हाल था दोनों का।

जितना एक-दूसरे को भुलाने की कोशिश करते, उतनी ही गहराई से यादें मन में उभर आतीं।

उन यादों पर काबू पाना अब उनके बस का न था।

फिर भी, अपनी अपनी सीमाओं को समझते हुए दोनों ने अपने दिल की बात को ना मानने का निश्चय कर लिया।

ऐसे ही एक महीना गुजर गया। इसी बीच कॉलेज में कल्चरल इवेंट और फेयरवेल पार्टी का आयोजन तय हुआ। तैयारियाँ जोरों पर थीं।

अवनी, के साथ और भी कई शिक्षकों को इवेंट की मुख्य जिम्मेदारियाँ दी गईं। अवनी संगीत और डांस में माहिर थी। पूर्वी मैडम नाटकों और स्किट्स की जान थीं। अभिजीत सर गायन और एंकरिंग में बेहतरीन थे। जबकि रजत सर जो एक वरिष्ठ शिक्षक थे, उनका काम था पूरे आयोजन की मॉनिटरिंग करना, वॉलंटियर्स की टीम बनाना और अनुशासन बनाए रखना।

क्लासेस अब कम ही लग रही थीं। आरव ने किसी भी इवेंट में हिस्सा नहीं लिया था, इसलिए वह कॉलेज कम आता। हाँ, लेकिन फेयरवेल की तैयारी उसने पूरी कर रखी थी, क्योंकि स्टेज पर फाइनल ईयर के स्टूडेंट्स को अपनी कॉलेज लाइफ जर्नी साझा करनी थी, और बोलने की कला में तो आरव माहिर था।

अवनी इन दिनों लड़कियों के ग्रुप को डांस सिखा रही थी, किसी को क्लासिकल, किसी को वेस्टर्न।

गायन के प्रतिभागियों को सुधरवाने का काम वह अभिजीत सर के साथ कर रही थी।

एक दिन अवनी लड़कियों को वेस्टर्न डांस सिखा रही थी, तभी वहाँ रजत सर मॉनिटरिंग के बहाने पहुँचे। रजत स्वभाव से ही रंगीले मिज़ाज का आदमी था। अवनी को डांस करते देख उसके मन में गंदी भावनाओं ने जन्म ले लिया। अब वह रोज़-रोज़ जान-बूझकर वहाँ आने लगा, देर तक अवनी को घूरता , अवनी इस बात से पूरी तरह अनजान थी।

एक दिन अनिल जबरदस्ती आरव को कॉलेज ले आया, वो खुद प्ले देखने में लग गया। आरव ऑडिटोरियम की ओर बढ़ा जहाँ डांस प्रैक्टिस हो रही थी। लेकिन तभी उसने अंदर जाने से पहले रजत को एक चपरासी से बात करते सुना --

रजत (हँसते हुए, धीमे स्वर में) - क्या माल है यार ये, इसका स्वाद तो चखना पड़ेगा।"

चपरासी - "सर, पटेगी नहीं ये, मुझे वैसी मैडम नहीं लगती।"

रजत (व्यंग्य से) - "मेरे पास और भी कई रास्ते हैं, बेटा। तू देख, आज ही मैं इस कली का रस निचोड़कर दिखाता हूँ। सुन, तुझे मेरा एक काम करना है, जो माँगेगा दूँगा।"

यह कहते हुए रजत ने चपरासी के कान में कुछ फुसफुसाया,जो आरव सुन न पाया। इसके बाद दोनों वहाँ से निकल गए।

आरव ने झाँककर देखा, अंदर अवनी लड़कियों को डांस सिखा रही थी। आरव को समझने में देर न लगी कि रजत किसके बारे में बात कर रहा था। उसका खून खौल उठा। वह तुरंत अंदर पहुँचा। तेज़ कदमों से आगे बढ़ा, म्यूजिक बंद किया और अवनी का हाथ पकड़कर सीधा बाहर ले आया। पूरा हॉल स्तब्ध रह गया।

अवनी चौककर –"आरव! ये क्या कर रहे हो तुम?"

आरव की आँखों में गुस्से की ज्वाला थी –"तुम ये बेली-वेली नहीं सिखाओगी इन लड़कियों को। जिसे सीखना हो, खुद सीख ले।"

अवनी हैरानी से –"लेकिन क्यों आरव? मुझे ये जिम्मेदारी दी गई है, कॉलेज प्रशासन को मैं क्या जवाब दूँगी?"

आरव का स्वर और तेज़ हो गया – "मुझे नहीं पता। वो तुम संभालो। वैसे भी बड़ा कॉलेज हैं, प्रशासन इस काम के लिए किसी कोरिओग्राफर को रख सकता हैं, लेकिन तुम नहीं सिखाओगी, बस!"

यह कहते-कहते जाने कब वह "आप" से "तुम" पर आ गया, उसे खुद पता नहीं चला जैसे अवनी पर अब उसका पूरा अधिकार हो |

कभी-कभी रिश्तों में ऐसा मोड़ आता है, जहाँ संबोधन अपने आप बदल जाते हैं।

"आप" से "तुम" पर आ जाना सिर्फ़ भाषा का बदलाव नहीं होता, यह उस दूरी के मिटने का संकेत होता है, जो शुरू में आदर या संकोच की वजह से बनी रहती है।

जब कोई व्यक्ति अन्जाने में ही "तुम" कहने लगता है, तो वह दरअसल उस अधिकार को महसूस कर रहा होता है जो बिना माँगे मिला हो। यह अधिकार, प्रेम की सबसे सच्ची अवस्था में जन्म लेता है, जहाँ औपचारिकता पीछे छूट जाती है और अपनापन सहज रूप से सामने आ जाता है। यह परिवर्तन अक्सर सूक्ष्म होता है।

"आप" में सम्मान हो सकता है, लेकिन "तुम" में जो आत्मीयता होती है, वह बताती है कि दिल अब किसी दायरे में नहीं रहना चाहता।

उधर फ्लैट पर लौटकर आरव बेचैन था- "वो रजत न जाने क्या करने वाला है? मुझे ऐसे लौटना नहीं चाहिए था।"

अनिल, संजय और राहुल ने उसकी बेचैनी भाँपी। पूछने पर आरव ने सबकुछ बता दिया।

सुनकर अनिल का भी खून खौल उठा – "यार हम सब उसकी कितनी इज्जत करते थे, और वो? वो तो रसिया निकला, साला! तुमको ऐसे नहीं लौटना था आरव, मुझे तुमने कॉलेज में भी नहीं बताया, चलो जल्दी कॉलेज वापस।"

चारों तुरंत कॉलेज लौटे। शाम ढल चुकी थी। ज़्यादातर स्टाफ और स्टूडेंट्स जा चुके थे। रजत जान-बूझकर अवनी को कुछ-न-कुछ काम देता जा रहा था। अवनी

को न चाहते हुए भी मानना पड़ रहा था, आखिर वह वरिष्ठ शिक्षक था। जब काम खत्म हुआ और अवनी पार्किंग में पहुँची तो उसकी स्कूटी पंक्चर थी।

अब वह सचमुच घबरा गई।शाम गहराने लगी थी, आसपास कोई मैकेनिक नहीं। सभी बसें निकल चुकी थीं। वह कैब बुक करने लगी ही थी कि रजत आ पहुँचा –

रजत (बड़े अपनत्व से) - "अरे अवनी, क्या बात है? कोई प्रॉब्लम?"

अवनी (संकोच में) - "सर, वो मेरी स्कूटी पंक्चर हो गई है। कैब बुक कर रही थी।"

रजत - "अरे, कैब क्यों? इतनी दूर के लिए कैब वाले भी मना कर देंगे, मुझे पता हैं, इतनी शाम को यहाँ कैब नहीं आती, रात हो जाएगी। आओ, मैं छोड़ देता हूँ।"

अवनी (हिचकते हुए) - " न-नहीं सर…आप तकलीफ़ मत कीजिए।"

रजत - "अरे, इसमें तकलीफ़ कैसी? मैं हेड हूँ, सबकी सेफ़्टी मेरी जिम्मेदारी है।"

तभी बारिश शुरू हो गई। अवनी मजबूरन उसकी कार में बैठ गई।

पीछे आरव और उसके दोस्त यह सब छुपकर देख रहे थे।

आरव (दाँत भींचकर) - "अब समझ आया इसका प्लान। इसने पक्का उस चपरासी से कहकर अवनी की स्कूटी खराब करवाई है।"

संजय - "चलो, पीछा करते हैं इस साले का।" दोनों बाइकें कार के पीछे लग गईं।

रास्ते में रजत अवनी से औपचारिक बातें करने लगा – परिवार, पढ़ाई, और बहाने से उसके भीगे शरीर पर गंदी नज़रें डालता।

अचानक कार एक सुनसान जगह रुक गई। अवनी (चौंककर) - "सर, क्या हुआ?"

रजत (नाटक करते हुए) - "पता नहीं कुछ गड़बड़ हो गई। चेक करता हूँ।"

वह बाहर निकला, बोनट खोला, अवनी कार में घबराने लगी।

वह बाहर आई –"सब ठीक है न, सर?"

रजत- "देखता हूँ, मैकेनिक को बुलाता हूँ।"

कुछ देर बाद उसने एक नकली कॉल लगाई – "बस आ रहा है वो, डोंट वरी।"

अवनी का चेहरा सफेद पड़ गया, सोचने लगी - "काश मैंने कैब का ही इंतज़ार कर लिया होता !"

तभी रजत उसके पास आया – "वैसे, डांस बहुत अच्छा करती हो तुम। जब ये पतली सी कमर बलखाती है ना, कसम से दिल के तार हिल जाते हैं।" - इतना कहकर उसने अवनी की कमर पकड़ ली।

अवनी चीख उठी – "सर! ये आप क्या कर रहे हैं? छोड़िए मुझे!"

रजत - "अरे डरो मत, यहाँ किसी को पता नहीं चलेगा। मैं जनता हूँ, तुम्हारी शादीशुदा जिंदगी में बहोत प्रोब्लम्स चल रही हैं, तुम खुश भी नहीं हो, तुम मुझे खुश रखो, मैं तुम्हे खुश रखूँगा, और अगर इस कॉलेज में टिकना है तो जैसा मैं कहूँ वैसा करो। चाहो तो मैनेजमेंट डिपार्टमेंट की हेड बना दूँ।"

अवनी - "मुझे कुछ नहीं बनना! छोड़ो मुझे!"

वह छटपटाती हुई रोने लगी। और तभी पीछे से दो बाइकों पर चार नकाबपोश लड़के आ पहुँचे।

चारो बाइक से उतरे और रजत की और बढ़ने लगे | रजत घबरा गया उसने अवनी को छोड़ा, कुछ कदम पीछे हट गया और घबराकर बोला – "क .क ..कौन हो तुम लोग?"

आरव की आँखों में आग थी। उसने रजत को कॉलर से पकड़कर खींचा – "तेरी हिम्मत कैसे हुई अवनी को हाथ लगाने की? आज तेरा ऐसा हाल करेंगे कि ज़िंदगी में किसी लड़की की तरफ देखने से पहले तेरी रूह काँप जाएगी।"

अवनी समझ गई कि यह आवाज़ आरव की है। आरव ने जब उसे रोते देखा तो उसका गुस्सा और भड़क उठा। चारों ने रजत की बेरहमी से पिटाई की। अवनी किनारे खड़ी रोती रही।

रजत अधमरा हो गया। संजय, अनिल और राहुल रुक गए, लेकिन आरव अब भी रजत को बेतहाशा पिटे जा रहा था |

राहुल ने आरव रोकते हुए कहा - "बस कर भाई , मर जाएगा वो !" लेकिन आरव नहीं रुका। वह घुटनों के बल बैठकर उसे लगातार मारता रहा।

"आज तो जान ले लूँगा इस साले की! इसने छुआ कैसे अवनी को?"

तभी संजय बोला - "अब इसका रुकना मुश्किल हैं? जब इसका गुस्सा हद से ज्यादा बढ़ जाता हैं तब इसे रोकना बहोत मुश्किल हो जाता हैं |"

अवनी यह सब सुन रही थी। वो घबरा गयी, उसे आरव को रोकने का कोई तरीका नहीं सूझ रहा था, वो धीरे से आरव के पास आई। आरव के पीछे घुटने के बल बैठी, उसने आरव की पीठ के पीछे ही से हाथ डालकर उसके सिने पर रख दिए और उसकी पीठ पर सिर टिका दिया – "बस… बस… श्श्श… शांत हो जाओ।“

आरव के हाथों की पकड़ ढीली पड़ गयी | उसने पीछे से आए अवनी के हाथों पर अपने हाथ रख दिए।

इतने में रजत घिसटता हुआ भाग निकला।पीछे खड़े तीनों दोस्त हँस पड़े – “भाग गया साला”

आरव ने अवनी को देखा। उसे सहारा देकर खड़ा किया। अवनी की आँखों में आँसू थे। आरव ने उसके गाल थामकर आँसू पोंछे।

अवनी (भर्राए स्वर में) - "तुम चारों का कैसे शुक्रिया अदा करूँ? मेरे पास शब्द नहीं। आज तुम लोग नहीं आते तो…" इतना कहकर वह फफक पड़ी।

अनिल – "अरे ऐसे कैसे नहीं आते, आरव को समझ आ गया था कि रजत की गंदी निगाहें तुम पर ही हैं। इसलिए हम उसका पीछा कर रहे थे।"

अवनी ने अनिल की तरफ देखा। अनिल (प्रायश्चित भरी निगाहों से) – "मुझे माफ़ कर देना अवनी " (थोड़ा रुककर) "मैडम।"

राहुल (मुस्कुराते हुए) - "देर आए, दुरुस्त आए।" सब हँस पड़े।

आरव बोला – "तुम लोग जाओ। मैं अवनी को घर छोड़ देता हूँ।" वो सब चले गए। अवनी देर तक आरव की आँखों में देखती रही। आरव ने उसका हाथ पकड़ा और उसे बाइक तक लेकर आया। अवनी बिना विरोध के, जैसे खिंचती चली गयी।

पूरे रास्ते वह सोचती रही – "मैं कितनी गलत थी, मैंने समझा था आरव की सोच संकीर्ण है, तभी उसने मुझे वेस्टर्न डांस करने से रोका। लेकिन नहीं उसने रजत की गंदी नज़रें भाँप ली थीं। इसलिए मुझे रोका था।"

सोचते-सोचते उसका फ्लैट आ गया। उसने फिर से धन्यवाद कहा।

आरव बस मुस्कुरा दिया और चला गया। अवनी देर तक उसे जाता देखती रही दिल में अजीब सी हलचल लिए।

अगले दिन कॉलेज का माहौल कुछ अलग ही था। सुबह-सुबह जब रजत सर सिर पर पट्टी, हाथ में पट्टा और चेहरे पर सूजन लिए कॉलेज पहुँचे, तो पूरा स्टाफ हक्का-बक्का रह गया। हर कोई हैरानी से उन्हें घूर रहा था। "क्या हुआ रजत सर? ये कैसी हालत बना ली आपने?", "अरे सर! आपको इतनी चोट कैसे लगी?" जैसे सवालों की बौछार के बीच रजत ने कराह भरते हुए जवाब दिया – "आह्ह, मत पूछो यार, कल रात मेरी कार का भयंकर एक्सीडेंट हो गया। बड़ी मुश्किल से जान बची है।"

इतना कहकर उन्होंने चेहरा ऐसे बनाया जैसे दर्द से बेहाल हों।

उसी समय ऑडिटोरियम में कल्चरल प्रोग्राम की तैयारियों पर चर्चा चल रही थी। जैसे ही रजत सर वहाँ दाखिल हुए, तभी वहाँ अनिल और संजय भी आ गए और उनकी नज़र रजत पर पड़ी । अनिल ने शरारती मुस्कान दबाते हुए ऊँची आवाज़ में कहा – "अरे रजत सर! क्या हो गया आपको? ऐसी हालत कैसे बना ली?!"

रजत ने बोलना जारी रखा –"कुछ मत पूछो बेटा, कल अँधेरे में कार एक पेड़ से टकरा गयी, बहुत बुरी तरह चोट लगी है।"

संजय ने जानबूझकर शक जताते हुए कहा – "लेकिन सर, ये चोटें तो एक्सीडेंट वाली नहीं लग रहीं!"

ये सुनते ही रजत का चेहरा सफ़ेद पद गया। पिछली रात का मंजर उसकी आँखों में कौंध गया। गले में शब्द अटक गए, फिर संभलते हुए बोला – "आ… आ… अरे भाई! एक्सीडेंट ही था, और क्या होगा? दर्द हो रहा हैं, ज्यादा बोल नहीं सकता मैं।"

इतना कहकर वह वहाँ से लंगड़ाता हुआ निकल गया।

जैसे ही वह बाहर गया, अंदर बैठी अवनी, अनिल और संजय अपनी हँसी रोक न पाए। सबके चेहरे पर संतोष की चमक थी। पूर्वी मैडम मुस्कुराते हुए बोलीं –"जो भी हुआ, बिल्कुल सही हुआ। कुछ लोगों को सबक मिलना ही चाहिए।"

अभिजीत सर ने भी हामी भरी –"सच कहा। ऊपरवाला भी सब देखता है। पता नहीं क्यों, मुझे अब भी यकीन नहीं हो रहा कि ये चोट एक्सीडेंट की है।"

अवनी ने अनजाने में अनिल और संजय की तरफ देखा। अनिल ने होंठों पर दबी मुस्कान लिए कहा –

"मुझे तो लगता है किसी ने इसे कुत्ते की तरह धोया है।"

इतना सुनते ही सब ठहाके लगाकर हँस पड़े। पूर्वी मैडम ने गहरी संतुष्टि से कहा – "और जिसने भी इसकी ऐसी हालत की है, उसका बहुत-बहुत धन्यवाद हम सब लेडीज की तरफ से।"

अवनी ने अनिल और संजय की तरफ देखा, उनकी निगाहें मिलीं। उसमें आभार झलक रहा था।

थोड़ी देर बाद संजय अवनी के पास आकर बोला – "अवनी, अपना ध्यान रखना। अगर कभी भी कोई परेशानी हो, तो बेझिझक कॉल करना। हम चारों में से किसी को भी।"

अवनी उसकी गंभीर आँखों से देखती रह गई। उसने हल्की झिझक के साथ पूछा – "आ… आऱव नहीं आया आज?"

संजय मुस्कुरा कर बोला – "नहीं, वो थिएटर गया है। आज उसका एक बहुत ज़रूरी प्ले है, इसलिए हम दोनों ही आए। और एक बात और, तुम मुझे कभी भी, किसी भी समय कॉल कर सकती हो। मुझे अपना भाई समझ सकती हो।"

"भाई…" ये शब्द सुनते ही अवनी की आँखें नम हो गईं। उसका कोई सगा भाई नहीं था, लेकिन आज उसे संजय जैसे दोस्त के रूप में एक सच्चा भाई-सा सहारा मिल गया।

संजय ने उसके सर पर हाथ रखते हुए कहा – "अवनी, आऱव और मैं बचपन से साथ हैं। वो मुझसे बहुत कुछ कहता नहीं, लेकिन मैं सब समझ जाता हूँ। आजकल उसकी आँखों में तुम्हारे लिए डर भी है और चिंता भी। कल रात, जिस तरह से वो रजत को पीट था, और सिर्फ तुम्हारे एक 'बस' कहने पर रुका, इसका मतलब यही हैं अवनी कि वो तुम्हें बेहद पसंद करता है। शायद जितना खुद उसने भी नहीं सोचा होगा। और मुझे यकीन है तुम भी उसे उतना ही चाहती हो।"

अवनी चुपचाप सुनती रही। उसके होठों पर हल्की मुस्कान तैर गई। संजय और अनिल चले गए, लेकिन संजय की बातें पूरे दिन उसके दिल में गूंजती रहीं।

एक तरफ एक सच्चे भाई-सा दोस्त मिला, दूसरी तरफ आऱव के दिल की सच्चाई भी पता चली। उसका मन अजीब सी मिठास से भर गया। शाम को जब वह घर पहुँची, तो मोबाइल में एक मेसेज था –"तुम ठीक हो न, अवनी?" भेजने वाला – आऱव।

मेसेज पढ़ते ही उसकी आखों में नमी उतर गयी, उस मेसेज में झलकती आऱव की चिंता से | उसने फोन स्क्रीन को देखा, होंठों से अनजाने में निकला –"काश… तुम मुझे पहले मिले होते, आऱव…"

और एक नन्हा आँसू उसकी पलकों से लुढ़क कर स्क्रीन पर टपक पड़ा।

कॉलेज का वह दिन आखिरकार आ ही गया था, जिसका इंतज़ार हर स्टूडेंट ने महीनों से किया था – कल्चरल इवेंट और फाइनल ईयर स्टूडेंट्स का फ़ेयरवेल । सुबह से ही पूरा कैंपस एक उत्सव-सा लग रहा था। मुख्य ऑडिटोरियम को बेहद खूबसूरती से सजाया गया था, रंगीन रिबन, फूलों की मालाएँ, गुब्बारे और झिलमिलाती रोशनियों से पूरा हॉल किसी सपनों की दुनिया सा प्रतीत हो रहा था।

स्टेज के बिल्कुल आगे की पंक्ति में मुख्य अतिथि और कॉलेज के वरिष्ठ सदस्य बैठने वाले थे, उनके पीछे फैकल्टी की सीटें और फिर अंत में स्टूडेंट्स के लिए कुर्सियाँ। धीरे-धीरे हॉल में रौनक बढ़ने लगी। लड़कियाँ साड़ियों और पारंपरिक परिधान में किसी अप्सरा से कम नहीं लग रही थीं। कोई इन्डो-वेस्टर्न ड्रेस में सजी थी, तो कोई पारंपरिक अंदाज़ में। लड़के भी ब्लेज़र्स में सज-धज कर मानो किसी दुल्हे की तरह प्रतीत हो रहे थे|

कहीं कोई अपने दोस्तों संग ठहाके लगा रहा था, कोई आखिरी मिनट की रिहर्सल में डूबा था, तो कोई भीड़ में अपनी गर्लफ्रेंड को ढूँढ़ने में मशगूल था।

तभी आरव अनिल के साथ ऑडिटोरियम में दाख़िल हुआ। सफ़ेद ओपन ब्लेज़र के नीचे नीली वी-नेक टी-शर्ट, डेनिम जींस, और चेहरे पर वही सहजता । उसके आते ही उसकी आँखें बस एक चेहरे को खोजने लगीं – अवनी।

स्टेज के किनारे खड़ी अवनी प्रतिभागियों को हिदायतें दे रही थी। उसने लाल और काले रंग का सूट पहना था, खुले बिखरे बालों में कानों में लटकती बड़ी-बड़ी झुमकियाँ, और हल्का-सा मेकअप। उसे देखकर आरव के कदम थम गए, उसकी नज़रें अपलक बस अवनी पर टिक गईं।

प्रोग्राम शुरू हुआ। मंच पर एंकरिंग करने आए स्टूडेंट्स ने चीफ गेस्ट का स्वागत किया, सरस्वती माँ के पूजन और चीफ गेस्ट, डायरेक्टर, प्रिंसिपल के व्याख्यान के बाद सांस्कृतिक प्रस्तुतियाँ शुरू हुईं।

सबसे पहले लड़कियों के एक ग्रुप का क्लासिकल डांस हुआ। आरव उनकी हर स्टेप्स को देख रहा था, मन ही मन यही सोच रहा था कि - “ये जरूर अवनी ने सिखाया होगा।”

उसी समय अवनी की नज़रें भी दर्शकों की भीड़ में आरव को ढूँढ़ने लगीं। आरव के बगल में बैठा अनिल यह देख रहा था। उसने हल्के-से हाथ हिलाकर अवनी को इशारा किया और फिर ऊँगली से आरव की तरफ संकेत किया। अवनी ने जैसे ही आरव को देखा, उसकी नज़र वहीं ठहर गई। और जब अचानक आरव की नज़रें उससे टकराईं, तो उसने झेंपकर नज़रें झुका गई।

एक-एक कर सारे प्रोग्राम्स हुए – डांस, सिंगिंग, प्ले, और प्रत्येक प्रस्तुति के बाद हॉल उत्साह और तालियों से गूंज उठता। अंत में बारी आई फ़ेयरवेल की, फाइनल ईयर के सारे स्टूडेंट्स को मंच पर बुलाया गया। जो भी स्टूडेंटस अपने कॉलेज लाइफ की जर्नी साझा करना चाहता था, उन्हें बोलने का अवसर दिया गया।

कई स्टूडेंट्स ने अपनी बातें कहीं, सबने हँसी-खुशी के पल, संघर्ष, यादें साझा कीं। लेकिन जो वक्तव्य दिल को सबसे गहराई तक छू गया, वह था –आरव का वक्तव्य।

वह माइक पर पहुँचा, गहरी साँस ली, और बोलना शुरू किया –

"कार्यक्रम में उपस्थित मुख्य अतिथि, महाविद्यालय के प्राचार्य, निदेशक, सभी आदरणीय शिक्षकों और मेरे दोस्तों को मेरा नमस्कार। मेरा नाम आरव सिंह है, मैं BBA छटवें सेमेस्टर का स्टूडेंट हूँ।

जब मैंने पहली बार इस कॉलेज में कदम रखा था, तो आँखों में कई सपने थे, दिल में ढेर सारा उत्साह, लेकिन सच कहूँ, एक डर भी था, अनजाने लोगों के बीच, नये माहौल में, क्या मैं खुद को साबित कर पाऊँगा?

आज जब यह सफ़र खत्म हो रहा है, तो महसूस होता है, इस कॉलेज ने मुझे सिर्फ डिग्री नहीं दी, मुझे पहचान दी, मुझे जीना सिखाया, चुनौतियों से लड़ने का साहस और खुद पर भरोसा करना सिखाया।। अब तो दिल में सिर्फ यादें रह जाएगी, दोस्तों के साथ बिताये पलों की, संघर्षों की, और जीवनभर के रिश्तों की।

"यह कॉलेज सिर्फ एक इमारत नहीं रहा, यह मेरा दूसरा घर बन गया। यहाँ की हर दीवार, हर कोना, हर क्लासरूम गवाह है हमारी मेहनत, हमारी सफलताओं, असफलताओं का, और हमारे छोटे-छोटे पलों का, जो हमने यहाँ बिताए। टीचर्स

की डाँट भी यहाँ दुलार जैसी लगी, और दोस्तों का साथ जीवन का सबसे कीमती खज़ाना बन गया।"

"अब जब मैं यहाँ से जा रहा हूँ, तो कदम भारी हैं, लेकिन दिल कृतज्ञता से भरा हुआ है।"

"मुझे यहाँ कुछ ऐसे लोग मिले जिनसे न जाने कब मेरा दिल से रिश्ता जुड़ गया। मैं यह नहीं कहूँगा कि उन सभी ने मुझे कोई सब्जेक्ट सिखाया – कुछ रिश्ते किताबों से नहीं, दिल से बनते हैं।"

“वो कुछ कहें या न कहें, उनके होने से हमेशा यह एहसास होता था कि कोई है जो बिना बोले हमें समझ सकता है। मैं नहीं जानता कि यह रिश्ता क्या नाम रखता है – शिक्षक, मार्गदर्शक, दोस्त या बस एक भावनात्मक सहारा। लेकिन जो भी था, वो सच्चा था, गहरा था, और हमेशा मेरे साथ रहेगा।"

"उनसे मिला अपनापन, वो छोटी-छोटी बातें, और लाइफ लेसंस मैं जीवनभर अपने भीतर संजोकर रखूँगा। शायद उनसे मिलना भी अब नियमित न भी हो, पर जो जुड़ाव है, वह वक्त या दूरी से कभी कम नहीं होगा।"

"धन्यवाद मेरे कॉलेज, इन सुनहरी यादों के लिए। तुम हमेशा मेरी आत्मा का हिस्सा रहोगे। खासतौर पर, उस एक इंसान के लिए, जिसे मैं कभी नहीं भूल पाऊँगा।"

पूरा ऑडिटोरियम तालियों की गड़गड़ाहट से गूँज उठा। कई टीचर और स्टूडेंट्स की आँखें नम थीं। आरव ने धीरे से अवनी की तरफ देखा – वह आँसुओं को पोंछ रही थी। उसका दिल जानता था, वो इंसान, जिसके लिए ये शब्द कहे गए, वो खुद अवनी है।

उस क्षण अवनी को अहसास हुआ, ये सिर्फ फ़ाइनल ईयर का फ़ेयरवेल नहीं, बल्कि आऱव का उससे अलविदा कहने का संकेत था।

कुछ देर बाद मिस्टर एंड मिस फ़ेयरवेल का ऐलान हुआ, मिस्टर फ़ेयरवेल अनिल को चुना गया। हॉल खुशियों से गूँज उठा, सबने उसे बधाई दी। लेकिन आऱव के मन में कोई उत्साह नहीं था। उसके भीतर बस एक दर्द था, अवनी से दूर होने का दर्द।

प्रोग्राम खत्म हुआ, डिनर भी। सब हँसते-बतियाते अपने-अपने रास्ते लौटने लगे। आरव बाहर जाते हुए बार-बार भीड़ में अवनी को खोज रहा था, पर वो कहीं नज़र नहीं आई।

कॉलेज के ग्राउंड के बाहर हल्की-हल्की हवा चल रही थी। रात का सन्नाटा धीरे-धीरे पूरे परिसर को घेर रहा था। ऑडिटोरियम के अंदर अभी भी कुछ लोग थे, पर बाहर लगभग सुनसान था।

आरव और अनिल दोनों गेट के पास खड़े थे। आरव की निगाहें हर पल ऑडिटोरियम के दरवाज़े की ओर उठतीं, पर हर बार खाली लौट आतीं। उसने एक लंबी सांस भरते हुए कहा – "अनिल, मुझे नहीं लगता वो आएगी " उसके शब्दों में निराशा थी ।

अनिल ने उसकी तरफ देखा, कंधे पर हाथ रखा और बोला –

"चल अंदर चल के मिल ले एक बार। अब हम वैसे भी कॉलेज नहीं आ पाएंगे, प्रिपरेशन लीव लग गई है फिर एग्ज़ाम्स। देख भाई, एक बार मिल ले, फिर क्या पता तेरी उनसे मुलाकात हो ना हो। एग्ज़ाम्स के बाद तू तो वैसे भी घर चला जाएगा। एक बार बोल दे ना मिलके, कि तू उससे प्यार करता है।"

आरव ने हल्की सी हंसी हंसने की कोशिश की, पर वो हंसी ज़्यादा देर टिक नहीं पाई। उसने गर्दन झुका ली और बोला –

"अरे नहीं यार, अंदर अभी पूरा स्टाफ होगा, अच्छा नहीं लगेगा। वो ऑकवर्ड फील करेगी। और मैं... मैं उसे अपने दिल की बात बता कर उसे डिस्टर्ब नहीं करना चाहता। वो शादीशुदा है, और उसके मन में मेरे प्रति क्या है, ये भी तो मैं नहीं जानता।"

अनिल ने भौंहें चढ़ाईं– "अरे इसमें जानना कैसा? सबको दिखता है कि वो भी तुझे चाहती है। तुझे उसकी आंखों में दिखाई नहीं देता क्या?"

आरव ने अनिल की ओर देखा, उसकी आंखों में गहरी उदासी थी, फिर बोला –

"सुन अनिल, चाहना, पसंद करना एक अलग बात है। लेकिन हम दोनों में से किसी ने भी अगर ये एक्सेप्ट कर लिया ना, तो हमारी दोनों की ज़िंदगी में मुश्किलें बढ़ जाएंगी। जो आंखों-आंखों में चल रहा है, जो दिल में है, इसे यहीं तक रहने दे तो सही रहेगा। मुझे ऐसा लगता है।"

अनिल ने सिर हिलाया, हल्की सी मुस्कान दी –"तू और तेरे प्रवचन, चल फिर घर, लेट हो रहा है।"

दोनों चुपचाप वहां से चल पड़े। पीछे ऑडिटोरियम की हल्की रोशनी अब धुंधली होती जा रही थी।

उन्हें क्या पता था कि अवनी ऑडिटोरियम की दीवार के पीछे खड़ी थी, आँसू भरी आँखों से बस उसे जाते हुए देख रही थी। उसके कदम आगे बढ़ने की हिम्मत नहीं जुटा पा रहे थे। और उनके जाते ही अवनी भी चुपचाप अपने फ्लैट लौट आई।

अवनी ने भी यही उचित समझा, मर्यादाओं का बोझ, समाज के नियम, परिवार की इज्जत इन सबके आगे वो झुक गयी, भले सारा जीवन वो एक एसे व्यक्ति के साथ गुजार दे जिसका जीवन में होना ना होना उसके लिए एक ही हैं, उसके साथ रहना उसकी मजबूरी हैं, हालाकिं हमारे समाज ने तलाक जैसी सुविधा तो दी हैं, लेकिन उसके साथ मुफ्त में मिलती हैं ढेर सारी बदनामी और समाज के ताने, जिसके डर से लोग इस सुविधा का उपयोग करने से पहले हज़ार बार सोचते हैं | वैसे लड़कों के जीवन और चरित्र पर इतने दाग नहीं लगते, क्युकी लड़के तो हर मायनों में सही हैं, चाहे वो बाहर नौकरी करते हुए दस लड़कियों से सम्बन्ध बना ले - तब भी दोष उसकी पत्नी को जाएगा कि शायद उसकी पत्नी ही अपने पति को सुख नहीं दे पाती , अगर पति शराब पिए तो पत्नी जरुर दुःख देती होगी जिसे दूर करने पति शराब का सहारा लेता हैं , अगर पति रात रात भर बाहर रहे पब / डिस्को जाये तो पत्नी बोरिंग टाइप की होगी , बाहर खाना खाए तो पत्नी को खाना बनाना नहीं आता होगा और अगर इससे भी बढ़कर पत्नी पर हाथ उठा दे, तब तो इस औरत ने ही कुछ एसे कर्म कांड किये होंगे कि ये मार खाकर ही सुधरेगी | हम ये नहीं कहते कि हर बार आदमी ही गलत हैं लेकिन ज्यादातर केस में एक महिला को ही मानसिक और शारीरिक उत्पीडन का सामना करना पड़ता हैं , क्युकि पुरुष वर्ग जानता हैं कि समाज में परिवार की बेईज्जतीं न हो इसीलिए एक स्त्री चुपचाप सब कुछ सहन कर लेगी, और न भी करे तब भी सबसे अधिक बदनामी तो इसी की होगी | लड़की चाहे पढ़ी लिखी हो या न हो दोनों ही स्थिति में लड़कियों पर ही परिवार की इज्जत सँभालने की जिम्मेदारी और दबाव पुरुषों की तुलना में अधिक होता हैं |

उस रात ना तो आऱव को नींद आई और ना ही अवनी को।

बस एक कसक रह गयी दिलों में कि हम एक-दूसरे से अपने दिल की बात कह न पाए, और न ठीक से अलविदा ही कह सके। उनके दिलों में उस रात की खामोशी हमेशा के लिए दर्ज हो चुकी थी।

कुछ ही दिनों में लास्ट सेमेस्टर की परीक्षाएँ थीं, और सभी स्टूडेंट्स अब प्रिपरेशन लीव पर चले गए।

फ़ाइनल एग्ज़ाम्स अब ख़त्म हो चुके थे। कॉलेज की चहल–पहल जैसे थम सी गई थी। हर कोई अपनी अगली मंज़िल की ओर बढ़ने की तैयारी कर रहा था। आरव और संजय भी समर वैकेशंस में लखनऊ निकलने वाले थे। संजय ने होटल से दस दिन की छुट्टी ले ली थी।

लेकिन आरव का मन अशांत था। उसके भीतर बेचैनी की आग लगी हुई थी। वह जानता था कि लखनऊ जाने से पहले अगर अवनी से एक आख़िरी बार मुलाक़ात न हुई, तो शायद उसकी पूरी ज़िंदगी इस अधूरी कसक में बीतेगी।

उधर, अवनी भी यही सोच रही थी कि अब तो फाइनल ईयर की परीक्षाएँ ख़त्म हो गई हैं। आरव का कॉलेज से कोई वास्ता ही नहीं रहा। अब उससे कब और कैसे मुलाक़ात होगी? ये सोचकर उसका दिल बैठ जाता था।

संजय, आरव के दिल की बेचैनी को पढ़ रहा था। "आरव, तुम उससे एक बार मिल लो घर जाने से पहले। हो सके तो साफ़–साफ़ दिल की बात कह दो।"

आरव ने भी सोचा कि यही ठीक रहेगा। बहुत सोचने के बाद उसने अवनी को मैसेज किया— "अवनी "

जैसे ही अवनी ने मैसेज पढ़ा, उसकी धड़कनें तेज़ हो गईं। यही तो पल था जिसका वह कबसे इंतज़ार कर रही थी। कितनी बार उसने खुद मैसेज करने के लिए फ़ोन उठाया था, पर हर बार यही सोचकर वापस रख देती कि न जाने आरव क्या सोचेगा। लेकिन आज, जब आरव की ओर से मैसेज आया, तो उसका दिल खुशी से उछल पड़ा। "कैसे हो आरव? एग्ज़ाम्स कैसे रहे तुम सबके?"

आरव समझ गया कि अवनी मुद्दे की बात टाल रही है। उसने बस छोटा सा जवाब दिया—

"हम्म… ठीक रहे।"

अब अवनी उसके अगले मैसेज का इंतज़ार करने लगी। वह चाहती थी कि पहल आरव ही करे, खुद किसी तरह का उतावलापन नहीं दिखाना चाहती थी। कुछ देर बाद आरव का मैसेज आया—

“मैं तुमसे कुछ कहना चाहता हूँ।”

ये शब्द पढ़कर अवनी की साँसें थम गईं। दिल की धड़कन इतनी तेज़ हो गई मानो सीने से बाहर निकल जाएगी। “हाँ, कहो ना।” – उसने टाइप किया |

“अवनी, मैं तुमसे मिलना चाहता हूँ। क्या तुम मेरे फ़्लैट पर आ सकती हो कॉफ़ी पीने, या बाहर मिलें?”

मैसेज पढ़ते ही अवनी उलझन में पड़ गई। लड़कों के फ़्लैट पर अकेले जाना उसे सही नहीं लगा। और बाहर सार्वजनिक जगह पर मिलना, ये भी मुश्किल। वो सोच में डूब गई कि अब जवाब क्या दे।

कुछ देर जवाब न मिलने पर आरव ने फिर लिखा— “घबराओ मत। फ़्लैट पर मैं अकेला नहीं रहूँगा। तुम्हारा भाई संजय, वो पागल अनिल और राहुल सब होंगे। फील फ्री टू कम।”

ये पढ़कर अवनी को थोड़ी राहत मिली। उसने हामी भर दी।

“परसों मैं लखनऊ जा रहा हूँ। कल शाम को आ सको तो आ जाना।”

अवनी—“ठीक है आरव, मैं कल शाम को आती हूँ।”

आरव— “आओगी ना?”

अवनी—“हाँ, पक्का, प्रॉमिस।”

बातचीत यहीं ख़त्म हो गई। लेकिन दोनों ही अपने–अपने दिल में एक अजीब सी हल्की खुशी महसूस कर रहे थे। आरव को अब चैन आया कि कल वह अवनी से एक आखिरी बार मिल पाएगा। और अवनी के चेहरे पर भी हल्की मुस्कान थी, भले ही थोड़े समय के लिए सही, पर कल उसे आरव के साथ वक्त बिताने का मौका मिलेगा।

लेकिन उसी रात, सब कुछ उलट गया। हिमांशु घर लौट आया। आते ही उसने बिना वजह बखेड़ा खड़ा कर दिया। अवनी ने फिर से उसे घरेलू हिंसा की धमकी दी लेकिन इस बार हिमांशु डरने के बजाय तमतमा उठा। वह गुर्राकर बोला—

"अच्छा? तेरी इतनी हिम्मत? लगा पुलिस को कॉल, अभी, यहीं मेरे सामने लगा।"

अवनी सन्न रह गई। उसकी सारी हिम्मत पस्त हो गई। उसकी आँखों के सामने पापा–मम्मी का चेहरा, और दोनों बहनों की छवि घूमने लगी। अगर उसने पुलिस बुला ली तो समाज में बदनामी उन्हीं की होगी। और इसी डर से उसका गला सूख गया।

हिमांशु ने उसकी खामोशी देखकर और ज़्यादा ज़हर उगला। उसने उसे बेरहमी से पीटना शुरू कर दिया। वो अवनी को तब तक मरता रहा जब तक उसका मन नहीं भर गया। फिर लड़खड़ाता हुआ बेडरूम में जाकर सो गया।

अवनी अधमरी सी कोने में बैठ गई। उसके पूरे जिस्म पर दर्द था, आँखों से आँसू थमने का नाम नहीं ले रहे थे। उसका दिल बार–बार यही कह रहा था—"काश, मैं अभी अपनी ज़िंदगी यहीं खत्म कर दूँ।" लेकिन फिर पापा–मम्मी का ख्याल आते ही वह रुक जाती। सोचती—"मेरे जाने के बाद वो कैसे जी पाएँगे?"

पूरी रात अवनी रोते–रोते गुज़ार गई। अगली सुबह हिमांशु ऐसे बर्ताव कर रहा था जैसे पिछली रात कुछ हुआ ही न हो। वह हँस–बोल रहा था। और अवनी खामोश रहकर अपने कामों में लगी रही। उस दिन वह कॉलेज भी नहीं गई।

लेकिन उसके दिल में लगातार एक ही बात चल रही थी—"मैं आरव से कैसे मिलूँगी? और अगर आरव ने मुझे इस हाल में देख लिया तो? वो हिमांशु को ज़रूर मार डालेगा।"

फिर भी उसने ठान लिया कि चाहे जो हो, वह अपना वादा निभाएगी। शाम को वह ज़रूर जाएगी। शाम ढल रही थी। आरव के लिए अब हर पल काटना मुश्किल हो रहा था। उसकी निगाहें दरवाज़े पर और कान डोरबेल पर टँगे थे। उधर, अवनी ने भी मार्केट जाने का बहाना बना लिया था और निकलने ही वाली थी कि अचानक डोरबेल बजी।

दरवाज़ा हिमांशु ने खोला। सामने उसके दो दोस्त खड़े थे। उन्हें देखकर हिमांशु बोला—

"अवनी, तुम मार्केट कल चली जाना। मेरे दोस्त आए हैं, खाना बनाओ।"

ये सुनते ही अवनी का चेहरा उतर गया। लेकिन वह कोई तमाशा नहीं चाहती थी। चुपचाप किचन की ओर चली गई। खाना बनाते समय उसे बार–बार आरव के शब्द याद आ रहे थे—"आओगी ना?"

सोचते–सोचते उसकी आँखें छलक पड़ीं। बाहर हॉल में हिमांशु और उसके दोस्त शराब पीने लगे। इधर, आरव बेचैनी से इंतज़ार करता रहा। शाम से रात हो गई, लेकिन न तो अवनी आई, न कोई मैसेज, न कॉल।

आखिरकार आरव ने हिम्मत जुटाकर कॉल लगाया। अवनी कॉल उठाने ही वाली थी कि तभी हिमांशु किचन में आकर चीख पड़ा— "कितनी देर लगेगी महारानी? मेरे दोस्तों को भूख लगी है।"

उसने किचन में फ़ोन छोड़ दिया और ड्रॉइंग रूम में जाकर खाना लगाने लगी। उस बीच आरव ने 3–4 बार कॉल किया, लेकिन फ़ोन अवनी के पास नहीं था। खाना परोसकर जब वह वापस किचन आई, तो देखा कि आरव के कई मिस्ड कॉल पड़े थे। उसे अपने आप पर बहुत रोना आया, आरव से किया वादा न निभा पाने का दर्द उसकी आँखों से छलक उठा।

तभी हिमांशु चिल्लाया—"सब्ज़ी ला।"

अवनी घबराकर सब्ज़ी ले आई। परोसते समय उसने देखा कि हिमांशु तो नशे में धुत था, लेकिन उसका एक दोस्त उसे घूर–घूरकर देख रहा था। अवनी के रोंगटे खड़े हो गए। वह बिना कुछ कहे सीधे बेडरूम में चली गई और दरवाज़ा अंदर से बंद कर लिया। वह डर के मारे भगवान से दुआ करने लगी—"हे भगवान, ये लोग जल्दी से यहाँ से चले जाए।"

तभी एक बार फिर डोरबेल बजी। अवनी काँपते कदमों से हॉल में आई और दरवाज़ा खोला। सामने उसके सास–ससुर खड़े थे। उन्हें देखकर अवनी को थोड़ी हिम्मत आई - "अरे मम्मी–पापा, आप! आइए ना अंदर।"

दोनों घर में दाख़िल हुए। अंदर का नज़ारा देखकर उनके होश उड़ गए।

ससुरजी ने हैरानी से पूछा—"बेटा, ये लोग कौन हैं?"

अवनी ने घबराकर कहा—"पापा, ये हिमांशु के दोस्त हैं।"

उनको देखकर हिमांशु के दोस्त घबराकर भाग गए। वो तो वैसे भी नशे में धुत पड़ा था।

सास ने अवनी से पूछा—"बेटा, क्या ये हमेशा ऐसे ही...?"

अवनी की आँखों से आँसू बह निकले। सास ने उसका चेहरा सहलाया तो देखा कि उसके गाल पर चोट के निशान थे। यह देखकर वह सन्न रह गईं उन्होंने काँपते स्वर में पूछा—"अवनी?? क्या ये तुम पर हाथ भी उठाता है?"

अबकी बार अवनी टूट गई। फूट–फूटकर रो पड़ी और सास से लिपट गई।

उसकी हालत देखकर सास–ससुर का कलेजा छलनी हो गया। ससुर गुस्से से काँप उठे और बेटे को कोसने लगे।

अवनी ने खुद को सँभालते हुए कहा— "मम्मी–पापा, आप हाथ–मुँह धो लीजिए। मैं खाना लगाती हूँ।"

ससुर ने रोकते हुए कहा—"नहीं बेटा, परेशान मत हो। हम खाकर आए हैं। हमने सोचा था अचानक आकर तुम दोनों को सरप्राइज़ देंगे, लेकिन यहाँ का हाल देखकर तो हमारा दिल ही बैठ गया।"

सास ने रोते हुए पूछा—"बेटा, ये कब से चल रहा है? और अगर ऐसा था तो हमें बताया क्यों नहीं?"

ससुर बोले —"इसने सोचा होगा कि हम विश्वास नहीं करेंगे आखिरकार हम तो हिमांशु के माँ–बाप हैं, है न?"

अवनी ने रोते हुए कहा—"नहीं पापा, ऐसी बात नहीं है। मैं आप लोगों को परेशान नहीं करना चाहती थी। मुझे हमेशा लगता रहा कि हिमांशु सुधर जाएगा |"

ससुर ने कड़ाई से कहा—"तू जा बेटा, अंदर आराम कर। इसे तो कल मैं देखता हूँ।"

अवनी चुपचाप किचन का बचा हुआ काम निपटाकर अपना फ़ोन उठाकर बेडरूम में चली गई।

अब अपनी ही जिंदगी से उसे नफरत सी होने लगी, कुछ देर तक बिस्तर पर चुपचाप पड़ी रोती रही फिर फ़ोन चेक किया तो अब आरव का कोई कॉल या मैसेज नहीं था। लेकिन संजय का मैसेज पड़ा था—

"अवनी, कहाँ हो तुम? अब तक नहीं आई। आरव नाराज़ हो रहा है। कोई प्रॉब्लम है तो बताओ, मैं आऊँ क्या लेने?"

ये पढ़कर अवनी का दिल भर आया। उसके आँखों से आँसू बह निकले। रात के 11 बज चुके थे। उसने हिम्मत करके आरव को कॉल लगाया। लेकिन आरव गुस्से में था, उसने कॉल नहीं उठाया। अवनी ने दोबारा ट्राई किया तो इस बार कॉल काट दिया गया।

अवनी समझ गई कि आरव उससे बहुत नाराज़ है। उसने तुरंत संजय को कॉल किया।

संजय ने फ़ौरन उठाकर स्पीकर पर डाल दिया— "अवनी, कहाँ थी तुम? न आई, न किसी का कॉल उठाया, न मैसेज रिप्लाई किया। सब ठीक तो है न?"

अवनी बोली—"हाँ संजय, सब ठीक है, बस फ़ोन नहीं देख पाई। मुझे आरव से बात करनी है।"

आरव गुस्से में वहीं बैठा सुन रहा था। वह ज़ोर से बोला— "मुझे नहीं करनी उससे कोई बात! कह दो उसे।"

अवनी समझ गई कि कॉल स्पीकर पर है और आरव सचमुच नाराज़ है। उसका गला भर आया।

वह बोली—"आरव, मैं जानती हूँ तुम बहुत नाराज़ हो। और हो भी क्यों ना? मैंने अपना वादा जो तोड़ा है। मुझे माफ़ कर दो आरव, मैं अपना वादा निभा नहीं पाई।"

उसकी आवाज़ काँप रही थी। आँसुओं से भीगी हुई। तभी अचानक उसके बेडरूम का दरवाज़ा ज़ोरदार आवाज़ के साथ खुला। अवनी ने पलटकर देखा, पीछे हिमांशु खड़ा था। आँखों में खून उतरा हुआ।

वह चीखा—"साली, कुतिया! मुझे वहाँ हॉल में ऐसे ही छोड़कर अन्दर आ गई? टेबल तेरा बाप साफ़ करेगा क्या?"

इतना सुनते ही अवनी ने झट से फ़ोन काट दिया।लेकिन उधर संजय, आरव और बाकी सब फ़ोन पर उसके पति की आवाज़ साफ़–साफ़ सुन चुके थे। सबके पैरों तले ज़मीन खिसक गई।

आरव अब समझ चुका था कि अवनी क्यों नहीं आई। उसका खून खौलने लगा। मन ही मन डर भी था कि कहीं हिमांशु ने अवनी के साथ कुछ ग़लत न कर दिया हो। लेकिन अब वह उसे कॉल भी नहीं कर सकता था।

इधर, हिमांशु की दहाड़ सुनकर उसके माँ–बाप भी अवनी के कमरे में आ गए। हिमांशु अवनी पर हाथ उठाने ही वाला था कि पीछे से उसके पापा ने उसका हाथ कसकर पकड़ लिया हिमांशु पीछे पलटा और अपने माँ–पापा को देखकर चौक गया। उसकी आँखों में अचानक डर और हैरानी तैर गई – "मम्मी, पापा, आप?"

उसके पिता का चेहरा गुस्से से लाल था - "हाँ, हम। और यहाँ आकर पता चला कि तू कितनी घटिया हरकतों पर उतर आया है। तू शराब पीता है, और इस मासूम बच्ची पर हाथ उठाता है? ज़रा भी शर्म नहीं आती तुझे? यही परवरिश और संस्कार दिए थे हमने तुझे?"

हिमांशु जवाब पलटते हुए बोला –"अरे पापा, मम्मी, आप इसकी भोली शक्ल पर मत जाइए। ये बहुत आवारा और बदचलन है। इसीलिए इसे मार–पीटकर कंट्रोल में रखता हूँ।"

ऐसे शब्द सुनकर अवनी की सास का दिमाग़ घूम गया। उनका धैर्य अब टूट चुका था। वे गुस्से से काँपते हुए आगे बढ़ीं और सीधे एक ज़ोरदार तमाचा हिमांशु के गाल पर जड़ दिया - "हाँ, वो तो साफ़ दिख रहा है कि कौन आवारा और बदचलन है। तू घर में दोस्तों को बुलाकर शराब की पार्टी करता है, और एक बार भी नहीं सोचा कि तेरी बीवी अकेली है। कहीं किसी दोस्त की नीयत पलट जाती तो इस बेचारी का क्या होता?"

हिमांशु इस बार एकदम चुप रह गया। उसकी नज़रें झुक गईं।

उसके पिता का दिल जैसे फट पड़ा –"हमने सपने में भी नहीं सोचा था कि हमारी औलाद एक दिन इतना नीचे गिर जाएगी। क्या मुँह दिखाऊँगा मैं अशोकजी को, जब उन्हें पता चलेगा कि उनकी फूल-सी बच्ची को हमारा बेटा रौंद रहा है?"

उनका गुस्सा अब काबू से बाहर हो गया। उन्होंने आवेश में आकर हिमांशु को पीटना शुरू कर दिया। मगर अवनी ने भागकर बीच-बचाव किया, उनके हाथ पकड़ लिए - "नहीं पापा, प्लीज़… छोड़ दीजिए।"

अवनी की सास ने सीधे शब्दों में कहा – "अवनी बेटा, तुम्हें इससे डरने की कोई ज़रूरत नहीं। अगर तुम्हें लगता है कि ये तुम्हारे लायक नहीं है और तुम इसके साथ आगे का जीवन नहीं बिताना चाहती, तो तुम इसे बेझिझक छोड़ सकती हो। हम तुम पर कोई दबाव नहीं डालेंगे। जब अपनी ही औलाद नालायक हो तो हम दूसरों के बच्चों का जीवन उसके साथ जबरदस्ती बाँधकर बर्बाद नहीं कर सकते।"

अवनी स्तब्ध खड़ी रह गई। उसके दिल में जैसे उम्मीद की एक हल्की किरण जगी।

मगर तभी हिमांशु नाटक करने लगा। वह अचानक अवनी के पैरों में गिर पड़ा और गिड़गिड़ाते हुए बोला – "नहीं अवनी, प्लीज़ मुझे माफ़ कर दो। अब मैं तुम्हारे साथ ऐसा कुछ नहीं करूँगा। प्लीज़, प्लीज़ मुझे छोड़कर मत जाना।"

लेकिन उसके आँसुओं में सच्चाई नहीं थी। यह सब मगरमच्छ के आँसू थे। क्योंकि वह जानता था कि अगर अवनी चली गई तो उसका सब कुछ छिन जाएगा – भोपाल का बड़ा फ्लैट, माँ-बाप से दूर मौज-मस्ती की आज़ादी, और नौकरी छूट जाने के बाद अवनी के पैसों से चल रही उसकी अय्याशी। यही सब खोने के डर से वह यह नाटक कर रहा था।

उसके माँ–पापा उसकी सच्चाई पहचान चुके थे। उन्होंने अंतिम चेतावनी दी – "अगर आगे कभी भी हमें तेरी ऐसी हरकतों की खबर मिली तो अवनी को तुझसे आज़ाद तो करवा ही देंगे और हम भी तुझसे रिश्ता तोड़ देंगे।"

हिमांशु ने इस बार चुप रहना ही अपनी भलाई समझी।

अगले दिन आरव और संजय लखनऊ निकलने वाले थे। दोनों प्लेटफॉर्म पर ट्रेन में अपनी सीट पर बैठ चुके थे। पर आरव का मन बहुत बेचैन था। उसके दिल से अवनी की चिंता उतर ही नहीं रही थी। ट्रेन अभी रुकी हुई थी। आरव ने हिम्मत करके अवनी को मैसेज किया –"अवनी, तुम ठीक हो?"

अवनी ने जैसे ही मैसेज पढ़ा, उसके बेचैन दिल को सुकून मिला। उसने तुरंत जवाब दिया –

"आरव, तुम मुझसे नाराज़ तो नहीं हो ना? मैं तुम्हें कॉल करने ही वाली थी, लेकिन मुझे मौक़ा ही नहीं मिला।"

आरव ने लिखा –"मैं समझ सकता हूँ। लेकिन तुम ठीक तो हो ना?"

अवनी का दिल हल्का हो गया –"तुम नाराज़ नहीं हो, तो अब मैं एकदम ठीक हूँ।"

यह पढ़कर आरव के चेहरे पर हल्की-सी मुस्कान तैर गई। उसने फिर पूछा –"उसने तुम्हें हर्ट तो नहीं किया ना?"

अवनी ने झूठ बोल दिया –"नहीं आरव, नहीं किया।"

मगर आरव को विश्वास नहीं हुआ। फोन पर जिस तरह हिमांशु ने अवनी से बात की थी, उसमें ज़रा भी यह नहीं लगा था कि सब कुछ सामान्य है। उसने तुरंत मैसेज किया –"अवनी, अपनी एक सेल्फ़ी भेजो। अभी।"

यह पढ़कर अवनी घबरा गई। पर फिर भी उसने हिम्मत जुटाकर एक सेल्फ़ी भेज दी, ऐसे ऐंगल से जिसमें उसके चेहरे के घाव कम दिखें। मगर तब तक ट्रेन चल पड़ी थी और आरव के मोबाइल का नेटवर्क जा चुका था। वह सेल्फ़ी उसे मिली ही नहीं।

जैसे ही आरव का फ़ोन नेटवर्क में आया, उसने सबसे पहले अवनी की भेजी हुई फोटो डाउनलोड की। फोटो खुलते ही स्क्रीन पर अवनी का मासूम चेहरा उभर आया। आँखों में हल्की नमी थी, होंठों पर अधूरी सी मुस्कान।

आरव का दिल भर आया। उसके होंठों पर भी एक फीकी सी मुस्कान तैर गई। मगर जैसे ही उसने फोटो ज़ूम की, उसका दिल दहल गया। अवनी के गाल पर लाल–नीले निशान साफ़ दिखाई दे रहे थे, जिन्हें वोछिपाने की नाकाम कोशिश कर रही थी।

आरव को समझते देर न लगी कि अवनी ने उससे झूठ कहा था। हिमांशु ने सचमुच उस पर हाथ उठाया था। उसका कलेजा मुँह को आ गया। आँखों से आँसू बह निकले।

संजय ने देखा कि आरव अचानक चुप हो गया है, उसकी आँखें भीगी हैं। उसने हैरानी से पूछा –

"आरव, क्या बात है?"

आरव ने कुछ न कहा। उसने बस फोन उसकी ओर बढ़ा दिया। संजय ने जब अवनी का चेहरा देखा तो उसका भी दिल बैठ गया –"ये भी पता नहीं उस राक्षस को क्यों झेल रही है। अलग क्यों नहीं हो जाती?"

आरव ने गहरी साँस भरते हुए कहा –"संजय इतना आसान नहीं होता किसी लड़की के लिए एक रिश्ता तोड़ देना। वो डरती है – माँ–बाप की इज़्ज़त खोने से, समाज में बदनामी से। और शादी के बाद वो सिर्फ़ पति से ही तो नहीं बँधती, सास, ससुर, देवर, ननद, जेठ - जिठानी, और न जाने कितने रिश्ते उससे जुड़ जाते हैं। एक रिश्ता ख़त्म करना मतलब उन सब रिश्तों की आहुति देना। हो सकता है उनमें से किसी रिश्ते से वो आत्मीयता से जुड़ी हो, और उन्हीं रिश्तों को निभाने के

लिए एक अनचाहा रिश्ता ढो रही हो। हम क्या कह सकते हैं, संजय? एक लड़की न तो आसानी से किसी से जुड़ती है, और जब जुड़ती है तो तन–मन से समर्पित हो जाती है। इतना आसान नहीं होता उसके लिए सबकुछ छोड़ देना।"

संजय ने गुस्से और दुःख से कहा – "हाँ, लेकिन इस रिश्ते में उसे सिवाय दुःख के कुछ मिला भी तो नहीं। न उस आदमी के साथ उसका कोई भविष्य है।"

आरव ने दृढ़ स्वर में कहा – "संजय, अभी हम और तुम बस उसे समझा सकते हैं। मगर फ़ैसला उसे खुद लेना होगा। मज़बूत होकर।"

संजय ने सिर हिलाया – "तुम सही कह रहे हो , आरव। लेकिन उसके लिए बहुत बुरा लग रहा है।"

आरव ने आँखें पोंछते हुए कहा – "लेकिन ट्रेन में बैठे–बैठे मैं और तुम कर भी क्या सकते हैं, संजय? ज़्यादा से ज़्यादा उसे कॉल या मैसेज कर देंगे कि अपना ध्यान रखना, उस आदमी को सहने की ज़रूरत नहीं है कोई सख़्त कदम उठाओ। तुम्हे क्या लगता है, मैंने ये सब उसे नहीं कहा होगा? कहा था। मगर वो बस धमकी देकर रुक गई, अमल नहीं कर पाई। देखो संजय, असल में ऐसा है कि इस बार उसे अपनी मदद खुद ही करनी होगी। अगर वो हमसे ये दर्द छुपाना चाहती है, तो हमें भी अनजान बने रहना होगा ताकि उसके घाव और गहरे न हों।"

संजय को आरव की बात सही लगी। दोनों चुपचाप ट्रेन की खिड़की से बाहर देखने लगे। पटरी पर दौड़ती गाड़ी की गड़गड़ाहट के बीच भी दोनों के दिलों में अवनी के ज़ख़्म ताज़ा–ताज़ा धड़क रहे थे।

अवनी के सास–ससुर कुछ दिन वहीं ठहर गए। वे रोज़ हिमांशु का बर्ताव चुपचाप देखते। पिछले कुछ दिनों से हिमांशु का व्यवहार बदल गया था। न उसने शराब को हाथ लगाया, न ही अवनी पर हाथ उठाया। वह उससे बड़े प्यार और नर्मी से पेश आ रहा था। पर अवनी जान चुकी थी कि यह सब महज़ दिखावा है। उसे भीतर से साफ़ अहसास था कि जैसे ही मम्मी–पापा लौट जाएँगे, हिमांशु अपने असली रूप में वापस आ जाएगा।

हिमांशु के पिता ने यह भी गौर किया कि बेटा पूरे दिन खाली रहता है। कोई काम–धंधा नहीं। एक दिन जब हिमांशु बाहर गया, तो उन्होंने अवनी से पूछा – "अवनी, क्या हिमांशु कोई नौकरी कर रहा है?"

अवनी ने चुपचाप 'ना' में सिर हिला दिया।

सास ने हैरानी से कहा –"लेकिन हम जब भी कॉल करते हैं, वो तो कहता है कि 'मैं ऑफिस में हूँ'।"

अवनी ने सहज भाव से कहा – "एक महीने पहले उन्होंने नौकरी छोड़ दी। वजह बस इतनी थी कि उन्हें रोज़ाना लेट आने पर उनके बॉस टोका–टोकी करते थे। हिमांशु को किसी की रोक–टोक पसंद नहीं है। दूसरी बात ये थी कि उस ऑफिस में हीना नाम की एक लड़की काम करती थी, जो कोलकाता से थी। वो हाल ही में नौकरी छोड़कर वापस कोलकाता चली गई। उसके जाने के बाद वहाँ हिमांशु का मन ही नहीं लग रहा था, वो खुद भी कई दिनों से लापता था।"

उसकी आवाज़ में न कोई गुस्सा था, न ही कोई शिकायत। मानो यह सब उसके लिए साधारण बातें हों।

सास–ससुर दोनों स्तब्ध रह गए।

सास ने दुःखभरे स्वर में कहा –"अवनी?? तुम सब जानती हो, फिर भी तुम्हें कोई फर्क नहीं पड़ता?"

अवनी की आँखें झुक गईं - "मम्मी, मैं अब इन सबकी आदी हो चुकी हूँ। हिमांशु अब तक दस नौकरियाँ बदल चुके हैं, और हर नौकरी में कोई न कोई नई लड़की उनके जीवन में होती है। मुझे अब कोई फर्क नहीं पड़ता। ऐसे जीने की आदत हो गई है मुझे "

ससुर ने गंभीर स्वर में कहा - "आदत नहीं पड़ी है तुम्हें, अवनी| तुम्हारा दम घुटता है इस रिश्ते में, हम जानते हैं। गलती हमारी है। हमें तुम्हें और हिमांशु को यहाँ अकेले भेजना ही नहीं चाहिए था। हमें अंदाज़ा तक नहीं था कि हमारा बेटा यहाँ आकर ऐसी हरकतें करेगा।"

अवनी चुप रही। उसकी चुप्पी में ही हजारों अनकहे दर्द छिपे थे।

सास ने धीरे से पूछा – "अवनी, तुमने कभी अशोक भाईसाहब और मीरा जी से ये सब कहा?"

अवनी ने फिर 'ना' में सिर हिला दिया।

सास की आँखें भर आईं। उन्हें बहू के लिए गहरा दुःख हो रहा था।दो दिन बाद उन्हें लौटना था और अब वे भी समझ चुके थे कि हिमांशु सुधरने वाला नहीं है।

ससुर ने अवनी के सिर पर स्नेह से हाथ फेरा। उनकी आँखें डबडबा उठीं – "अवनी, अगर हमारे जाने के बाद तुम्हें एक पल को भी लगे कि तुम इस निकम्मे आदमी के साथ नहीं रहना चाहती, तो तुम बिना देर किए अपना निर्णय ले लेना। हो सके तो हमें एक बार बता देना। उस नालायक की करतूतों के लिए हम तुम्हारे आगे हाथ जोड़कर माफी माँगते हैं।"

कहते–कहते उनका गला भर्रा गया और आँसू छलक पड़े, सास भी रो पड़ीं।

यह देख अवनी भी बेकाबू होकर रोने लगी। उसकी नज़रें कृतज्ञता से भरी थीं - "आप लोग कैसी बातें कर रहे हैं? ऐसे मेरे आगे हाथ मत जोड़िए, आप लोग बड़े हैं। जो भी हुआ, उसमें आपकी कोई गलती नहीं थी। आप लोग निश्चिंत होकर जाइए। और प्लीज़, मम्मी–पापा से कुछ मत कहिएगा।"

तीनों गले लगकर रो पड़े। कमरे का माहौल करुणा और भावनाओं से भीग गया।

अगले दिन नाश्ते की मेज़ पर बैठे हुए अचानक ही हिमांशु ने अपनी आवाज़ को सँभालते हुए कहा – "मम्मी, पापा, मैंने कोलकाता की एक MNC में अप्लाई किया था। कल रात ही ऑफ़र लेटर मेल पर आया है। पाँच दिन बाद मेरी जॉइनिंग है। इसलिए कल ही निकलना होगा। मैंने आज ही तत्काल रिज़र्वेशन करवा लिया है।"

ये सुनते ही सब थोड़ी देर के लिए चुप रह गए। अवनी की नज़रें बस हिमांशु पर टिकी थीं।

उसे ज़रा भी हैरानी नहीं हुई। उसके दिल ने पहले ही भाँप लिया था कि जहाँ हीना नौकरी कर रही थी, वहीँ हिमांशु ने भी आवेदन किया होगा। अब वे दोनों एक ही शहर, शायद एक ही दफ़्तर, और धीरे-धीरे एक ही छत के नीचे रहने की ओर बढ़ रहे थे।

अवनी की सास ने गहरी साँस लेते हुए पूछा – "और अवनी? उसका क्या होगा? वो यहाँ अकेली रहेगी? उसे अपने साथ नहीं ले जाओगे?"

सवाल सीधा था, लेकिन हिमांशु हड़बड़ा गया। उसके शब्द जैसे अटक-अटक कर बाहर आए - "अरे मम्मी, अभी तो मेरे ही रहने का ठिकाना नहीं है वहाँ। इसे कहाँ अपने साथ दर-बदर लेकर घूमूँगा? पहले मैं जॉइन कर लूँ, थोड़ा सेटल हो जाऊँ, फिर ले जाऊँगा इसे।"

यह सुनते ही अवनी के पापा का चेहरा सख़्त हो गया। उन्होंने अपनी आवाज़ में दृढ़ता लाते हुए कहा – "कोई ज़रूरत नहीं। अवनी अब हमारे साथ जाएगी।"

कमरे में एक पल को सन्नाटा छा गया। सबकी नज़रें अवनी की ओर मुड़ गईं।

अवनी ने बड़ी शांति से, बिना किसी उत्तेजना के कहा –"माफ़ कीजिए पापा, लेकिन मैं यहीं ठीक हूँ। मेरा कॉलेज भी यहीं अच्छे से चल रहा है। मुझे कहीं जाने की ज़रूरत नहीं।"

उसकी आवाज़ में न दर्द था, न ही कोई उम्मीद। बस एक ठंडी-सी स्वीकारोक्ति थी।

सास ने अवनी की ओर देखा, उसकी आँखों में ममता छलक आई – "ठीक है बेटा, जैसा तुम्हें सही लगे।"

और बस, बात वहीं ख़त्म हो गई। ना हिमांशु ने कोई और सफ़ाई दी, और ना अवनी ने कुछ और कहा।

अगले दिन हिमांशु अपना सामान समेटकर कोलकाता चला गया, सास-ससुर भी भारी मन से वापस इंदौर लौट गए। विदा होते समय वे दोनों अवनी के लिए बहुत दुखी थे। सास ने उसे कसकर गले लगाया, और ससुर ने उसके सिर पर हाथ फेरते हुए बस इतना ही कहा – "ख़ुद का ख़्याल रखना बेटा।"

लेकिन अवनी के दिल में अब कोई हलचल नहीं बची थी। ना खुशी, ना दर्द, वो जैसे एक पत्थर बन चुकी थी।

हिमांशु के होने या ना होने से अब उसे कोई फर्क ही नहीं पड़ता था। उसके मन ने जैसे ठान लिया था कि उसके जीवन में जो सबसे बड़ा तूफ़ान आना था, वो आ चुका है। अब चाहे लहरें उठें या समंदर सूख जाए, उसे प्रभावित नहीं कर सकतीं।

जब सब चले गए तो पूरा घर सन्नाटे से भर गया। चार दीवारों के बीच अकेली रह गई अवनी।

कभी तो लगता मानो ये बड़ा-सा फ्लैट उसे घूरता हो, तो कभी लगता कि पूरा शहर ही अजनबी है, और वो उसमें बस एक परछाई बनकर रह गई है।

धीरे-धीरे उसने ख़ुद को फिर से अपने कॉलेज में डुबो दिया।... और कभी-कभी अपनी छोटी-छोटी हॉबीज़ में। किताबों में उसने अपने लिए एक अलग ही संसार बना लिया।

उसके चेहरे पर मुस्कान अब बहुत कम दिखाई देती थी, लेकिन उसके अंदर की चुप्पी अब उसकी सबसे बड़ी साथी बन गई थी।

अध्याय 5

वर्तमान में :-

सुबह हो चुकी थी।परदे से छनकर आती हल्की सुनहरी किरणें कमरे में बिखर रही थीं।आरव अब भी बिस्तर पर बैठा था—वो सारी रात अपने अतीत की यादों में डूबा रहा था।उसे पता ही न चला कि स्मृतियों की कश्ती में बहते-बहते रात से सुबह कैसे हो गई।

उसने करवट लेकर देखा तो अन्विका गहरी नींद में थी।उस मासूम चेहरे पर नींद की शांति थी—जैसे सारी दुनिया की थकान उसके सिरहाने आकर सो गई हो।आरव उठकर उसके पास गया, उसके सिर पर प्यार से हाथ फेरा।कुछ देर तक उसे निहारता रहा, उस पल उसका मन बिल्कुल शांत हो गया। फिर उठकर नहाने चला गया। तैयार होकर जब वो नीचे उतरा, तब तक उसकी माँ टेबल पर नाश्ता लगा चुकी थीं।

माँ – "क्या बात है बेटा? थके-थके से लग रहे हो, नींद नहीं आई क्या?"

आरव– "हाँ माँ, नींद नहीं आई।" माँ ने उसके चेहरे को गौर से देखा। वो चाहकर भी और सवाल नहीं कर पाईं।

माँ – "और अन्वी? अभी तक उठी नहीं? उसे स्कूल नहीं जाना क्या?"

आरव ने हल्की मुस्कान के साथ कहा – "रहने दो ना माँ। छोटी है, चैन से सो रही थी, मन नहीं हुआ जगाने का। मैं उसकी क्लास टीचर को फोन करके बता दूँगा।"

माँ – "ठीक है बेटा।" इतना कहकर आऱव चुपचाप नाश्ता करके ऑफिस चला गया।

जाते-जाते उसने टीचर को फोन कर दिया कि आज अन्विका स्कूल नहीं आएगी। ऑफिस पहुँचा तो हर रोज़ की तरह चुपचाप काम में जुटने की कोशिश की, मगर आज मन किसी और दिशा में भटकता रहा।

काम के बीच में ही अवनी के साथ बिताएं पलों की यादें उसे घेर लेती, और फिर अचानक उस दर्द की, जिसने दोनों को अलग कर दिया। वो अपने आप को जितना संभालता, उतना ही भीतर से बिखरता।

उधर, अवनी भी आज बेचैन-सी थी। कॉलेज से लौटने के बाद उसने देखा, आर्यम का भी मूड अच्छा नहीं है। अवनी – "आर्यम, क्या हुआ? आज तुम बड़े उदास लग रहे हो।"

आर्यम – "मम्मी, आज स्कूल में अन्विका नहीं आई थी, वो मेरी बहन है ना, मैं तो उसी के साथ खेलता हूँ।"

ये सुनते ही अवनी चौक गयी, उसे लगा कहीं अन्विका बीमार तो नहीं हो गई?

उसने झट से फोन उठाया। पहले तो आऱव का नंबर खोजा, फिर कुछ सोचकर सीधे उसकी माँ को फोन लगा दिया – "आंटी नमस्ते ।"

माँ – "हाँ बेटा अवनी, मैं भी सोच रही थी तुम्हें फोन करूँ। वैसे तुमने क्यों फोन किया?"

अवनी – "आंटी, आर्यम बता रहा था कि आज अन्विका स्कूल नहीं आई, सब ठीक तो है ना?"

माँ – "नहीं बेटा, उसे हल्का बुख़ार है। मैंने आऱव को फोन किया था, मगर उसकी एक अर्जेन्ट मीटिंग है वो शाम तक लौटेगा। तब ही अन्विका को डॉक्टर के पास ले जाएगा।"

अवनी का मन नहीं माना , उसने तुरंत कहा – "आंटी, अन्विका को बुख़ार है तो आपने मुझे फोन क्यों नहीं किया? आऱव, जी मेरा मतलब हैं, अगर उसके पापा को देर हो रही है तो मैं और युग आ जाते उसे हॉस्पिटल ले जाने।"

माँ कुछ झिझकीं – "हाँ बेटा, अगर तुम लोग आ सको तो ज़रूर आओ। मैं तो थोड़ी अजीब-सी स्थिति में थी, तुम्हारा भी तो अपना परिवार है। सोचा, तुम्हारी सास इजाज़त देंगी भी या नहीं, इसी झिझक में कॉल नहीं किया।"

अवनि ने बड़ी नर्मी से कहा – "आंटी, ऐसी बातें मत कीजिए। अब हम भी तो आपका ही परिवार हैं। मैं तुरंत आती हूँ।"

उसने सास को बताया, तो उन्होंने भी बिना देर किए जाने की इजाजत दे दी, तब तक युग भी घर आ गया था। आर्यम को समझाकर दोनों आऱव के घर पहुँच गए।

जैसे ही अन्विका ने अवनी को देखा, वो भागकर उसके गले से लिपट गई। अवनी ने उसके माथे को छुआ—तेज़ बुख़ार था। तुरंत युग और अवनी उसे लेकर

हॉस्पिटल पहुँच गए। इधर, आऱव मीटिंग के बाद घर लौटा। जैसे ही अंदर आया, माँ से बोला – "चलो माँ, अन्विका को ले चलते हैं हॉस्पिटल।"

"बेटा, चिंता मत कर। अवनी का फोन आया था। आज अन्विका स्कूल नहीं गई तो उसे चिंता हुई। मैंने जब उसे बताया कि अन्विका को बुख़ार है, तो वो युग के साथ तुरंत आ गई और उसे हॉस्पिटल ले गई। वो लोग बस अभी आते ही होंगे।"

ये सुनकर आऱव को थोड़ी राहत मिली, मगर उसके चेहरे पर हल्का गुस्सा भी तैर गया।

उसने तुरंत युग को कॉल किया – "मिस्टर श्रेष्ठ , आप लोग किस हॉस्पिटल में हैं? मैं भी आता हूँ।"

युग – "अरे मिस्टर आरव , परेशान मत होइए। अन्विका का इलाज हो चुका है। बस थोड़ा वायरल फीवर है, दवाइयाँ ले ली हैं। दो-तीन दिन में ठीक हो जाएगी। हम बस घर पहुँच रहे हैं।"

कुछ ही देर में कार गेट पर आकर रुकी।आऱव भागकर बाहर निकला। अवनी गाड़ी से उतरी, और अन्विका उसके आँचल में लिपटी सो रही थी। आऱव ने उसे लेने की कोशिश की, मगर अन्विका ज़िद में रोने लगी।

आऱव ने ज़बरदस्ती अवनी से उसे छीन लिया और अंदर चला गया। अवनी स्तब्ध-सी खड़ी रह गई। युग को आऱव का यह व्यवहार बिल्कुल पसंद नहीं आया।

अंदर पहुँचकर भी अन्विका रोती रही और बार-बार हाथ बढ़ाकर अवनी की ओर इशारा करती रही।

माँ ने नाराज होते हुए कहा – "आऱव, उसे अवनी के पास ठीक लग रहा हैं, उसे उसके पास ही रहने दो। वो शांत हो जाएगी, फिर ले लेना।"

लेकिन आऱव का स्वर कठोर था – "रहने दो माँ। मेरी बेटी है, मैं संभाल लूँगा। वैसे भी कुछ लोग पहले दूसरों को अपनी आदत डाल देते हैं, और फिर, एक दिन हमेशा के लिए छोड़कर चले जाते हैं। जीवनभर रोने और तड़पने के लिए।"

ये कहकर वो अन्विका को ऊपर ले गया।युग के चेहरे पर नाराज़गी साफ़ थी।

माँ ने धीमे स्वर में कहा – "बेटा, मुझे पता है आपको आऱव के व्यवहार से बुरा लगा होगा। उसकी तरफ़ से मैं माफ़ी माँगती हूँ। जब से रितु चली गई, वो ऐसा ही

हो गया है। वो तो रितु से शादी करना भी नहीं चाहता था क्युकि वो.. वो तो किसी और से प्यार करता था।"

युग ने हैरानी से पूछा –"तो फिर आपने उनकी शादी उसी लड़की से क्यों नहीं कराई?"

माँ की आँखें भर आईं - "क्योंकि, वो लड़की भी उसे छोड़कर चली गई थी।"

अवनी के दिल पर ये वाक्य ठीक वैसे चुभा जैसे किसी ने हथौड़े से चोट कर दी हो। उसकी आँखों में आँसू उमड़ आए, क्युकि ये शब्द पूरी तरह से सही नहीं थे , मगर उसने चुप रहना ही ठीक समझा।

ऊपर से अन्विका की रुलाई लगातार गूँज रही थी।अब अवनी से रहा नहीं गया वो तेज़ क़दमों से ऊपर चली गई। कमरे में पहुँचते ही उसने कठोरता से आऱव से कहा – "मैं जानती हूँ, आपकी नाराज़गी मुझसे है। लेकिन उसका ग़ुस्सा आप इस मासूम बच्ची पर क्यों निकाल रहे हैं? इतनी ज़िद अच्छी नहीं है, वो बीमार है, उसे मेरी ज़रूरत है।"

आऱव इस बार चुप हो गया।उसके पास कोई जवाब नहीं था।अवनी ने अन्विका को अपनी बाँहों में लिया, थपकियाँ दीं, और धीरे-धीरे लोरी गुनगुनाने लगी।उसकी मधुर आवाज़ सुनकर अन्विका की आँखें बंद हो गईं।थोड़ी देर बाद वो गहरी नींद में थी। अवनी उसे सुलाकर उसके बाल सहलाने लगी। आऱव भी चुपचाप आकर अन्विका के पास बैठ गया।

अवनी बिना उसकी ओर देखे बोली –"बच्चों के साथ जबरदस्ती नहीं की जाती आऱव।"

"आऱव।"

ये शब्द सुनकर आऱव का दिल जैसे धड़कना भूल गया।कितने सालों बाद अवनी ने उसका नाम लिया था। उसने आँखों में आँसू लिए उसकी ओर देखा। अवनी ने भी उसकी ओर देखा।

कुछ पल दोनों की नज़रें मिलीं— ना प्यार, ना ग़ुस्सा, ना शिकायत बस एक अनकहा दर्द, एक अधूरी कहानी की खामोशी।

अवनी उठने लगी। आऱव ने अचानक कहा – "मुझे छोड़कर क्यों चली गई थी तुम?"

अवनी के पाँव ठिठक गए। आँखें भर आईं। यही वो सवाल था, जिससे वो हमेशा भागती रही। उसके पास इसका कोई जवाब नहीं था। वो रोते हुए वहाँ से निकल गई।

आऱव जानता था, इस सवाल का कोई जवाब अवनी के पास नहीं है। वो चुपचाप वहीं बैठा रह गया।

नीचे आकर अवनी ने युग से कहा –"युग, घर चलिए, देर हो रही है।"

माँ ने रोका – "बेटा, खाना खाकर जाओ।"

"नहीं आंटी, मम्मी और आर्यम अकेले हैं घर में। हमारा इंतज़ार कर रहे होंगे। हमें अब चलना होगा, नमस्ते।"

अवनी और युग चले गए। और आऱव… खिड़की पर खड़ा रह गया। बस एक बार फिर उसे जाते हुए देखता रहा—जैसे हर बार उसे अपनी ज़िंदगी से जाते हुए देखा था।

घर लौटते समय पूरी राह अवनी खामोश थी। उसकी चुप्पी में एक तूफ़ान दबा हुआ था —"कभी न कभी आरव फिर से उससे यह सवाल ज़रूर करेगा कि वो उसे छोड़कर क्यों चली गई थी, आज तो किसी तरह चुप रहकर निकल आई थी, लेकिन जब आरव उसे अधिकार से जवाब माँगेगा, तब वो क्या करेगी?"

उसका मन बार-बार यही सोचकर काँप जाता था।

युग ने उसकी चुप्पी तोड़ते हुए धीरे से कहा— "अवनी, तुम्हें नहीं लगता आज मिस्टर आरव का व्यवहार थोड़ा रूखा था?"

अवनी ने एक गहरी साँस ली, फिर सहजता से बोली— "हो सकता है, युग। वैसे भी आंटी ने कारण तो बता ही दिया। अब उनके व्यवहार को हम बदल तो नहीं सकते, और न ही उनके अतीत को।"

युग कुछ पल चुप रहा, फिर संकोच से बोला— "पर अवनी, मुझे न जाने क्यों ऐसा लगता है कि, मतलब तुम बुरा मत मानना, लेकिन वो हम दोनों को देखकर ज़्यादा चिढ़ते हैं। शायद हम दोनों को साथ देखकर उन्हें उनका, प्यार याद आ जाता हो।"

अवनी का दिल धक् से रह गया। "कहीं युग को एहसास तो नहीं हो गया कि आरव का अतीत मैं ही हूँ?"

फिर खुद को समझाया— "नहीं, जब मैंने युग को अपनी अतीत के बारे में बताया था, तब मैंने कहीं भी आरव के नाम का ज़िक्र नहीं किया था। उन्हें कैसे पता हो सकता है?"

अवनी ने हल्की हँसी बनाकर कहा—"पता नहीं युग, मैं नहीं जानती।"

घर पहुँचने पर मम्मीजी ने सबसे पहले अन्विका की ख़ैरियत पूछी। अवनी ने उन्हें केवल बुखार और डॉक्टर की बात बताई, लेकिन बाकी कुछ नहीं बताया। वो जानती थी कि अगर मम्मीजी को आरव के व्यवहार की ज़रा भी भनक लग गई तो उनका गुस्सा इतना तेज़ है कि वो शायद आरव के घर जाना आना ही बंद कर दें।

अगली सुबह ही अवनी ने निर्मला आंटी को फोन मिलाया- "नमस्ते आंटी, कैसी हैं? अन्विका की तबीयत अब कैसी है? रात में बुखार तो नहीं आया उसे?"

निर्मला जी हँसकर बोलीं— "नहीं बेटा, तुम्हारी लोरी सुनकर तो वो घोड़े बेचकर सो गई।"

अवनी के होंठों पर भी अनायास मुस्कान आ गई। उसी समय आरव सीढ़ियाँ उतरते हुए आया और बोला— "कौन है माँ?"

निर्मला जी ने सहजता से जवाब दिया— "अवनी है, अन्विका की तबीयत पूछ रही थी।"

फिर फोन पर बोलीं— "और बेटा, तुम बताओ, कल सही समय पर घर पहुँच गए थे ना? सरला बहन कैसी हैं?"

अवनी बोली— "जी आंटी, हम सही समय पर पहुँच गए थे। मम्मीजी भी ठीक हैं। असल में उन्हें अन्विका की बड़ी चिंता थी। वो आज कह रही थीं कि हमें अन्विका को देखने जाना चाहिए।"

निर्मला जी जैसे खिल उठीं— "अरे वाह! ये तो बहुत अच्छी बात है। सब आ जाना। और हाँ, आज का डिनर भी यहीं रहेगा।"

अवनी ने संकोच से कहा— "अरे आंटी, आप बेवजह परेशान मत होइए खाने को लेकर। हम तो बस अन्विका की तबीयत देखने आना चाहते थे।"

निर्मला जी ने बीच में ही बात काट दी— "इसमें परेशानी कैसी? कल ही तो तुम कह रही थी कि अब हम एक परिवार हैं। और आज तुम खुद ही औपचारिक हो

रही हो। मैं नहीं जानती, आज डिनर यहीं है सबका। और हाँ, बताओ तुम्हें क्या पसंद है खाने में? मैं वही बनाऊँगी।"

अवनी हँस पड़ी— "अरे आंटी, आप क्यों परेशान हो रही हैं। आज वैसे भी रविवार है, हम जल्दी आ जाएँगे। मैं खुद डिनर बना दूँगी।"

निर्मला जी ने सख़्त आवाज़ में कहा— "नहीं, ये क्या बात हुई? न्योता मैं दे रही हूँ और खाना तुम बनाओगी? आज रविवार है तो आरव भी घर पर है, आज वही काम करेगा किचन में।"

आरव, जो अब तक खामोश खड़ा था, झुंझलाकर बोला— "मैं नहीं बना रहा किसी के लिए खाना-वाना।"

निर्मला जी ने आँखें तरेरते हुए कहा— "ऐसे कैसे नहीं बनाओगे? बनाना पड़ेगा। ये मेरा आर्डर है।"

आरव मुँह बनाकर चुप हो गया। फोन के उस पार खड़ी अवनी अपनी हँसी रोक न पाई - "अरे आंटी, रहने दीजिए। मैं आकर मदद कर दूँगी।"

निर्मला जी ने स्नेह से कहा— "ठीक है बेटा, तुम मदद कर देना। बस, आज सब साथ होंगे।"

जब अवनी ने निर्मला जी के निमंत्रण की बात युग और मम्मीजी को बताई तो दोनों सहमत हो गए।

लेकिन सबसे ज़्यादा खुश तो आर्यम हुआ।

"येऽऽऽ! हम अन्वी के घर जाएँगे! खूब मस्ती करेंगे! मम्मा, आप हमें ढेर सारी किंडर जॉय दिलाओगी ना?"

अवनी ने प्यार से उसके गाल पर हाथ रखकर कहा—"आर्यम अन्विका बीमार है ना। इस समय तुम दोनों को फ्रूट्स खाने चाहिए।"

आर्यम ने होंठ फुला लिए—"म्म्म, ओके मम्मा।"

घर के सारे काम निपटाकर चारों अन्विका के घर जाने के लिए रवाना हो गए।

अवनी के दिल में हल्की सी बेचैनी थी। शाम के लगभग चार बजे कार अन्विका के घर के सामने आकर रुकी। निर्मला जी ने दरवाज़ा खोला और बड़े स्नेह से उनका स्वागत किया।

चारों सीधे ऊपर बेडरूम की ओर बढ़े, जहाँ अन्विका लेटी हुई थी।अवनी और आर्यम को देखते ही अन्विका की आँखें चमक उठीं, वो बिस्तर से उछलकर लगभग दौड़ती हुई अवनी से लिपट गई।

उसकी मासूम मुस्कान और खुशी की चमक ने पूरे कमरे का वातावरण बदल दिया।

लेकिन इस दृश्य को चुपचाप देख रहे आरव के दिल में जैसे तूफ़ान उठ खड़ा हुआ।

उसे याद आ गया—कभी अवनी भी उसे देखकर ऐसे ही दौड़कर बाँहों में समा जाती थी।

वो खामोश खड़ा था, लेकिन उसके भीतर भावनाओं का समंदर मचल रहा था।

सरला जी ने साथ लाई फलों की टोकरी निर्मला जी को थमाई। निर्मला जी बोलीं—"अरे इसकी क्या ज़रूरत थी, सरला बहन?"

सरला जी मुस्कुराईं—"अरे, ज़रूरत कैसे नहीं थी? ये सब तो उस नन्ही परी के लिए है।"

दोनों औरतों की आँखों में अपनापन छलक आया। उधर दोनों बच्चे कमरे में धमाचौकड़ी मचाने लगे।सब लोग नीचे ड्रॉइंग रूम में आकर सोफ़े पर बैठ गए।

निर्मला जी बोलीं— "सच कहूँ सरला बहन, आप लोगों के साथ एक गहरा रिश्ता जुड़ गया है। पहले तो मैं यही सोचती थी कि भला इस अनजान शहर में हमारा कौन है? हम अकेले सब कैसे मैनेज करेंगे? पहले तो आरव की बुआ यही रहती थीं, लेकिन उनके दोनों बेटों की नौकरी बाहर लग गयी , शादी-ब्याह के बाद वो अपनी पत्नियों को भी अपने साथ ले गए। आरव की बुआ और फूफाजी रिटायर होकर अपने बच्चों के पास चली गए । अब बस आरव के 2-3 दोस्त ही यहाँ आते-जाते हैं। लेकिन कल तो ऐसी स्थिति हो गई कि उन दोस्तों से भी संपर्क नहीं हो पाया।"

सरला जी ने सहमति में सिर हिलाया— "हाँ निर्मला जी, सच कह रही हैं आप। अन्विका और आर्यम ने हमें जैसे एक परिवार बना दिया है। अन्विका की चंचल बातें मुझे भी बहुत भाती हैं। बड़ी शैतान है ये। और देखिए आर्यम को—कैसे उसका ख्याल रखता है।"

फिर प्यार से बोलीं— "अब उसके भी तो कोई भाई-बहन नहीं है, लेकिन इन दोनों को देखकर कौन कहेगा कि ये अलग-अलग माँ-बाप के बच्चे हैं?"

सबकी नज़र उधर गई— आर्यम छोटे-छोटे टुकड़े करके अन्विका को केला खिला रहा था। पूरा कमरा हँसी से भर गया। लेकिन अवनी के दिल में एक अजीब सी बेचैनी थी। वो सबके बीच होते हुए भी कहीं दूर खोई हुई थी।

तभी निर्मला जी ने अचानक सवाल कर डाला— "अवनी, अब तो आर्यम बड़ा हो गया। तुम दूसरा बच्चा क्यों नहीं प्लान करती? देखो, उसे भाई-बहन की कितनी ज़रूरत है।"

कमरे में जैसे सन्नाटा सा छा गया। अवनी और युग ने एक-दूसरे की तरफ देखा। युग की आँखें झुक गईं, वो उदास होकर नज़रें फेर बैठा। आरव बिना कुछ कहे वहाँ से उठकर चला गया।

अवनी ने दिल कड़ा करके कहा— "नहीं आंटी, हमारा एक ही बच्चा ठीक है। हम इसकी ही परवरिश अच्छे से करना चाहते हैं।"

निर्मला जी ने अवनी की आवाज़ में छुपा दर्द महसूस किया और आगे इस विषय पर कुछ कहना उचित नहीं समझा। तभी दरवाज़े की घंटी बजी।

आरव ने जाकर दरवाज़ा खोला। सामने संजय खड़ा था—हाथों में ढेर सारे फल, चॉकलेटस और मिठाइयाँ लिए।

आरव की आँखों में चमक आ गई। "अरे संजय!" - कहकर उसने उसे गले से लगा लिया।

संजय अंदर आया। लेकिन जैसे ही उसकी नज़र अवनी और युग पर पड़ी, वो कुछ क्षणों के लिए स्तब्ध रह गया। उधर दोनों बच्चों की खुशी का ठिकाना न था।

अन्विका दौड़कर उससे लिपट गई और हँसते हुए बोली— "चाचा!"

लेकिन उसी समय आर्यम भी भागकर आया और ज़ोर से बोला— "मामा!"

और उसकी गर्दन में बाँहें डाल दीं।

आर्यम के मुँह से संजय के लिए “मामा” सुनकर आरव भी चौंक गया। अवनी की साँसें थम सी गईं। लेकिन सबसे ज़्यादा सदमे में तो आरव था। उसकी आँखें फैल गईं— " आर्यम? संजय को मामा कह रहा है? मतलब, आर्यम संजय को जानता है?"

उसके पैरों तले जैसे ज़मीन खिसक गई। दिल में अनगिनत सवाल गूँज उठे।

संजय ने भीतर आते ही सब बड़े-बुज़ुर्गों को आदरपूर्वक नमस्ते किया और उनके पैर छुए, फिर मुस्कुराते हुए युग से भी हाथ मिलाया और सीधे अवनी के पास जाकर उसे भाई की तरह गले से लगा लिया।

सरला जी ने स्नेह से पूछा—"कैसे हो बेटा? बहुत दिनों से घर क्यों नहीं आए? आर्यम तो तुम्हें बहुत याद करता है।"

संजय ने हल्की सी थकानभरी मुस्कान दी— "क्या करूँ आंटी, काम इतना बढ़ गया है कि छुट्टियाँ मिल ही नहीं पा रही हैं।"

आरव ये सब चुपचाप देख रहा था। उसके भीतर बेचैनी बढ़ती जा रही थी— "मतलब, संजय का अवनी के घर आना-जाना है? और ये बात उसने मुझसे छुपाई?"

निर्मला जी बोलीं— "कल मैंने तुम्हें बहुत कॉल किए थे संजय। अन्विका की हालत बहुत बिगड़ गई थी। लेकिन तुम्हारा नंबर ही नहीं लग पा रहा था। उसी वक़्त अवनी का कॉल आया। वो और युग ही अन्विका को हॉस्पिटल ले गए थे।"

संजय ने गहरी साँस ली और अफ़सोस जताते हुए कहा— "सॉरी आंटी, कल बारिश की वजह से नेटवर्क में बहुत दिक़्क़त थी। रात को जब आपके मिस्ड कॉल्स देखे तो मैंने तुरंत आरव को कॉल बैक किया। तभी पता चला कि मेरी परी बिमार है। बस, इसलिए आज छुट्टी लेकर भागा-भागा आ गया। लेकिन मुझे क्या पता था यहाँ हमारा आर्यम, द सुपरहीरो, भी है।"

ये कहते ही वो बच्चों की ओर मुड़ा और उन्हें ढेर सारी चॉकलेट्स थमाने लगा। दोनों बच्चे खिलखिलाकर हँस पड़े।

अवनी ने उठते हुए कहा—"आंटी, मैं डिनर की तैयारी करती हूँ, आप लोग बातें कीजिए।"

निर्मला जी भी उठ खड़ी हुईं—"हाँ, मैं भी चलती हूँ साथ।"

संजय ने तुरंत रोक लिया—"अरे आंटी, आप क्यों परेशान होंगी? हम भाई-बहन मिलकर सब संभाल लेंगे।"

युग भी बोल पड़ा—"मैं भी साथ चलता हूँ।"

अवनी ने उसे रोक दिया— “नहीं युग, आप मत आइए। आपको वैसे ही छौक लगाने से तकलीफ़ होती है। आपकी तबीयत फिर बिगड़ जाएगी। आप बच्चों के पास ही बैठिए।”

युग ने चुपचाप ‘ह्म्म्म, ठीक है’ कह दिया और बच्चों के साथ खेलने लग गया।

लेकिन आरव, अब भी सन्न था।

इधर किचन में पहुँचते ही संजय ने हैरानी से पूछा— “अवनी! तुम यहाँ? आरव के घर? और ये आंटी, वो तो तुमसे बहुत प्यार से बात कर रही हैं। और आरव? उसे कैसे फेस कर पा रही हो तुम?”

अवनी ने गहरी साँस ली और नज़रें झुका लीं। उसने धीरे-धीरे सबकुछ बता दिया— स्कूल से लेकर अब तक की पूरी कहानी। संजय अवाक रह गया।

उसकी आँखें भर आईं—“अवनी, किस्मत का खेल देखो। जिनकी वजह से ये सब हुआ, उन्हें पता ही नहीं कि तुम वही लड़की हो। तुम आरव से दूर जाना चाहती थीं, और आज किस्मत ने तुम्हें फिर से उसके सामने खड़ा कर दिया। और आर्यम…”

अवनी ने बीच में ही उसकी बात काट दी। उसकी आँखें नम हो उठीं—“जाने दो ना संजय। अब जो हो चुका है उसे बदल तो नहीं सकते।”

संजय चुप हो गया। दोनों बिना कुछ और कहे खाने की तैयारी में जुट गए। तभी अचानक दरवाज़े पर हल्की सी आहट हुई। आरव किचन में आ चुका था। उसकी आँखें सीधे संजय पर टिकी थीं।

उसने ठंडे स्वर में कहा— “संजय, बाहर आओ। मुझे तुमसे कुछ बात करनी है।” और फिर उसकी नज़र एक पल के लिए अवनी पर ठहर गई।

अवनी ने एक बार हल्का सा पलटकर पीछे देखा और वापस कम में लग गयी, अवनी पूरी तल्लीनता से खाना बना रही थी। बालों की लटें बार-बार चेहरे पर आ रही थीं, जिन्हें वो अनजाने में हाथ से पीछे करती जा रही थी। गैस पर रखी डिशेस को एक-एक करके चेक कर रही थी। माथे पर पसीने की बूँदें चमक रही थीं, और उसे इस बात की परवाह तक नहीं थी।

आरव की आँखों के सामने वही पुराने दिन ताज़ा हो उठे— जब वो चुपचाप उसके पास खड़ा होकर उसका पसीना पोंछ देता था, धीरे से फूँक मारकर उसे ठंडी हवा पहुँचाता था, और अवनी मुस्कुराकर उसे देखती थी,आज भी वही लटें चेहरे पर

थीं, वही पसीना माथे पर, लेकिन अब आरव के पास वो हक़ नहीं था। वो सिर्फ़ देख सकता था, छू नहीं सकता।

उसने चुपचाप पंखा ऑन कर दिया। अवनी ने एक पल ऊपर पंखे की ओर देखा, फिर हल्के से पलटी, उसने देखा—आरव और संजय बाहर की ओर जा रहे थे। उसकी रूह काँप सी गई "आरव और संजय? कहीं संजय आरव को सच न बता दे ?"

आरव तेज़ क़दमों से चलता हुआ संजय को सीधे अपने कमरे में ले गया। दरवाज़ा बंद होते ही उसके भीतर का ज्वालामुखी फट पड़ा।

उसने भारी आवाज़ में पूछा— "संजय?? अवनी से तुम्हारी बातें होती थीं? तुम जानते थे उसकी शादी हो चुकी है, उसका एक बेटा है, और तुम उसके घर आते-जाते रहे हो? उसकी सास, उसका पति—सब तुम्हें जानते हैं? यहाँ तक कि आर्यम भी तुम्हें जानता है? और ये सब बातें तुमने मुझसे छिपाईं? क्यों संजय?"

उसकी आँखों में सवाल नहीं, इल्ज़ाम थे। उसके लहजे में गुस्सा नहीं, दर्द था।

संजय ने धीरे से सिर झुका लिया। उसकी आवाज़ में अफसोस था— "आरव, तुम जानते हो, हम अवनी को हमेशा बहन मानते आए हैं।जब वो तुम्हारी ज़िंदगी से दूर गई, हमें कुछ भी पता नहीं था। लेकिन, जब तुम लखनऊ चले गए थे, एक दिन उसका मेसेज आया। वो भी यहीं, भोपाल में थी, हमने मिलने की इच्छा जताई तो उसने खुद हमें अपने घर बुलाया, अपनी फैमिली से मिलवाया। तब उसके ससुरजी भी थे, और आर्यम तो बहुत छोटा था, आरव, उसने हमें कसम दी थी कि ये सब बातें तुम्हें न बताएं।"

आरव की आँखों में दर्द की चिंगारी और तेज़ हो गई - "और उसके लिए तुम अपने दोस्त को धोखा देने से भी पीछे नहीं हटे?"

संजय ने तुरंत कहा— "धोखा नहीं दिया आरव! सोचो, अगर बता भी देते तो तुम क्या कर लेते? उसकी भी शादी हो चुकी थी, तुम्हारी भी। और देखो, किस्मत में लिखा था तो तुम दोनों फिर से मिले ना, आमने-सामने आ ही गए।"

आरव ने तंज कसते हुए कहा— "इसे तुम मिलना कहते हो संजय?"

संजय ने थकी आवाज़ में कहा—"आरव! अब जाने भी दो।अवनी की अपनी ज़िंदगी है और अब इन बातों को उखाड़ने से क्या फायदा?"

आरव कुछ पल उसे देखता रहा। उसकी आँखों में एक तूफ़ान था। फिर धीमे स्वर में बोला—"तुम जानते हो, जब मैं उसे किसी और के साथ देखता हूँ, अपनी आँखों के सामने, तो मेरे दिल पर क्या बीतती होगी?"

उसके गले में रुलाई अटक गई। संजय ने आगे बढ़कर उसके कंधे पर हाथ रखा। उसकी आवाज़ में सच्ची हमदर्दी थी— "हम समझ सकते हैं आरव! तुम्हें कैसा लग रहा होगा। लेकिन ये सब कुछ किस्मत का खेल है। युग अवनी की बहुत परवाह करता है। और युग के बारे में, बहुत कुछ है जो तुम नहीं जानते।"

आरव की आँखों में गुस्से और दर्द का मिश्रण था। उसने कटु स्वर में कहा— "ओह, तो अब तुम मेरे दोस्त कम और अवनी के भाई ज़्यादा हो गए हो!"

संजय हतप्रभ रह गया। उसने शांत स्वर में कहा— "नहीं आरव, तुम ग़लत सोच रहे हो। देखो, तुम्हें बहुत कुछ नहीं पता। और शायद इसीलिए तुम ऐसा कह रहे हो।"

आरव ने दोनों हाथ फैला दिए, जैसे हार मान ली हो—"तो बताओ ना! क्यों कोई मुझसे कुछ नहीं कहता?

कोई बिना बताए छोड़कर चला जाता है। कोई सब जानकर भी मुझसे छुपा कर रखता है। मैं आखिर करूँ तो क्या करूँ, संजय?"

संजय की आँखें भी भर आईं। उसने गहरी साँस लेकर कहा— "समय आने पर सब बता देंगे, आरव।

अभी बेवजह अपना दिल मत दुखाओ।"

और तभी, आरव टूट गया। उसकी आँखों से आँसू फूट पड़े। वो सिसकते हुए संजय के गले लग गया।

"मैं बहुत अकेला पड़ गया हूँ संजय। समझ नहीं आता कैसे जियूं, उसने तो अपनी ज़िंदगी की राह चुन ली, लेकिन मैं? मैं कहाँ जाऊं?"

उसकी आवाज़ में इतना दर्द था कि दीवारें भी पिघल जातीं। संजय के पास कहने को कुछ नहीं था।

वो सब जानता था—अवनी की चुनी हुई राहों में भी सिर्फ़ काँटे ही बिछे थे। लेकिन ये सच अभी आरव को बताना, सही नहीं था।

उसने चुपचाप आरव की पीठ सहलाई। उसके आँसू अपने कंधे पर बहने दिए। और अपने दोस्त की टूटी हुई आत्मा को बस अपने कंधे पर सहारा देकर सहलाता रहा। कमरे में कोई आवाज़ नहीं थी, बस आरव के टूटे दिल की सिसकियाँ और संजय की बेबस चुप्पी थी।

संजय ने देर तक समझाने-बुझाने के बाद आरव को कमरे से नीचे लाया। आरव की आँखें अब भी लाल थीं, पर उसने अपने चेहरे पर चुप्पी ओढ़ ली थी। नीचे, अवनी डाइनिंग टेबल सजा रही थी। प्लेटों की खनक और खाने की महक पूरे हॉल में फैल रही थी। संजय सीधे अवनी के पास पहुँचा और चुपचाप उसकी मदद करने लगा।

अवनी ने झुककर उसकी ओर देखा। धीरे से बोली— "संजय, क्या हुआ?"

संजय ने एक गहरी साँस लेकर उत्तर दिया—"कुछ नहीं अवनी, बस इतना जान लो कि तुम्हारे जाने के दर्द से आरव आज तक उबर नहीं पाया। और जब वो तुम्हें युग के साथ देखता है तो उसे और भी ज़्यादा तकलीफ़ होती है।"

अवनी की पलकों में नमी तैर गई। उसने धीमी आवाज़ में कहा—"संजय, मैं कर भी क्या सकती हूँ?

किस्मत ने हमें ऐसे मोड़ पर ला खड़ा किया है, जहाँ चाहकर भी हम न तो एक-दूसरे का सामना कर पा रहे हैं और न ही मुँह फेर पा रहे हैं। उसका दर्द, उसकी तकलीफ़, सब कुछ मुझे दिखता है संजय।

लेकिन मैं कुछ कर नहीं सकती।और ऊपर से युग की तबीयत, वो भी आजकल ठीक नहीं रहती।"

संजय ने गंभीरता से पूछा—"अगला अपॉइंटमेंट कब है डॉक्टर का ?"

"दस दिन बाद। लेकिन युग तो अब मानता ही नहीं। वो जैसे हार मान चुका है..." – अवनि ने कहा |

संजय ने उसके कंधे पर भरोसे से हाथ रखा— "डोंट वरी, सब ठीक होगा। तुम हो न युग के साथ, वही उसकी सबसे बड़ी ताक़त हैं।"

दोनों ने एक फीकी-सी मुस्कान साझा की और तब तक टेबल सजकर तैयार हो चुकी थी। संजय ने सबको बुलाया। सब लोग आकर बैठ गए। आरव चुपचाप युग के पास जाकर बैठ गया।

खाना देखकर सरला जी ने उत्साह से कहा— “वाह! खाने की खुशबू तो कमाल की है! संजय, तुम्हारे हाथों में तो ग़ज़ब का जादू है।” फिर निर्मला जी की ओर मुड़ते हुए बोलीं— “निर्मला जी, आपको पता है, जब संजय रक्षा-बंधन पर हमारे घर आता है तो जिद करके खुद खाना बनाता है। और इतना लज़ीज़ बनाता है कि हम तो बस उंगलियाँ चाटते रह जाते हैं।”

निर्मला जी मुस्कुराकर बोलीं—“अरे सरला बहन, हम तो कबसे इसके हाथ का स्वाद लेते आ रहे हैं।

संजय की फैमिली लखनऊ में हमारी पड़ोसी थी, जब ये छोटा था और हम इसके घर जाते, तो ये ज़िद करके खुद चाय बनाता। और यक़ीन मानिए, उस छोटी-सी उम्र में भी इसके हाथ की चाय लाजवाब होती थी।किचन का शौक तो इसे बचपन से ही था, और देखो , उसी को इसने अपना पेशा बना लिया।”

संजय ने हँसते हुए टोक दिया— “अरे नहीं, आज तो ज़्यादातर मेहनत अवनी ने ही की है। मैंने तो बस उसकी थोड़ी मदद की।”

अवनी ने हल्की-सी मुस्कान से उसकी ओर देखा। तभी युग ने सवाल किया— “संजय, तुम मिस्टर आरव को पहले से जानते हो?”

संजय ने सहजता से जवाब दिया— “जी, हम बचपन के दोस्त हैं। और साथ ही भोपाल आए थे।” और गलती से बोल पडा - “ हम एक ही कॉलेज में थे “

युग ने आश्चर्य से कहा— “लेकिन कभी तुमने इनका ज़िक्र नहीं किया। और तुम तो अवनी के कॉलेज में भी थे। तो अवनी, तुम भी मिस्टर आरव को जानती होगी, है ना? कभी मिली नहीं उनसे?”

इतना सुनते ही अवनी का चेहरा पीला पड़ गया। उसके माथे पर पसीना छलक आया। उसकी ज़ुबान लड़खड़ाने लगी—“न… नहीं… वो… मैं… नहीं…”

झूठ उसके गले से निकल नहीं रहा था, और सच वो कह नहीं सकती थी। तभी आरव ने कठोर आवाज़ में बात संभाली— “मिस्टर श्रेष्ठ, दरअसल मैं नॉन-अटेंडर था। मैं थिएटर करता था। कॉलेज में कभी-कभार ही जाता था—वो भी सिर्फ फीस जमा करने या फॉर्म सब्मिट करने। क्लास में बैठना, मेरा काम नहीं था। और जहाँ तक मिसेज़ श्रेष्ठ का सवाल है, उनसे मैं कभी नहीं मिला, कभी नहीं।”

आरव के उन कठोर शब्दों ने अवनी के दिल को चीर दिया, जैसे वो साफ़ कह रहा हो— "अवनी? कौन अवनी? मैं तुम्हें जानता ही नहीं।"

युग ने बात आगे बढ़ाई— "ओह, अच्छा? आप थिएटर करते थे? वाह, क्या बात है, बहुत बढ़िया।

फिर छोड़ क्यों दिया?"

आरव ने आँखें नीची कर लीं। उसकी आवाज़ में बुझा हुआ दर्द था— "थिएटर ही क्या, बहुत कुछ छोड़ दिया मैंने। अब तो बस, ज़िंदगी ही रह गई है।"

युग को उसकी बातें रहस्यमयी लगीं। उसने मुस्कुराकर पूछा— "मिस्टर आरव, आप हमेशा ऐसी उखड़ी-उखड़ी बातें क्यों करते हैं? इतने मिस्टिरियस से लगते हैं।"

आरव ने उसकी ओर देखते हुए ठंडे स्वर में कहा— "ऐसा ही हूँ मैं।"

संजय ने तुरंत माहौल बदलने के लिए बीच में कहा— "अरे आप लोग रायता लीजिए न! बहुत मज़ेदार बना है।"

युग ने मुस्कुराकर प्लेट बढ़ाई— "ओह वाओ! रायता, मेरा फ़ेवरिट। थैंक्स, संजय।"

और इसी तरह विषय बदल गया। डिनर के बाद संजय जाने लगा। जाते-जाते सबसे गले मिला।

युग से मिलते हुए उसने धीमे स्वर में कहा— "युग, अपना ध्यान रखना , इस बार भी मैं तुम्हारे साथ हॉस्पिटल चलूँगा|"

युग ने आँखों में कृतज्ञता लिए कहा— "थैंक्स, संजय।सच कहूँ तो तुम्हारे होने से थोड़ा सुकून रहता है।"

आरव चुपचाप खड़ा सब सुन रहा था। उसे ये बातचीत अजीब लगी। समझ नहीं पाया— "आख़िर संजय और युग ये किस बारे में बात कर रहे है?" उसने सोचा— "संजय से बाद में पूछूँगा।"

फिर उसने संजय को गले लगाया और विदा किया। इसके बाद सरला जी भी जाने लगीं। जाते-जाते अन्विका एकदम अवनी से लिपट गई। उसकी मासूम आँखों में आँसू थे - "आप मत जाओ ना … यहीं रुक जाओ, यहीं सो जाओ ना।"

अवनी ने उसके बालों को सहलाते हुए कहा—"नहीं बेटा, अब हमें जाना होगा। हम फिर आ जाएँगे।

तुम अभी दादी और पापा के पास सो जाओ।"

अन्विका ने होंठ सिकोड़कर कहा—“हम्म, लेकिन मुझे आप सबकी बहुत याद आएगी।”

सरला जी ने उसके गाल पर चुमते हुए कहा— “अरे गुड़िया रानी, याद तो हमें भी तुम्हारी बहुत आएगी।

लेकिन क्या करें, हमारा घर तो अलग है न।”

अन्विका ने थोड़ी देर सोचा, फिर भोलेपन से बोली—“हम्म, ओके। लेकिन आप लोग फिर से आना हमारे घर।”

सब हँस पड़े। हँसी के उस शोर में भी अवनी और आरव की नज़रें एक पल के लिए फिर टकराईं।

उन नज़रों में हज़ार अनकहे सवाल थे।आरव की आँखें साफ़ कह रही थीं—“क्यों छोड़ गई थी मुझे?”

अवनी ने नज़रें फेर लीं।उसकी पलकों पर आँसू की नमी थी। और फिर… वो सब अपने घर चले गए। आरव हर बार की तरह …..बस वहीं खड़ा… अवनी को जाते हुए देखता रह गया।

अध्याय 6

घर लौटने तक रात पूरी तरह ढल चुकी थी। हवाओं में हल्की सी नमी और थकान का बोझ पसरा था।

जैसे ही दरवाज़ा खुला, आर्यम थके पंखों वाला नन्हा पंछी बनकर सीधा अपने कमरे की ओर भागा और बिस्तर पर गिरते ही गहरी नींद में डूब गया।सरलाजी भी अपनी दवाइयाँ लेकर बिस्तर पर चली गईं।

कमरे में अब सिर्फ़ अवनी और युग बचे थे। युग लेटा हुआ छत को ताक रहा था, जैसे उसकी आँखें किसी अदृश्य शून्य में खो गई हों। अवनी उसके पास बैठी, उसके चेहरे पर चिंता की लकीरें पढ़ते हुए बोली –

"क्या हुआ युग? क्या सोच रहे हो?"

युग ने टूटी आवाज़ में कहा – "अवनी, अब मुझे और हॉस्पिटल नहीं जाना। अब मैं थक चुका हूँ।"

उसकी आवाज़ में एक अजीब सी थकान थी – शरीर की नहीं, आत्मा की।

अवनी ने धीरे से उसका सिर अपनी गोद में लिया, बालों को सहलाते हुए बोली – "ऐसा क्यों कह रहे हैं आप? ऐसे हार नहीं मानते, हम जाएंगे। सब ठीक होगा।"

युग ने आँखें मूँद लीं। होंठों पर एक फीकी, हारी हुई मुस्कान थी, "अवनी, अब जाने भी दो ना जो होना है, वो तो होकर ही रहेगा।"

अवनी की आँखें छलक उठीं - "ऐसा मत कहिये युग, डॉक्टर कह रहे हैं कि आप ठीक हो जाएंगे। फिर आप इतनी नेगेटिव बातें क्यों सोच रहे हैं?"

वह जल्दी से उठी और दवाइयाँ ले आई। युग ने बिना कुछ कहे उन्हें हाथ में लिया और एक घूँट पानी के साथ निगल गया। लेकिन निगलते हुए भी उसकी आँखें कहीं और थीं – जैसे वह ज़िन्दगी से नहीं, खुद से लड़ रहा हो।

दवाइयाँ खाकर उसने अवनी की आँखों में देखा - "अवनी, डॉक्टर कुछ भी कहें, सच तुम भी जानती हो और मैं भी। सच जानकर भी अनजान बने रहने का क्या फ़ायदा?"

उस पल अवनी का दिल जैसे बिखर गया। उसकी आँखों से आँसू ढुलक पड़े – “युग, तो क्या करें? हिम्मत हार जाएँ? नहीं! मैं नहीं मानती, तुम ठीक हो जाओगे। मुझे पूरा विश्वास है।”

युग ने उसके काँपते हाथ थाम लिए। दोनों नम आँखों के साथ एक-दूसरे के गले लग गए।

एक के आँसू दूसरे के कंधे को भिगो रहे थे, और दोनों चुपचाप अपने-अपने डर को छिपाने की कोशिश कर रहे थे। अवनी एक ही वाक्य दोहराये जा रही थी – “सब ठीक हो जाएगा युग”|

"सब ठीक हो जाएगा" — यह वाक्य मात्र कुछ शब्द नहीं, अपितु टूटते हुए मन पर धरे जाने वाला एक कोमल मरहम है। यह जानकर भी कि परिस्थितियाँ वैसी नहीं रहेंगी, और न ही हर दर्द का मरहम संभव है, फिर भी यह वाक्य एक क्षणिक आश्वासन बनकर दिल की दरकती दीवारों पर संबल बन जाता है। यह वह झूठ है, जो सत्य से कहीं अधिक अपनापन देता है, एक ऐसा भ्रम, जो थोड़ी देर के लिए ही सही, परंतु जीवन को थामे रखता है|

कुछ देर बाद युग थोडा सामान्य हुआ – “अवनी एक बात बोलू?”

“ह्म्म्म”

“ये आरव भी कितना अजीब है ना? कैसी-कैसी बातें करता है? मुझे तो वो कभी समझ ही नहीं आता।”

अवनी ने सुनकर बस हल्के से “हूँ ” कहा, जैसे कोई शब्द उसके गले में अटक गया हो। उसने बातचीत आगे न बढ़ाई। धीरे से उठी और आर्यम के अगले दिन के लिए स्कूल का बैग सँभालने लगी।

युग थका हुआ था। थोड़ी ही देर में उसकी साँसें गहरी और नींद की ओर खिंच गईं, लेकिन अवनी की आँखों में नींद तो जैसे कोसों दूर थी।

वह चुपचाप उठी, हल्के कदमों से बालकनी में चली गई। रात का आसमान तारे ओढ़े खड़ा था। हवा में चाँदनी का धुँधलका घुला हुआ था। वहाँ खड़ी होकर अवनी ठंडी हवा को अपने चेहरे पर महसूस कर रही थी। लेकिन उसके भीतर की बेचैनी किसी आँधी से कम नहीं थी।

उसकी आँखें खो गईं, कहीं बहुत दूर, वो पुरानी यादों की गलियों में भटकने लगी।

आरव की मुस्कान, उसका हाथ थामना, उसका प्यार, सब कुछ उसकी आँखों के सामने तैरने लगा।

लेकिन जैसे ही वो पलटी , पास ही कमरे में सोते युग की थकी साँसें उसके कानों में पड़ीं – और उसकी आँखें फिर से भर आईं।

वह समझ नहीं पा रही थी, उसका वर्तमान और उसका अतीत…दोनों के बीच पिसती हुई वो खुद कितनी चुपचाप टूट रही है। उस रात अवनी की आँखों में नींद नहीं आई। बस आँसुओं की हल्की सी चमक चाँदनी में किसी मोती सी झिलमिला रही थी |

अवनी बालकनी के पास लगे सोफ़े पर जाकर बैठ गई। रात का सन्नाटा उसके चारों ओर पसरा हुआ था। नींद तो जैसे उसकी आँखों से कोसों दूर भाग चुकी थी। हवा का हल्का-सा झोंका उसके चेहरे को छूकर निकल रहा था, पर उसके भीतर चल रहे तूफ़ान को शांत नहीं कर पा रहा था। उसका मन अपने आप से अंतर्द्वंद कर रहा था – "आरव हमेशा से ऐसा नहीं था, मेरे जाने से उसका स्वभाव कितना बदल गया। लेकिन, मेरा जाना भी तो ज़रूरी था ? क्या सच में? अगर मैं ना जाती तो...? क्या वो वैसा ही होता जैसे पहले था...?"

इन सवालों ने उसके दिल पर जैसे चोट कर दी हो। उसके गालों पर अनजाने में नमी उतर आई।

उसकी नज़र एक बार फिर बिस्तर पर गहरी नींद में सोए हुए युग पर पड़ी। उसका सीना अनायास ही भारी हो गया। उसके मन की आवाज़ उसके होंठों पर आ गई – "युग, आपने मुझे नया जीवन दिया है। मेरे अतीत की हर सच्चाई जानते हुए भी, ये जानते हुए भी कि मेरे दिल में किसी और की छवि अब भी कहीं गहराई में बसी है, फिर भी आपने मुझे अपनाया। आप खुद अपनी ज़िंदगी से लड़ रहे थे, और मुझे जीने की उम्मीदें दे रहे थे।"

अवनी की आँखों से आँसू फूट पड़े। होंठ काँपते हुए फुसफुसाए –"और आर्यम..."

वो सिसक पड़ी। अपने अंतर्मन से दृढ़ आवाज़ में बोली – "युग, मैं आपको कुछ नहीं होने दूँगी। आरव मेरा अतीत था लेकिन आप? आप मेरा आज हैं, मेरा वर्तमान हैं। अब आप ही मेरा सब कुछ हैं । आपको कुछ नहीं होगा ।"

अतीत और वर्तमान के मध्य जीने वाला मनुष्य एक नदी की तरह होता है — दो किनारों के बीच निरंतर बहता हुआ, जहाँ दोनों ओर से उसे स्पर्श तो

मिलता है, पर पूर्णतया किसी एक में विलीन हो जाना उसके वश में नहीं होता। न वह अतीत में ठहर सकता है, न वर्तमान में रुक पाता है, वह बस बहता है, बहता ही जाता है। दोनों किनारे उसके अपने होते हुए भी, एक-दूसरे से कभी नहीं मिल सकते। यह बहाव ही उसका सत्य है, और यही उसकी विडंबना भी।

उसके आँसू लगातार गिरते रहे। अतीत की कसक और वर्तमान की कसमें, दोनों के बीच झूलती रही वो। दिल टूटता रहा, पर उसी टूटी हुई हालत में वो धीरे-धीरे थककर वहीं सोफ़े पर सो गई।

कुछ दिनों बाद युग का हॉस्पिटल में अपॉइंटमेंट था । आज अवनी ने कॉलेज से छुट्टी ले ली थी। सुबह-सुबह सबको नाश्ता करवा दिया, आर्यम को स्कूल भेज दिया। कमरे में बैठकर जब वो हॉस्पिटल की सारी रिपोर्ट्स एक-एक करके फाइल में जमा रही थी, तभी उसकी नज़र अचानक युग पर पड़ी। युग बिस्तर पर बैठा बिना पलक झपकाए उसे ही देख रहा था। अवनी ठिठक गई – "क्या हुआ युग? आप ऐसे क्यों देख रहे हैं?"

युग ने धीमे स्वर में कहा –"अवनी, तुम पहले ही बहुत दुःख झेल चुकी हो। और मैंने? मैंने भी तुम्हें तकलीफ़ के अलावा दिया ही क्या है?"

अवनी की आँखें पलभर में भीग उठीं, पर आवाज़ में दृढ़ता थी –"कैसी बातें कर रहे हो आप? मेरे और आर्यम के लिए आप एक बरगद के पेड़ की तरह हैं। आपकी छाया में ही हम दोनों जी रहे हैं। आपका प्यार ही है जिसने इस परिवार की डोर को मजबूती से थाम रखा है।"

युग हल्की सी मुस्कान ले आया, लेकिन उसके पीछे की उदासी छिप नहीं पाई। वो बोला – "अब तक तो तुमने बहुत संभाल लिया अवनी, लेकिन अब मेरे पास ज़्यादा समय नहीं है। मेरे जाने के बाद, तुम क्या करोगी?"

अवनी की आँखें छलक उठीं। वह रोते हुए बोली –"आजकल आप इतनी नेगेटिव बातें क्यों करते हैं? डॉक्टर कह रहे हैं कि आपको कुछ नहीं होगा। वो अपना बेस्ट दे रहे हैं। आप प्लीज़ ऐसी फालतू बातें मत कीजिए।"

इतना कहकर उसने फाइल दोबारा उठाई और कागज़ सहेजने लगी, ताकि उसकी आँखों से गिरते आँसू युग देख न पाए।

युग ने गहरी साँस ली – "सच से कब तक मुँह मोड़ेंगे हम, अवनी? तुम भी जानती हो और मैं भी कि कैंसर की तीसरी स्टेज पर बचना कितना मुश्किल होता है।"

अवनी के हाथ वहीं थम गए। फाइल उसके हाथों से फिसलते-फिसलते रह गई। उसकी आँखों से आँसुओं का सैलाब बह निकला। उसने चीखते हुए कहा – "तो क्या करें युग? उम्मीदें भी छोड़ दें? इलाज बंद कर दें? हार मान लें? नहीं! हम ऐसे हार नहीं मान सकते। हम कोशिश कर रहे हैं, बेस्ट डॉक्टर हैं, बेस्ट ट्रीटमेंट चल रहा है, आप हार मान सकते हैं, लेकिन मैं नहीं।"

उसकी आवाज़ काँप रही थी, लेकिन उसमें हिम्मत थी - "अब आप बिल्कुल चुप रहेंगे और हम जा रहे हैं हॉस्पिटल।"

इतना कहते ही अचानक डोरबेल बजी। अवनी ने झट से आँखें पोंछीं और नीचे उतरकर दरवाज़ा खोला।

सामने संजय खड़ा था।

अवनी की भीगी पलकों को देखकर उसे समझने में देर नहीं लगी, वही पुरानी कहानी, युग मौत की बातें कर रहा होगा और अवनी उसे संभालने की नाकाम कोशिश कर रही होगी।

"अंदर आओ संजय, अब तुम ही समझाओ युग को।"

संजय अंदर आया। सरलाजी सोफे पर बैठी थीं, चुपचाप, बिल्कुल उदास सी। युग भी धीरे-धीरे सीढ़ियों से उतर रहा था। संजय ने झुककर सरला जी के पैर छुए।

उसे देखते ही सरलाजी रो पड़ीं –"संजय, युग ठीक तो हो जाएगा ना?"

संजय ने उन्हें संभालते हुए कहा –"आंटी, आप और युग बेवजह तनाव ले रहे हो। युग को कुछ नहीं होगा। आप इतना मत सोचिए।"

फिर युग के पास जाकर उसे गले लगाया - "चलो, अब चलते हैं। सब अच्छा होगा।"

तीनों अस्पताल निकल पड़े। दो-तीन घंटे तक युग की कीमोथैरेपी चलती रही। थकान और दर्द से उसका चेहरा बिल्कुल सफ़ेद पड़ गया था।

थोड़ी देर बाद डॉक्टर ने उसे बुलाया - "युग, अब आप कैसा महसूस कर रहे हैं?"

युग ने हल्की मुस्कान बनाई – "पहले से बेहतर, लेकिन थकान रहती है, और कभी-कभी उल्टियाँ भी हो जाती हैं।"

डॉक्टर ने सिर हिलाया – "हाँ, कीमोथैरेपी के कुछ साइड इफ़ेक्ट होते ही हैं। लेकिन आप चिंता मत कीजिए। दवाइयाँ टाइम पर लीजिए, सबसे ज़रूरी है कि आप खुश रहें। आप ठीक हो जाएँगे।"

अवनी तुरंत बोली – "डॉक्टर, युग आजकल बहुत नेगेटिव हो गए हैं। हर समय बस उल्टी-सीधी बातें करते हैं। आप इन्हें समझाइए ना।"

डॉक्टर ने गम्भीर होकर कहा – "युग, आपको इतना निराश होने की ज़रूरत नहीं है। कैंसर का इलाज अब सम्भव है। पहले के समय में थोडा मुश्किल था, लेकिन आज इंडिया में भी बेस्ट ट्रीटमेंट है और आप वही ले रहे हैं। घबराइए मत, आप ठीक हो जाएँगे।"

डॉक्टर की बातें सुनकर युग के चेहरे पर थोड़ी राहत दिखी, लेकिन सच तो सभी जानते थे। लंग कैंसर की तीसरी स्टेज थी, और मौत की परछाई हर वक्त सिर पर मंडरा रही थी।

डॉक्टर ने युग को बाहर भेज दिया और अवनी को रोक लिया - "मिसेज श्रेष्ठ, आपके साथ कोई और है?"

अवनी ने धीमे स्वर में कहा – "जी, मेरा भाई है। बाहर बैठा है।"

डॉक्टर – "उन्हें भी अंदर बुला लीजिए।"

अवनी ने फ़ोन करके संजय को बुलाया, दोनों के चेहरे पर चिंता की लकीरें साफ़ झलक रही थीं।

संजय बैठते ही बोला – "जी डॉक्टर, क्या बात है?"

डॉक्टर ने गंभीर स्वर में कहा – "देखिए, अब आपको युग की एक्स्ट्रा केयर करनी होगी। जितना हो सके उन्हें एलर्जिक चीज़ों से दूर रखिए – धुँआ , धूल और सफाई पर खास ध्यान दीजिए। मिसेज श्रेष्ठ, आपको उन्हें मानसिक और भावनात्मक रूप से बहुत सपोर्ट देना होगा। सच कहूँ तो, युग को अपने मरने का डर नहीं है, उन्हें सबसे ज़्यादा चिंता इस बात की है कि उनके जाने के बाद उनका परिवार कैसे जियेगा।"

डॉक्टर ने गहरी साँस ली और कहा – "मैं जानता हूँ, आपके लिए भी यह सच स्वीकार करना बहुत मुश्किल है। हम अपनी तरफ से पूरी कोशिश कर रहे हैं, लेकिन कैंसर तीसरी स्टेज पर डिटेक्ट हुआ है। इस स्थिति में बेस्ट ट्रीटमेंट के बावजूद पेशेंट के बचने की संभावना सिर्फ़ 20 से 30 प्रतिशत ही होती है।"

डॉक्टर की बातें सुनते ही अवनी फफक पड़ी। उसके आँसू रुक ही नहीं रहे थे।

डॉक्टर ने तुरंत कहा – "मिसेज श्रेष्ठ, आप मत रोइए, संजय, इन्हें संभालिए। अगर ये टूट गईं तो युग को कौन संभालेगा? और देखिए, उम्मीद रखिए, हो सकता है वे ठीक भी हो जाएँ। बस धैर्य बनाए रखिए।"

डॉक्टर ने पर्ची पकड़ाते हुए कहा –"अगला अपॉइंटमेंट पंद्रह दिन बाद का है। दवाइयाँ वही रहेंगी।"

अवनी ने भीगी आँखों से सिर हिलाया – "जी डॉक्टर "

संजय ने उसे सहारा दिया और दोनों बाहर आ गए। युग बाहर ही इंतज़ार कर रहा था।

वह भले ही कुछ न बोला, लेकिन उसके चेहरे से साफ़ झलक रहा था कि अंदर क्या बातें हुई होंगी।

उसने सवाल करना बेहतर नहीं समझा। क्योंकि जानता था, उसका एक सवाल अवनी की आँखों को और नम कर देगा। घर लौटते वक्त पूरे रास्ते, तीनों बिल्कुल चुप थे।

अवनी अब पहले से भी ज़्यादा युग का ख़याल रखती थी। युग भी अपनी तरफ़ से पूरी कोशिश करता कि घर का माहौल हल्का-फुल्का रहे, सबके चेहरे पर मुस्कान बनी रहे। वो समझ चुका था कि ज़िंदगी अब कितनी लंबी है, ये तो वक़्त ही बताएगा, लेकिन जितनी भी है, उसे ख़ुशियों से भरना उसका फ़र्ज़ है।

संजय के साथ अवनी के मम्मी पापा का भी घर आना जाना लगा रहता ,ज़िंदगी धीरे-धीरे अपने ढर्रे पर लौटने लगी थी। इसी बीच एक दिन निर्मलाजी का फ़ोन आया।

"नमस्ते आंटी, कैसी हैं आप?" अवनी ने हमेशा की तरह सम्मान से पूछा।

"अरे अवनी बेटा, तुम लोग तो हमारे घर का रास्ता ही भूल गए। अब तो आते-जाते भी नहीं हो। सब ठीक है ना?" निर्मलाजी की आवाज़ में शिकायत कम, अपनापन ज़्यादा था।

अवनी थोड़ी झिझकते हुए बोली— "नहीं-नहीं आंटी, ऐसी कोई बात नहीं। बस युग की तबीयत कुछ दिनों से ठीक नहीं चल रही, इसलिए बाहर आना-जाना कम हो गया है।"

"क्या हुआ युग को? सब ठीक तो है ना?" निर्मलाजी चिंतित हो गईं।

अवनी ने मुस्कुराने की कोशिश की— "जी, जी हाँ आंटी, अब पहले से बेहतर हैं।"

निर्मलाजी ने हँसते हुए कहा— "अब इतनी केयर करने वाली पत्नी हो, तो युग को तो ठीक होना ही हैं।"

अवनी ने भी हल्की सी फीकी मुस्कान दे दी।

फिर निर्मलाजी ने कहा— "अवनी, बेटा कल अन्विका का बर्थडे है। और तुम सबको आना हैं यहाँ।"

"क्या? कल अन्विका का बर्थडे?" अवनी का चेहरा खिल उठा। "तो फिर तो हमें आना ही पड़ेगा आंटी।"

निर्मलाजी ने हँसते हुए आगे कहा— "लेकिन एक बात है, कल तुम्हें थोड़ा जल्दी आना होगा। सारे इंतज़ाम भी तुम ही देख लेना। आरव के पास तो बिल्कुल टाइम नहीं है, और अन्विका की माँ तो अब रही नहीं, लेकिन वो छोटी सी गुड़िया पूरा दिन तुम्हारा ही नाम जपती रहती है। कह रही थी— मेरा केक अवनी आंटी लाएंगी, मैं केक आर्यम भैया के साथ काटूँगी, सबसे पहले अवनी आंटी और युग अंकल को खिलाऊँगी, और मेरी ड्रेस भी अवनी आंटी लाएंगी।"

निर्मलाजी ज़ोर से हँस पड़ीं। फिर बोली - "तुम्हारा बजट बिगाड़ देगी ये लड़की "

अवनी की आँखें चमक उठीं— "अरे, बच्चों के प्यार को पैसों में नहीं तौला जाता ? आप बस अन्विका से कह दीजिए, उसका केक आज ही ऑर्डर हो जाएगा और ड्रेस भी मैं कल लेकर आऊँगी। कैटरिंग और डेकोरेशन की चिंता भी आप छोड़ दीजिए, सब मैं देख लूँगी।"

निर्मलाजी का गला भर आया— "तुम हो तो मुझे किस बात की चिंता। काश मेरी भी, तुम्हारी जैसी बहू होती !"

अवनी चुप हो गई। उसके पास जवाब नहीं था, बस हल्के स्वर में बोली— "कल मिलते हैं आंटी।"

फ़ोन कट गया, लेकिन निर्मलाजी धीरे से बुदबुदाईं— "तुम जैसी क्यों? काश तुम ही मेरी बहू होती।" उनकी आँखों से आँसू बह निकले।

उधर, अवनी ने घरवालों को अन्विका के बर्थडे की खबर दी। इतने दिनों से जो सन्नाटा और उदासी फैली हुई थी, वो खबर सुनते ही सबके चेहरों पर मुस्कान लौट आई।

सरलाजी और अवनी शॉपिंग पर निकल गईं। अवनी ने कैटरिंग और डेकोरेशन का ऑर्डर बुक कर दिया, केक भी तय कर लिया। आर्यम और अन्विका के लिए कपड़े खरीदे, ढेर सारे गिफ्ट्स पैक करवाए। सरलाजी ने अपनी तरफ़ से अन्विका के लिए सोने की छोटी सी चैन खरीदी।

अगले दिन सब तैयार होकर अन्विका के घर पहुँचे। अवनी बार-बार युग का ख़्याल रख रही थी कि कहीं भीड़-भाड़ में उसे तकलीफ़ न हो।

अन्विका और निर्मलाजी अवनी को देखते ही खिल उठीं। अन्विका ने भागकर अवनी को गले से लगा लिया। अवनी ने उसे ढेर सारी शुभकामनाएँ दीं और तुरंत व्यवस्थाओं में जुट गई।

छत पर पार्टी रखी गई थी। चारों तरफ गुब्बारे, रिबन और रंग-बिरंगी लाइट्स, मानो आसमान ही धरती पर उतर आया हो। खाने का इंतज़ाम एक ओर सजा था।

संजय, राहुल, अनिल सभी अपनी फैमिली के साथ आ चुके थे। माहौल बच्चों की खिलखिलाहट और हंसी से गूंज रहा था। अवनी हर थोड़ी देर में नीचे जाकर युग को देख आती और फिर ऊपर लौटकर तैयारी में जुट जाती।

शाम को आरव ऑफिस से लौटा। अंदर आते ही सबसे मिला। जब उसकी नज़र युग के परिवार पर पड़ी तो समझ गया कि अवनी भी आई होगी। हॉल का डेकोरेशन देखकर वो ठिठक गया और अपनी माँ से पूछा - “ माँ , ये सब आपने करवाया ?”

निर्मलाजी ने मुस्कराकर कहा— "देखो ज़रा, इसे तो अपनी बेटी के बर्थडे पर भी फुर्सत नहीं। भला हो अवनी का, जिसने सारे इंतज़ाम संभाल लिए। जा बेटा, छत पर भी देख आ, कैसी सजावट की है उसने।"

आरव धीरे-धीरे सीढ़ियाँ चढ़कर छत पर पहुँचा। जैसे ही उसने दरवाज़ा खोला, उसकी नज़र अवनी पर पड़ी। उसकी पीठ आरव की तरफ थी। वो डेकोरेशन वाले लड़कों को ऊँचाई पर लाइट लगाने के निर्देश दे रही थी। उसके खुले बाल हवा में

उड़कर कभी उसके चेहरे को छू रहे थे, कभी हवा में बिखरकर चारों ओर महक घोल रहे थे।

आरव की साँसें थम-सी गईं, अनायास ही उसके मन में पुराने दिनों की यादें ताज़ा हो गयी| अवनी पीछे मुड़ी और अचानक उससे टकरा गई, वो गिरने ही वाली थी कि आरव ने झट से उसे थाम लिया। दोनों की आँखें एक-दूसरे से टकराई। हवा की सरसराहट, बच्चों की हँसी, सब जैसे थम गया हो।

अवनी ने खुद को सँभाला और हल्की सी दूरी बनाकर बोली— "अरेंजमेंट्स हो गए हैं, आप एक बार देख लीजिए।"

आरव कुछ पल तक बस उसे देखता रहा। फिर धीमे स्वर में बोला— "तुमने किए हैं, तो सही ही होंगे। मुझे देखने की ज़रूरत नहीं।"

अवनी नीचे जाने लगी, तभी आरव ने उसका हाथ थाम लिया। अवनी घबरा गई।

आरव पलटा और बहुत हल्की आवाज़ में बोला— "थैंक यू अवनी।" उसने उसका हाथ छोड़ दिया।

उसकी आवाज़ में आज वो ठंडापन, वो कठोरता नहीं थी, जो हमेशा रहती थी। और आज, उसने आज अवनी को **मिसेज श्रेष्ठ** भी नहीं कहा। अवनी एक बार पलटी। आरव की आँखों में आज कोई शिक़ायत नहीं थी। बस एक गहरी कृतज्ञता और अपनापन था। अवनी की पलकों पर नमी झिलमिलाई। वो चुपचाप सीढ़ियाँ उतर गई।

आरव वहीं खड़ा उसे जाता देखता रहा। फिर उसने चारों ओर नज़र दौड़ाई और सजावट को देखकर उसके होंठों पर अनकही मुस्कान तैर गई| मेहमान धीरे-धीरे आने लगे थे। अवनी अन्विका को तैयार करके जब कमरे से निचे उतरी, तो उसकी गोद में अन्विका थी और साथ ही आर्यम उसकी साड़ी का पल्लू पकड़े मासूमियत से पीछे-पीछे चल रहा था। अन्विका को अवनी ने परी की तरह ऐसे सजाया – सवारा था, मानो आसमान से कोई नन्ही परी उतरी हो। अवनी ने उसे बड़ी ममता और प्यार से तैयार किया था।

अन्विका को देखकर निर्मलाजी की आँखें भीग गईं। उन्होंने सरलाजी की तरफ देखा और काँपती आवाज़ में कहा— "सरला बहन, एक बात कहूँ? बुरा मत मानिएगा।"

सरलाजी ने आश्चर्य से कहा— "कहिए ना"

निर्मलाजी की आँखें अन्विका पर टिकी थीं— "आज मुझे ऐसा लग रहा है जैसे एक बिन माँ की बच्ची को उसकी माँ मिल गई हो। देखिए कितनी प्यारी तरह से सजाया है अवनी ने उसे, हम तो कभी ऐसा नहीं कर पाते। जो स्नेह, जो लगाव के साथ एक माँ ही अपनी बेटी के लिए कर सकती है, वही किया है अवनी ने।"

उनकी बात सुनकर वातावरण भावुक हो उठा। सचमुच, जो भी उस पल उन तीनों को देखता, यही सोचता कि अवनी के सिर्फ एक नहीं बल्कि दो बच्चे हैं। इस दृश्य को जब आरव ने देखा, तो उसकी भी आखें भी नम हो गयी। नीचे हॉल में केक आ चुका था। जब अवनी ने अन्विका को गोद से उतारने की कोशिश की, तो अन्विका ज़िद में उससे लिपट गई |

मजबूरी में अवनी उसे गोद में लिए ही केक के पास घुटनों के बल बैठ गई। पास ही आर्यम, और छोटे छोटे बच्चे खड़े थे। तभी अन्विका की मासूम आवाज़ गूँजी— "पापा, आप भी आ जाओ ना।"

आरव ठिठक गया। उसके चेहरे पर झिझक साफ़ थी। तभी सरलाजी ने मुस्कराकर कहा—"अरे आरव बेटा, जाओ, देखो, अन्वि बुला रही है।"

आरव भारी कदमों से आगे बढ़ा। उसने चाहा कि युग भी साथ आए, मगर युग नहीं गया। तभी अन्विका ने मासूमियत से पुकारा—"युग अंकल, आप भी आइए ना।"

अब तो युग को भी आगे बढ़ना ही पड़ा। और फिर वो पल आ गया— एक तरफ अवनी की गोद में अन्विका और उसके पास आरव था, दूसरी ओर आर्यम और युग। पूरा परिवार मानो इस एक तस्वीर में समा गया था। केक कटा। अन्विका ने सबसे पहले एक टुकड़ा अवनी को खिलाया, फिर आर्यम को और उसके बाद आरव और युग दोनों को। मासूम हँसी के साथ उसने अवनी के गाल पर चुम्मी दे दी। कैमरे की फ्लैश में ये पल हमेशा के लिए कैद हो गया।

थोड़ी ही देर में छत पर डीजे में गाने बजने लगे। बच्चे छत पर जाकर झूम रहे थे। तभी युग को खाँसी का दौरा उठा। अवनी तुरंत उसे सहारा देकर सोफ़े पर ले गई, पानी पिलाया। उसकी आँखों में चिंता साफ़ थी— "युग, आप ठीक हैं? ज़्यादा घुटन हो रही हो तो मैं आपको ऊपर ले चलूँ? "

युग ने मुस्कुराकर हाथ पकड़ लिया— "नहीं बाबा, मैं ठीक हूँ। तुम बेवजह परेशान मत हो। जाओ, बाकी मेहमानों को सँभालो।"

अवनी न चाहते हुए भी ऊपर चली गई, मगर जाते-जाते एक बार पीछे पलटकर देखा। युग ने मुस्कुराकर हाथ हिलाया।

छत पर पहुँचकर उसने खाना चेक किया और एक थाली भरकर निचे ले आई, निर्मलाजी से कहकर भगवान को भोग लगवाया। इस दौरान आरव की नज़रें सिर्फ उसी पर टिकी रहीं। उसके मन में तूफ़ान था— "आज भी कितनी सलीकेदार है अवनी, कैसे सबका ख्याल रख रही है। अपनी फैमिली, और मेरी बच्ची का भी। कितने तूफ़ानों से गुज़र चुकी है, फिर भी इतनी मज़बूत खड़ी है। और मैं? मैं तो अब तक वहीँ हूँ, आगे ही नहीं बढ़ पा रहा हूँ। आखिर उसकी क्या गलती थी? वो गई क्योंकि मैंने उसे जाने दिया, तो कैसे मैं उस अकेली को दोषी ठहरा सकता हूँ?" विचारों के सागर डूबा में उसका मन गोते लगा रहा था | सारे मेहमान डिनर के लिए छत पर आये, संजय सहारा देकर युग को छत पर ले आया |

इसी बीच युग डीजे के पास पहुँचा। उसने माइक माँगा और सबका ध्यान खींचते हुए बोला— “ अटेंशन प्लीज, आज मैं आप सबके सामने चाँद पंक्तियाँ कहना चाहता हूँ, ये उस लड़की के लिए है जिसने मुझे बिना शर्त स्वीकार किया, जिसने मेरी ज़िंदगी को नई उम्मीद दी। मेरी पत्नी— अवनी के लिए।”

अवनी की आँखें छलक उठीं। आरव का चेहरा बदलने लगा।

युग ने गाना शुरू किया—

पल-दो-पल की ही क्यूँ है ज़िंदगी?

इस प्यार को हैं सदियाँ काफ़ी नहीं…

तो ख़ुदा से माँग लूँ मोहलत मैं एक नई,

रहना है बस यहाँ, अब दूर तुझसे जाना नहीं।

जो तू मेरा हमदर्द है…

सुहाना हर दर्द है…

गाते-गाते उसकी साँसें भारी हो गईं। संजय तुरंत दौड़कर आया और उसके लिए कुर्सी ले आया। अवनी ने भी उसका हाथ थाम लिया।

युग ने एक बार फिर अवनी की ओर देखते हुए गाना शुरू किया—

तेरी धड़कनों से है ज़िंदगी मेरी,

ख़्वाहिशें तेरी अब दुआएँ मेरी।

कितना अनोखा बंधन है ये,

तेरी-मेरी जान जो एक हुई।

लौटूँगा यहाँ तेरे पास मैं, हाँ,

वादा है मेरा, मर भी जाऊँ कहीं।

जो तू मेरा हमदर्द है...

सुहाना हर दर्द है...

गीत खत्म हुआ। पूरा माहौल तालियों की गड़गड़ाहट से गूँज उठा, मगर हर आँख नम थी। सरलाजी तो फूट-फूटकर रो पड़ीं। सिर्फ चार लोग इस सच्चाई से वाक़िफ़ थे— युग, अवनी, संजय और सरलाजी।

अवनी रोते-रोते युग से लिपट गई। और ये देखकर आरव का गुस्सा सातवें आसमान पर पहुँच गया। चेहरा तमतमाया, आँखें लाल हो उठीं। वह झटके से छत से नीचे उतर गया।

थोड़ी देर बाद अवनी ने युग को खाना परोसा और नीचे बेडरूम में चली गई। वाशरूम में जाकर उसने अपना मुह धोया और वापस कमरे में आकर अपना चेहरा पोछने लगी |तभी अचानक आरव कमरे में घुस आया। उसने दरवाज़ा ज़ोर से बंद किया। अवनी पलटी तो सामने खड़ा आरव— नशे में धुत, आँखों में आग। वो झपटकर आया और उसकी दोनों बाँहें कसकर पकड़ लीं - “बहुत प्यार करती हो ना अपने पति से? बड़ा मज़ा आता होगा उसके साथ? मुझे छोड़कर जाने का ज़रा भी अफ़सोस नहीं है ना तुम्हें? मुझे जीवनभर तड़पने के लिए छोड़ दिया, और खुद किसी और की बाँहों में खुश हो?”

उसकी पकड़ और कड़ी होती जा रही थी। अवनी कराह उठी—“आ… आरव, छोड़ो मुझे… दर्द हो रहा है…”

मगर आरव रुकने वाला नहीं था। उसके शब्द ज़हर बनकर बरस रहे थे— “और ये बच्चा? हाँ? ये आर्यम? बच्चो के नाम मेरे साथ प्लान करती हो और पैदा किसी और से? शर्म नहीं आती तुम्हें? मेरे सामने उसका हाथ पकड़ती हो, उसे गले लगाती हो, क्या जताना चाहती हो, कि मेरे बिना भी तुम कितनी खुश हो?”

अवनी रोते-रोते काँप रही थी। तभी दरवाज़ा खुला और नन्हा आर्यम अंदर आया—“मम्मा!!!!!”

उसकी मासूम आवाज़ सुनते ही आरव का हाथ ढीला पड़ गया। अवनी तुरंत आर्यम को गोद में लेकर बाहर चली गयी। आरव ने ज़ोर से मुट्ठी दीवार पर मारी। कुछ देर बाद वो भी छत पर पहुँचा। वहाँ उसने डीजे वाले के कान में कुछ फुस्पुसाया डीजे पर एक गीत बज उठा -

मैं ढूँढ़ने को ज़माने में जब वफ़ा निकला,

पता चला कि ग़लत लेके मैं पता निकला।

ढूँढ़ता था एक पल में दिल जिसे ये सौ दफ़ा,

है सुबह नाराज़, उस बिन रूठी शामें दिन ख़फ़ा।

वो आयें ना, ले जाएँ ना,हाँ उसकी यादें जो यहाँ...

ना रास्ता, ना कुछ पता,मैं उसको ढूँढूँगा अब कहाँ।

मैं ढूँढ़ने को ज़माने में जब वफ़ा निकला,

पता चला कि ग़लत लेके मैं पता निकला।

गीत के हर शब्द में आरव की पीड़ा, उसका गुस्सा, उसकी तड़प झलक रही थी। गीत के हर शब्द अवनी के दिल पर हथोड़े की तरह प्रहार कर रहे थे, उसने संजय की और देखा, संजय, अनिल और राहुल तीनो को आरव के लिए बहोत बुरा फील हो रहा था, वो तीनो गवाह थे उस वक़्त के जब आरव की दुनिया बस अवनी के इर्द गिर्द घुमती थी, अचानक अवनी के सब कुछ छोड़कर चले जाने पर आरव की जो हालत थी, उसे संभालना इन दोस्तों के लिए बहोत मुश्किल हो गया था, आज आरव की आखों में फिर वही दर्द था, संजय और सारे दोस्त अवनी का इशारा पाकर आरव के पास जाकर उसे सँभालने की नामुमकिन कोशिश कर रहे थे|

संजय ने डीजे से वो गाना बंद करवाया और आरव के कान में फुसफुसाया – “ आरव बस करो, अन्विका का बर्थडे हैं, सब देख रहे हैं |” – आरव गुस्से में तमतमाता हुआ हुआ निचे चला गया |

पार्टी खत्म हो चुकी थी। मेहमान लौट गए थे।अवनी और संजय कैटरिंग का सामान हटवा रहे थे। संजय बार-बार अवनी की ओर देखता— उसकी आँखों में डर और

गहरी उदासी थी। उसने कंधे पर हाथ रखकर कहा— “डरो मत अवनी, मैं आरव से बात करूँगा।”

नीचे सरलाजी निर्मलाजी के पास बैठी रो रही थीं।सरला ने रुँधी आवाज़ में कहा— “निर्मला जी, क्या बताऊँ? भगवान कैसी परीक्षा ले रहा है हमारी? पहले युग के पापा चले गए, और अब देखो, इतनी कम उम्र में मेरे बेटे को कैंसर जैसी बीमारी दे दी।”

निर्मलाजी दंग रह गईं—“क्या? क्या कह रही हैं आप, सरला बहन? युग को कैंसर है?”

सरला जी फूट पड़ीं— “हाँ, तीसरा स्टेज है। शायद ज़्यादा दिन नहीं जी पाएगा। सच कहूँ तो मैं भले ही अवनी के साथ कठोर रहती हूँ, मगर वही है जिसने मेरे बेटे को सँभाला है। दिन-रात उसकी सेवा करती है जबकि जानती है कि उसका अंत कितना करीब है।”

निर्मलाजी की आँखें भर आईं - “हे भगवान! युग को इतनी कम उम्र में इतनी बड़ी बीमारी? कैसी कसौटी ले रहा है उन दोनों बच्चों की। और अवनी? कैसे संभाल रही हैं वो सब कुछ? एक तरफ बीमार पति, दूसरी एक छोटा बच्चा।”

दोनों औरतें रोते-रोते एक-दूसरे को ढाँढ़स बँधाती रहीं। उधर आरव इस सच्चाई से बिल्कुल अनजान शराब के नशे में अपने ही दर्द में डूबता जा रहा था।

मेहमान अब जा चुके थे। घर में सन्नाटा पसर चुका था। दोनों बच्चे थककर गहरी नींद में सो चुके थे।

नीचे के कमरे में सरला जी और निर्मला जी, निर्मला जी के बेडरूम में बैठीं एक-दूसरे के साथ अपना दर्द बाँट रही थीं।

छत पर अवनी और संजय अब भी लगे हुए थे—कभी साज-सज्जा का सामान हटवाते , कभी कैटरिंग वाले का हिसाब देखते । उधर, अपने कमरे में अकेला बैठा आरव बीयर की बोतलें खाली करता जा रहा था। उसका दर्द, उसका क्रोध—सब शराब के प्यालों में घुलता जा रहा था।

इसी बीच, युग बच्चों को सुलाकर बाहर निकला। जब वह आरव के कमरे के पास से गुज़रा, तो उसने देखा—आरव बुरी तरह शराब में डूबा बैठा है।युग धीरे से भीतर चला गया।

युग ने धीमे स्वर में कहा – "मिस्टर आरव! मैं समझ सकता हूँ आपकी तकलीफ़। अन्विका की मम्मी का आप दोनों को छोड़कर चले जाना, शायद यही ग़म आपको जीने नहीं देता होगा ना?

ऊपर से अन्विका की ज़िम्मेदारी, काम का दबाव, आपको हिम्मत रखनी होगी।"

आरव ने बोतल को मेज़ पर पटकते हुए हल्की सी मुस्कान दी और बोला – "मिस्टर श्रेष्ठ , उम्म्म… नहीं, युग, सिर्फ़ युग। तुम भी मुझे ये बार-बार मिस्टर आरव मत बोला करो यार, बड़ा फ़ॉर्मल सा लगता है।"

युग हल्का हँस दिया – "ओके आरव, अब ठीक है?"

आरव भी मुस्कुरा उठा –"तो हम कहाँ थे? हाँ, अन्विका की मम्मी पर। हा तो युग , अन्विका की मम्मी के जाने का मुझे रत्तीभर भी दुख नहीं। मुझे पहले से पता था कि वो जाएगी ही।

लेकिन, मुझे सबसे ज़्यादा दर्द किस बात का है पता है? उस लड़की का मेरे जीवन से अचानक बिना कुछ कहे चले जाना, जिसे मैंने इस दुनिया में सबसे ज़्यादा प्यार किया था। तुम जानते हो, कितना तकलीफ़ देता है ये सब?नहीं, तुम नहीं समझ सकते। तुम समझोगे भी कैसे? तुम्हारे पास तो सब कुछ है – एक बहुत प्यार करने वाली पत्नी, एक प्यारा बच्चा,अच्छी नौकरी, परफ़ेक्ट फैमिली। तुम नहीं समझोगे मेरा दर्द?"

युग ने एक बनावटी मुस्कान ओढ़ी। उसकी आँखों की गहराई में दर्द साफ़ झलक रहा था।

उसने धीमे से कहा – "हर किसी के जीवन में कुछ न कुछ दुख होता है, आरव। और हर किसी का दुख अलग होता है। कोई अपने दुख को हर वक़्त जताता रहता है तो कोई अपने दुख को अपने अंदर ही दफ़न कर लेता है।"

इतना कहकर युग ने भी एक गिलास में बीयर भर ली और पीने लगा। आरव ने उसे ध्यान से देखा और फिर उसके हाथ में बियर के गिलास को, और फिर बोला – "तुम्हें क्या दुख है? कितनी हसीन ज़िंदगी है तुम्हारी।"

युग बस मुस्कुरा दिया। उसकी चुप्पी बहुत कुछ कह रही थी।

तभी युग अचानक पूछ बैठा – "एक बात समझ में नहीं आई, अगर तुम अपनी पत्नी से क़रीब नहीं थे, तो ये अन्विका कैसे पैदा हो गई?"

दोनों एक-दूसरे की आँखों में देखते रहे, और फिर जोर से हँस पड़े।

आरव - " आं........ अब आये न तुम मुद्दे की बात पर, कर दिया ना मर्दों वाला सवाल?"

फिर से दोनों हस पड़े | आरव ने गहरी साँस लेकर कहना शुरू किया – "अब क्या ही बताऊँ मैं।

माँ के कहने पर मैंने रीतू से शादी तो कर ली, लेकिन न जाने क्यों, मुझे उसके चाल-चलन पर पहले ही ठीक नहीं लगता था |

लेकिन माँ को पूरा विश्वास था कि उनकी पसंद की लड़की है तो बहुत ही संस्कारी और सुघड़ होगी।

शादी की रात उसने मुझे साफ़ कह दिया कि वो किसी और से प्यार करती है और ये शादी उसने परिवार के दबाव में की है। ख़ैर, मुझे भी उससे कोई लेना-देना नहीं था।शादी के बाद भी वो अपने बॉयफ्रेंड से छुप छुप कर चैट करती रही। हालाँकि, मैंने उसे ऑफ़र दिया था कि चाहे तो मुझसे तलाक ले ले और उस लड़के से शादी कर ले। लेकिन उसने कहा कि अब उसका उस लड़के से कोई रिश्ता नहीं है। शायद उनका ब्रेकअप हो चुका था।

मैंने कभी गहराई से पूछा भी नहीं, मुझे मतलब भी नहीं था, मैं तो बस अपने प्यार की यादों में डूबा रहता, उसके जाने के ग़म से उबरने की कोशिश करता।

एक दिन जब मैं ऑफ़िस से घर लौट रहा था, अचानक बहुत बारिश हुई। और मुझे..... उसकी याद आ गयी | उसको याद करते हुए मैंने बहुत शराब पी ली।

नशे की हालत में घर पहुँचा, रीतू न जाने किस जुनून में थी, वो मुझ पर प्यार जताने लगी।

और नशे में… मुझे उसमें अपने प्यार की छवि नज़र आने लगी… होशो-हवास तो था नहीं मुझे, कुछ समझ ही नहीं आया…ऐसा लगा जैसे मेरे आँसुओं को देखकर वो वापस आ गई हो। और उसी रात, अनजाने में मैं रीतू के क़रीब चला गया।"

आरव की आवाज़ भर्रा गई। उसने गिलास खाली कर दिया और फिर बोला – "सुबह जब आँख खुली तो बगल में रीतू थी। मुझे समझने में देर नहीं लगी कि रात को क्या हुआ।मुझे ख़ुद पर ग़ुस्सा आ रहा था।

लेकिन अब क्या करता?

उसके बाद मैंने ख़ुद पर बहुत संयम रखा। और अजीब बात ये कि उस रात के बाद रीतू ने मुझे कभी मजबूर भी नहीं किया। वो सामान्य थी। शायद उस रात मेरे होंठों से किसी और का नाम सुनकर उसे भी एहसास हो गया था कि मैं उसे कोई और ही समझ रहा था।

एक महीने बाद पता चला कि वो प्रेग्नेंट है। वो ख़ुश थी, शायद उसे भी जीने की वजह चाहिए थी और मुझे भी।

और फिर अन्विका आई हमारी ज़िंदगी में, और मुझे भी जीने का एक मकसद मिल गया।

अन्विका को पाकर मैं बहुत खुश था। रीतू भी दिन-रात उसी में लगी रहती। लेकिन जब अन्विका डेढ़ साल की हुई, रीतू का व्यवहार बदल गया। वो चिड़चिड़ी हो गई थी। बात-बात पर अन्वि को डाँटती, और फ़ोन में ही लगी रहती।

मैंने कई बार टाल दिया, लेकिन एक दिन उसका फ़ोन देख लिया। पता चला कि वो लड़का फिर उसकी ज़िंदगी में लौट आया है।और अब वो दोनों साथ रहना चाहते हैं।

अगर अन्विका न होती, तो शायद वो कब की चली जाती।मैंने सीधा पूछा – अगर जाना चाहती हो तो जा सकती हो।लेकिन अन्विका मेरे पास रहेगी। शायद वो यही सुनना चाहती थी, उसका बॉयफ्रेंड भी किसी और के बच्चे को रखने के लिए तैयार नहीं था, मेरी परमिशन मिलते ही ,वो चली गयी । और मेरे पास रह गई, मेरी नन्ही सी गुड़िया।"

युग चुपचाप सुनता रहा। सुनते-सुनते उसके भी दो पेग हो चुके थे। अब उसके अंदर भी नशा असर दिखाने लगा था।

तभी कमरे में अवनी आई।उसने युग को शराब पीते देखा और जोर से चिल्लाई – "युग!!"

आरव और युग दोनों एक साथ अवनी की तरफ़ मुड़े।

अवनी तेज़ी से आई और युग के हाथ से गिलास छीन लिया। उसकी आँखें भर आईं।

"आप जानते हैं न युग कि ये आपके लिए ज़हर है! पता होते हुए भी आप..? आपको एक बार भी मेरा, आर्यम का और मम्मीजी का ख़याल नहीं आया? आप ख़ुद अपने हाथों से ख़ुद को ज़हर दे रहे हैं?"

अवनी की आवाज़ काँप रही थी। वो चिल्ला भी रही थी और साथ-साथ सिसक भी रही थी।

युग उसके पास आया और हँसते हुए बोला –“जानती हो अवनी? आरव क्या कहता है? मेरी ज़िंदगी में तुम हो, आर्यम है, मम्मी है, अच्छी जॉब है, मेरी ज़िंदगी तो बहुत हसीन है। है क्या?”

वो ज़ोर से हँसा, फिर अचानक गंभीर होकर बोला – “इसे बताओ अवनी, ज़िंदगी मेरी हसीन तो है…

लेकिन मेरे पास ज़िंदगी ही तो नहीं है नाआआआ…!!”

और वो फफक कर रो पड़ा। ये सुनकर आरव अवाक् खड़ा रह गया। जैसे किसी ने उसकी साँसें रोक दी हों। अवनी ने एक पल आरव की ओर देखा, फिर युग का हाथ पकड़कर बोली – “आप घर चलिए, युग। आपने बहोत पी ली है, घर जाकर बात करते हैं।”

वो युग को सहारा देकर बाहर ले गई। जाते-जाते उसकी आँखों से आँसू टपक रहे थे। उसने एक बार फिर आरव की तरफ़ देखा। आरव अब भी वहीं स्तब्ध खड़ा था।

तभी संजय अंदर आया।उसने युग को जाते देखा और सीधे आरव से पूछा – “आरव, युग ने शराब पी ली?

तुम्हें उसे रोकना चाहिए था।”

आरव बोला – “संजय, जाते-जाते उसने कहा… ‘मेरे पास ज़िंदगी नहीं है। इसका क्या मतलब?”

संजय ने गहरी साँस ली, उसकी आँखें भीगीं। धीरे से बोला –“हाँ आरव, युग को लंग कैंसर है। थर्ड स्टेज। उसका इलाज चल रहा है, लेकिन डॉक्टर भी नहीं जानते कि वो बचेगा या नहीं।”

आरव का गिलास हाथ से छूट गया। उसके पैरों तले ज़मीन खिसक गई। उसकी नज़र खिड़की से बाहर चली गई जहाँ अवनी अपने पति को पूरी ज़िम्मेदारी से कार में बिठा रही थी। सोते हुए बच्चे और सास को भी कार में बैठाया।और खुद ड्राइव करते हुए जाने लगी ।

आरव के सीने में दर्द की लहर दौड़ गई। उसने सोचा –“अवनी ने पहले भी अपने जीवन में कोई सुख नहीं देखा और अब भी उस पर दुखों का पहाड़ टूटा है, फिर भी

वो चुपचाप… बिना शिकायत… सबकी जिम्मेदारियां कितनी शिद्दत से निभा रही है।और मैं…?बिना कुछ जाने-समझे…कितना कुछ सुना दिया उसे।” उसकी आँखें नम हो गईं। वो खिड़की से बाहर देखता रहा…अपनी उस फूल-सी नाज़ुक अवनी को,

जो ज़िंदगी के थपेड़ों से अकेली लड़ती चली जा रही थी, बिना किसी से शिकायत किये |

अवनी घर पहुँची। थके कदमों से, लेकिन दृढ़ इरादे के साथ, उसने युग को सहारा देते हुए भीतर लाया। युग का शरीर ढीला पड़ा था, मानो शराब ने उसकी सारी शक्ति निचोड़ ली हो। पीछे से सरला जी आर्यम को गोद में संभाले चली आ रही थीं। उनके चेहरे पर चिंता और गुस्से का मिला-जुला भाव था।

सरला जी ने आर्यम को अपनी बाँहों में लिया और बड़े प्यार से अंदर के कमरे में ले जाकर बिस्तर पर सुला दिया। मासूम बच्चा नींद में था,घर के भीतर फैली उधेड़बुन से अनजान।

उधर अवनी युग को सोफ़े पर बिठाकर तुरंत दवाइयाँ निकाल लाई और उसे पानी के साथ देने लगी। उसके हाथ काँप रहे थे, आँखों से आँसू थमने का नाम नहीं ले रहे थे।तभी सरला जी फट पड़ीं— "युग! तुम्हें ज़रा भी शर्म नहीं आई? ये लड़की रात-दिन एक कर रही है, बस इसी जद्दोजहद में कि कैसे तुम्हें मौत के मुँह से खींच लाए, और तुमने एक मिनट भी नहीं सोचा शराब को हाथ लगाने से पहले?"

उनकी आवाज़ गुस्से से काँप रही थी, और युग अपराधी-सा सिर झुकाकर बैठा था। उसकी आँखों में पछतावा साफ झलक रहा था। अवनी का रोना और तेज़ हो गया। उसकी हर सिसकी युग के दिल पर चोट कर रही थी।

सरला जी ने और कठोर स्वर में कहा— "युग, मेरा क्या है बेटा। मेरी भी अब उम्र हो चली है। एक दिन मैं भी तुम्हारे पापा की तरह इस दुनिया से चली जाऊँगी। लेकिन अगर तुमने खुद का ख्याल नहीं रखा, तो सोचो, अवनी और आर्यम का क्या होगा? कभी सोचा है तुमने?"

युग की आँखों में आँसू भर आए। काँपती आवाज़ में उसने कहा—"मुझे माफ कर दो, मम्मी "

सरला जी ने कठोरता से कहा—"मुझसे नहीं, इस बच्ची से माफ़ी मांगों जो तुम्हारे लिए दिन-रात लड़ रही है।"

युग ने धीरे से अवनी की ओर देखा। उसकी आँखें शर्म से झुकी गयी और उसने अवनी का हाथ थाम लिया, उसका स्वर भीग हुआ था —"अवनी, मुझे माफ़ कर दो। आज के बाद मैं ऐसा कुछ नहीं करूँगा। वादा करता हूँ।"

ये शब्द सुनते ही अवनी फफक पड़ी। उसके आँसुओं ने उसकी चुप्पी तोड़ दी। सरला जी तुरंत आगे बढ़ीं और अवनी को अपने गले से लगा लिया। तीनों एक-दूसरे से लिपटकर बहते आँसुओं में अपना दर्द बाँटने लगे।

कुछ देर बाद सरला जी भारी मन से वहाँ से चली गईं। अपने कमरे में जाकर दवाइयाँ खाईं और थकान व दुःख के बोझ तले सो गईं।

उधर, ऊपर वाले कमरे में अवनी ने कपड़े बदले और बिखरा सामान समेटने लगी। माहौल भारी था। तभी युग ने धीरे से कहा— "अवनी, प्लीज़, मुझसे नाराज़ मत रहो। आई एम रियली सॉरी फ़ॉर दैट। आरव की बातें ही इतनी तीखी थीं कि मैं सह नहीं पाया। खैर क्या करे? वो भी बेचारा बहुत दुखी है।"

अवनी ने युग की तरफ आश्चर्य से पलटकर देखा – "क्यू? आपको कुछ बताया क्या उन्होंने?"

युग थके हुए स्वर में बोला – " हाँ, बताया ना, बहुत कुछ बताया, बहुत प्यार करता था वो किसी लड़की से, पर क्यों छोड़ गई होगी वो उसे? उसकी पत्नी भी किसी और से प्यार करती थी, आरव को अपनी पत्नी से कोई लगाव नहीं था, वो तो नशे की हालत में उसे वही लड़की समझ बैठा और उसके क़रीब चला गया। और उसी का नतीजा है, अन्विका। लेकिन, अच्छा ही हुआ, कम से कम उसके पास आज जीने का एक सहारा तो है।"

युग की बातें सुनकर अवनी के हाथ ठिठक गए। उसका दिल जैसे अचानक तेज़ धड़कने लगा। चेहरा सफेद पड़ गया। काँपती आवाज़ में उसने पूछा—"क्या उन्होंने उस लड़की का नाम बताया?"

युग ने सिर हिलाकर कहा—"नहीं… नहीं बताया। मैंने पूछा भी नहीं। किसी के ज़ख्मों को क्या कुरेदना। लेकिन जो भी हो, अगर वो लड़की आज आरव के साथ होती तो आरव भी शायद एक हँसता-बोलता इंसान होता। उसकी भी हैप्पी फ़ैमिली होती, नहीं?"

ये सुनते ही अवनी की आँखों से आँसू छलक पड़े। उसने झटके से पलके बंद कर लीं, ताकि उसके भीतर का तूफ़ान बाहर न आ पाए। आँसू पोंछते हुए उसने बस इतना कहा—"युग, रात बहुत हो गई है। आप सो जाइए।"

युग ने हामी भरी। थकान और दवा के असर से जल्दी ही नींद की आगोश में चला गया।

लेकिन अवनी? उसे कहाँ नींद आने वाली थी। वह बालकनी में आकर सोफ़े पर सिर टिका कर बैठ गई। हवा उसके आँसुओं को सुखा रही थी, पर दिल के भीतर तूफ़ान मच रहा था।

उसने गहरी साँस भरते हुए सोचा— "क्या सच में? अगर मैं ना गई होती, तो क्या हम साथ होते? एक खुशहाल परिवार बनकर ? शायद आरव भी वैसा ना होता, जैसा आज है। शायद....|"

उसने आँखे बंद कर लीं। पर जैसे ही पलकें झुकीं, अतीत की परछाइयाँ उसके सामने तैरने लगीं—हर वो लम्हा, हर वो दर्द, जिसे वो जितना भूलना चाहती थी, उतना ही गहराई से याद आता जा रहा था।

अध्याय 7

फ्लैशबैक

हिमांशु के कोलकाता चले जाने के बाद, अवनी के मन में उसके सुधरने की जो भी आख़िरी उम्मीदें बची थीं, वो अब पूरी तरह से बुझ चुकी थीं। अब उसके भीतर कोई गिला-शिकवा नहीं था, बस एक गहरी चुप्पी थी। वो बस अपने ढर्रे पर चल रही ज़िंदगी जी रही थी—सुबह कॉलेज जाना, दिनभर पढ़ाना, और शाम को थके क़दमों से अपने सूने फ्लैट पर लौट आना।

आरव के चले जाने के बाद तो कॉलेज भी उसे ख़ाली-ख़ाली सा लगता। वही क्लासरूम, वही बच्चे, वही शोरगुल—लेकिन अब उस सबमें रंग नहीं था। ज़िंदगी जैसे किसी शांत झील की तरह बन गई थी—बहती तो थी, लेकिन उसमें कोई हलचल नहीं थी।

कई दिनों से आरव से भी कोई संपर्क नहीं हुआ था। ना उसने कॉल किया, न ही मैसेज। आरव ने भी जान-बूझकर अवनी से दूरी बनाए रखना ही ठीक समझा था। हालाँकि वो हर दिन उसे याद करता, हर वक़्त उसके ख्यालों में डूबा रहता, पर उसे हमेशा लगता कि कहीं वो उसकी ज़िंदगी में और मुश्किलें खड़ी न कर दे। इसलिए उसने खामोशी को अपना सहारा बना लिया।

समय अपनी चाल से चलता रहा। एक दिन अचानक अवनी के फ़ोन पर संजय का कॉल आया। स्क्रीन पर उसका नाम चमकते ही अवनी के चेहरे पर जैसे लम्बे अरसे बाद मुस्कान खिल उठी। उसने जल्दी से कॉल उठाया—

अवनी (खुशी से चहकते हुए): "हैलो संजय! कैसे हो? पता है, कितनी याद आ रही थी तुम सबकी!"

संजय मुस्कुरा उठा। उसकी आवाज़ में हल्की शरारत थी— "अच्छा! इतनी याद आ रही थी तो एक कॉल भी नहीं कर पाई? झूठी कहीं की!"

अवनी ज़रा सकुचाई, फिर धीरे से बोली— "मैंने जानबूझकर नहीं किया संजय। तुम लखनऊ छुट्टियों में गए हो। सोचा कि तुम अपने परिवार और दोस्तों के साथ

क्वालिटी टाइम स्पेंड कर रहे होगे और मैं तुम्हें डिस्टर्ब ना कर दूँ, इसलिए कॉल नहीं किया।"

संजय की आवाज़ एकदम नरम हो गई—"कैसी बातें कर रही हो अवनी! तुम्हारे कॉल से मैं कैसे डिस्टर्ब हो जाऊँगा? तुम भी तो मेरी फैमिली का हिस्सा ही हो अब"

अवनी का दिल भर आया, होंठों पर हल्की मुस्कान थी। वो कुछ बोल पाती, उससे पहले संजय को न जाने क्या सूझा, वो बोला—"एक मिनट रुको अवनी, मैं वीडियो कॉल करता हूँ।"

कॉल कट हुआ और तुरंत ही उसका वीडियो कॉल आने लगा। अवनी ने हल्की झिझक के साथ कॉल रिसीव किया। स्क्रीन पर संजय ने कैमरा घुमाया और मुस्कुराते हुए बोला— "अवनी, ये लो, मेरी फैमिली से मिलो!"

अवनी थोड़ी घबरा गई, लेकिन फिर खुद को सँभालते संजय की मम्मी से बात की, संजय की मम्मी के चेहरे पर अपनापन छलक रहा था।

इसके बाद संजय ने एक-एक करके अपने पापा और बड़े भाई से भी अवनी की बात करवाई। सबने उससे इतनी अपनेपन से बात की कि अवनी का दिल भर आया। स्क्रीन पर वो परिवार उसे अपना सा लगने लगा।

कॉल ख़त्म होने के बाद संजय ने हँसते हुए कहा—"देखा अवनी, तुम अकेली नहीं हो। यहाँ सब तुम्हें जानते हैं। जब भी लगे, बेहिचक कॉल कर लेना। बाकी… तुम ठीक हो ना?"

हाँ संजय, मैं ठीक हूँ। और वो? वो कैसा है?"

संजय मुस्कुरा दिया, फिर जानबूझकर अनजान बनते हुए बोला—"वो कौन?"

अवनी हल्के गुस्से में—"संजय! तुम्हें पता है मैं किसकी बात कर रही हूँ!"

संजय ने हँसी रोकने की कोशिश की लेकिन ज़ोर से हँस पड़ा—"ठीक है वो, बहुत याद करता है तुम्हें।"

अवनी के गालों पर लालिमा आ गई। होंठों पर मासूम मुस्कान थी—"अच्छा, और बताओ, तुम लोग वापस कब आ रहे हो?"

"उसका तो नहीं पता, वो अभी कुछ वक़्त रुकेगा। लेकिन मैं परसों वापस आ रहा हूँ। आते ही तुमसे मिलूँगा।"

"ठीक है संजय, जब आओगे तो बताना। यहाँ मैं बहुत बोर हो जाती हूँ, अकेले"

"ओके, बाय। टेक केयर।"

"हम्म, यू टू।"

कॉल कटते ही अवनी ने लंबी साँस ली। उसके चेहरे पर हल्की-सी शांति उतर आई थी। उसे लगा जैसे उसके टूटे मन पर किसी ने मरहम रख दिया हो। उसने सोचा, "संजय आ जाएगा तो कम से कम इस ख़ाली शहर में कोई तो होगा मेरा अपना" और यही सोचकर वो वापस अपने कामों में लग गई।

संजय लखनऊ से लौट आया था। आते ही उसने अवनी को कॉल किया और मिलने की बात कही। दोनों ने तय किया कि इस बार कहीं बाहर नहीं, बल्कि अवनी के फ्लैट पर ही मुलाक़ात होगी। अवनी ने ख़ुद उसे खाने का न्यौता दिया।

उस शाम जब संजय उसके फ्लैट पर पहुँचा, दरवाज़ा खुलते ही अवनी की आँखें चमक उठीं। वो सचमुच बच्चों की तरह उछलकर आगे बढ़ी और बिना किसी झिझक के उसे गले लगा लिया। संजय अंदर आया, उसके हाथों में बहुत सारे गिफ्ट्स थे । जब उसने वो सारे गिफ्ट्स अवनी के हाथों में थमाए तो अवनी ठिठक गई। उसके जीवन में पहली बार किसी भाई ने उसे इस तरह गिफ्ट्स दिए थे। उसका दिल भर आया, बेहद भावुक होकर वो उन गिफ्ट्स को देखती रही जैसे कोई बच्ची अपने खिलौने देख रही हो।

दोनों सोफ़े पर आकर बैठे। कुछ देर चुप्पी छाई रही, फिर अचानक संजय ने सीधे सवाल दाग दिया—"तुम्हारा पति कहाँ है, अवनी?"

अवनी के चेहरे का उजाला एकदम से मद्धम पड़ गया "संजय, वो कोलकाता चला गया है। नई जॉब मिल गई है उसे।"

संजय ने भौंहें चढ़ाईं, हल्की कटाक्ष भरी आवाज़ में बोला—"नई जॉब? या कुछ और?"

अवनी ने कड़वी हँसी हँस दी—"एक ही बात है। और वैसे भी, अब मुझे उससे ज़्यादा मतलब नहीं।"

संजय का चेहरा गंभीर हो गया। उसकी आँखों में गुस्सा साफ़ झलक रहा था - "तुम क्यों झेलती हो अवनी उसे, जबकि सब जानती हो उसके बारे में? छोड़ क्यों नहीं देती उसे?"

अवनी का गला रुँध गया। उसकी आँखों में आँसू भर आए। उसने काँपती आवाज़ में कहा—"संजय, इतना आसान नहीं है। अगर मैं उसे छोड़ भी दूँ, तो उसका क्या जाएगा? बदनामी मेरी होगी, मेरे माँ-पापा की होगी, मेरी छोटी बहन है, उसकी शादी का क्या होगा?"

संजय झुँझला गया, उसका स्वर तेज़ हो गया, मगर उसमें चिंता थी - "कैसी पागलपन वाली बातें कर रही हो तुम? इतनी पढ़ी-लिखी होकर ऐसी बातें? और ये सब बकवास बातें तुम्हें कौन कहता है? वो कमीना कहता है? या तुम्हारे मम्मी - पापा ने कभी कहा?"

अवनी ने सिर झुका लिया — "नहीं, मम्मी -पापा को तो कुछ पता भी नहीं। संजय, ये बात मुझे किसी ने नहीं कहीं, लेकिन यही तो हमारे समाज का कड़वा सच है, बदनामी हमशा लड़की और उसके परिवार की होती हैं, चाहे गलती किसी की भी हो।"

संजय ने गहरी साँस ली। उसके शब्दों में दृढ़ता थी—"ऐसा कुछ नहीं है अवनी। हिमांशु तुम्हारे इसी डर का फ़ायदा उठाता है, और तुम समझती ही नहीं। एक बार कोशिश तो करो, अपने मम्मी -पापा से बात करो। इतना मारता-पीटता है वो तुम्हें, और तुम बस सहती जाती हो |"

अवनी अचानक चौक गई। उसकी आँखें फैल गईं - "वो मुझे मारता है, ये तुम्हें किसने बताया, संजय?"

संजय की आँखें नम हो गईं। उसने भारी आवाज़ में कहा—" कौन बतायेगा? तुम तो बताती नहीं, उस दिन ट्रेन में तुमने जो फ़ोटो भेजी थी, वही, जो तुमने आरव को भेजी थी, मैंने भी देखी थी। उसमें साफ़ दिख रहा था कि उसने तुम पर हाथ उठाया है। आरव को बहुत तकलीफ़ हुई थी वो देखकर, लेकिन उसने जानबूझकर तुमसे कुछ नहीं कहा। वो तुम्हारे ज़ख्मों को और कुरेदना नहीं चाहता था। लेकिन अवनी, उस दिन हुआ क्या था? बताओ |"

आरव का नाम सुनते ही अवनी संजय को बस ताकती रह गई। कुछ ही पलों बाद उसका सब्र टूटा और वो फफक पड़ी। आँसू बेतहाशा बह निकले।

संजय हड़बड़ाकर सोफ़े से नीचे उतर आया और उसके पास बैठ गया। उसका हाथ पकड़कर कसकर थाम लिया - "रो मत अवनी, बता दो मुझे। दिल हल्का हो जाएगा।"

सिसकते-सिसकते अवनी ने सब कुछ कह डाला—कैसे एक दिन हिमांशु बिना बात के उस पर हाथ उठा बैठा, कैसे उसके दोस्त घर आए, शराब पी, उनमें से एक ने उस पर गंदी नज़र डाली, कैसे अचानक उसके सास-ससुर आ गए और हिमांशु को डाँटकर रोका, और फिर कैसे कुछ दिनों बाद ही हिमांशु नौकरी के बहाने कोलकाता चला गया।

संजय की आँखें गुस्से और दर्द से लाल हो गईं - "बस, अवनी! अब तुम्हें डरने की ज़रूरत नहीं है। जब तुम्हारे सास-ससुर भी तुम्हारे साथ हैं, तो तुम अकेली नहीं हो। प्लीज़, इस बार अपने पेरेंट्स को ज़रूर बताना। और अगर हो सके तो, उसे छोड़ दो।"

संजय के शब्दों में ऐसी सच्चाई थी कि अवनी के भीतर का बोझ हल्का होने लगा। उसे लगा जैसे किसी ने उसके दिल से पत्थर हटा दिया हो। उसके चेहरे पर राहत उतर आई। कुछ देर बाद अवनी ने खुद को संभाला और उठकर खाने की तैयारी में लग गई। जब संजय ने खाना खाया तो बार-बार तारीफ़ करता रहा - "वाह अवनी, कमाल का खाना बनाया है तुमने, बहोत अच्छी कुक हो तुम तो ।"

अवनी हल्का मुस्कुराई और बोली—"संजय, तुम फ्लैट पर अकेले हो या अनिल और राहुल भी आ चुके हैं?"

"राहुल तो आ चुका है। हम सब आगे एमबीए करने का प्लान कर रहे हैं, और हाँ, आरव भी, वो भी वापस आकर एमबीए करेगा।"

आरव का नाम सुनते ही अवनी के चेहरे पर मासूम मुस्कान खिल गई। उसकी आँखों में चमक आ गई- "अच्छा… कहाँ से? इसी शिवाय इंस्टिट्यूट से?"

संजय ने सिर हिलाया - "नहीं, वहाँ फ़ीस ज़्यादा है। हम किसी और कॉलेज का सोच रहे हैं।"

अवनी का चेहरा अचानक उदास पड़ गया -- "ओह अच्छा।"

संजय उसकी आँखों को पढ़ चुका था। वो धीमे स्वर में बोला—"समझ सकता हूँ, अवनी। तुम आरव को बहुत मिस करती हो ना?"

अवनी चुप रही।

"तुम दोनों एक-दूसरे के लिए बहुत कुछ महसूस करते हो, अवनी। बस, कह नहीं सकते। तुम्हारी अलग मजबूरियाँ हैं और उसकी अलग। लेकिन अवनी, मैं हमेशा

भगवान से प्रार्थना करता हूँ कि कोई चमत्कार हो और तुम दोनों एक हो जाओ। और हाँ, मैं सच में ये दिल से कह रहा हूँ।"

अवनी बस चुपचाप उसे देखती रही। कुछ पल बाद उसने बात बदल दी—"संजय, उस फुद्दू अनिल का क्या हाल है? वो नहीं आया क्या वापस?"

संजय समझ गया कि अवनी अब इस बात को आगे नहीं बढ़ाना चाहती। उसने भी मुस्कुराकर कहा— "वो पागल कल आ रहा है। एमबीए करेगा, लेकिन साथ में जॉब भी ढूँढ रहा है।"

"अच्छा, तो एक काम करो। मैंने खाना पैक कर दिया है राहुल और अनिल के लिए भी। ले जाना।"

"अरे, इसकी क्या ज़रूरत है। राहुल तो खा चुका होगा और अनिल कल आएगा।"

"तो फ्रीज़ में रख देना ना, खराब थोड़े ही होगा। कल खा लेना सब लोग, प्लीज़।"

संजय हँस पड़ा— "ओके, मेरी माँ! चलो अब मैं चलता हूँ। अपना ध्यान रखना।"

अवनी उसे बाहर तक छोड़ने आई। दरवाज़े पर कुछ देर खड़ी रही जब तक वो आँखों से ओझल नहीं हो गया। और उसके जाते ही, आरव की यादों ने उसके दिल को फिर कसकर जकड़ लिया। वो एक बार फिर ख़ामोशी में डूब गई|

कुछ दिनों बाद आरव भी लौट आया। आरव, राहुल, संजय और अनिल — सबने मिलकर एक दूसरे कॉलेज में एमबीए कोर्स में एडमिशन ले लिया। संजय की होटल की नौकरी वैसे ही जारी थी, मगर अब उसका प्रमोशन हो चुका था और काम का बोझ काफ़ी बढ़ गया था। अनिल ने भी एक रियल एस्टेट कंपनी में नई जॉब शुरू कर दी थी।राहुल अपने लिए जॉब तलाश रहा था। आरव का थिएटर वैसे ही चल रहा था।

अवनी भी अपने कॉलेज में व्यस्त रहती। बीच-बीच में उसके पापा, मम्मी , छोटी बहन और संजय का आना-जाना लगा रहता। एक दिन अवनी ने संजय को फोन लगाया।

संजय हँसते हुए – “हाय अवनी, कैसी हो? सॉरी यार, तुमसे बहुत दिनों से कांटेक्ट नहीं हो पाया। काम का बोझ बहुत बढ़ गया है आजकल।”

अवनी मुस्कुराकर – “कोई बात नहीं संजय, तुम कैसे हो? सुनो, कल मम्मी-पापा और अवंती फिर से भोपाल आ रहे हैं। इस बार अवंती का बर्थडे यहीं मनाने का प्लान है। पापा ने भी कहा है कि तुम आना ज़रूर।”

पहले भी जब-जब मम्मी-पापा भोपाल आते थे, अवनी ने उनकी संजय से मुलाकात करवाई थी। दोनों को संजय अच्छा लगता था। उन्हें तसल्ली मिलती कि हिमांशु कि ग़ैरमौजूदगी में भी कोई है भोपाल में, जो अवनी का ख़्याल रखता है। छोटी बहन अवंती को स्टेट लेवल पर फुटबॉल खेलने जबलपुर जाना था, इसी वजह से वह भोपाल आई हुई थी। और अब उसका जन्मदिन आने वाला था। अवनी ने सोचा कि इस बार बर्थडे भोपाल में ही सेलिब्रेट करेंगे।

संजय ने हामी भर दी। और हमेशा की तरह जब वह आया तो सबके लिए गिफ़्ट्स लेकर आया। अवनी लाख मना करती मगर वह मानता ही नहीं था। जन्मदिन का छोटा-सा सेलिब्रेशन घर पर ही हुआ। एक साधारण केक-कटिंग, कुछ दोस्तों को बुलाकर, लेकिन माहौल में अपनापन और ख़ुशी भरी हुई थी।

बर्थडे के बाद, जब सब अपने-अपने काम में व्यस्त हो गए — पापा टीवी पर न्यूज़ देख रहे थे, मम्मी किचन का काम समेट रही थीं और अवंती अपने दोस्तों को बाहर छोड़ने गई थी — अवनी और संजय अकेले बालकनी में बैठ गए।

थोड़ी देर चुप्पी रही। फिर अचानक अवनी ने संजय की ओर देखते हुए पूछा – “संजय, आरव कैसा है?”

संजय हल्की मुस्कान के साथ – “वैसा ही है जैसे पहले था, अब भी तुम्हें उतना ही याद करता है।”

अवनी मुस्कुरा दी। उसने धीरे से पूछा – “और बाकी सब कैसे हैं? वो फुद्दू अनिल?”

संजय ज़ोर से हँस पड़ा – “मत पूछ अवनी, मैं तो तुम्हें फोन करके ही सब बताने वाला था, लेकिन समय नहीं मिल पाया। बहुत बुरा हुआ है उसके साथ।”

अवनी हैरान – “क्या हुआ अनिल को?”

“तुम्हें याद है ना बीबीए के आख़िरी सेमेस्टर में वो किसी लड़की से प्यार करने लगा था?”

“हाँ, लेकिन वो किसी लड़की पर ज़्यादा दिन टिकता कहाँ था?”

“लेकिन अवनी, इस बार टिक गया था। जब उसकी जॉब लग गई रीअल एस्टेट कंपनी में, तब उसने फ्लैट छोड़ दिया और घर वापस चला गया। उस लड़की का नाम था - प्रीति। उससे वो लगातार मिलता रहा, और इस बार, सच में उसे प्यार हो गया था।”

“ओह... फिर?”

“फिर क्या, एक दिन प्रीति के दोनों दबंग भाइयों को उनके रिश्ते की भनक लग गई। और उन्होंने अनिल को प्रीति के साथ कलियासोत डैम पर पकड़ लिया।”

अवनी चौककर – “फिर...??”

संजय ठहाका लगाते हुए – “फिर क्या... कुत्तों की तरह धोया उसको उन दोनों ने!”

अवनी भौंहें चढ़ाकर – “संजय! ग़लत बात है ये, वो तुम्हारा दोस्त है।”

“तो क्या, जितनी लड़कियों के दिल से खेला है उसने, ये सज़ा तो उसे मिलनी ही थी।”

अवनी को वो पुराना वक़्त याद आ गया, जब अनिल ने उसे धोखे से फ्लैट पर बुलाया था। उसकी आँखें ग़ुस्से और करुणा दोनों से भर गईं। अवनी दृढ़ स्वर में – “हाँ लेकिन वो बदल चुका है संजय। उसे अपने किए पर पछतावा है।”

“लेकिन सज़ा तो मिलनी थी ना अवनी, किसी ना किसी तरह से।”

“ठीक है... लेकिन फिर क्या हुआ? दोनों अलग हो गए?”

संजय का चेहरा गंभीर हो गया – “हाँ, शायद। उस दिन जब प्रीति के भाई अनिल को मार रहे थे, प्रीति बहुत रोई थी। उसने अपने भाइयों को रोकते हुए कहा, कि अब वो अनिल से नहीं मिलेगी, बस वो इसे और न मारे |”

“ये तो बहुत बुरा हुआ, क्या प्रीति के माँ-बाप को पता है?”

“नहीं। अनिल ने बताया था कि उसके माँ-बाप सीधे-साधे लोग हैं। लेकिन भाई? वो पूरे गुंडे हैं। मोहल्ले में धौंस जमाकर घूमते हैं।”

अवनी उदास हो गई – “मुझे तो बहुत बुरा लग रहा है, ऐसा नहीं होना चाहिए था।”

संजय ने हल्की हँसी में कहा – “हम क्या कर सकते हैं अवनी, खैर, छोड़ो। अब चलता हूँ, रात हो रही है।”

संजय अंदर आया – "ठीक है अंकल, आंटी, अब मैं चलता हूँ। आप लोग अपना ध्यान रखिएगा।"

मम्मी प्यार भरे स्वर में – "अरे, संजय! ख़ाली हाथ जा रहे हो? रुको ज़रा, ये टिफ़िन ले जाओ। वहाँ कितने लड़के रहते हैं और ? तीन-चार तो होंगे ही ना? सबके लिए खाना रख दिया है मैंने।"

संजय ने अवनी की ओर देखा। अवनी हँसते-हँसते लोटपोट हो गई।

संजय शरारती अंदाज़ में – "अब समझ में आया कि तुम्हारे अन्दर ये टिफ़िन पैक करके देने का वाला गुण कहाँ से आया है!"

तभी अवंती भी लौट आई – "अरे भैया, आज यहीं रुक जाओ ना, कल चले जाना।"

संजय ने उसके सिर पर हाथ फेरते हुए कहा – "नहीं छोटी, कल मुझे सुबह होटल जाना है। तुम्हारी नींद डिस्टर्ब हो जाएगी। फिर कभी रुकूँगा। ठीक है?"

उसने सबको नमस्ते कहा और अवनी को हल्की-सी मुस्कान देकर अपने फ्लैट चला गया। उसके जाने के बाद अवनी देर तक बालकनी में खड़ी रही। उसकी आँखें अनिल की हालत की तस्वीरों में खो गईं - "कितना बदल गया हैं अनिल, सच में पछता रहा होगा शायद। इंसान ग़लतियाँ तो करता है, लेकिन इतनी बड़ी सज़ा...?"

उसके मन में दोस्त के लिए करुणा और अपने अतीत की कड़वी यादें आपस में गुत्थमगुत्था होने लगीं।

अगले दिन, अवनी कॉलेज की लाइब्रेरी में कुछ किताबें इश्यू करवा रही थी।लाइब्रेरी लगभग सुनसान थी। इस वक़्त ज़्यादातर स्टूडेंट्स अपनी-अपनी क्लासरूम में थे।अवनी की नज़र अचानक कोने वाली टेबल पर पड़ी। वहाँ एक लड़का चुपचाप बैठा था, ना तो वो किताब पढ़ रहा था, ना ही कुछ लिख रहा था।बस कभी मोबाइल देख लेता, कभी घड़ी में टाइम देखता।

अवनी को अजीब लगा- ये इस वक़्त यहाँ क्या कर रहा है ?"

तभी उस लड़के की नज़र अवनी पर पड़ी। उसने हल्की-सी मुस्कान दी।अवनी ने भी जवाब में एक छोटी-सी मुस्कान दे दी।वो उसके पास चली गई और बोली – "आप यहाँ लाइब्रेरी में क्या कर रहे हो? इस समय तो सबकी क्लासेज़ हैं?"

लड़का हल्का-सा झेंप गया। फिर धीरे से बोला –“वो, मैं क्लास में ही था। मेरा नाम अभय है, अभय सिंह। मैं बीबीए फर्स्ट सेमेस्टर में हूँ, वो मिश्रा सर क्लास ले रहे थे... मैं ज़रा दोस्तों से बातें करने लगा... उन्होंने देख लिया।"

थोड़ा रुककर, शर्माते हुए बोला – "और फिर... उन्होंने मुझे..."

अवनी (मुस्कुराकर बीच में ही) – "क्लास से निकाल दिया?"

अभय (शर्मिंदा होकर सिर झुकाते हुए) – "हम्म"

अवनी हँस पड़ी। हँसते-हँसते उसके दिमाग़ में अनिल की यादें कौंध गई। वो भी तो बिल्कुल ऐसा ही था , ऐसा ही चंचल, उतना ही शरारती। अवनी ने हँसी दबाते हुए पूछा – “लेकिन आप मुझे देखकर मुस्कुराए क्यों? क्या आप मुझे जानते हो?"

अभय ने बड़ी मासूमियत से उसकी आँखों में झाँकते हुए कहा – “नहीं, आपको मैं नहीं जानता। लेकिन आपका चेहरा देखकर मुझे अपनी माँ की याद आ गई। आपका चेहरा मेरी माँ से बहुत मिलता-जुलता है|"

इतना कहते ही उसकी आँखें हल्की-सी भीग गईं - "मैं कभी अपनी माँ के बिना बाहर नहीं रहा, पहली बार घर से दूर आया हूँ। आपको देखा तो, माँ की याद आ गई।"

अवनी का दिल जैसे पिघल गया। उसने अनायास ही उसके सिर पर हाथ फेर दिया – "कहाँ रहती हैं आपकी माँ?"

अभय – "लखनऊ, मैं वहीं से हूँ। बारहवीं तक की पढ़ाई मैंने वहीं की। अब हायर स्टडीज़ के लिए भोपाल आया हूँ।"

लखनऊ का नाम सुनते ही अवनी को आरव याद आ गया | तभी अगली क्लास की बेल बजी।

अभय ने बैग उठाया और बोला – “मैडम, मैं अब अगले लेक्चर में जा रहा हूँ।"

अवनी खयालों में खोई हुई थी। बस हल्के से “हम्म...” कहकर स्टाफ़ रूम की ओर चली गई।

स्टाफ़ रूम में बैठी अवनी के मन में एक और चेहरा उभरा – **अनिल**। वो बार-बार सोच रही थी कि कल संजय ने अनिल और प्रीति के बारे में जो बताया, शायद उससे सच जानना ज़रूरी है।उसने मोबाइल उठाया और अनिल का नंबर डायल किया। कुछ ही देर में कॉल कनेक्ट हो गई।

अनिल – "हाय अवनी ! कैसे याद किया? तुम कैसी हो?"

अवनी – "मैं ठीक हूँ अनिल, कल संजय आया था। उसने तुम्हारे बारे में कुछ बताया"

अनिल (थोड़ा घबराकर) – "क्या बताया?"

अवनी – "यही, कि तुम और प्रीति अब साथ नहीं हो।"

कुछ पल चुप्पी रही फिर अनिल की भारी आवाज़ आई– "हाँ अवनी, अब उससे मिलना बहुत मुश्किल हो गया है। उसके भाई हर जगह नज़र रखते हैं। हमें मिलने ही नहीं देते।"

अवनी ने धीरे से पूछा – "अनिल, क्या तुम सच में उससे प्यार करते हो?"

अनिल – "हाँ अवनी, सच में। मैं उसके बिना जी नहीं पा रहा हूँ। शायद मैं अपने कर्मों की सज़ा भुगत रहा हूँ। मैंने बहुत ग़लत किया है, बहुत-सी लड़कियों की ज़िंदगी से खेला है, यहाँ तक कि तुम्हारे साथ भी....."

इतना कहकर वो फूट-फूटकर रो पड़ा। अवनी की आँखें भी भीग गईं।

अवनी – "अरे, रोओ मत अनिल। प्रायश्चित तुम कब का कर चुके हो। अच्छा ये बताओ, क्या उसके माँ-पापा को सब पता है?"

अनिल – "नहीं "

अवनी – "तो फिर एक काम करो। उसके घर जाओ। प्रीति के माँ-पापा से उसका हाथ माँगो।"

अनिल – "लेकिन उसके भाई ? वो तो कभी मानेंगे नहीं। और अगर उसके माँ-पापा ने भी इंकार कर दिया तो ?"

अवनी – "कितनी अजीब बातें करते हो तुम! अच्छी नौकरी है, अच्छी फैमिली से हो, और उनकी बेटी से इतना प्यार करते हो, किसी भी माँ-बाप को और क्या चाहिए? कम-से-कम एक कोशिश तो करो।"

अनिल – "ठीक है अवनी, मैं कोशिश करता हूँ।"

अवनी – "और हाँ, जैसा भी हो, मुझे ज़रूर बताना। भगवान का नाम लेकर जाओ।"

अनिल – "ठीक है, उसके भाईयों ने अगर ज़िंदा छोड़ा तो ज़रूर करूँगा कॉल।"

अवनी (हँसते हुए) – "आल दी बेस्ट !"

उसी शाम, अनिल ने हिम्मत जुटाई। कार प्रीति के घर बाहर पार्क की और घर का दरवाज़ा खटखटाया। दरवाज़ा प्रीति की माँ ने खोला।

माँ – "जी, आप कौन?"

अनिल – "आंटी नमस्ते, मैं अनिल हूँ, प्रीति का दोस्त। मुझे आपसे और अंकल से ज़रूरी बात करनी है।"

तभी अंदर से प्रीति बाहर आई। अनिल को देखकर वो चौंक गई - "अनिल ! तुम यहाँ ?"

अनिल बस उसे देखता रह गया। प्रीति घबरा गई। क्योंकि उसके भाई भी घर पर ही थे। दोनों गुस्से से बाहर आए।

भाई (अजय)– "तेरी इतनी हिम्मत ? तू यहाँ तक आ गया? आज तो तू ज़िंदा नहीं जाएगा यहाँ से!"

उसने अनिल की कॉलर पकड़ ली। तभी प्रीति के पापा भी बाहर आ गए। उनकी भारी आवाज़ गूँजी – "अजय! सुमित! छोड़ो उसे !"

दोनों चुपचाप हट गए। प्रीति के पापा ने गौर से अनिल को देखा। उन्हें वो शरीफ़ और सुलझा हुआ लड़का लगा।

पापा – "जी बताइए,. आपको क्या बात करनी है?"

अजय (गुस्से में चिल्लाकर) – "पापा, ये आवारा लड़का हमारी बहन को बहला-फुसलाकर...!"

पापा – "चुप रहो! हर किसी को अपने जैसा समझते हो? और मेरे होते हुए तुम लोग बात करोगे?"

उनकी आँखों की सख़्ती देखकर दोनों भाई चुप हो गए।

पापा – "आप अंदर आइए |"

अनिल अंदर आया और सोफ़े पर बैठा। प्रीति, उसकी माँ और पापा भी बैठ गए।दोनों भाई अब भी खड़े थे।

पापा – "हाँ बेटा, अब बताओ क्या बात है?"

अनिल ने गहरी साँस ली और धीरे-धीरे बोला – "अंकल, मेरा नाम अनिल सक्सेना है। मैं एक रीयल एस्टेट कंपनी में बिज़नेस रिलेशनशिप मैनेजर हूँ। मेरे पापा बैंक ऑफ बड़ौदा में मैनेजर हैं। मम्मी हाउसवाइफ हैं। मैं एमबीए भी कर रहा हूँ। मेरी सैलरी अभी चालीस हज़ार है, आगे प्रमोशन होंगे तो और बढ़ेगी। हमारा शास्त्री नगर में मकान है, कोलार में भी घर बन रहा है। मेरे पास कार भी है, बाइक भी..."

प्रीति के माँ-पापा एक-दूसरे को देखने लगे।

पापा – "बेटा, ये सब तो ठीक है, लेकिन आप हमें ये सब क्यों बता रहे हो?"

अनिल ने आँखें बंद कीं, हिम्मत जुटाई, और एक ही साँस में बोल गया – "अंकल, मैं प्रीति से शादी करना चाहता हूँ।"

प्रीति की माँ-पापा ने एक-दूसरे की तरफ़ देखा और अचानक ज़ोर से हँस पड़े। प्रीति भी हँसी दबा नहीं सकी।

पापा – "वो सब तो ठीक है बेटा, लेकिन अपने माँ-पापा को भी लेकर आओ। फिर आगे की बात करेंगे।"

अब अनिल भी मुस्कुरा दिया। उसने एक नज़र अजय और सुमित की तरफ़ डाली। दोनों भाई की आँखों में पश्चाताप झलक रहा था।

अनिल – "जी मेरे माँ-पापा तो तैयार हैं। मैं उन्हें कल ही लेकर आऊँगा।"

वो सबसे विदा लेकर बाहर जाने लगा। अजय और सुमित भी उसके पीछे-पीछे बाहर आ गए।

अजय – "माफ़ कर देना यार, हमें लगा तुम भी हमारी बहन के साथ खेलकर छोड़ दोगे।"

सुमित – "क्या करें... भाई हैं उसके..."

अनिल (हल्की मुस्कान के साथ) – "कोई बात नहीं., लेकिन सालों, बहुत मारा है तुम लोगों ने मुझे, इसका बदला तो लूँगा।"

तीनों हँस पड़े और गले मिले।

प्रीति खिड़की से ये सब देख रही थी। उसके होंठों पर अनायास मुस्कान आ गई।

कुछ दिनों बाद अवनी अपने कमरे में बैठी थी कि अचानक उसके मोबाइल पर अनिल का कॉल आया। स्क्रीन पर नाम चमका तो उसके होंठों पर हल्की-सी मुस्कान आई। उसने झट से कॉल उठाया – "हाय अनिल, कैसे हो?"

फोन के उस पार से अनिल की भारी-सी आवाज़ आई – "जिंदा हूँ।"

इतना सुनते ही अवनी ज़ोर से हँस पड़ी – "हाँ, वो तो कॉल देखकर मैं समझ ही गई थी। अच्छा, तुम गए थे ना प्रीति के घर?"

अनिल की आवाज़ में उत्साह झलक रहा था – "हाँ बाबा, मैं प्रीति के घर भी गया, उसके मम्मी-पापा से भी मिला, उनसे प्रीति का हाथ भी माँगा और अपने मम्मी-पापा से भी मिलवा दिया। और आखिरकार, हमारी शादी फिक्स हो गई है, अवनी।"

ये सुनकर अवनी की आँखें चमक उठीं। उसके होंठों से खुशी से चीख जैसी निकल पड़ी – "क्या? सच? देट्स ग्रेट अनिल, तुम दोनों को बहोत बहोत बधाई हो!"

फोन के उस पार अनिल की आवाज़ भर्रा गई थी, मगर उसमें गर्व और कृतज्ञता दोनों झलक रहे थे – "और इन सबका श्रेय इस बार सच में तुम्हें जाता है, अवनी। तुमने ही मुझे हिम्मत दी कि मैं वहाँ जाऊँ और शादी की बात करूँ, वरना मैं ज़िंदगी भर प्रीति की यादों में तड़पता रहता। थैंक यू अवनी। आज तुम्हारी वजह से मैं और प्रीति एक होने जा रहे हैं।"

यह सुनकर अवनी की आँखें नम हो गईं। दिल भर आया था, गले में जैसे कुछ अटक गया। वह चाहकर भी कुछ बोल नहीं पाई।

अनिल ने मुस्कराते हुए आगे कहा –"और हाँ अवनी, शादी अगले महीने ही है। मैं तुम्हें कार्ड भेज रहा हूँ, तुम्हें आना ही है, ओके?"

अवनी ने आँसू पोंछते हुए जबरन मुस्कान ओढ़ ली और धीमे स्वर में बोली – "हाँ अनिल, पक्का। और फीर से एक बार बधाई |"

इतना कहकर उसने कॉल कट कर दिया। फोन कटते ही अवनी कुछ देर चुपचाप बैठी रही। उसके होंठों पर हल्की मुस्कान थी, मगर आँखों से आँसू थमने का नाम

नहीं ले रहे थे। दिल में कहीं सुकून था कि उसका दोस्त अब अपनी खुशियों की ओर बढ़ रहा है।

आरव को जब यह बात पता चली कि अनिल की शादी तय होने के पीछे अवनी का सबसे बड़ा हाथ है, तो उसके दिल में अवनी के लिए गर्व की लहर दौड़ गई। उसे लगा जैसे यही उसकी अवनी है, जो हमेशा दूसरों की खुशियों के लिए पहले सोचती है।

अब अनिल की शादी फिक्स हो चुकी थी। तैयारियाँ ज़ोरों पर थीं। संजय, राहुल और आरव, तीनों ही हर रस्म, हर काम में डूबे हुए थे। मेहंदी, सगाई, संगीत, हर फंक्शन में हँसी–ठिठोली, डांस और रंगीनियाँ थीं। सब दोस्त एंजॉय कर रहे थे। लेकिन भीड़ के बीच सिर्फ़ एक इंसान था, आरव, जो हर जगह, हर चेहरे के बीच बस एक ही चेहरे की तलाश कर रहा था—अवनी।

उसकी नज़रें हर फंक्शन में अवनी को ढूँढती रहीं। पर अवनी कहीं भी नज़र नहीं आई। आरव का दिल जैसे हर पल डूबता चला जाता था। संजय उसके दिल का हाल समझ रहा था। वह जानता था कि अवनी के न आने से आरव के सीने में कितना बोझ बढ़ रहा है।

शादी से एक दिन पहले संजय ने खुद ही अवनी को कॉल किया – "अवनी, तुम अनिल की शादी के फंक्शन्स क्यों नहीं अटेंड कर रही हो?"

अवनी – "वो, कॉलेज से छुट्टी नहीं मिल पा रही थी संजय।"

संजय – "लेकिन कल की छुट्टी तो ली है न तुमने? कल तैयार रहना, मैं आऊँगा तुम्हें लेने।"

अवनी झिझक गई। उसके स्वर में अजीब-सी हिचक थी – "संजय… मैं नहीं आ पाऊँगी शादी में।"

संजय चौंक पड़ा – "क्यों? क्या बात है अवनी? सब ठीक तो है ना? तुम ठीक हो?"

अवनी की आवाज़ टूट गई – "नहीं, मैं ठीक नहीं हूँ संजय, तुम भी जानते हो वहाँ आरव होगा। मैं… मैं उसे फेस नहीं कर पाऊँगी।"

संजय ने समझाया — "ये क्या बात हुई अवनी? अनिल ने सबसे पहला इनविटेशन तुम्हें दिया है। और आरव? वो कब से तुमसे बस एक बार मिलना चाहता है और

तुम्हारी सुई आज भी एक ही बात पर अटकी हैं, कम से कम एक बार उससे मिल तो लो अवनी।"

अवनी की आँखें नम हो गईं। वह फुसफुसाई – "और उस एक बार के मिलने से क्या होगा संजय? न हम एक-दूसरे को अपनी फीलिंग्स बता सकते हैं और ना ही उसे अलविदा कहने की हिम्मत है मुझमें। संजय प्लीज मुझे फ़ोर्स मत करो |"

संजय कुछ पल खामोश रहा। उसकी नज़र आरव पर पड़ी, जो पास बैठा गुमसुम सा था। फिर उसने गहरी साँस लेकर कहा – "ठीक है, जैसा तुम ठीक समझो। लेकिन अनिल को बहुत बुरा लगेगा।"

अवनी – "मैं उसे समझा दूँगी ।"

संजय – "हूँ, ओके। अपना ख्याल रखना।"

कॉल कट होने के बाद अवनी बहुत देर तक कश्मकश में डूबी रही। उसने सही किया या ग़लत? लेकिन वह जानती थी, शादी में जाना मतलब आरव से मिलना। और मिलना मतलब बेवजह अपने और उसके दिल में अरमानों को जगाना, फिर उन्हें खुद ही कुचल देना। इससे अच्छा तो ना मिलना ही बेहतर है।

उधर शादी में जब आरव को अवनी के ना आने की ख़बर मिली तो उसका चेहरा बुझ गया। वैसे उसे पहले से अंदेशा था कि अवनी नहीं आएगी। पर जो बची-खुची उम्मीद थी, वो भी आज ख़त्म हो गई।

अगले दिन अनिल और प्रीति की शादी हो गई। रात की पार्टी में हर कोई मौजूद था।

स्टेज पर अनिल ने अचानक संजय से पूछा – "संजय, अवनी कहाँ है?"

संजय ने सिर झुका लिया – "वो नहीं आई।"

अनिल को बुरा लगा, मगर वजह वह भी जानता था।

थोड़ी देर बाद जब आरव डिनर के लिए चला गया, तो संजय को न जाने क्या सूझा उसने राहुल को स्टेज पर बुलाया और वहीं से अवनी को वीडियो कॉल लगा दी।

जैसे ही कॉल रिसीव हुआ, स्क्रीन पर अवनी का चेहरा उभरा।

संजय – "हाय अवनी! तुम नहीं आ सकी तो क्या हुआ, शादी देख तो सकती हो ना! ये देखो, न्यूली वेडेड कपल।" उसने कैमरा अनिल की तरफ घुमा दिया।

अवनी खुशी से खिल उठी –“हाय अनिल ! बहुत स्मार्ट लग रहे हो। प्रीति से मिलवाओ।”

अनिल – “मिलवाता हूँ, लेकिन मैं तुमसे नाराज़ हूँ। तुम आई क्यों नहीं ?”

अवनी उदास होकर बोली –“अनिल, तुमको तो पता है ना ”

अनिल ने गहरी साँस ली – “चलो कोई नहीं, घर ज़रूर आना, प्रीति से मिलने ।”

उसने कैमरा प्रीति की तरफ घुमा दिया। प्रीति को अनिल पहले ही अवनी के बारे में सब बता चुका था। प्रीति ने दोनों हाथ जोड़कर नमस्ते किया।

अवनी मुस्कुराई –“वाह प्रीति, तुम तो दुनिया की सबसे सुंदर दुल्हन लग रही हो। नज़र ना लगे तुम्हें। और शादी की बहोत बहोत बधाइयाँ| ”

प्रीति शरमा गई और धीरे से “थैंक यू” बोली।

फिर अवनी ने राहुल से भी थोड़ी बातें कीं। तीनों दोस्त वीडियो कॉल पर अवनी से हँसी-मज़ाक कर रहे थे। मगर आरव वह दूर किसी कोने में बैठा, गुमसुम, अपने दर्द में डूबा था।

तभी अवनी ने झिझकते हुए कहा – “संजय, आरव कहाँ है?”

संजय हँस पड़ा – “यार, तुम भी अजीब हो। जब देखना ही था तो शादी में ही आ जाती।”

अवनी – “अरे यार संजय, बस ऐसे ही दिखा दो ना। बात नहीं करूँगी उससे। चुपके से दिखा दो प्लीज़।”

संजय ने शरारत से कैमरा पलटा और दूर खड़े आरव को दिखा दिया – “ये देखो, बेचारा, प्यार का मारा ”

और ज़ोर से हँस पड़ा।

स्क्रीन पर आरव को देखकर अवनी का दिल मचल उठा। उसकी आँखें नम हो गईं। अचानक उसने देखा आरव के पास ही एक लड़का खड़ा है, सफ़ेद ब्लेजर पहने हुए।

वह चौंक गई और तुरंत पूछ बैठी – “संजय, वो कौन है आरव के बगल में, सफ़ेद ब्लेजर वाला?”

संजय ने हल्की हँसी के साथ कहा – “वो… वो तो आरव का छोटा भाई है। आंटी ने इस बार इसे भी आरव के साथ भेज दिया—पढ़ने के लिए। या यूँ कहो, आरव पर नज़र रखने के लिए।”

अवनी – “इसका नाम, अभय है क्या?”

संजय – “हाँ। और तुम्हारे ही कॉलेज में तो एडमिशन कराया है इसका, बीबीए में। क्यों, तुम मिल चुकी हो क्या?”

अवनी हँस पड़ी, – “हाँ, मिल चुकी हूँ। पक्का दूसरा अनिल है ये, बहुत शैतान है।”

संजय ने मज़ाक में जोड़ा – “हाँ, थोड़ा बदमाश है। आरव से एकदम उल्टा।”

अवनी कुछ पल चुप रही। फिर धीमे स्वर में पूछ बैठी – “संजय, आरव बहुत दुखी है क्या?”

संजय ने लंबी साँस ली – “हूँ, है तो । लेकिन वो ठीक हो जाएगा। तुम मत परेशान हो, अच्छा अब हम लोग भी खाना खाते हैं। फिर कल बात करता हूँ तुमसे। बाय, तुम भी खाना खा लो।”

अवनी – “हूँ, ओके, बाय।”

कॉल कट गया। लेकिन कॉल कटने के बाद भी अवनी देर तक स्क्रीन को देखती रही। उसकी आँखें फिर भर आईं। वो मन ही मन दोहराती रही –"काश, हालात कुछ और होते।"

अध्याय 8

समय अपनी रफ़्तार से आगे बढ़ रहा था। हर कोई अपनी-अपनी ज़िंदगी में व्यस्त था। अवनी अपने कॉलेज में पढ़ाई और ज़िम्मेदारियों में उलझी रहती, वहीं दूसरी ओर आरव अपनी एमबीए की पढ़ाई और थियेटर्स में व्यस्त हो गया था।

इसी बीच अवनी को कॉलेज में एक नया साथी मिल गया था—अभय।

जिस दिन से अवनी को पता चला कि अभय दरअसल आरव का छोटा भाई है, उसी दिन से उसने उसे अपने छोटे भाई जैसा मान लिया।

अवनी के दिल में उसके लिए ममता उमड़ आई थी। वह उसकी छोटी-छोटी बातों का ख़याल रखती, असाइनमेंट पूरे करवाती और जब भी उसे कोई प्रॉब्लम आती तो सबसे पहले उसकी ढाल बन जाती। अभय को भी अवनी बहुत पसंद आ गई थी।

वह अक्सर कहता—"आपको देखता हूँ तो मुझे अपनी माँ याद आती है, आपके बात करने का अंदाज़, समझाने का तरीका, सब वैसा ही है।"

अवनी ये सुनकर मुस्कुरा देती, शायद उसे भी कहीं भीतर ये महसूस होता कि आरव की ज़िम्मेदारी अब उसने अपने हिस्से से निभानी शुरू कर दी है।

लेकिन अभय का स्वभाव आरव से बिलकुल उल्टा था। वो बेहद शरारती और नटखट निकला।

कॉलेज में उसने अपने ही जैसे लड़कों की टोली बना ली थी। उनकी हरकतों की शिकायतें अक्सर आती रहतीं। मगर जब भी मामला बड़ा बनता, अभय तुरंत अवनी के पीछे छुप जाता और अवनी भी हर बार उसकी गलतियों को ढककर उसे बचा लेती।

अभय का मासूम सा चेहरा देखकर अवनी कभी डाँट ही नहीं पाती थी और जब कभी अभय अपनी माँ को याद कर रोने लगता, तो अवनी उसे समझाती, उसके आँसू पोंछती और कहती— "अरे पागल, माँ कभी कहीं जाती हैं क्या? वो तो हमेशा तुम्हारे साथ हैं तुम्हारे दिल में।"

ये शब्द सुनकर अभय थोड़ा सँभल जाता और दिल का बोझ हल्का करके हँसने लगता। धीरे-धीरे अवनी और अभय का यह रिश्ता कॉलेज में प्रसिद्ध हो गया |अब अवनी का कॉलेज में मन लगने लगा।

उधर, आरव इस समय एक नए प्ले की रिहर्सल्स में व्यस्त था। भारत भवन में जल्द ही युवा लेखिका **"महक"** के नए उपन्यास पर आधारित नाटक का मंचन होना था। और उसमें मुख्य भूमिका में आरव ही था। लेकिन आरव के मन में हमेशा एक सवाल खटकता था, महक के उपन्यासों में क्यों हमेशा प्रेम अधूरा ही रह जाता है? वह अक्सर सोचता— "क्या लेखन के लिए हमेशा प्रेम को अधूरा ही दिखाना ज़रूरी है? क्या कभी किसी ने सोचा है कि ऐसा किरदार जीते समय कितना दर्द होता हैं ?"

इस बात पर कई बार उसकी राहुल से बहस भी हो जाती, क्योंकि राहुल तो महक का सबसे बड़ा प्रशंसक था, वह महक के हर उपन्यास को बेहद शिद्दत से पढ़ता और तारीफ़ करते नहीं थकता, जबकि आरव हमेशा उसकी आलोचना करता।

ख़ैर, बहस अपनी जगह थीं, लेकिन अब प्ले का दिन आ पहुँचा था। भारत भवन का हॉल खचाखच भरा हुआ था। दर्शकों की भीड़ हॉल के हर कोने तक फैली थी। जैसे ही नाटक शुरू हुआ, पूरे थिएटर में पिन-ड्रॉप साइलेंस छा गया। हर आँख मंच पर टिकी थी। नायक-नायिका का मिलना-बिछड़ना इतनी गहराई और प्रभावशाली ढंग से प्रस्तुत किया गया कि दर्शकों की आँखों से आँसू बहने लगे। आरव की शानदार एक्टिंग ने किरदार में जान डाल दी थी, मानो खुद उस अधूरे प्रेम की पीड़ा जी रहा हो।

और जैसे ही नाटक समाप्त हुआ, पूरे हॉल में तालीयों की गड़गड़ाहट गूँज उठी। आरव मंच पर खड़ा था, उसकी साँसें तेज़ चल रही थीं, लेकिन दिल अचानक किसी और वजह से ज़ोरों से धड़कने लगा— क्योंकि उसकी नज़र पड़ी सामने बैठी अवनी पर। हाँ… वो वही थी। धीरे-से उठकर हॉल से बाहर निकल रही थी।

आरव को अब पूरा विश्वास हो गया कि ये उसका कोई भ्रम नहीं, सचमुच अवनी यहाँ थी। उसके कदम अपने-आप उसके पीछे बढ़ने लगे। थोड़ी ही देर में उसने अवनी को कैंटीन में देखा। वह एक टेबल पर अकेली बैठी कुछ लिख रही थी | आरव ने गहरी साँस ली, खुद को संभाला और धीरे से उसके सामने वाली कुर्सी पर आकर बैठ गया।

अवनी ने जैसे ही नज़र उठाई, सामने आरव को देखा। एक पल को उसकी साँसें थम-सी गईं, फिर होंठों पर धीमी-सी मुस्कान आ गई।

आरव उसकी मुस्कुराहट में ही खो गया। उसने भी हल्की मुस्कान के साथ कहा – "हाय…"

अवनी की हँसी और गहरी हो गई –"हाय।"

कुछ देर दोनों की नज़रें एक-दूसरे में उलझी रहीं।

फिर आरव ने धीमे स्वर में पूछा –"तुम यहाँ क्या कर रही हो?"

अवनी ने कंधे उचकाते हुए कहा –"बस ऐसे ही, प्ले देखने चली आती हूँ।"

आरव ने हैरानी से पूछा –"हमेशा आती हो?"

अवनी मुस्कुराई –"नहीं, बस कभी-कभी। तुम्हारे बहुत सारे प्ले देखे हैं मैंने, बहुत अच्छी एक्टिंग करते हो तुम, तुम्हें फिल्मों में ट्राय करना चाहिए।"

आरव हँस पड़ा –"मतलब मेरा शक सही था, ये कोई भ्रम नहीं था, तुम वाकई यहाँ होती थीं, हर बार।"

अवनी फिर हल्के से मुस्कुरा दी।

आरव –"कॉफी?"

अवनी ने सिर हिलाया –"श्योर।"

आरव ने कैंटीन के काउंटर पर आवाज़ लगाई –"अरे बाबलू भइया, दो कॉफी बना देना।"

काउंटर से आवाज़ आई –"हाँ भइया, भेज रहा हूँ पाँच मिनट में।"

आरव ने अवनी की ओर देखा –"मुझे पता ही नहीं था कि तुम्हें प्ले देखने का भी शौक है।"

अवनी बस मुस्कुराकर रह गई।कुछ पल चुप्पी रही।

फिर आरव ने पूछा –"कैसी हो तुम?"

अवनी ने सहजता से कहा –"मैं ठीक हूँ। तुम्हारा एमबीए कैसा चल रहा है?"

आरव ने शरारती अंदाज़ में कहा –"अच्छा? मतलब मेरी पूरी जानकारी रखती हो तुम? बस मिलती नहीं हो मुझसे, है ना?"

अवनी झेंप गई, आँखें झुका लीं –“अरे नहीं, वो संजय ने बताया था।”

आरव –“वैसे, अनिल की शादी में क्यों नहीं आई थीं तुम?”

अवनी हिचकिचाते हुए बोली –“वो, कॉलेज में काम थोड़ा ज़्यादा था। छुट्टी नहीं मिल पाई।”

आरव ने मुस्कराते हुए टोका –“हाँ, लेकिन वीडियो कॉल पर शादी ज़रूर एन्जॉय की थी ना तुमने?”

अवनी चौंक गई –“तुम्हें कैसे पता चला?”

आरव ठहाका लगाकर हँस पड़ा –“तुम सबको क्या लगा, मैं शादी में बस खाना खाने गया था? जब संजय, राहुल और अनिल हाथ हिला - हिलाकर तुमसे वीडियो कॉल पर बातें कर रहे थे, तभी मैं समझ गया था कि, उनके सामने अगर कोई ख़ास शख्स हैं तो वो तुम्हारे अलावा और कौन हो सकता हैं भला ?”

अवनी ने शर्म से सर झुका लिया –“सॉरी आरव, वो मैं…”

आरव ने नरम स्वर में कहा –“समझ सकता हूँ। डोंट वरी।”

तभी बबलू भैया खुद कॉफी लेकर आ गए।

“लीजिए आरव सर – आपकी प्लेन सिंपल कॉफी, और महक जी, आपकी कैपुचीनो।”

आरव चौंक पड़ा, उसने तुरंत टोका –“अरे बबलू भैया! ये महक जी नहीं हैं, ये अवनी हैं, आपने इन्हें ग़लत समझ लिया।”

बबलू भैया हँस पड़े –“नहीं-नहीं भइया, आपको शायद पता नहीं होगा, हम तो इन्हें हमेशा से देखते आ रहे हैं यहाँ, ये ही महक जी हैं, आज इन्ही के उपन्यास पर प्ले था लेकिन कमाल की बात है, आप ही उस प्ले में हीरो थे और आपको ही नहीं पता।”

आरव की आँखें अवनी पर टिक गईं, चेहरे पर गहरी हैरानी थी।

अवनी – “धन्यवाद, बबलू भइया।”

बबलू भैया चले गए। अवनी की नज़र आरव पर पड़ी –वो अब भी अवाक बैठा था।

अवनी ने हल्की मुस्कान दी, आरव हकलाते हुए बोला –"तुम ही महक हो? नहीं, मैं मान ही नहीं सकता, क्या सच में, अवनी तुम लिखती भी हो?" और फिर खुद ही हँस पड़ा।

अवनी ने सिर झुकाते हुए कहा –"हाँ, मुझे लिखने का शौक बहुत पहले से था, बाद में अपनी स्टोरीज़ पब्लिशर को दीं, किताबें छपने लगी, धीरे-धीरे नाम भी हो गया।"

आरव ने हैरानी से पूछा – "ये सब तो ठीक है, लेकिन अपने नाम से क्यों नहीं छपवाया? मतलब नाम बदलने की क्या ज़रूरत थी? महक....? और तुम्हारी कोई तस्वीर भी नहीं कहीं।"

अवनी ने सहजता से कहा – "मुझे लाइमलाइट में आने का शौक नहीं, मुझे तो बस लिखना पसंद है।"

आरव हँसा – "और तुम्हें पता भी है, इस काल्पनिक लेखिका के कितने दीवाने हैं?"

अवनी हँस पड़ी –"अरे, ऐसा कुछ नहीं है।"

आरव – "अच्छा? ऐसा कुछ नहीं तो फिर उस पागल प्रशंसक का क्या? जो तुम्हारी हर किताब पर फिदा है। जो तुम्हारे ख़िलाफ़ एक शब्द नहीं सुन सकता, अपना राहुल!"

अवनी चौंक गई –"क्या कह रहे हो?"

आरव हँसा –"और क्या! वो तो मुझसे लड़ पड़ता है, कहता है – महक के बारे में कुछ मत कहना, वरना मुँह तोड़ दूँगा।"

अवनी ने हँसते-हँसते मुँह पर हाथ रख लिया।

आरव ने फिर छेड़ा –"और सोचो, अगर कभी उसे पता चला कि महक कोई और नहीं, बल्कि तुम ही हो तो उस बेचारे पर क्या गुज़रेगी?"

अवनी ने गंभीरता जताई –"हाँ आरव, ये तो बहुत सीरियस मैटर है।इसका हल निकालना पड़ेगा।"

कुछ पल दोनों ने एक-दूसरे को देखा और अगले ही पल ज़ोर से हँस दिए।

उसी वक़्त बाहर बारिश शुरू हो गई। बूँदें खिड़की के शीशों से टकराने लगीं।

दोनों की नज़रें पहले बारिश पर गईं, फिर चुपचाप एक-दूसरे की आँखों में गहराई तक उतर गईं।

कुछ अनकहे शब्द अब भी दिल में थे, जो आँखों के रास्ते बाहर आना चाहते थे।

कॉफी ख़त्म हुई।आरव ने सहजता से पूछा –"घर कैसे जाओगी?स्कूटी से आई हो?"

अवनी ने सिर हिलाया –"नहीं, स्कूटी में फिर से प्रॉब्लम आ गई है, कैब से आई थी, वापिस कैब से ही चली जाऊँगी।"

आरव ने कहा –"कोई ज़रूरत नहीं, मैं छोड़ दूँगा।" उसकी आवाज़ में अधिकार था।

अवनी ने हिचकते हुए कहा – "भीग जाऊँगी, बारिश ज़ोरों से हो रही है।"

आरव ने गहरी मुस्कान दी –"भीगने से डरती हो?"

अवनी ने हल्की मुस्कान दी और ना में सिर हिला दिया।

आरव उठ खड़ा हुआ।अपना हाथ उसकी ओर बढ़ाया। अवनी एक पल उसकी आँखों में देखती रह गई।

फिर चुपचाप उसने भी अपना हाथ आगे बढ़ा दिया। आरव ने उसका हाथ थाम लिया। अवनी हमेशा की तरह खिचती हुई सी उसके पीछे चल दी । दोनों बाहर पार्किंग तक आए। बारिश की बूँदें उन पर गिर रही थीं। दोनों बाइक पर बैठे, और चुपचाप सफ़र शुरू हो गया।

फ्लैट पहुँचकर आरव ने धीमे से कहा –"बाय, गुड नाइट।" और चल दिया।

अवनी बस उसे जाते हुए देखती रह गई। होंठों पर हल्की मुस्कान थी, और मन में ये एहसास कि

जिस बात से दोनों अब तक भागते रहे, समय ने उन्हें आज फिर एक साथ ला खड़ा किया है। फिर अन्दर चली गई, मगर दिल अब भी उसी बारिश में भीग रहा था।

दूसरी ओर आरव जब अपने फ़्लैट पहुँचा तो उसके जहन में बस एक ही तस्वीर घूम रही थी—बारिश में भीगी हुई अवनी। उसकी भीगी हुई पलकें , उलझे हुए बालों में अटकी मोतियों सी चमकती पानी की बूंदें, उसकी गहरी काली आँखें, और बिना एक पल सोचे, बिना झिझके उसके हाथ को थाम लेना। ये सब सोचकर आरव अकेले ही मुस्कुरा उठा।

इतने में पीछे से संजय आया और उसके कंधे पर हाथ रखते हुए बोला – "और भाई, कैसा रहा आज का प्ले?"

आरव – "यार प्ले तो अच्छा रहा, लेकिन आज एक अजीब बात हो गई।"

संजय – "क्या हुआ आरव? पहले एक काम करो, ये गीले कपड़े बदल लो। फिर आराम से बैठकर बात करते हैं।"

आरव – "हूँ…" (सिर हिलाता हुआ कमरे में कपड़े बदलने चला गया)

संजय वहीं सोफ़े पर बैठ गया और मोबाइल चलाने लगा। थोड़ी देर बाद आरव बदलकर आया और उसके बगल में बैठ गया।

संजय – "हाँ अब बताओ, क्या बात है?"

आरव (हिचकिचाते हुए) – "पहले ये बता, वो नॉवेल लवर कहाँ है?"

संजय – "वो अभय और विवेक के साथ बाहर गया है किसी काम से।"

यहीं एक नए किरदार की एंट्री होती है – विवेक।

विवेक बनारस का रहने वाला था और आरव के साथ एमबीए कर रहा था। अनिल के जाने के बाद वही आरव के फ्लैट में शिफ्ट हो गया था। स्वभाव से शरारती, मज़ाकिया और बिल्कुल अनिल जैसा। इसी वजह से उसकी अभय से बहुत पटती थी। दोनों मिलकर हमेशा मस्ती में लगे रहते।

आरव ने गहरी साँस लेकर कहा – "संजय, दरवाज़े पर नज़र रखना। अगर राहुल आ जाए तो मुझे इशारा कर देना।"

संजय थोड़ा गंभीर होकर बोला – "क्या बात है आरव? कोई सीरियस मामला है क्या?"

आरव हँस पड़ा – "अरे नहीं, इतना भी सीरियस नहीं है। लेकिन अगर अभी नहीं रोका तो मामला सच में सीरियस हो जाएगा।"

संजय – "यार तुम कहानियाँ ही बनाते रहोगे या बताओगे भी? हमारी तो हार्टबीट तेज़ हो रही है।"

तब आरव ने धीरे-धीरे भारत भवन की सारी घटना उसे बताई। जब संजय को पता चला कि अवनी ही महक है, तो वह भी दंग रह गया।

संजय (चकित होकर) – “क्या बात कर रहे हो? अवनी ही महक है? और अपनी अवनी लिखती भी है?”

आरव – “हाँ, मुझे भी ऐसा ही झटका लगा था।” दोनों एक-दूसरे की ओर देख कर हँस पड़े।

संजय – “अरे, पर यहाँ तो लफ़ड़ा हो गया ना, एक फूल दो माली।” दोनों फिर से ज़ोर से हँस दिए।

आरव – “पर अब क्या करें? वो राहुल तो महक के प्यार में पागल हुआ पड़ा है। अगर उसे पता चला कि महक कोई और नहीं बल्कि अवनी ही है, तो बेचारे का क्या होगा?”

संजय – “हम्म, ये तो वाकई गंभीर मुद्दा है। तुमने अवनी को बताया राहुल के इस एकतरफा प्यार के बारे में?”

आरव – “हाँ, सुनकर वो भी घबरा गई थी। वो भी चाहती है कि इस मामले का हल निकले।”

संजय – “मेरे पास एक आइडिया है। लेकिन उसके लिए हम दोनों को अवनी से मिलना पड़ेगा।”

आरव – “ठीक है, मैं उससे बात करता हूँ। कहाँ मिल सकते हैं? जगह और टाइम डिसाइड करके तुम्हें बता दूँगा।”

संजय – “हम्म…” इतने में राहुल, अभय और विवेक वापस आ गए। सब खाने-पीने और हँसी-मज़ाक में व्यस्त हो गए।

अगले दिन सुबह आरव ने अवनी को मैसेज किया –“हाय अवनी, कैसी हो?”

अवनी के चेहरे पर चमक आ गई। उसने तुरंत रिप्लाई किया – “मैं अच्छी हूँ। तुम कैसे हो?”

“मैं भी ठीक हूँ। अवनी, आज शाम को फ्री हो? मैं तुमसे मिलना चाहता हूँ।”

मैसेज पढ़कर अवनी का दिल ज़ोर से धड़क उठा। लेकिन इस बार उसने बिना ज़्यादा सोच-विचार किए हामी भर दी – “ठीक है आरव, लेकिन कहाँ और कितने बजे?”

"वहीं जहाँ कल मिले थे, भारत भवन में।"

"लेकिन आज तो भारत भवन में कोई प्ले भी नहीं है।"

हाँ, कोई बात नहीं। ऐसे भी तो जा सकते हैं हम वहाँ। मैं शाम को तुम्हें लेने आ जाऊँगा, रेडी रहना।"

"हम्म… ओके।" और कॉल कट हो गई।

शाम के वक़्त जब आरव अवनी के फ़्लैट पहुँचा, उसने डोरबेल बजाई। दरवाज़ा खुला तो जैसे ही आरव की नज़रें सामने उठीं, वह ठिठक गया।

हल्के गुलाबी चंदेरी सूट में, बेहद सधी हुई, खुले बालों में, अवनी किसी परी से कम नहीं लग रही थी। उसके चेहरे पर हल्का-सा मेकअप, गालों पर गुलाबी आभा और आँखों में वही गहराई—जिसमें डूब जाने का मन करे। आरव बस उसे देखता ही रह गया। उसकी आँखें जैसे कह रही हों—"काश, वक़्त यहीं थम जाए।"

अवनी (मुस्कुराते हुए) – "आरव, अंदर आओ ना।"

आरव (धीरे से सिर हिलाते हुए) – "नहीं, फिर कभी, अभी चलें?"

अवनी – "ओके, मैं एक मिनट में आती हूँ।" वो अंदर गई, अपना पर्स लिया और फिर लौट आई।

दोनों साथ में भारत भवन की ओर निकल पड़े। भारत भवन पहुँचकर वो लोग पिछली तरफ़ टैरेस पर, कोने में दीवार के पास जा बैठे। वहाँ से पूरी बड़ी झील बिल्कुल सामने फैली नज़र आ रही थी।

उस पल का नज़ारा अवनी के लिए मानो किसी सपने जैसा था—शाम का वक़्त, आसमान में घिरे काले बादल, हवाओं में नमी, और झील की लहरों पर बिखरी चाँदनी-सी हल्की धुंध। भीड़ और शहर के शोर से दूर, ये जगह किसी स्वर्ग जैसी थी, दुनिया से अलग।

अवनी उस नज़ारे में खो गई। हवा उसके घुँघराले बालों से खेल रही थी, उसका दुपट्टा इधर-उधर उड़ रहा था और बारिश की हल्की बूँदें उसके बालों पर मोती-सी ठहर रही थीं।

लेकिन जहाँ अवनी को ये झील और नज़ारा खूबसूरत लग रहा था, वहीं आरव के लिए उस पल का सबसे ख़ूबसूरत नजारा था …… अवनी। उसने चुपचाप अपना मोबाइल निकाला और एक अवनी की एक तस्वीर अपने मोबाइल में कैद कर ली।

अवनी चौंक गई – "आरव, ये क्या कर रहे हो?"

आरव (धीरे से मुस्कुराकर) – "कुछ नहीं, बस इन लम्हों को हमेशा के लिए कैद करना चाहता हूँ।"

अवनी शरमा गई। फिर धीरे से बोली –"वैसे, तुमने मुझे क्यों बुलाया है?"

आरव का दिल तो चाहता था कह दे— "अवनी, मैं तुमसे बहुत प्यार करता हूँ। क्या तुम मेरे साथ अपनी पूरी ज़िन्दगी बिताना चाहोगी?"

लेकिन उसकी हिम्मत नहीं हुई। उसने साँस खींचकर कहा – "अवनी, कल वाली सारी बात मैंने संजय को बताई। उसका कहना है कि उसके पास इस मसले का एक हल है, लेकिन वो हमें दोनों को साथ ही बताएगा।"

"अच्छा, तो क्या संजय भी आया है?"

"नहीं, आज नहीं। आज तो मैंने तुम्हें इसलिए बुलाया कि तुम जगह और समय बता दो—हम तीनों कहाँ मिलें?"

"तो आज ही बुला लेते न उसे? आज भी तो मैं मिलने आई हूँ।"

आरव ने अवनी की ओर गहराई से देखा और हल्के से मुस्कुराया – "क्यों? मुझसे अकेले मिलना तुम्हें अच्छा नहीं लगा क्या?"

अवनी ठिठक गई। उसके गाल गुलाबी पड़ गए - "न-नहीं, ऐसी बात नहीं है आरव। मेरा मतलब था, जितनी जल्दी हम इस मामले को सुलझा लें, उतना अच्छा रहेगा।"

"हूँ… तो बताओ, कब और कहाँ मिलें?"

"कल ही आ जाओ, तुम और संजय, मेरे घर।"

"तुम्हारे घर? मतलब, इज़ इट सेफ़? आसपास के लोग देखेंगे तो क्या कहेंगे? तुम्हें इस बात की परवाह नहीं?"

अवनी हँस दी – "आरव, संजय तो मेरे घर आता-जाता रहता है। सब जानते हैं कि वो मेरा भाई है। और तुम? तुम उसके दोस्त।"

आरव ने भी हँसकर कहा – "कमाल है न अवनी, तुम संजय से मेरे ज़रिए मिलीं, लेकिन फिर भी तुम और संजय कितने घुल मिल गए हो, कितना प्यारा रिश्ता बन चुका है तुम दोनों का। और मैं? अब तक पराया हूँ।"

अवनी ने उसकी आँखों में देखते हुए धीमे स्वर में कहा – "किसने कहा आरव, कि तुम पराए हो?"

आरव ने एक कदम और आगे बढ़ते हुए पूछा – "अच्छा? तो क्या रिश्ता है हमारा? तुम बताओ।"

अवनी ने नज़रें झुका लीं। आवाज़ काँप रही थी लेकिन शब्द दिल से निकल रहे थे – "आरव, ज़रूरी नहीं कि हर रिश्ते का कोई नाम हो। कुछ रिश्ते तो बस एहसास बनकर रह जाते हैं हमारे जीवन में। नाम से नहीं, उस रिश्ते की गहराई और उम्र से उसकी पहचान होती है, तुमसे.. मेरा रिश्ता क्या है… मैं नहीं जानती। लेकिन इतना जानती हूँ कि जब भी तुम मेरे साथ होते हो… मुझे वो सुकून मिलता है जो मुझे आज तक कभी नहीं मिला। भले ही तुम कुछ न कहो, लेकिन तुम्हारा पास होना ही मेरे लिए काफ़ी होता है।"

आरव स्तब्ध रह गया। उसे विश्वास ही नहीं हो रहा था कि अवनी ने बिना कुछ कहे ही दिल की हर बात कितनी सहजता से कह दी । तभी बारिश अचानक तेज़ हो गई। आरव ने उसकी आँखों में झाँका और उसके दोनों हाथ थाम लिए। अवनी एक पल को चुप रही, फिर धीरे से उसके क़रीब आई और अपना सिर उसके सीने पर टिका दिया।

आरव के लिए ये सब अप्रत्याशित था। पहले तो उसे समझ ही नहीं आया कि कैसे प्रतिक्रिया दे। लेकिन फिर उसने धीरे से अवनी को अपनी बाँहों में समेट लिया।

उस पल जैसे सारी दुनिया थम गई। ना कोई शोर, ना कोई फ़िक्र, बस दो दिलों के धड़कनों की आवाज़।

अवनी अपनी सारी मजबूरियाँ भूल गई कि वो शादी जैसे किसी बंधन में बँधी है। और आरव भी अपनी माँ की दी हुई कसमें भुलाकर उसके भीगे बालों में हाथ फेर रहा था। दोनों बस यही चाहते थे कि ये वक़्त कभी ख़त्म न हो।

कुछ देर बाद दोनों अलग हुए। अवनी की आँखें नम हो गईं। उसने हल्के से कहा – "आरव, मुझे घर छोड़ दो, प्लीज़।"

आरव चुप रहा। दोनों साथ में लौट पड़े। फ़्लैट के बाहर पहुँचकर अवनी ने कहा – "अंदर आ जाओ, एक कॉफ़ी…"

लेकिन आरव ने बीच में ही रोक दिया – "आज नहीं, कल आऊँगा ना, तुम्हारे भाई का दोस्त बनकर।"

दोनों मुस्कुराए, आरव चला गया और अवनी दरवाज़े पर खड़ी बस उसे जाते हुए देखती रही।

उसके दिल में एक ही खयाल था— "जिस रिश्ते का नाम नहीं होता, वही दुनिया का सबसे गहरा रिश्ता होता है।"

शाम का वक़्त था। अवनी ने जैसे ही डोरबेल की आवाज़ सुनी, वो दरवाज़े की ओर बढ़ी। दरवाज़ा खोलते ही सामने संजय और आरव खड़े थे। अवनी का चेहरा खिल उठा, वो तुरंत संजय के गले लग गई—

"संजय…!"

संजय भी मुस्कुराया और हमेशा की तरह उसके लिए एक गिफ्ट लाया था, "तुम फिर से…" अवनी ने शरारत से कहा, मगर मन ही मन उसे छू गया कि हर बार की तरह इस बार भी उसने उसके लिए कुछ लाना नहीं भूला।

आरव यह सब खामोशी से देख रहा था। अवनी ने आरव की ओर देखा, और फिर दोनों से बोली—

"अंदर आओ ना।"

संजय तो कई बार वहाँ आ चुका था, मगर आरव पहली बार अवनी के फ्लैट पर आया था। इसलिए कदम रखते हुए थोड़ा संकोच में था। दोनों जाकर सोफ़े पर बैठे। अवनी तुरंत अंदर गई और पानी के साथ कॉफ़ी बनाकर ले आई।

संजय ने कप उठाते हुए पूछा— "और, अंकल आंटी ठीक हैं? छोटी कैसी है? उसका सेलेक्शन हो गया था न स्टेट लेवल टीम में?"

अवनी का चेहरा गर्व से खिल उठा—"हाँ, मम्मी-पापा ठीक हैं। और मैं तो तुम्हे बताना ही भूल गई थी, छोटी का स्टेट लेवल में सिलेक्शन हो भी गया और उनकी टीम ने गोल्ड मेडल भी जीत लिया। अब अगले हफ़्ते से नेशनल की तैयारी होगी, छोटी फिर से आ रही है।"

संजय की आँखें चमक उठीं—"वाह! ये तो बहुत बड़ी बात है। उसे मेरी तरफ़ से ढेर सारी बधाई। और जब वो आए तो मुझे ज़रूर बताना।"

आरव थोड़ा उत्सुक हो उठा— "तुम दोनों किसकी बात कर रहे हो? कौन है ये छोटी?"

अवनी हँस दी— "मेरी छोटी बहन, अवंती। वो स्पोर्ट्स में है, गर्ल्स फ़ुटबॉल टीम में।"

आरव— "वाह, ये तो बहोत अच्छी बात हैं , मेरी तरफ से भी उसे ढेर सारी बधाइयाँ |"

अवनी मुस्कुराई— "थैंक्यू।"

फिर संजय सीधा मुद्दे पर आया— "चलो अब हम असली बात पर आते हैं। सबसे पहले तो अवनी, हम तुमसे बहुत नाराज़ हैं क्योंकि तुमने हमें कभी बताया ही नहीं कि तुम नॉवेल लिखती हो, और तुम ही 'महक' हो।"

अवनी ने शरारत में जीभ दाँतों तले दबाई और कान पकड़कर बोली— "सॉरी…"

संजय भौंहें चढ़ाते हुए बोला— "क्या सॉरी? तुम्हे पता भी है कितना 'रायता' फैल गया!"

आरव तुरंत हँस पड़ा— "रायता? अरे वो राहुल तो महक के साथ अपने बच्चों के नाम तक प्लान कर बैठा है।"

अवनी का चेहरा ग्लानि से झुक गया—"संजय, अब मैं क्या करूँ?"

संजय ने लंबी साँस भरी— "देखो, हममें से किसी एक को राहुल के सामने ये दिखाना होगा कि वो नॉवेल राइटर को जानता है। और सच ये है कि 'महक' कोई लड़की नहीं है, बल्कि लड़का है।"

अवनी हैरान रह गई— "लेकिन ये कहेगा कौन उसे?"

संजय ने तुरंत कहा— "देख, अगर हम बोलेंगे तो वो मानेगा नहीं, क्योंकि हमारा नॉवेल-शॉवेल से दूर-दूर तक कोई लेना-देना नहीं।"

अवनी ने मासूमियत से कहा— "और मैं उस बेचारे से झूठ नहीं बोल पाऊँगी।"

दोनों की नज़रें धीरे-धीरे आरव की ओर टिक गईं।

आरव ने चौंककर कहा— "वाह! ये अच्छा है, ग़लती तुम करो और बलि का बकरा मैं बनूँ। मैं कैसे उस बेचारे से झूठ बोलूँ?"

संजय ने गंभीर होकर कहा— "आरव, ये काम तुम ही कर पाओगे। क्योंकि तुम थिएटर भी करते हो और 'महक' के नॉवेल पर आधारित प्ले में काम भी कर चुके हो। तुम कह देना कि एक दिन तुम मिले थे उस राइटर से, बस।"

आरव ने भौंहें उठाईं— "अच्छा! और अगर उसने बोल दिया कि हमें भी मिलाओ, तब मैं क्या करूँगा?"

संजय मुस्कुराया— "अरे तब की तब देखेंगे। वैसे भी ये सुनकर कि 'महक' कोई लड़की नहीं, बल्कि लड़का है, राहुल का दिल ही बैठ जाएगा। फिर उसमे मिलने की कहाँ हिम्मत होगी? पहले इतना तो करो।"

आरव ने अवनी की ओर देखा। अवनी हाथ जोड़कर उससे विनती कर रही थी। उसकी आँखों की मासूमियत देखकर आरव के होंठों पर अनायास मुस्कान फैल गई।

"ठीक है…" आरव ने कहा, "अब ये भी कर लेते हैं, और क्या!"

अवनी की आँखें चमक उठीं— "थैंक्यू आरव!"

आरव ने हल्की सख़्ती से कहा— "पहले काम हो जाने दो, फिर कहना थैंक्यू।"

संजय उठ खड़ा हुआ— "चलो अब हम चलते हैं।"

अवनी ने तुरंत रोक लिया— "अरे ऐसे कैसे? खाना बनाया है मैंने, खाकर जाओ।"

आरव हैरान रह गया— "क्या? कब? तुम तो यहीं बैठी थीं, तुमने कब बना लिया?"

संजय ठहाका लगाते हुए बोला—"ऐसी ही है वो! हमारे आने से पहले ही सब बना चुकी होगी। और बिना खाए जाने भी नहीं देगी, ऊपर से ढेर सारा पैक भी कर रखा होगा इसने, ले जाने के लिए।"

अवनी हँस पड़ी। आरव उसकी मुस्कान में खो गया।

कुछ देर बाद अवनी ने सबको खाना परोसा। आरव तो खाने की तारीफ़ करते-करते रुक ही नहीं रहा था।

उसने संजय से कहा—"यार, लकी हो तुम। इतना टेस्टी खाना खाने का मौक़ा तो तुम्हें बहुत बार मिल गया होगा ना?"

संजय ने मज़ाक उड़ाते हुए कहा— "लेकिन हमसे ज़्यादा लकी तो तुम हो, तुम चाहो तो ज़िंदगी भर इस खाने का स्वाद ले सकते हो।"

आरव ने अवनी की ओर देखा। अवनी शरमा कर झेंप गई और चुपचाप अपने काम में लग गई। फिर वो फ्रिज़ से फ्रूट कस्टर्ड निकाल लायी।

आरव हैरानी से बोला—"अब इसे भी खाना है? मेरा तो पेट भर गया, फिर भी थोड़ा दे दो।"

तीनों ने साथ बैठकर कस्टर्ड खाया। और अब तो आरव खुद को रोक नहीं पाया। अचानक उठकर उसने अवनी का हाथ पकड़ लिया और उसके हाथ को चूम लिया।

अवनी अवाक रह गई। उसके चेहरे पर आश्चर्य और शरम का मिश्रण था।

संजय ज़ोर से हँस पड़ा—"अरे घबराओ मत, ये इसका 'एप्रिशिएट' करने का तरीका है। मेरे भी हाथ चूम चुका है कई बार।"

अवनी भी संकोच से हँस दी। कुछ देर बाद जब संजय और आरव जाने लगे तो अवनी अंदर गई और एक बैग ले आई, जिसमें ढेर सारे बड़े-बड़े टिफ़िन थे।

आरव घबरा गया— "अरे इसे रहने दो, हम फ्लैट पर क्या कहेंगे?"

अवनी ने उसे घूरकर देखा |

संजय हँस पड़ा— "रख लो, नहीं तो ये नाराज़ हो जाएगी और अगली बार कुछ खिलाएगी भी नहीं। वैसे भी राहुल को पता ही है, अभय और विवेक से कह देंगे कि 'मेरी बहन के घर से आया है।' वैसे भी विवेक भुक्खड़ है, उसे तो सिर्फ़ खाने से मतलब है।"

तीनों ज़ोर से हँस पड़े। विदा लेते वक़्त अवनी दरवाज़े तक छोड़ने आई। आरव ने जाते-जाते एक बार पीछे मुड़कर देखा। अवनी अब भी उसी जगह खड़ी थी, और उसकी आँखें बस आरव को जाते हुए देख रही थीं।

रात को जैसे ही आरव और संजय फ्लैट पर पहुँचे, दोनों के हाथों में भारी-भरकम बैग और ढेर सारे टिफ़िन देखकर सबकी आँखें फटी की फटी रह गईं।

विवेक (चौंकते हुए) – "क्या भाई, किसी लंगर में गए थे क्या? इतना सामान कहाँ से उठा लाए?"

राहुल (शरारती अंदाज़ में) – "मुझे पता है, लेट मी गेस, ये सब संजय की प्यारी बहन ने भेजा है। है ना?"

अभय (हैरानी से) – "अरे! लेकिन संजय भैया, आपकी तो कोई बहन ही नहीं है, अचानक ये बहन कहाँ से पैदा हो गई?"

संजय को पहले से ही अंदाज़ा था कि अभय ऐसा सवाल जरूर करेगा। वो तुरंत बोला – "अरे, तुम हमारे सारे रिश्तेदारों को जानते हो क्या? है हमारी एक मुंहबोली बहन, यही भोपाल में ही रहती है। हम आते-जाते रहते हैं उसके घर।"

आरव चुप था। उसके लिए झूठ गढ़ना मुश्किल हो रहा था। वह बस खामोशी से बैग नीचे रखकर बैठ गया।

विवेक (भूखे अंदाज़ में) – "अरे हमें क्या लेना-देना? हमें तो बस खाने से मतलब है। बहुत भूख लगी है यार, जल्दी खोलो, देखते हैं आज बहनजी ने क्या भेजा है।"

सब टिफ़िन खोलकर खाने बैठे। महकती खुशबू ने माहौल ही बदल दिया।

विवेक (पहला निवाला खाते ही) – "वाह यार! क्या ज़बरदस्त खाना है! तुम्हारे हाथ का खाना खा-खाकर तो हम लोग खाने का स्वाद ही भूल गए। कभी नमक ज्यादा, कभी दाल पानी जैसी पतली, तो कभी कच्ची-पक्की रोटियाँ, ये बहन है कौन? हमें भी मिलवाओ जरा।"

राहुल (चिढ़ते हुए) – "हाँ! और अगर इतना बुरा लगता है हमारे हाथ का खाना तो खुद क्यों नहीं बना लेते? या फिर कोई बाई रख लो, हमें भी ढंग का खाना मिल जाएगा।"

अभय – "संजय भैया, अगली बार जब अपनी बहन के घर जाओ, हम भी चलेंगे। हमें भी मिलना है उनसे।"

ये सुनकर आरव और संजय की हालत ख़राब हो गई। दोनों एक-दूसरे का मुँह देखने लगे।

संजय (अटकते हुए) – " हाँ... हाँ... क्यों नहीं... ज़रूर..."

आरव ने धीरे से संजय के कान में फुसफुसाया – "साला ये टिफ़िन ही किसी दिन हमें मरवाएगा। और मिलवाओगे कहाँ से? क्या कहोगे? ये हमारी मैडम थीं कॉलेज में, और अब हमारी बहन बन गईं?"

संजय (धीमे स्वर में) – "अरे अगली बार जाएंगे तो नहीं बताएँगे कि हम अवनी के फ्लैट से आ रहे हैं।"

आरव (खीजते हुए) – "और वो पागल फिर से टिफ़िन पकड़ा देगी, तब क्या करोगे?"

संजय (लाचार होकर) – "तब की तब देखेंगे।"

खाना खत्म होते ही सब हॉल में इधर-उधर फैल गए। कोई मोबाइल में खो गया, कोई मूवी देखने लगा। मौका पाकर संजय ने आरव को कुहनी मारी - "अरे, तुम राहुल से कब बोलोगे? अभी बोल दो ना"

आरव (घबराते हुए) – "अरे अभी कैसे बोल दूँ? सब यहीं हैं। और बेचारा मूवी देख रहा है, उसका दिल तोड़ दूँ क्या?"

संजय – "कभी न कभी तो टूटना ही है ना, तो आज ही सही।"

राहुल (चौंककर) – "अबे! तुम दोनों क्या खुसुर-फुसुर कर रहे हो?"

संजय ने शरारती मुस्कान दबाते हुए कहा – "राहुल... दरअसल वो, आरव तुमसे कुछ कहना चाहता है।"

आरव ने गुस्से से संजय की तरफ देखा, लेकिन अब निकल चुका तीर लौट तो नहीं सकता था।

राहुल (उत्सुकता से) – "हाँ, बोलो भाई। क्या बात है?"

आरव (संकोच से) – "राहुल... बात ये है कि... कल हमारा जो प्ले था ना, वो महक के नए नॉवेल पर बेस्ड था "

राहुल (उत्साह से) – "हाँ तो ये बात तो हमें भी पता है।"

आरव – "अरे, आगे सुनो। कल उस नॉवेल के राइटर भी आए थे।" ये सुनते ही राहुल की आँखें चमक उठीं। वह मूवी छोड़कर उछलते हुए आरव के पास आ गया।

राहुल (खुशी से) – "क्या बात कर रहे हो आरव! सच में? तुम मिले उनसे? कैसी दिखती हैं वो? सुंदर हैं क्या?"

आरव ने गहरी साँस ली, और धीरे से बोला – "यही तो हम तुमसे कहने वाले थे राहुल, लेकिन प्लीज़... ध्यान से सुनना और रोना मत, महकजी कोई लड़की नहीं हैं। वो... वो... एक लड़का है। हमारी-तुम्हारी ही उम्र का..."

राहुल के चेहरे का रंग उड़ गया। उसकी आवाज़ कांपने लगी – "क...क्या कह रहे हो तुम आरव? महकजी लड़का कैसे हो सकते हैं? तुम्हें जरूर कोई गलतफहमी हुई है। यार, उनकी कहानियाँ पढ़कर तो लगता है जैसे कोई लड़की ही लिख रही हो "

आरव (दुखी होकर) – "नहीं राहुल, उनका पूरा नाम महकप्रसाद शर्मा है। और वो कल मंच पर खुद आए थे। हम मिले भी उनसे, हमें भी बहुत बुरा लगा तुम्हारे लिए।"

इतना सुनते ही विवेक जोर-जोर से हँसने लगा।

विवेक (गाना गाते हुए)–

"बस यही अपराध मैं हर बार करता हूँ

आदमी हूँ आदमी से प्यार करता हूँ ..."

और हँसते-हँसते लोटपोट हो गया।

संजय (झिड़कते हुए) – "चुप कर यार! बेचारा दुखी है और तुम मजाक उड़ा रहे हो।"

राहुल (गंभीर होकर) – "हँस लो यार, हँस लो। यहाँ मैं तो महकजी के साथ बच्चों के नाम तक सोच चुका था और आज पता चला कि वो... लड़का है।"

अब संजय भी हँसी नहीं रोक पाया। देखते ही देखते आरव और अभय भी हँस पड़े।

राहुल (नाक सिकोड़ते हुए) – "अब तो मैं महकजी का नॉवेल भी नहीं पढ़ूँगा। साला दिल तोड़ दिया। अब मुझे भी किसी और को ढूँढना पड़ेगा..." इतना कहकर वह गुस्से में उठकर बेडरूम में चला गया। बाहर सब अब भी हँसी से लोटपोट थे। थोड़ी देर बाद आरव उठकर अंदर गया। उसने राहुल को बिस्तर पर बैठे देखा। वह गंभीर नज़र आ रहा था।

आरव (धीरे से) – "राहुल, ठीक हो न तुम?"

राहुल मुस्कुरा पड़ा - "अरे यार... तुम हमे इतना बेवकूफ समझते हो क्या? कच्चा खिलाड़ी समझे थे क्या हमें? हम तो कब का रिसर्च कर चुके थे महकजी पर।"

आरव हैरानी से उसकी ओर देखने लगा।

राहुल ने आगे कहा— "मैं भी जाता था भारत भवन, महकजी के प्ले देखने। वहाँ बहुत बार मैंने अवनी को देखा। कैंटीन के एक कोने में चुपचाप बैठी रहती थी, अपनी डायरी में लिखती रहती। वहाँ का ज़्यादातर स्टाफ उसे महक नाम से जानता है। एक दिन मैंने चुपके से अवनी की डायरी देखी थी। वो एक नई स्टोरी लिख रही थी उस वक़्त। और वही कॉन्टेंट्स बाद में महकजी के एक नॉवेल में मिले। तभी पक्का यकीन हो गया था कि महकजी और कोई नहीं, बल्कि हमारी अवनी ही है।"

राहुल (हँसते हुए) – "और जबसे पता चला कि तुम अवनी से प्यार करते हो, तबसे मैंने तो महकजी को भूल ही दिया था। और सुनो, मुझे अवनी से नहीं, उनके लेखन से प्यार है। महक नाम के पीछे छिपी उनकी कला से। तुम बेवजह परेशान हुए।"

आरव (चकित होकर) – "तुम जानते थे? फिर कभी बताया क्यों नहीं? और ये बच्चों के नाम वाला ड्रामा, वो क्या था?"

राहुल (शरारती हँसी के साथ) – "अरे वो तो बस मजाक था।"

आरव ने माथा पकड़ लिया – "यार... हम सब तो इतने परेशान हो गए थे तुम्हारे लिए।"

राहुल (हँसते हुए) – "और मैं नाटक कर रहा था। तुम हमारे मज़े ले रहे थे, हम तुम्हारे। हिसाब बराबर।"

दोनों हँस पड़े। लेकिन थोड़ी देर बाद राहुल का चेहरा गंभीर हो गया।

राहुल (धीरे स्वर में) – "वैसे आरव... एक बात कहूँ? अवनी बहुत अच्छी लड़की है। उसकी हर कहानी में उसका प्यार अधूरा रह जाता है। पता है क्यों? क्योंकि उसके असली जीवन में भी उसका प्यार अधूरा है। और शायद... वही अधूरा प्यार तुम पूरा कर सकते हो।"

ये सुनकर आरव का दिल गहरी सोच में डूब गया। रात गहरी हो चुकी थी। फ्लैट की लाइटें बुझ चुकी थीं, बस हल्की सी रोशनी खिड़की से छनकर कमरे में आ रही थी। सब सो चुके थे। बाहर का शोर भी जैसे कहीं खो गया था। लेकिन आरव की आँखों में नींद नहीं थी।

वो बिस्तर पर लेटे-लेटे छत को देख रहा था। राहुल के शब्द उसके कानों में गूँज रहे थे—"अवनी के जीवन का अधूरा प्रेम तुम ही पूरा कर सकते हो।"

आरव ने गहरी साँस ली। उसके दिल में एक अजीब सी बेचैनी थी।

"क्या सच में? क्या मैं अवनी को वो प्यार दे पाऊँगा जिसकी उसे तलाश है?" उसने अपने आप से पूछा।

उसे वो शाम याद आई जब अवनी ने पहली बार उसकी ओर अपने मासूम अंदाज़ में मुस्कुराकर देखा था। वो मुस्कान जैसे उसकी आँखों में आज भी बसी हुई थी। लेकिन अगले ही पल उसके मन में सवाल उठा—"पर अगर मैं भी कहीं अधूरी कहानी बनकर रह गया तो? अगर मैं भी उसकी जिंदगी में बस एक मोड़ बनकर रह गया तो?"

दिल और दिमाग के बीच जंग छिड़ी हुई थी। दिल कह रहा था—"अवनी तुम्हारी है, बस एक कदम बढ़ाना है।" और दिमाग कह रहा था—"सोच समझकर, वरना वो और भी टूट जाएगी।"

आरव करवट बदलकर खिड़की के बाहर देखने लगा। हवा हल्की-हल्की परदे हिला रही थी। उसे अवनी की वो तस्वीरें याद आ गईं—कभी अपनी बहन की बात करते वक्त उसकी आँखों में चमक, कभी संजय को डाँटते हुए उसकी शरारती मुस्कान, कभी अपने लिखे शब्दों पर खुद खो जाने का अंदाज़, वो हर तरफ उसे ही देख रहा था।

अचानक ही उसके होंठों पर एक हल्की सी मुस्कान आ गई—"शायद ये इत्तेफ़ाक़ नहीं है कि वो मेरी ज़िंदगी में आई। शायद ये ऊपरवाले का इशारा है, कि मुझे ही उसकी अधूरी कहानी को पूरा करना है।"

उस रात आरव ने करवटों में सारी बातें सोचते-सोचते तय कर लिया—"अब और नहीं, अब मैं अवनी से दूर नहीं रह सकता। उसे उसकी अधूरी मोहब्बत का मुकम्मल अंजाम मैं दूँगा। बस, सही वक्त का इंतज़ार है।"

दो-तीन दिन की चुप्पी के बाद अवनी ने आखिरकार हिम्मत जुटाई और आरव को मैसेज किया –

"हाय आरव"

आरव – "हाय"

अवनी – "बात हुई राहुल से?"

आरव – “हाँ बात तो हो गई है… लेकिन जो रिस्पॉन्स मिला है, वो सुनकर तुम दंग रह जाओगी।”

अवनी (चौंकते हुए) – “क्या बोला राहुल? कुछ गड़बड़ तो नहीं हुई?… प्लीज़ बताओ ना।”

आरव (मुस्कुराते हुए) – “ऐसे थोड़ी ना बता दूँगा मैसेज या फोन पर, उसके लिए तुम्हें मुझसे मिलना ही पड़ेगा।”

अवनी – “तो कब मिले?”

आरव – “कल, तुम यहीं आ जाना। कल विवेक का बर्थडे है, यहीं सेलिब्रेट करेंगे।”

अवनी (हिचकिचाते हुए) – “वहाँ? तुम्हारे फ्लैट पर? एक तो वहाँ तुम्हारा भाई अभय भी होगा, और ऊपर से तुम्हारे आस-पड़ोस में किसी ने देख लिया तो क्या सोचेगा?”

आरव – “पहली बात तो अभय यहाँ नहीं है, कल उसके खास दोस्त मयंक का भी बर्थडे है, वो वहीं उसके हॉस्टल पर रुकेगा। रही बात पड़ोस की, तो डरने की कोई ज़रूरत नहीं है। हमारे क्लास की कई लड़कियाँ नोट्स लेने या पढ़ने के लिए आती रहती हैं यहाँ। और वैसे भी ये तुम्हारे भाई संजय का फ्लैट है, तो डर कैसा? डरो मत, संजय आ जाएगा तुम्हें लेने।”

आरव की बात सुनकर अवनी को थोड़ी राहत मिली। उसने धीरे से कहा – “हम्म, ओके, कल शाम को मिलती हूँ।”

आरव (चिढ़ाते हुए) – “आओगी न? पक्का? इस बार धोखा तो नहीं दोगी ?”

अवनी (शरमाते हुए) – “आ जाऊँगी, पक्का।”

आरव – “मैं इंतज़ार करूँगा।”

अवनी ने बस “हम्म” में जवाब दिया।

अगले दिन शाम को संजय, अवनी को लेने आया। अवनी जैसे ही बाहर भागती हुई पहुँची, संजय हँसते हुए बोला – “अरे-अरे-अरे, धीरे, पिया के घर जाने की कितनी जल्दी है तुम्हें।”

अवनी (झेंपते हुए) – “हट… कुछ भी… जल्दी इसलिए क्योंकि फिर जल्दी घर वापस भी आना है।”

संजय – “मैं छोड़ दूँगा ना, चिंता क्यों करती हो? और ये फिर से क्या है बैग में?”

अवनी – “अरे ये बर्थडे बॉय के लिए है। अब चलो।”

दोनों फ्लैट पहुँचे। अवनी को देखकर आरव का चेहरा खिल उठा।

विवेक – “हाय अवनी, मेरा नाम विवेक है।”

अवनी – “हाय विवेक, और हैप्पी बर्थडे।” (बैग से गिफ्ट निकालकर दिया)

गिफ्ट देखकर विवेक उछल पड़ा – “देखो, इसे कहते हैं दोस्ती! और ये साले फटीचर दोस्त, गिफ्ट तो दिए नहीं, बर्तन और धुलवा लिए मुझसे।”

विवेक की बात सुनकर अवनी ज़ोर से हँस पड़ी।

राहुल – “हाँ चल-चल, अब मिल गया न गिफ्ट? केक काट अब तू।”

टेबल पर केक लाया गया, मोमबत्तियाँ जलीं, “हैप्पी बर्थडे” के शोर के बीच केक कटा।

विवेक बोला – “अरे यार, ऐसे सूखा-सूखा क्या बर्थडे मना रहे हो हमारा, कुछ जलपान की व्यवस्था तो कर देते।”

राहुल– “अरे यार, दारू-वारू बाद में पिला देंगे, अभी अवनी भी आई है, अच्छा लगता है क्या लड़की के सामने दारू पियोगे तुम?”

अवनी (मुस्कराते हुए) – “अरे, बर्थडे बॉय है वो, क्यों उस बेचारे की इच्छा मार रहे हो, पीने दो उसको।”

विवेक खुशी से उछल पड़ा – “संजय यार, तुम्हारी बहन तो बहोत ही प्यारी और समझदार हैं, आई लाइक हर |”

आरव (गुस्से में) –“ओ ओ ओ… भाई हद में…”

विवेक – “अरे तो क्या हुआ, मुझे पसंद आई तो बोल दिया।”

राहुल – “अरे अपनी आरव भाई की गर्लफ्रेंड है ये।”

अवनी शरमा गई।

विवेक – “अच्छा, तो ये भाभीजी हैं?? अरे अब तो भाभीजी ने हाँ कह दी, अब तो दारू सबको बनती है।”

और वो उछलकर किचन से सबके लिए बीयर उठा लाया।

आरव और संजय मना कर रहे थे, मगर विवेक मानने वालों में से कहाँ था।

आरव ने चुपके से अवनी की ओर देखा, अवनी ने आँखों से "हाँ" का इशारा कर दिया।

विवेक – "ओह माय गॉड, भाभीजी की परमिशन, क्या बात हैं ?"

विवेक की बातों पर अवनी हँसते-हँसते लोटपोट हो रही थी और अवनी को हँसते देख आरव को जैसे सुकून मिल रहा था। विवेक उसके लिए फैंटा की बोतल लेकर आया।

इसी बीच, बात निकल पड़ी "महक" की।

संजय – "अवनी, तुम्हें पता है? महक कोई लड़की नहीं, एक लड़का है! और ये बात कल आरव ने हम सबको बताई।"

अवनी (चौंककर) – "क्या? क्या कह रहे हो?"

विवेक – "हाँ, और जानती हो? हमारा राहुल भाई आदमी से प्यार कर बैठा।" - और ज़ोर से हँसने लगा

संजय – "हाँ यार अवनी, ये बात सुनकर तो राहुल का दिल ही टूट गया, कल से उदास है।"

विवेक – "उदास नहीं, 'पंकज उदास' "- और फिर ज़ोर से हँस पड़ा।

आरव की हालत पतली थी, वो चुपचाप बैठा रहा। राहुल बस हल्की मुस्कान लिए बैठा था।

संजय – "आरव, बताओ ना, राहुल कल बेचारा कितना दुखी हो गया था।"

अवनी – "सो सैड राहुल, मुझे तुम्हारे लिए बहोत बुरा लग रहा हैं| "

राहुल – "हाँ भाई आरव, बताओ तुम इन सबको, कल कितना रोए हम तुम्हारे कंधे पर सिर रखकर।"

आरव ने गला साफ किया और बोला – "अरे हम क्या इसको बेवकूफ बनाएंगे, इसने हम सबको बेवकूफ बना दिया। इसको पता था कि अवनी ही महक है।"

संजय और विवेक (एक साथ) – "क्याआआआ?" अवनी भी सन्न रह गई।

संजय – "तुमको पता था तो साले इतनी नौटंकी क्यों की?"

राहुल (हँसते हुए) – “मैं तो तुम सबके मज़े ले रहा था, सालो, क्या-क्या कहानी गढ़ते हो तुम लोग, ये घटिया आइडिया किसका था वैसे?”

अवनी (घबराते हुए) – “संजय का।”

विवेक – “वो सब तो ठीक है, लेकिन हमको तो अब ये पता चला कि अवनी ही महक है और अवनी नॉवेल भी लिखती है।”

राहुल – “हाँ, अवनी नॉवेल लिखती है। और वाकई कमाल का लिखती है, पढ़ना कभी तुम।”

अवनी (झेंपते हुए) – “सॉरी राहुल”

राहुल – “अवनी, तुम लोगों ने क्या सोच लिया था, कि मैं महक के प्यार में पागल हूँ? अरे, मुझे तो तुम्हारी लिखने की स्टाइल से प्यार था, और आगे भी रहेगा। लेकिन कोई नहीं, अच्छा प्लान बनाया था तुम लोगों ने। ‘महक प्रसाद शर्मा’।”

और सब ज़ोर-ज़ोर से हँस पड़े। डिनर के बाद सब हॉल में ही बैठकर पत्ते खेल रहे थे, पर अवनी एकदम चुप थी, खोई हुई-सी।

संजय की नज़र उस पर पड़ी – “अवनी… अवनी, क्या हुआ?”

अवनी ने नीचे सिर झुका लिया, बस “ना” में सर हिला दिया। सब हैरान थे कि अचानक उसे क्या हो गया।

आरव ने भी पूछा –“अवनी, तुम ठीक तो हो? घर जाना है?”

अवनी ने धीरे से सिर उठाया, और आरव को देखती रह गई, बस देखती ही रह गई, उसकी आँखों में जैसे अनकहे शब्द तैर रहे थे। अचानक, सबको चौंकाते हुए वो उठ खड़ी हुई, और लड़खड़ाते क़दमों से सीधे डाइनिंग टेबल पर चढ़ गई।

सबने हैरत से उसे देखा। अवनी झूम रही थी, आँखें आधी बंद, चेहरे पर हल्की लालिमा।

अवनी(टेबल पर खड़ी होकर ऊँची आवाज़ में) – "हेलो फ्रेंड्स, मुझे तुम सबसे कुछ कहना हैं |!"

सब अवाक रह गए।

राहुल (हँसते हुए) – “हें ? साला फैंटा पीने से भी नशा होता है क्या?”

विवेक (मजाक उड़ाते हुए) – “हमको बीयर नहीं चढ़ी, साला इसको फैंटा चढ़ गई।”

आरव का चेहरा लाल पड़ गया। वो गुस्से में विवेक पर बरस पड़ा – “विवेक! ये तुमने किया है? सच-सच बताओ, क्या किया तुमने?”

विवेक (हँसते हुए हाथ उठाकर) – “अरे, कुछ नहीं… उसके फैंटा में थोड़ा वोडका मिला दिया थे हम।”

ये सुनते ही आरव का गुस्सा फट पड़ा –आरव (तमतमाते हुए) – “विवेक!!”

संजय भी भड़क उठा – “विवेक, उसको घर जाना था! अब ऐसी हालत में कैसे ले जाएँ उसको?!”

राहुल (गंभीर होकर) – “गलत बात है यार विवेक, तुम्हें ऐसा नहीं करना चाहिए था।”

अवनी ने दोनों हाथ हवा में उठाए – “अटेंशन प्लीज, सबसे पहले तो मैं विवेक को हैप्पी बर्थडे कहना चाहूँगी, हैप्पी बर्थडे विवेक! तुम बहोत क्यूट हो…..बहोत मजाकिया |”

विवेक शरारती मुस्कान के साथ बोला – “थैंक यू डिअर |“

आरव अब भी गुस्से से उसे देख रहा था। वो अवनी के पास आकर बोला – “अवनी, तुम नीचे उतर जाओ, गिर जाओगी।”

अवनी (हाथ झटकते हुए) – “नो नो, गो अवे !”

आरव पीछे हट गया। राहुल ने मजाक में कहा – “अब इसको रोकना मुश्किल है भाई, चढ़ गयी हैं इसको।”

अवनी ने अचानक आँखे भीगी-भीगी कर राहुल की ओर देखा – “एंड राहुल, तुम्हे तो बहोत सारा सॉरी ! तुम्हारा दिल तोडा मैंने, मैं ही महक हूँ, ये बात मुझे छुपानी ही नहीं चाहिए थी। साला इतना बड़ा बवाल हो गया।”

संजय बेचैन होकर बोला – “अवनी नीचे आओ, तुम होश में नहीं हो।”

विवेक (हँसते हुए) – “वाह! ये तो हमारी भाषा बोल रही है।”

आरव ने विवेक को घूरा – “एक बार इसको होश में आने दे, फिर बताता हूँ तुझे, साले।”

पर अवनी की आँखों में अब आँसू थे। उसने काँपते स्वर में कहा – "संजय, मेरे भाई, मेरा अपना कोई भाई नहीं था। जिस दिन कॉलेज में तुमने मेरा हाथ पकड़कर कहा था ना… 'अवनी, मुझे अपना भाई समझना, कभी भी कोई भी दिक्कत हो तो बेहिचक कॉल करना' कसम से संजय, उस दिन मैं बहुत रोई थी। मम्मी-पापा को उसी दिन मैंने फोन करके बताया था कि 'मम्मी, आज मुझे दोस्त के रूप में एक भाई मिल गया है'। थैंक यू संजय, और हाँ सिर्फ कहने के लिए ही नहीं… सच में भी तुम भाई होने का हर फ़र्ज़ निभाते हो। आई लव यू मेरे भाई !"

संजय भावुक होकर उसकी ओर बढ़ा। आँखें नम हो गईं – "आई लव यू टू , अवनी"

विवेक ने हँसते हुए धीरे से आरव के कान में कहा – "बेटा, अब ये तुम पर आएगी, पक्का, अपना दिल थाम लो जरा।"

अवनी ने एक पल आँखें बंद कीं, फिर जैसे पूरी ताक़त बटोरकर आरव की ओर देखने लगी। आरव का दिल ज़ोर-ज़ोर से धड़क रहा था। सबकी नज़रें अब सिर्फ़ उस पर थीं।

अवनी (आँखें भीगती हुई) – "आरव" – फिर कुछ पल रूककर – "जिस दिन कॉलेज में तुम मेरे पास चलकर आए थे, मेरे चेहरे से मेरे बालों को हटाया था, और गाल पर लगी चोट के निशान को देखकर परेशान हुए और मुझे हिमांशु के ख़िलाफ आवाज़ उठाने की हिम्मत दी थी, उसी दिन से मेरे दिल में तुम्हारी एक अलग ही जगह बन गई। आरव… धीरे-धीरे तुम मेरे दिल के और क़रीब आते चले गए। मेरे लिए जब भी तुम्हारी आँखों में डर और चिंता देखती हूँ, तो मेरा दिल भर आता है। जब तुम मुझे हक़ से कोई बात कहते हो ना तो मुझे लगता है कि ये पूरा जीवन तुम्हारे नाम कर दूँ। काश… काश आरव, तुम मुझे पहले मिले होते…"

इतना कहकर अवनी रो पड़ी।

आरव की आँखें भी भीग उठीं। वो उसकी ओर बढ़ने ही लगा था कि अवनी ने हाथ उठाकर उसे रोका।

अवनी – "आरव, मुझे और भी कुछ कहना है।"

आरव ने आँखों से "हाँ" का इशारा किया।

अवनी ने आँसुओं में भीगे स्वर में कहा – "आरव… मैं अवनी त्रिपाठी… तुमसे बेइंतेहा मोहब्बत करती हूँ।

मुझे नहीं पता मेरे जीवन में आगे क्या होगा... मुझे ये भी नहीं पता कि हमारे इस प्यार को... इस रिश्ते को... कभी मंज़िल मिलेगी या नहीं...लेकिन आरव... जब तक मैं जिंदा रहूँगी... मेरे दिल में... दिल की हर एक धड़कन में... मेरी साँसों में... बस तुम्हारा नाम होगा। आरव... आई लव यू।"

इतना कहते ही अवनी लड़खड़ाई... और चक्कर खाकर गिरने लगी।

आरव बिजली-सी फुर्ती से दौड़ा और उसे अपनी बाँहों में थाम लिया। अवनी उसकी छाती से लिपटकर बेहोश हो गई। राहुल और विवेक तालियाँ बजाने लगे।

संजय की आँखों में भी मुस्कान थी। बेहोशी में भी अवनी, आरव के सीने से चिपकी हुई थी और आरव उसे प्यार से निहार रहा था। संजय पास आया, हल्का-सा हँसा और बोला –"इसे अंदर सुला दो, हम सब हॉल में ही सो जाएंगे।"

आरव ने बड़ी कोमलता से अवनी को उठाया, बेडरूम में ले जाकर बिस्तर पर लिटाया। उसने धीरे से उसके ऊपर कंबल ओढ़ाया, कुछ पल उसके पास बैठकर उसके मासूम चेहरे को निहारा। उसके बालों को हल्के हाथों से सहलाया, फिर मुस्कुराकर बाहर आ गया।

हॉल में विवेक ने फिर छेड़ा – "और भाई आरव, कैसा लगा? इज़हार-ए-मोहब्बत !"

आरव मुस्कुराया, पर आँखों में चमक थी – "जो भी हो, ये मत सोचना कि हमने तुम्हें माफ कर दिया है। इसकी सज़ा तो तुम्हें मिलेगी।"

संजय – "हाँ यार विवेक, ऐसा नहीं करना चाहिए था। अच्छा हुआ कि बस नशा हुआ उसको, कुछ और हो जाता, उल्टी-वुल्टी कर देती वो, तो क्या करते हम?"

विवेक (कंधे उचकाते हुए) – "अरे थोड़ी ही वोडका मिलाई थी मैंने, उसको पीते वक्त पता भी नहीं चला होगा। हाँ, अब वो पीती-वीती नहीं है तो पहली बार में बेचारी को ज़्यादा ही चढ़ गई।"

राहुल (गंभीर स्वर में) – "लेकिन जो भी कहो दिल की बहुत साफ़ है। देखा ना, पूरा दिल खोल दिया उसने।"

आरव ने गहरी साँस ली, फिर धीमे से कहा – "हम्म... बस याद रहे उसको अब।"

इतना कहकर उसने एक नज़र कमरे की ओर देखा और सब चुपचाप हॉल में सोने की तैयारी करने लगे।सुबह करीब 4-5 बजे। हॉल में सब गहरी नींद में डूबे पड़े थे। पूरा माहौल नींद में डूबा हुआ था।

आरव की आँख अचानक खुली। नींद के बीच ही उसके मन में एक चिंता की लहर उठी—अवनी ठीक तो है न? कहीं रात को जो वो पी गई थी,उसको उल्टी-वुल्टी तो नहीं हो गयी …?"

वो तुरंत उठकर चुपचाप हॉल से निकल गया और सीधे कमरे के अंदर चला गया जहाँ अवनी सो रही थी। कमरे की हल्की पीली रोशनी में, बेड पर लेटी अवनी मासूमियत से सो रही थी। उसके चेहरे पर थकान साफ झलक रही थी, फिर भी वो उतनी ही खूबसूरत लग रही थी। आरव उसके सिरहाने बैठ गया। उसकी निगाहें अवनी के चेहरे से हटने का नाम ही नहीं ले रही थीं।

रात का हर एक लम्हा उसकी आँखों के सामने घूम गया—टेबल पर चढ़कर सबके सामने अपने दिल की बातें कहना, संजय को भाई मानकर रोना , और आखिर में खुद उससे अपने प्यार का इज़हार करना।

आरव के होंठों पर अनजाने में मुस्कान तैर गई। उसने धीरे से उसके बिखरे बालों को सहलाना शुरू किया और मन ही मन सोचने लगा— "कितनी मासूमियत से इसने अपने दिल का हाल बयां कर दिया… और मैं? आज तक इसे बता ही नहीं पाया कि मैं भी इसे कितना चाहता हूँ। लेकिन बताऊँ भी तो कैसे? मेरे पास इसे देने के लिए क्या है? ना कोई वादा? ना कोई भविष्य? अगर मैं कह भी दूँ तो… इस रिश्ते का आगे क्या होगा? कहीं ये और ज़्यादा ना उलझ जाए…"

वो अपने ही विचारों में खोया था कि तभी अवनी ने धीरे से आँखें खोलीं। सामने आरव को पास बैठे देखकर बोली— "आरव… मेरा सिर बहुत भारी लग रहा है। ये क्या हो गया था मुझे रात को? मेरा सिर फटा जा रहा है।"

आरव उसकी मासूम हालत देखकर मुस्कुरा दिया - "कुछ नहीं, वो बदमाश विवेक ने तुम्हारे फैंटा में थोड़ी वोडका मिला दी थी। वैसे… अवनी, तुम रात को जो-जो बोल रही थी, तुम्हें याद है?

अवनी ने पलकें झपकाईं, होंठों पर हल्की सी मुस्कान के साथ बोली — "पूरा तो नहीं, थोड़ा-बहुत याद है। कुछ किया भी होगा मैंने, और बहुत कुछ कह भी दिया होगा शायद…"

ये कहते हुए उसने चुपके से आरव की तरफ देखा और फिर धीमे से मुस्कुरा दी। आरव उसकी आँखों में देखते हुए और गहराई से डूबता चला गया। उसके स्वर में अपनापन और शरारत दोनों घुल गए—

"बहुत कुछ नहीं, सब कुछ कह दिया तुमने, पगली।"

दोनों हँस दिए। वो हँसी भी अनकहे इज़हार का हिस्सा बन गई।

आरव ने धीरे-धीरे अपने दोनों हाथ अवनी के गालों पर रख दिए। अचानक अवनी की साँसें तेज़ हो गईं। दिल की धड़कन जैसे सीने से बाहर निकलने लगी।

आरव ने झुककर उसके माथे पर एक कोमल सा, प्यार भरा चुंबन दिया। और बोला —"आई लव यू टू अवनी"

अवनी की आँखें भर आईं। आँसुओं से उसकी पलके भीग गईं। उसकी नज़रें अब भी आरव की आँखों में डूबी थीं। उसने अपने दोनों हाथ उठाकर आरव के हाथों पर रख दिए, जो अब भी उसके गालों पर थे।

धीरे-धीरे आरव उसके और करीब आया। दोनों की गर्म साँसें एक-दूसरे में घुलने लगीं। अवनी ने पलकें बंद कर लीं। और अगले ही पल, आरव ने अपने होंठ उसके होंठों पर रख दिए—एक गहरा, प्यार से भरा चुंबन... जिसमें सारी तड़प, सारा इकरार, और अपनापन समाया हुआ था।

कुछ पल बाद जब अवनी ने अपनी आँखें खोलीं, उनमें आँसुओं का समंदर उमड़ आया। आरव ने तुरंत उसके आँसू पोंछे। अवनी एकदम बच्चे की तरह उसके सीने में छुप गई। आरव ने उसे अपने करीब कसकर थाम लिया और धीरे-धीरे उसके बाल सहलाने लगा। दोनों एक-दूसरे की बाँहों में ऐसे खो गए जैसे पूरी दुनिया ठहर गई हो।बहुत देर तक दोनों ऐसे ही बैठे रहे, बस एक-दूसरे की मौजूदगी को महसूस करते हुए, एक-दूसरे में सिमटकर ।

इधर हॉल में सबकी आँखें खुल चुकी थीं। सूरज की हल्की किरणें खिड़की से छनकर कमरे में आ रही थीं। सब धीरे-धीरे उठकर खिंचाई करने लगे। लेकिन तभी शांति को सबसे पहले तोड़ा विवेक ने।

विवेक ने हॉल में चारों तरफ नज़र घुमाई और बोला— "यार ये कब उठकर अंदर चला गया? बताओ ! और ऊपर से दरवाज़ा भी अंदर से बंद कर लिया, अरे भाई साहब! हमारी चड्डी, हमारा ब्रश—सब अंदर है। हमें नहाना है यार!"

इतना कहकर वो दरवाज़ा पीटने लगा—"अरे भैया-भाभीजी! दरवाज़ा खोलो यार, हमारी चड्डी अंदर है!"

बेड पर बैठी अवनी ज़ोर से हँस पड़ी। उसकी हँसी इतनी मासूम थी कि पूरे कमरे का माहौल बदल गया। आरव झुंझलाकर बड़बड़ाते हुए अनमने अंदाज़ में उठा और दरवाज़ा खोल दिया।

दरवाज़ा खुलते ही वो बोला— "साला… वैसे तो तुम 10-10 बजे तक नहाते नहीं हो, और आज ही सुबह 6 बजे नहाने की पड़ी है!"

विवेक ने बनावटी नाराज़गी से जवाब दिया—"अरे यार, हमें जाना है कहीं, और हाँ एक बात और—अब लगता है कि फ्लैट बदलना ही पड़ेगा। कम से कम 2-3 बेडरूम वाला होना चाहिए।" -बोलता हुआ वो हॉल में आ गया और पीछे पीछे आरव भी हॉल में आ गया |

राहुल ने हैरानी से पूछा—"तुम्हें ऐसा क्यों लग रहा है और?"

विवेक हाथ हवा में घुमाते हुए बोला—"यार ये हॉल में ऐसे ज़मीन पर सोना नहीं हो पा रहा। हमारी तो कमर ही अकड़ गई है भाईसाहब। और इनकी मैडम? ये तो अब आती-जाती रहेंगी, तो एक बेडरूम तो इन दोनों का ही रहेगा।"

संजय तुरंत बीच में बोला—"विवेक भाई, आपकी मेहरबानी से ही इनकी मैडम यहाँ रुकी हुई हैं, समझे आप?"

तभी अवनी चुपचाप बेडरूम से निकलकर सीधी किचन की तरफ चली गई।

विवेक ने उसे जाते हुए देखा और शरारती अंदाज़ में बोला—"देखो तो, अब तो इस पूरे फ्लैट पर ही इन मैडम का कब्ज़ा हो गया है!"

सब ठहाका मारकर हँस पड़े। आरव भी मुस्कुराए बिना न रह सका।

संजय भी उठकर किचन की तरफ चला गया।राहुल ने मज़ाक में कहा— "अब तो खाली है न बेडरूम, जाओ, नहा लो।"

विवेक ने हाथ हिलाते हुए कहा—"अब नहीं जाना हमें।"

आरव चिढ़ते हुए बोला—"यार तुम सुबह-सुबह ये क्या बेकार का ड्रामा कर रहे हो?"

किचन में जब संजय पहुँचा तो देखा अवनी सबके लिए चाय बना रही थी। संजय को देखते ही उसने हल्की-सी मुस्कान दी। संजय भी मुस्कुरा दिया।

संजय ने पूछा—“नींद आई?”

अवनी ने धीरे से सिर हिलाया—“हूँ...”

संजय मुस्कुराया—“कल तो तुमने बहुत ड्रामा किया, अवनी।”

अवनी ने तुरंत दाँतों में जीभ दबा ली और शर्माते हुए बोली—“कुछ ज़्यादा बोल गई क्या मैं?”

संजय ने उसकी तरफ देखकर मुस्कुराते हुए कहा—“नहीं, बस जो दिल में था, बाहर आ गया। खासकर आरव के लिए।”

अवनी की आँखें झुकीं और होंठों पर मुस्कान तैर गई।

कुछ ही देर में दोनों चाय लेकर हॉल में पहुँचे। संजय ने विवेक की ओर इशारा करते हुए कहा—“इसका ड्रामा ख़त्म हुआ कि नहीं?”

आरव ने तुनककर कहा—“पता नहीं क्या प्रॉब्लम है इसे? अब कह रहा है नहाना नहीं हैं।”

अवनी ने विवेक को देखते हुए कहा—“सॉरी विवेक, मेरी वजह से आप सबको हॉल में सोना पड़ा। लो चाय।”

विवेक ने कप हाथ में लेते हुए चौड़ी मुस्कान दी—“ये हुई ना बात, अब थोड़ा अच्छा लगा हमें।”

सब चाय पीने लगे। थोड़ी देर बाद विवेक ने शरारत से आरव की तरफ देखकर पूछा—“वैसे, तुम अंदर क्या कर रहे थे?”

इतना सुनते ही आरव को खाँसी आ गई। अवनी तुरंत झेंपकर उठी और वापस किचन की तरफ भाग गई। राहुल ने तुनकते हुए कहा— “भाई, पागल-वागल हैं क्या तू? न जगह देखता है न वक्त, अवनी के सामने ऐसा सवाल पूछ रहा है, कितना बुरा लगा होगा उसे।”

संजय ने शांत स्वर में कहा— “वैसे भी ऐसा कुछ हुआ भी नहीं होगा जैसा तू सोच रहा है। अवनी को मैं अच्छे से जानता हूँ और आरव को भी। क्यों आरव?”

आरव ने सँभलते हुए जवाब दिया—“मैं सुबह ये देखने गया था कि कहीं उसने उल्टी-वुल्टी तो नहीं कर दी। उसका सिर भारी था तो उसके पास बैठ गया।”

राहुल ने सिर हिलाया—"यार, तेरा ना तो अपनी ज़ुबान पर कंट्रोल है, ना हरकतों पर।"

तभी अवनी किचन से बाहर आई। उसने संजय की तरफ देखा और बोली—"संजय, मुझे घर ड्रॉप कर दो। मुझे कॉलेज जाना है।"

संजय ने आरव की तरफ देखा और कहा—"आरव ड्रॉप कर देगा।"

आरव तुरंत खड़ा हुआ, बाइक की चाबी उठाई और बाहर निकलने लगा। अवनी भी उसके पीछे-पीछे चली गई। राहुल ने हॉल से आवाज़ दी—"देखा ना? बुरा मान गई ना वो? तू भी एक नंबर का बेवकूफ़ है यार।"

आरव ने अवनी को घर तक ड्रॉप किया। बाइक रोककर कहा— "अवनी, विवेक की बातों का बुरा मत मानना। वो थोड़ा मुँहफट है, जो मन में आता है बोल देता है।"

अवनी ने गहरी साँस ली और बोली— "इट्स ओके, आरव, मैं उसके सवाल से थोड़ी अनकम्फ़र्टेबल थी, बस।"

आरव ने तुरंत उसका हाथ थाम लिया। अवनी ने उसकी आँखों में झाँका।आरव मुस्कुराया—"शाम को मिलें?"

अवनी हल्के से मुस्कुराई और बोली—"हूँ…"

आरव ने उसे वहीँ छोड़ा और बाइक स्टार्ट कर आगे बढ़ गया। लेकिन दोनों के दिल अब और भी मज़बूती से एक-दूसरे से जुड़ चुके थे।

शाम ढल चुकी थी। हल्की ठंडी हवा खिड़कियों से अंदर आ रही थी। आरव बेचैनी से बार-बार मोबाइल की स्क्रीन देख रहा था। उसने अवनी को कॉल लगाया—एक बार, दो बार, तीन बार। लेकिन हर बार वही, कॉल रिसीव नहीं हुआ। उसके दिल में अजीब-सी घबराहट होने लगी।

उसने तेज़ी से मैसेज टाइप किया— "अवनी कहाँ ?कॉल क्यु नहीं उठा रही हो ?"

पाँच मिनट तक स्क्रीन को ताकते हुए उसके दिल की धड़कनें तेज़ हो गईं। आखिरकार अवनी का मैसेज आया—"सॉरी आरव, वो हिमांशु वापस आ गया हैं, .मैं तुम्हे बाद में कॉल करती हूँ |"

सिर्फ एक लाइन, लेकिन उस एक लाइन ने आरव के दिल की धड़कन जैसे रोक दी। उसके सीने में एक बोझ सा उतर आया। आँखों में नमी तैर गई। अगले ही पल गुस्से से उसकी मुट्ठियाँ कस गईं और उसने गुस्से में दीवार पर ज़ोर से घूँसा मार दिया। हाथ से खून की हल्की धार निकली, लेकिन दर्द उसे महसूस ही नहीं हुआ क्युकि उससे कहीं ज्यादा दर्द उसके दिल में था उस वक़्त|

तभी पीछे से संजय ने उसे देखा और घबराकर बोला—"आरव?? क्या हुआ?"

आरव की आँखें नम थीं। आवाज़ काँप रही थी—"उसका., उसका पति वापस आ गया।"

संजय चुप हो गया। कुछ देर तक खामोशी छाई रही। फिर उसने धीरे से कहा—"बस आरव, यही तो उसकी ज़िन्दगी का एक कड़वा सच है।"

आरव ने आँखों में भरी पीड़ा के साथ संजय की तरफ देखा— "संजय, क्या हम गलत कर रहे हैं? क्या ये सब ठीक नहीं है?"

संजय ने उसके कंधे पर हाथ रखा— "प्यार में सही-गलत कुछ नहीं होता दोस्त, प्यार तो बस हो जाता है, इसमें इंसान का बस नहीं चलता। तुम सब समय पर छोड़ दो। समय ही रास्ता दिखाएगा।"

उस रात आरव ने लाख कोशिशों के बावजूद नींद की एक बूंद तक आँखों में नहीं उतारी। हर घड़ी वही सवाल, वही चेहरा, वही डर उसके मन को कचोटता रहा।

अगले दिन कॉलेज में भी उसका मन एक पल को भी नहीं लगा। किताब खुली थी, लेकिन आँखें खाली थीं। शाम तक उसका धैर्य टूट गया। उसने ठान लिया, आज चाहे जो हो जाए, वो अवनी से मिलेगा।

उसने बाइक उठाई और सीधे अवनी के फ्लैट की तरफ निकल पड़ा। तेज़ी से गाड़ी चलाते हुए उसके मन में केवल एक ही विचार था—"वो ठीक तो होगी ना?"

दरवाज़े पर पहुँचकर उसने घंटी बजाई। कुछ ही देर में दरवाज़ा खुला, और सामने खड़ी अवनी को देखकर उसका दिल काँप उठा।

उसका चेहरा चोटों से भरा हुआ था। आँखें सूजी हुईं, होंठ फटे हुए, गाल पर उँगलियों के निशान। जैसे किसी ने बेरहमी से उसे पीटा हो।

आरव के पाँव जैसे जड़ गए। उसकी साँसें तेज़ हो गईं। और तभी अवनी उसकी तरफ देखती ही फूट पड़ी। रो-रोकर बुरी तरह काँप रही थी। वो तुरंत आरव के सीने से चिपक गई।

आरव का दिल सुलग उठा। उसकी नसों में गुस्सा खौलने लगा। उसने उसे कसकर बाँहों में भर लिया। अवनी फफक-फफक कर रो रही थी। आरव उसके बाल सहलाता रहा, लेकिन उसकी आँखें गुस्से से लाल थीं।

कुछ देर बाद उसने सख्त आवाज़ में पूछा—“कहाँ है वो?”

अवनी हिचकियों के बीच बमुश्किल बोल पाई—“पता नहीं, दोस्तों के साथ चला गया।”

आरव ने तुरंत उसे अलग किया और दृढ़ स्वर में बोला—“अभी अपने मम्मी-पापा को कॉल करो, वीडियो कॉल।”

अवनी ने डरी हुई नज़रों से उसकी तरफ देखा और सिर हिलाकर कहा—“न-नहीं… नहीं कर सकती।”

आरव ने भौहें सिकोड़ते हुए सख्ती से कहा—“ठीक है! अगर तुम कॉल नहीं करोगी, तो मैं अभी चला जाता हूँ यहाँ से।”

इतना कहकर उसने पीछे मुड़ना चाहा, लेकिन अवनी ने घबराकर उसका हाथ पकड़ लिया। आँसुओं से भीगी आवाज़ में बोली—“लगाती हूँ”

काँपते हाथों से उसने मोबाइल उठाया और पापा को वीडियो कॉल कर दिया।

जैसे ही कॉल रिसीव हुआ और पापा ने अपनी बेटी का हाल देखा, वो चीख उठे—“अवनी? ये हाल किसने किया तुम्हारा? अवनी, क्या हुआ तुम्हें?”

उनकी आवाज़ सुनकर माँ और छोटी बहन भी भागकर आ गईं। एक ही पल में तीनों के चेहरे पर सदमे की लहर दौड़ गई। अवनी ने रोते-रोते हिमांशु जो अब तक करता आया उसके साथ , वो सब बता दिया और बीती रात की घटना भी बताई —“पापा, कल रात हिमांशु ने मुझे फिर से मारा। बिना किसी वजह के, वोशराब पीकर लौटा और कहने लगा कि मैं उसकी ज़िन्दगी में क्यों हूँ? उसे वो कोलकाता वाली लड़की पसंद है। अब उसी के साथ रहना चाहता है। और… और चाहता है कि ये फ्लैट मैं उसके नाम कर दूँ।”

ये सुनते ही उसके पापा का खून खौल उठा। गले की नसें तन गईं - "ये क्या सुन रहें हैं हम? बेटा ऐसी बात थीं तो तुमने हमें पहले क्यों नहीं बताया? क्यों उसे सहती रही? हमसे क्यों छुपाया?"

माँ आँसू पोंछते हुए चीख पड़ीं—"अरे हमने तो अच्छा घर-परिवार, अच्छा लड़का हैं सोचकर शादी करवाई थी। सोचा था कि बेटी बहन के ही परिवार में रहेगी, तो सुखी रहेगी, कोई परेशानी नहीं होगी। लेकिन वो लड़का ऐसा निकला? भगवान… हमने तो कभी सोचा भी नहीं था!"

पापा ने आँखों से बहते आँसू पोछे और दृढ़ आवाज़ में बोले— "अवनी, अब एक मिनट भी उसके साथ रहने की ज़रूरत नहीं है तुम्हें। मैं कल ही आ रहा हूँ। हम कोर्ट में केस करेंगे। मेरे परिचित वकील हैं वहाँ, हम तलाक की अर्जी देंगे। मैं अभी हिमांशु के पापा से बात करता हूँ। और तुम बिलकुल मत डरना। फ्लैट तुम्हारा है, उसका नहीं। अगर वो आए, तो उसे तुरंत बाहर निकाल देना।"

माँ ने चिंता से पूछा—"बेटा, वहाँ कोई है तुम्हारे साथ?"

अवनी ने हाँ में सिर हिलाया और फोन आरव की तरफ कर दिया।

"जी नमस्ते आंटी, मैं आरव। अवनी का दोस्त।"

माँ का स्वर और भी भर्रा गया—"बेटा, अगर हो सके तो मेरी बच्ची का ख्याल रखना। हम कल पहुँच रहे हैं वहाँ। तलाक की कार्यवाही करके उसे वापस ले आएँगे। तब तक तुम ज़रा ध्यान रखना मेरी बच्ची का, और प्लीज़, उसे उस राक्षस से दूर रखना।"

आरव ने गंभीर स्वर में कहा—"जी आंटी, आप बिल्कुल निश्चिंत रहिए।"

कॉल कटते ही अवनी फिर से फूट-फूट कर रोने लगी और आरव के सीने में मुँह छुपा लिया।

आरव ने उसे धीरे-धीरे शांत किया, और अंदर ले आया। उसने डाँटते हुए कहा— "अवनी, मैंने तुम्हें पहले ही कहा था कि इतना सहने की ज़रूरत नहीं है। अगर तुम पहले ही अपने मम्मी-पापा से कह देती, तो आज ये हाल ना होता।"

उसने फर्स्ट-एड बॉक्स निकाला, एंटीसेप्टिक क्रीम ली और उसके घावों पर धीरे-धीरे लगाने लगा। हर चोट पर क्रीम लगाते समय आरव की आँखें गुस्से से जल रही थीं।

अवनी बुखार से तप रही थी। उसने उसे बिस्तर पर लिटाया, कंबल ओढ़ाया और उसका हाथ पकड़कर वहीं बैठ गया।लेकिन तभी दरवाज़ा ज़ोर से खुला।

नशे में धुत्त हिमांशु लड़खड़ाते कदमों से अंदर घुसा। उसकी आँखें लाल थीं और चेहरे पर गुस्सा। उसने आरव को अवनी के पास बैठे देखा और दहाड़ उठा— "मुझे पहले से ही शक था कि ये तेरा यार है, आज पूरा यकीन हो गया। साली, मेरे पीठ पीछे अपने यार को बुलाती है?"

वो गुस्से में अवनी की तरफ बढ़ा और उसका हाथ पकड़ने ही वाला था कि आरव ने झपटकर उसका हाथ रोक लिया।

हिमांशु गुर्राया—"तेरी इतनी हिम्मत?"

उसने दूसरा हाथ उठाया ही था कि अगले ही पल आरव का ज़बरदस्त मुक्का उसके चेहरे पर पड़ा।

हिमांशु लड़खड़ाकर गिर पड़ा। लेकिन वो उठकर फिर झपटा—"साले, मेरे घर में घुसकर, मेरी बीवी पर हाथ डालता है और मुझ पर भी हाथ उठाता है!"

लेकिन इस बार आरव ने उसे ज़ोर का धक्का दिया। हिमांशु ज़मीन पर जा गिरा। आरव का गुस्सा अब बेकाबू हो गया। उसने उसे घसीट-घसीट कर पीटा। हिमांशु चीखता, गिड़गिड़ाता रहा, भागने की कोशिश करता रहा। लेकिन आरव का गुस्सा थम नहीं रहा था।

अवनी डर के मारे काँप रही थी। बिस्तर से उठने की ताक़त भी नहीं थी, फिर भी जैसे-तैसे लड़खड़ाती हुई पीछे से आई और आरव को बाँहों में जकड़ लिया।

उसने काँपती आवाज़ में उसके कंधे पर सिर रख दिया और बोली—"बस आरव… श्श्श… बस, शांत हो जाओ।"

आरव की साँसें तेज़ थीं, लेकिन अवनी की पकड़ और उसकी आवाज़ सुनकर उसके हाथ रुक गए।

हिमांशु लड़खड़ाता हुआ उठा। कुछ पल तक दोनों को घूरता रहा। फिर अवनी ने सारी हिम्मत जुटाकर उसकी तरफ कदम बढ़ाए और दृढ़ आवाज में कहा— "ये मेरा फ्लैट है। और हाँ, मैं तुम्हें छोड़ रही हूँ। इसी वक्त यहाँ से निकल जाओ। वरना… वरना मैं इसे रोक नहीं पाऊँगी।"

हिमांशु ने आरव की ओर देखा। उसकी आँखों में अब भी अंगारे जल रहे थे। लेकिन इस बार वो पीछे हट गया। बिना कुछ कहे तेज़ी से बाहर भाग गया।

दरवाज़ा बंद होते ही अवनी की टाँगों से ताक़त जैसे गायब हो गई। वो वहीं घुटनों के बल बैठकर फूट-फूट कर रोने लगी। आरव ने उसे सहारा दिया, उठाया और फिर बिस्तर पर लिटा दिया।

अवनी ने उसके हाथ कसकर पकड़ लिए। आँखों से आँसू बहते रहे— "आरव, मैं तुम्हारा कैसे शुक्रिया अदा करूँ? अगर तुम मेरी ज़िन्दगी में नहीं आते, तो शायद मैं कभी इस नरक से बाहर नहीं निकल पाती। थैंक यू, थैंक यू सो मच।"

वो उसके सीने से लिपट गई। आरव ने उसे कसकर बाँहों में भर लिया और बहुत देर तक सहलाता रहा। जब अवनी की आँखें बोझिल हुईं और नींद ने उसे घेर लिया, तब आरव ने उसका सर तकिये पर रखा, उसका माथा चूमा, कंबल ओढ़ाया और उठकर बालकनी में चला गया।

वहाँ से उसने तुरंत संजय को कॉल किया और पूरी बात बताई।

संजय हक्का-बक्का रह गया-"क्या…? आरव, तुम रुको, मैं अभी आ रहा हूँ।"

कुछ ही देर में संजय होटल से निकलकर सीधे अवनी के फ्लैट पहुँच गया। वहाँ पहुँचकर उसने सोई हुई अवनी को देखा और चैन की साँस ली।

आरव और संजय दोनों देर रात तक बातें करते रहे और फिर पास के कमरे में ही सो गए। अब बस सुबह का इंतज़ार था—जब अवनी के माता-पिता आएँगे और इस बंधन से उसे हमेशा के लिए मुक्त कर ले जाएँगे।

सुबह लगभग आठ बजे होंगे जब अचानक डोरबेल बजी।

संजय दरवाज़ा खोलने गया। सामने खड़े थे—अवनी के मम्मी-पापा और छोटी बहन।

जैसे ही अवनी की माँ ने संजय को देखा, बिना कुछ सोचे-समझे उससे लिपटकर फफक-फफक कर रो पड़ीं—

"संजय, मेरी बेटी कितनी तकलीफ़ सह रही थी, और हमें तो कुछ भी पता नहीं चला। इसने आज तक हमें ज़रा भी आभास नहीं होने दिया। कितने ही त्योहारों पर घर आती रही, हम भी यहाँ कई बार आए पर इसने हमें भनक तक न लगने दी।"

संजय चुप खड़ा रहा। इतने में आरव भी अन्दर से आया। उसने विनम्रता से दोनों को हाथ जोड़कर नमस्ते किया |

अवनी के पापा ने ध्यान से उसकी ओर देखा— "बेटा, कल रात आप ही थे ना अवनी के साथ? आप संजय को जानते हैं?"

संजय तुरंत आगे बढ़कर बोला— "जी अंकल, ये मेरा ही दोस्त है। कल शाम मैंने ही इसे यहाँ भेजा था।"

(संजय ने झूठ बोला, क्योंकि वह नहीं चाहता था कि अवनी के माता-पिता बेमतलब सवालों के जाल में उलझें।)

इतने में बेडरूम का दरवाज़ा धीरे से खुला। अवनी, टूटी-सी हुई सी चाल के साथ बाहर आई।

जैसे ही माता-पिता और छोटी ने उसे देखा, सारे सब्र के बाँध टूट गए।

अवनी की मम्मी और पापा चीखकर उसके पास भागे और उसे कसकर सीने से लगा लिया। छोटी तो सचमुच काँप उठी थी। तीनों उसे पकड़कर फूट-फूट कर रो पड़े।

अवनी भी अब तक जितनी मज़बूत बनने की कोशिश कर रही थी, सब ढह गया। उसका भी सब्र टूट गया और वह भी फफक कर रो पड़ी।

उसके पापा काँपती आवाज़ में बोले— "तुम्हें इतना पढ़ाया-लिखाया, अपने पैरों पर खड़ा किया, क्या इसके लिए? इतना सब सहने के लिए? एक बार हमसे बोल देती बेटा, आखिर क्यों नहीं बताया कभी?"

अवनी आँसुओं में भीगते शब्दों में बोली— "पापा, बस नहीं बता पाई। सोचा था सब ठीक हो जाएगा शायद। और फिर छोटी की शादी, वो कैसे होती? आप लोगों की बदनामी अलग हो जाती।"

छोटी सुबकते हुए बोली— "क्या दीदी, मेरी शादी आपकी ज़िन्दगी से भी बढ़कर थी क्या? ना होती मेरी शादी, पर आप इतना क्यों सहती रहीं?"

मम्मी ने अवनी का चेहरा दोनों हाथों में लेकर कहा—"हमारी इज़्ज़त तुम्हारी जान से बढ़कर थोड़ी न थी, बेटा।"

वहीं खड़े पिता जी ने गहरी पीड़ा में आरव और संजय की तरफ़ हाथ जोड़ दिए— "बेटा, तुम दोनों का बहुत-बहुत शुक्रिया। अगर कल रात तुम दोनों इसके साथ न

होते, तो शायद ये कभी हिम्मत ही न करती हमें सच्चाई बताने की। और कौन जाने… किसी दिन इसी फ्लैट में…"

उनका गला भर आया। आगे बोलने की हिम्मत ही नहीं रही।

संजय ने उनके काँधे पर हाथ रखा—"शांत हो जाइए अंकल, अब सब ठीक है। आगे क्या करना है, वो देखिए। आपको किसी भी तरह की मदद चाहिए तो मुझे या आरव को कभी भी कॉल कर दीजिए।"

अवनी के पापा ने आँसू पोंछते हुए कहा— "मैंने कल ही हिमांशु के माता-पिता से बात की है। उन्हें सब पता था और वो तलाक़ के लिए राज़ी हैं। उन्होंने अवनी को पहले ही शायद ये सब कह भी दिया था। फिर भी पता नहीं ये लड़की क्यों उस पागल आदमी के साथ रह रही थी?"

इतना कहते हुए उन्होंने अवनी की ओर देखा, जो अब भी अपनी माँ के सीने से चिपकी हुई रो रही थी।

पापा ने अचानक आरव की ओर देखा— "कहाँ है अभी वो?"

आरव ने नज़रें झुका लीं। हल्की हिचक के साथ धीरे से बोला—"वो… कल आया था नशे में। अवनी पर हाथ उठाने वाला था। मुझे गुस्सा आ गया, मैंने उसे… पीट दिया। फिर वो भाग गया। अब कहाँ है, ये नहीं पता।"

कुछ क्षणों तक अवनी के पापा उसे देखते रहे। फिर आगे बढ़कर आरव की पीठ थपथपाई—"शाबाश… बिल्कुल सही किया तुमने, बेटा। तुम्हारा नाम क्या है?"

आरव ने संयत स्वर में उत्तर दिया—"जी… आरव, आरव सिंह।"

संजय ने बात संभालते हुए कहा— "ठीक है अंकल, अब हम चलते हैं। आप अवनी का ध्यान रखिए। वकील के पास जाना हो या कोर्ट—हमें बता दीजिए, हम दोनों में से कोई न कोई साथ आ जाएगा।"

दोनों वहाँ से चले गए। पर जाते-जाते आरव ने एक बार पीछे पलटकर देखा। अवनी भी उसे देख रही थी—कृतज्ञता से भीगी हुई नज़रों से।

आने वाले दिनों में अवनी के पापा ने वकील से मिलकर हिमांशु के ख़िलाफ़ डोमेस्टिक वॉयलेंस का केस दर्ज करवाया और साथ ही तलाक़ की अर्जी भी डाल दी। हर बार कोर्ट या वकील के पास जाना हो—संजय या आरव उसके पिता के साथ होते।

अदालत में सारी शुरुआती कार्यवाही पूरी हुई। फ़ाइलें जमा हुईं, बयान लिखे गए। जज ने अगली सुनवाई की तारीख़ तय की। अवनी और उसके माता-पिता वहीं खड़े थे—दिल भारी था, मगर चेहरे पर एक सुकून भी था |

सुनवाई के बाद अदालत ने आदेश दिया— "छह महीने की अवधि दी जाती है। उसके बाद फाइनल हियरिंग में तलाक़ पर निर्णय होगा।"

छह महीने, ये सुनकर अवनी ने एक नज़र आरव और संजय की ओर डाली। दोनों ने आँखों से ही उसे भरोसा दिया| अब सिर्फ़ छह महीने की दूरी थी—एक नई ज़िन्दगी और एक बीते दर्द से मुक़्ति के बीच।

उसके पिता ने कागज़ अपने हाथ में कसकर पकड़े। माँ अब भी अवनी का हाथ थामे थीं।

उस दिन अदालत से बाहर निकलते समय अवनी के पापा ने गहरी साँस लेते हुए कहा—"अब आधा रास्ता तो तय हो गया है, बाक़ी आधा भी तय करेंगे, साथ।"

अवनी चुप रही, पर उसकी आँखों में आँसू थे। अगले दिन अवनी के माता पिता उसे अपने साथ ग्वालियर ले गए, पीछे रह गया.... आरव.... अवनी की यादों के साथ|

अध्याय 9

वर्तमान

रात भर अवनी अपने अतीत की पन्नों में उलझी रही। बीते ज़ख्मों की परछाइयाँ, टूटे हुए सपने और अपने ही फैसलों का बोझ, सब उसे नींद से कोसों दूर रखे रहा। करीब सुबह के पाँच बजे, वही सोफ़े पर बैठते-बैठते उसकी आँख लग गई। लगभग छः बजे, युग ने उसे हल्के से झकझोर कर जगाया—“अवनी , उठो।”

अवनी चौंककर जागी, जैसे किसी गहरी खाई से अचानक बाहर खींच ली गई हो। युग ने हैरानी से पूछा—“क्या बात है अवनी? तुम रातभर यहीं सोईं? सोफ़े पर? अब भी नाराज़ हो क्या मुझसे?”

अवनी ने तुरंत सिर झटक दिया—“अरे नहीं युग, ऐसी बात नहीं हैं” फिर घड़ी की और देखकर - “ हे भगवान, छह बज गए? आर्यम का लंचबॉक्स, सबका नाश्ता तैयार करना है, ऑफ़्फ़ो!!! युग, मुझे पता ही नहीं चला। यहीं बैठे-बैठे नींद आ गई। सॉरी हाँ, मैं नहाने जा रही हूँ।”

इतना कहकर वो सीधा बाथरूम की ओर चली गई। युग को अवनी का इस तरह सोफे पर सो जाना थोड़ा अजीब लगा | नहा-धोकर अवनी घबराई-सी रसोई में पहुँची, तब तक मम्मीजी नाश्ता और आर्यम का लंचबॉक्स तैयार कर चुकी थीं। अवनी हड़बड़ाती हुई बोली—“मम्मी, सॉरी, वो मेरी नींद देर से खुली।”

सरलाजी हल्की मुस्कान के साथ बोलीं— “मुझे लगा ही था, कल की तैयारियों से थक गई होगी तुम। मेरी नींद जल्दी खुल गई थी, तो मैंने ही बना दिया। लो, चाय पी लो।”

अवनी उन्हें अपलक देखती रह गई, उसे विश्वास नहीं हो रहा था कि ये वही सास हैं, जिनकी आँखों में पहले केवल शिकायतें और जुबान पर ताने होते थे। सरलाजी हँसते हुए बोलीं—“अरे, पी लो| माना कि मैं रसोई में ज़्यादा नहीं आती, लेकिन काम करना भूली नहीं हूँ। चाय अच्छी बनी है, पीकर देखो।”

और फिर वो अपनी चाय लेकर बाहर चली गईं। अवनी चाय का प्याला हाथ में लिए सोचती रही—

"मम्मी में इतना परिवर्तन कैसे आ गया?" उसे क्या पता था कि निर्मलाजी की बातें और युग की बीमारी इन दोनों कारणों से धीरे-धीरे सरलाजी का दिल उसके प्रति पिघल रहा था। कुछ देर में सबने नाश्ता कर लिया। आर्यम स्कूल चला गया और युग ऑफिस। हालाँकि अवनी ने उसे वर्क फ्रॉम होम करने के लिए कहा लेकिन युग नहीं माना। अवनी भी घर के बाकी काम निपटाकर कॉलेज चली गई।

शाम के समय, आरव किसी काम से बैरागढ़ गया था। वहाँ से लौटते वक्त उसने वी.आई.पी. रोड पर युग को तालाब के पास अकेला खड़ा देखा। युग पानी की शांत लहरों को टकटकी लगाए देख रहा था, मानो उस शांति में अपने भीतर का तूफ़ान डुबो देना चाहता हो। आरव ने गाड़ी साइड में लगाई और उतरकर युग के कंधे पर हाथ रख दिया।

युग ने पलटकर देखा—"अरे आरव! तुम?"

आरव मुस्कुराया—"हाँ, बैरागढ़ गया था किसी काम से। तुम यहाँ क्या कर रहे हो?"

युग हल्का-सा हँसा—"कुछ नहीं, बस ऐसे ही।"

आरव का चेहरा गम्भीर हो गया - "युग, कल के लिए... आई ऍम सॉरी, मुझे पता नहीं था कि..... तुम्हें लंग कैंसर है।"

युग ने धीमी आवाज़ में कहा—"कोई बात नहीं, अब तो पता चल ही गया ना।"

आरव की आँखें नम हो आईं - "तुम सही कह रहे थे युग, सबकी ज़िंदगी में कोई न कोई परेशानी होती है। लेकिन हमें हमेशा अपनी ही परेशानी, अपना ही दर्द सबसे बड़ा लगता है जब तक हमें दूसरों के दुखों का पता नहीं चलता। मैं तो बस इसीलिए दुखी रहता हूँ क्यूकि एक लड़की मुझे छोड़कर चली गई, लेकिन तुम? तुम्हे तो यही नहीं पता कि तुम्हारे पास अब कितना समय हैं जीने के लिए।"

युग हल्की हँसी हँस पड़ा— "नहीं आरव, तुम ग़लत हो। मेरे दुख का कारण ये नहीं है कि मेरे पास अब ज़्यादा दिन नहीं बचे"

आरव ने हैरानी से उसकी ओर देखा—"फिर?"

युग की मुस्कान फीकी पड़ गई। उसने गहरी साँस ली और कहा—"तुम्हारे और मेरे दुख की वजह लगभग एक जैसी ही है आरव| तुम इसलिए दुखी हो क्युकि एक लड़की, जो तुमसे बेहद प्यार करती थी, वो तुम्हें छोड़ गई। और मैं... मैं इसलिए दुखी हूँ क्योंकि वो लड़की, जो मेरे साथ है, मेरी पत्नी बनकर, वो किसी और से

बेहद प्यार करती थी। उसे छोड़कर वो मेरे पास तो आ गई, लेकिन मुझे कभी अपना नहीं पाई।"

युग की बात सुनकर आरव सन्न रह गया।

युग आगे बोला—"मैंने अपनी आँखों से देखा है उसे, अकेले में छुप-छुपकर रोते हुए। मुझसे कभी कहती नहीं, लेकिन मुझे दिखाई देता है उसकी आँखों में, उसकी उदासी, उसकी तकलीफ। ऐसा नहीं है कि वो मेरे साथ कभी क्लोज नहीं होती| वो मुझे छूने से, साथ सोने से कभी मना भी नहीं करती, शायद मेरा उससे शादी करना, उसे अपनाना वो अपने पर अहसान मानती हो | लेकिन मैं? मैं उसे आजतक महसूस ही नहीं कर पाया। मेरे साथ होते हुए भी, वो मेरे साथ नहीं है, बस इसी बात का बहोत दुःख होता हैं मुझे।"

आरव के कानों में जैसे किसी ने गर्म लोहा भर दिया हो। उसके मन में सवालों का तूफ़ान था और उसे लगा जैसे उन सवालों के जवाब धीरे-धीरे सामने आ रहे हों।

उसने हिम्मत जुटाकर पूछा— "क्या कभी अवनी ने आपको उस लड़के का नाम बताया? या उससे दूर जाने की वजह?"

युग ने सिर हिलाया—"नहीं, कभी नहीं।"

आरव ने गहरी साँस ली— "तुम दोनों की तो लव मैरिज है ना, तो फिर... ये सब? मतलब, मैं समझा नहीं। तुम दोनों कब, कहाँ, कैसे मिले? और अगर अवनी तुमसे प्यार नहीं करती थी, तो फिर ये शादी कैसे हुई?"

युग मुस्कुराया और हल्के मज़ाक के लहजे में बोला—"अरे भाई, सब यहीं जान लोगे क्या? बीमार हूँ मैं ज़्यादा देर खड़ा नहीं रह सकता। चलो, कहीं बैठते हैं।"

आरव ने तुरंत कहा—"हाँ, पास ही डॉमिनोज़ पिज़्ज़ा शॉप है। वहाँ चलकर बैठते हैं।"

युग ने मुस्कराते हुए चुटकी ली—"हम्म, लेकिन पिज़्ज़ा तुम्हें ही खिलाना पड़ेगा।"

दोनों हल्का-सा हँस दिए और अपनी-अपनी गाड़ी से पिज़्ज़ा शॉप की ओर चल पड़े।

दोनों डॉमिनोज़ पहुँचे। आरव ने दोनों के सामने पिज़्ज़ा रखते हुए हल्की मुस्कान के साथ कहा –"अब बताओ, क्या बात है?"

युग के होंठों पर हँसी आ गयी –"यार, तुम्हें बड़ा इंटरेस्ट आ रहा है हमारी लाइफ़ डिस्कस करने में?"

आरव भी हँस पड़ा, लेकिन उसकी हँसी के पीछे उत्सुकता साफ़ झलक रही थी – "बता दो, हो सकता हैं दिल थोडा हल्का हो जाये तुम्हारा? जैसे मेरा हो गया उस दिन, तुमसे बात करके "

युग ने गहरी साँस भरी, मानो भीतर जमा सारा बोझ बाहर आने को बेचैन हो। उसने सिर झुकाया और कहना शुरू किया – "ठीक है... तो फिर सुनो। तुम्हें तो मैंने बताया ही था, पापा सेंट्रल गवर्मेंट की जॉब में थे। हर पाँच साल में उनका ट्रांसफ़र हो जाता था। लेकिन लम्बे समय तक वो असम, गुवाहाटी में पोस्टेड रहे। मैंने वहीं से अपना बी.टेक पूरा किया और एम.टेक करते वक्त पापा ने पहचान से असम साइंस एंड टेक्नोलॉजी यूनिवर्सिटी में मेरी जॉब लगवा दी।"

युग की आँखें कहीं दूर खो गईं, जैसे स्मृतियों का पर्दा खुल रहा हो - "कुछ साल पहले... अवनी ने भी उसी यूनिवर्सिटी को जॉइन किया, मैनेजमेंट प्रोफ़ेसर के रूप में। मेरी मुलाक़ात उससे पहली बार वहीं हुई। वो कम बोलती थी, स्टाफ़ रूम या लाइब्रेरी में चुपचाप अपना काम करती रहती। फिर मुझे पता चला कि वो गाती है, बहुत अच्छा गाती है। मैं भी गाता था। मेरी दिलचस्पी जागी, मैंने दोस्ती का हाथ बढ़ाया। उसने मना कर दिया। हाँ, वैसे तो वो नॉर्मल बातें कर लेती थी, लेकिन बस काम की बातें।"

युग पिज़्ज़ा का टुकड़ा हाथ में लिए जैसे ठहर गया। यादों का बोझ उसकी आँखों को नम करने लगा -

"एक दिन यूनिवर्सिटी से घर जाते वक्त देखा... वो बस-स्टॉप पर खड़ी थी। बस का इंतज़ार कर रही थी। मैंने अपनी गाड़ी उसके पास रोकी और लिफ़्ट के लिए ऑफर किया । उसने मना कर दिया। लेकिन मैं भी ढीट था, आगे जाकर खड़ा हो गया। उसकी बस नहीं आई। हारकर उसने उम्मीद भरी नज़रों से मेरी ओर देखा। मैं मुस्कुरा दिया। दोबारा उसके पास गया। वो चुपचाप बैठ गई। मैंने पूछा – 'आपको कहाँ छोड़ दूँ?'

वो बोली – 'अपोलो हॉस्पिटल।'

मैंने पूछा – 'क्यों?'

तो वो कुछ नहीं बोली।"

युग की आवाज़ कांपी –"मैं उसे हॉस्पिटल ले गया। लेकिन हॉस्पिटल के बाहर ही उसे चक्कर आ गए। जैसे-तैसे मैंने उसे संभाला और अंदर ले गया। उसी की अपॉइंटमेंट बुक थी, तभी उस दिन वो यूनिवर्सिटी की बस से घर नहीं गई थी।" उसने आँखे बंद कीं, जैसे वो क्षण फिर से जी रहा हो - "मैं उसे डॉक्टर के पास ले गया। उनकी बातचीत से पता चला... वो प्रेग्नेंट थी।"

आरव को अचानक खासी आ गयी । उसकी आँखें फटी रह गईं –"वो... प्रेग्नेंट थी?"

युग ने हल्की हँसी और दर्द का मिश्रण चेहरे पर लाते हुए कहा – "हाँ, बिल्कुल यही झटका मुझे भी लगा था सुनकर। जब हम बाहर आए, तो मैंने हिम्मत करके उससे पूछा – 'क्या आप मैरिड हैं?'

तो वो बोली – 'थी, पर अब नहीं... मेरा डाइवोर्स केस चल रहा है भोपाल में।'

मैंने पूछा – 'आप तो प्रेग्नेंट हैं?'

वो बोली – 'हाँ... लेकिन बच्चा उसका नहीं है।'"

आरव के होश उड़ गए।

युग ने गहरी साँस लेकर बात जारी रखी – "अवनी मुझे झटके पर झटका देती जा रही थी। आगे पूछने की हिम्मत ही नहीं हुई। दिल बैठ-सा गया। क्योंकि मुझे वो अच्छी लगने लगी थी। मैंने उससे उसका घर का पता पूछा और ड्रॉप कर दिया। वो किराए से रहती थी। उसने मुझे अंदर आने का आग्रह किया। मैं अंदर गया, उसने कॉफी बनाई। मैंने कुछ नहीं पूछा। लेकिन वो खुद बोलने लगी –'मुझे पता है आपको अजीब लग रहा होगा, असल में जिससे मेरी शादी हुई थी, उससे मेरी बनी नहीं। हम डाइवोर्स ले रहे हैं। और मैं, किसी और से प्यार करती हूँ। ये उसी का बच्चा है।'"

युग का गला भारी हो आया "मैंने पूछा – 'तो यहाँ क्या कर रही हो? उसके पास क्यों नहीं जाती, जिसका ये बच्चा है?'

वो बोली – ‘क्युकि नहीं जा सकती।'

मुझे उसकी बातें समझ नहीं आ रही थीं। मैंने कॉफी पी और घर चला गया। लेकिन दिमाग़ में उसकी बातें गूंजती रहीं।"

युग की आँखें नम हो उठीं - "अगले दिन वो फिर यूनिवर्सिटी में मिली, वैसे ही शाँत, चुपचाप काम करती हुई। मैं उसके पास जा बैठा और कहा – 'मिस अवनी, आपकी कल की बातें मुझे समझ नहीं आईं। आप जिससे प्यार करती हो, जिसका बच्चा आपके पेट में है, उसके पास क्यों नहीं जा सकतीं? जब आपका डाइवोर्स हो जाए, तब आप उससे शादी कर लेना।'

वो शालीनता से बोली – 'क्यों? आपको कोई तकलीफ़ है? मुझे अगर उससे शादी न करनी हो तो?'

मैंने कहा – 'अरे, पर कोई तो कारण होगा? वो भी मैरिड हैं क्या?'

अवनी बोली – 'नहीं। वो भी मुझसे बहुत प्यार करता है। लेकिन जो भी कारण है, उससे शादी न करने का, वो मैं आपको नहीं बता सकती।'

मैंने कहा – 'तो मुझसे कर लो फिर।'"

"ये सुनते ही वो हँस दी। मैंने उसे पहली बार हँसते देखा था। और सच कहूँ... हँसती हुई वो बहुत ख़ूबसूरत लगी। वो बोली – 'आप पागल हो क्या? किसी और के बच्चे को अपनाओगे?'

मैंने कहा – 'हाँ... एक बार यक़ीन करके तो देखो।'

वो मेरी बातों को मजाक मानकर हस दी और उठकर चली गई।"

"रात को मैंने उसे मैसेज किया – 'हाय।'

उसका भी रिप्लाई आया। मैंने पूछा – 'आप गाती हैं?'

वो बोली – 'हाँ।'

मैंने बताया – 'मैं भी गाता हूँ।'

मैंने अपने वीडियो उसे भेज दिए। उसे पसंद आए। धीरे-धीरे दोस्ती हो गई। और फिर एक दिन, मैंने उसे सीरियसली प्रपोज़ कर दिया शादी के लिए।"

आगे बताते हुए उसकी आँखें डबडबा गईं - "वो नाराज़ हुई। मैंने कहा – 'अवनी, एक बार मेरी बात सुन लो प्लीज़।'

वो रुकी। मैंने कहा – 'अवनी, मुझे बहुत सारे मेडिकल इश्यू हैं। बचपन से न जाने कितनी सर्जरी हो चुकी हैं मेरी। एक सर्जरी में ऐसा हुआ कि... मैं अब कभी पिता नहीं बन सकता। अवनी... तुम जिसके बच्चे की माँ बनने वाली हो, उससे शादी

नहीं कर सकती। प्लीज़ मुझसे शादी करके मुझ पर एक अहसान कर दो। मुझे पिता बनने की ख़ुशी दे दो। मैं इस बच्चे को बहुत प्यार दूँगा, कसम से। प्लीज़ अवनी... शादी करके तुम मुझ पर अहसान करोगी, मैं तुम पर नहीं। तुम बिल्कुल सक्षम हो इस बच्चे की अकेले परवरिश करने में, कोई शक नहीं। प्लीज़ अवनी... मैं... मैं तुमसे प्यार करता हूँ। मुझ पर एक बार भरोसा करके देखो। मुझे पता है तुम किसी और से प्यार करती हो... लेकिन मैं तुम्हें कभी फोर्स नहीं करूँगा मुझसे प्यार करने के लिए। बस मुझे एक नया जीवन दे दो। तुम्हें और इस बच्चे को मैं पूरी खुशियाँ दूँगा।'"

युग का गला भर आया - "वो रोने लगी। और उसने मना कर दिया | मैंने कई दिनों तक उसे इंसिस्ट करता रहा, तब जाकर वो बोली – 'आपके पेरेंट्स कभी नहीं मानेंगे इस तरह के रिश्ते के लिए, आपको लेकर उनके बहोत सारे अरमान होंगे, प्लीज आप मुझे मेरे हाल पर छोड़ दीजिये, मुझसे बर्दाश्त नहीं होगा कि आपके पेरेंट्स मेरे कारण आपसे दूर हो जाए।'

मैंने कहा – 'वो तुम मुझ पर छोड़ दो।'

मैं घर पर अपनी शादी की बात कह दी, फिर शुरू हुआ घर पर बवाल। मैंने शादी की बात कही तो घर में जैसे बम फूट गया। उसके डाइवोर्सी होने से घर में दिक़्क़त नहीं थी। दिक़्क़त ये थी कि वो नॉन-नेपाली थी। माँ नेपाली बहू चाहती थीं। मैंने विद्रोह किया। मेरे मेडीकली अनफ़िट होने के कारण पापा हमेशा मेरे पक्ष में होते थे।इस बार भी उन्होंने मुझे सपोर्ट किया , लेकिन माँ नहीं मानीं। फिर मैंने अगला बम फोड़ा कि वो मेरे बच्चे की माँ बनने वाली है। अब माँ के पास भी कोई ऑप्शन नहीं था।

मेरे पापा के अलावा और किसी को पता नहीं था कि मैं पिता नहीं बन सकता। पापा को मैंने सब सच बता दिया। और एक महीने के अंदर, अवनी के पेरेंट्स से मिलकर, उसका डाइवोर्स होते ही हमारी शादी हो गई।"

युग के चेहरे पर हल्की मुस्कान तैर गई –"और फिर... हमारे जीवन में आया आर्यम। ये नाम अवनी ने ही रखा था। सब कुछ ठीक चल रहा था। फिर पापा का ट्रांसफ़र भोपाल में हो गया। हमें भोपाल इतना पसंद आया कि रिटायरमेंट के बाद पापा ने यहीं घर बना लिया। अवनी का मायका भी पास पड़ता था।"

युग की साँस भारी होने लगी - "लेकिन पिछले साल से मुझे साँस लेने में दिक़्क़त होने लगी। सीने में दर्द रहने लगा। मैंने सोचा, अस्थमा होगा। बहुत समय तक

टालता रहा। लेकिन पापा के जाने के बाद, जब एक दिन, मेरी हालत बहुत ज्यादा बिगड़ गई, तब अवनी जबरदस्ती मुझे हॉस्पिटल ले गई। और तब पता चला... मुझे लंग कैंसर है। वो भी... तीसरे स्टेज का।"

युग चुप हो गया। कमरे में एक भारी ख़ामोशी छा गई।

आरव के पैरों तले ज़मीन खिसक गई। उसके कानों में बस एक ही बात गूंज रही थी –"आर्यम उसी का बेटा है।" लेकिन अगर ऐसा था, तो अवनी ने उसे बताया क्यों नहीं? वो सब कुछ छोड़कर चुपचाप चली क्यों गई?

हज़ारों सवाल उसके दिल और दिमाग़ में गूंजने लगे। लेकिन इस समय उसने खुद को सम्भाला। क्युकि युग की पीड़ा उसकी पीड़ा से बहुत बड़ी थी, इस वक़्त उसे संभालना ज्यादा जरुरी था, वो जैसे-तैसे उसे हिम्मत देकर घर लौट आया।

दोनों अपने-अपने घर पहुँच गए थे। आरव के मन में अब कई सवालों के जवाब धीरे-धीरे साफ़ होते जा रहे थे। अब उसे समझ आने लगा था कि — अवनी ने युग से शादी किन हालातों में की, अवनी के दिल में आज भी उसके लिए कुछ तो है ,और सबसे अहम, आर्यम उसी का बेटा है।

लेकिन इन सबके बावजूद एक सवाल अब भी उसके दिल को चीर रहा था— "अवनी मुझे छोड़कर गई ही क्यों? खासकर तब, जब वो मेरे बच्चे की माँ बनने वाली थी? आख़िर ऐसी कौन-सी वजह थी, जिसने मुझे टूटकर चाहने वाली उस लड़की को मजबूर कर दिया कि वो बिना बताए सब कुछ छोड़कर चली जाए?"

आरव अपने ही सवालों के उलझे जाल में फँसा हुआ था। और उसे ये भी पता था कि इन सवालों का जवाब अब सिर्फ़ अवनी ही दे सकती थी।

उधर जब युग घर पहुँचा, तो अवनी के सवालों की बरसात हो गई— "इतनी देर से आ रहे हो? कहाँ थे अब तक?"

युग (थोड़ा हिचकते हुए मुस्कुराया) – "अरे, कुछ नहीं, रास्ते में आरव मिल गया था। उसी के साथ थोड़ी देर बैठ गया था। पिज़्ज़ा खाकर आया हूँ, मेरे लिए खाना मत बनाना।"

अवनी की भौहें सिकुड़ गईं, उसको शक हुआ, वो सोफ़े से उठी और सीधे युग के पास जाकर उसे सूँघने लगी।

युग (हँसते हुए) – "अरे बाबा नहीं पी है। बस पिज़्ज़ा और कोल्ड ड्रिंक। मुझ पर भरोसा नहीं है क्या?"

अवनी (धीमे लेकिन तीखे स्वर में) – "तुम पर तो है, मगर उस मिस्टर आरव पर नहीं। क्या पता वो पिला दे तो?"

युग – "छोड़ो भी, पार्टी वाले दिन उसे मेरे बारे में पता ही नहीं था।"

अवनी (टकटकी लगाकर देखते हुए) – "वैसे, बैठकर कर क्या रहे थे आप लोग?"

युग (नज़रें बचाते हुए) – "कुछ नहीं, बस इधर-उधर की बातें।"

अवनी का दिल कह रहा था कि आरव ने ज़रूर युग से उसके बारे में कुछ उगलवाने की कोशिश की होगी। लेकिन वो युग से ये बात कैसे कहती? वो चुपचाप अपने काम में लग गई।कुछ ही दिनों बाद निर्मलाजी का फ़ोन आया।
निर्मलाजी (खुश आवाज़ में) – "हैलो अवनी… बेटा कैसी हो?"

अवनी (संयत स्वर में) – "नमस्ते आंटी, मैं ठीक हूँ। आप सब कैसे हैं?"

निर्मलाजी – "हम भी ठीक हैं। अच्छा बेटा, मैं कुछ दिनों के लिए मेरे छोटे बेटे अभय के पास जा रही हूँ, तो मैंने सोचा आज शाम को हम सब साथ बाहर डिनर कर लेते हैं। तुम सरला को भी बोल देना, आज का डिनर बाहर हम 'बापू की कुटिया' में करेंगे।"

अवनी (धीरे से) – "सॉरी आंटी, लेकिन आर्यम की तबियत ठीक नहीं है। और मम्मी के घुटनों में भी तकलीफ़ है। हम नहीं आ पाएंगे।"

निर्मलाजी (चौंकते हुए) – "अरे, क्या हुआ आर्यम को?"

इतना सुनते ही पीछे खड़े आरव के कान खड़े हो गए। वो तेज़ी से आया और निर्मलाजी के हाथ से फ़ोन लेकर बोला—"अवनी, क्या हुआ आर्यम को?"

आरव की आवाज़ सुनते ही अवनी ठिठक गई - "कुछ नहीं, बस उसे वायरल फीवर है। डॉक्टर को दिखा दिया है। अब वो ठीक है, लेकिन बाहर का खाना अभी उसके लिए ठीक नहीं है।"

आरव (थोड़ी राहत की साँस लेते हुए) – "कोई बात नहीं, उसका ध्यान रखना|" और उसने तुरंत फ़ोन काट दिया।

निर्मलाजी उदास होकर — "मेरा बहुत मन था कि हम सब बाहर एक साथ गेट-टुगेदर करें, लेकिन अब क्या किया जा सकता है।"

उधर सरलाजी भी वहीं पास में बैठी थीं। उन्होंने सारी बातें सुन लीं - "अरे तो मैं और आर्यम घर पर रह जाएँगे, तुम और युग चले जाते।"

अवनी (सिर हिलाकर) – "नहीं मम्मी, मेरा मन नहीं है। अभी आर्यम पूरा ठीक नहीं हुआ। और आपको भी उठने-बैठने में तकलीफ़ है, हम नहीं जा रहे।"

सरलाजी (ज़िद से) – "अरे जाओ ना, मैं देख लूँगी आर्यम को। निर्मलाजी ने इतने प्यार से बुलाया है। फ़ोन करो उनको, अभी।"

अवनी का मन बिल्कुल भी नहीं था, लेकिन मम्मी की ज़िद के आगे उसे झुकना पड़ा। उसने निर्मलाजी को कॉल किया। इस बार फ़ोन आरव ने उठाया - "हाँ अवनी… बोलो।"

उसकी आवाज़ सुनकर अवनी फिर से ठिठक गई, फिर भी संयत होकर बोली – "आरव … वो… मैं और युग चल रहे हैं शाम को, आप लोगों के साथ। मम्मी और आर्यम नहीं आएँगे।"

आरव (हल्की मुस्कान के साथ) – "ठीक है, मैं माँ को बता देता हूँ। शाम को हम वहीं मिलेंगे। साथ चलेंगे।"

अवनी ने सिर्फ़ "हम्म" कहकर फ़ोन काट दिया। बहुत दिनों बाद आरव ने अवनी से इतनी साधारण, लेकिन सहज बात की थी। उसके चेहरे पर हल्की मुस्कान तैर गई। वह उसी मुस्कान के साथ किचन में माँ को बताने चला गया। शाम को आरव, अन्विका और निर्मलाजी अवनी के घर पहुँचे। दरवाज़ा खुलते ही सबसे पहले हल्की-सी मुस्कान और आत्मीय मेल–मिलाप का माहौल बना। निर्मलाजी ने सरलाजी को गले लगाया, अन्विका भागकर अंदर आई और घर के कोने-कोने को उत्सुकता से देखने लगी।

लेकिन आरव का मन तो एक ही जगह अटका हुआ था—आर्यम।

उसने बेचैनी से सीधे पूछ ही लिया – "आर्यम कहाँ है?"

युग (आराम से सोफ़े पर बैठते हुए) – "ऊपर है, बेडरूम में। सोया है अभी।"

आरव (चिंतित होकर) – "तबीयत कैसी है उसकी?"

युग – "अब ठीक है, बस थोड़ी कमजोरी है।"

आरव (धीरे लेकिन आग्रह से) – "मैं मिल सकता हूँ उससे?"

युग (हल्का-सा हँसकर) – "अरे, ये भी कोई पूछने वाली बात है क्या?जाओ, ऊपर ही है।"

आरव बिना देर किए सीढ़ियाँ चढ़ गया। उसका दिल धड़क रहा था। जैसे किसी लंबे इंतज़ार के बाद वो उस हिस्से से मिलने जा रहा हो, जो उसका अपना है।

कमरे में पहुँचकर उसने देखा—आर्यम गहरी नींद में सोया था।

चेहरे पर मासूमियत, होठों पर हल्की-सी मुस्कान, और इन सबसे बढ़कर, उसके नैन-नक्श में आरव की झलक साफ़ दिखाई दे रही थी। खासकर उसकी नाक, हूबहू आरव जैसी थी। आरव चुपचाप पास जाकर बैठ गया। धीरे से उसने आर्यम के सिर पर हाथ फेरा, जैसे सालों का प्यार और बिछड़ाव एक ही स्पर्श में उभर आया हो। उसकी आँखें भर आईं, पलकों के कोरों से आँसू ढुलकने लगे। उसी पल दरवाज़ा हल्के से चरमराया। अवनी अंदर आई। उसने देखा—आरव अपने बेटे के पास बैठा है, उसे अपलक निहार रहा है।

अवनी कुछ पल ठिठकी रही, दिल की धड़कन तेज़ हो गई। फिर वो भी धीरे से आगे बढ़ी और आर्यम के पास बैठ गई।

दोनों की नज़रें मिलीं। आरव की आँखों में ढेर सारे सवाल थे—"क्यों किया ऐसा? क्यों छोड़ा मुझे? क्यों छिपाया मेरा बच्चा?"

और अवनी की आँखों में सिर्फ़ पछतावा, और बेबसी। माहौल भारी हो चला था, तभी आर्यम ने करवट बदली और धीरे से आँखें खोल दीं।

आर्यम (नींद भरी आवाज़ में) – "मम्मी…" अवनी तुरंत झुककर उसके माथे पर हाथ फेरने लगी।

अवनी (प्यार से) – "आर्यम, मैं और पापा थोड़ी देर के लिए बाहर जा रहे हैं। तुम यहीं रहना दादी के पास, ठीक है?"

आर्यम (नींद से उठते हुए) – "ओके मम्मी, जल्दी आना।"

इतने में अन्विका और निर्मलाजी भी ऊपर आ गए। अन्विका तो भागकर सीधे आर्यम के पास पहुँची।

अन्विका (उत्साह से) – "भैया! आप भी चलो ना।"

आर्यम (धीरे से मुस्कुराकर) – "नहीं अन्वी, मेरी तबीयत ठीक नहीं है। नेक्स्ट टाइम हम साथ चलेंगे।"

निर्मलाजी ने आगे बढ़कर उसके सिर पर हाथ फेरा।

निर्मलाजी (ममता से) – "कैसे हो आर्यम बेटा?"

आर्यम (दोनों हाथ जोड़कर मासूमियत से) – "नमस्ते दादी, मैं ठीक हूँ अब।"

निर्मलाजी (भावुक होकर) – "जल्दी से ठीक हो जाओ, अगली बार हम सब साथ चलेंगे।"

इतना सुनकर अन्विका ने अपनी मासूम शरारत दिखाई (हँसते हुए) – "भैया, मैं आपके लिए आइसक्रीम लाऊँगी!"

आर्यम (मुस्कराते हुए) – "अरे बुद्धू! लेकिन वो तो देर तक पिघल जाएगी ना?"

सभी उनकी नन्हीं-सी बातों पर ज़ोर से हँस पड़े।कमरे का बोझिल माहौल हल्का हो गया।

अवनी ने आर्यम के माथे को चूमते हुए कहा— "ठीक है बेटा, हम जा रहे हैं। दादी को परेशान मत करना।"

आर्यम ने आँखें मूँद लीं।और अवनी उठ खड़ी हुई। आरव चुपचाप इस पूरे दृश्य को देखता रहा।

उसकी नज़रें बार-बार अवनी और आर्यम पर टिक जातीं, जैसे वो अपने दिल के बिखरे टुकड़ों को जोड़ने की कोशिश कर रहा हो। कुछ देर बाद सब लोग निकल पड़े बापू की कुटिया की ओर।

शाम की हल्की-हल्की ठंडी हवा में बापू की कुटिया का होटल सुनहरी रोशनी में नहा रहा था। बाहर खिले फूलों की महक वातावरण को और सुगंधित कर रही थी। सब लोग अंदर आकर टेबल पर बैठ गए।

ऑर्डर लेने के लिए वेटर आया। उस समय जब आरव और अवनी दोनों ने लगभग एक साथ कहा –

“राजमा-चावल।”

तो निर्मलाजी मुस्कुराते हुए बोलीं – “अरे वाह, तुम दोनों की पसंद कितनी मिलती-जुलती है।”

अवनी हल्का-सा झेंप गई। उसके होंठों पर संकोच भरी मुस्कान आई और धीमे स्वर में बोली –

“हाँ… वो… मुझे यहाँ का राजमा-चावल बहुत पसंद है।”

आरव ने चुपचाप उसकी ओर देखा जैसे उसकी आँखों में जैसे कोई पुरानी यादें तैर उठी हों।

सबने मिलकर खाना खाया। थोड़ी देर हँसी-मज़ाक चलता रहा, फिर बिल चुका कर सब बाहर निकले। तभी अन्विका ज़िद करने लगी –"आंटी, मुझे आइसक्रीम खाना हैं।"

पास ही आइसक्रीम पार्लर दिखाई दे रहा था। अवनी ने मुस्कुराते हुए कहा –"आप लोग यहीं रुकिए, मैं इसे आइसक्रीम दिलाकर लाती हूँ।"

उसने अन्विका को गोद में उठाया और सड़क पार करके पार्लर की ओर चली गई।

दूसरी ओर,निर्मलाजी और युग धीरे-धीरे चलते हुए आपस में बातें कर रहे थे।निर्मलाजी उसे कुछ घरेलू नुस्ख़े और आयुर्वेदिक दवाइयों के बारे में बता रही थीं। युग ध्यान से सुन रहा था। मगर आरव, उसका ध्यान कहीं और था। उसकी निगाहें सिर्फ़ अवनी पर टिकी थीं। आइसक्रीम पार्लर से थोड़ी दूरी पर एक वाइन शॉप थी। वहाँ से कुछ मनचले लड़के शराब पीकर निकल रहे थे। उनमें से एक लड़के की नज़र अवनी पर पड़ी और वह शरारती मुस्कान के साथ उसके पीछे-पीछे चल पड़ा।

पार्लर के अंदर वह बार-बार अवनी से टकराने की कोशिश करने लगा। हर बार कहता – "सॉरी।"

पहले तो अवनी चुप रही, लेकिन बार-बार के इस इरादतन टकराव से वह समझ चुकी थी कि उसका इरादा ठीक नहीं है। उसने जल्दी-जल्दी आइसक्रीम ली और निकलने को हुई।

जैसे ही बाहर निकली, उस मनचले ने उसका रास्ता रोक लिया। अवनी ने सख़्ती से कहा – "क्या कर रहे हैं आप? मुझे जाने दीजिए।"

लड़का बेहयाई से गाना गाने लगा, अवनी का गुस्सा भड़क गया - "आप हट रहे हैं या पुलिस को कॉल करूँ?"

लड़का हँसकर बोला – "ओये तो हम क्या डरते हैं पुलिस से? बुला ले।"

और इतना कहकर उसने अवनी का हाथ पकड़ लिया। अवनी के चेहरे पर डर साफ़ झलकने लगा। न्विका ज़ोर-ज़ोर से रोने लगी। लेकिन तभी अचानक पीछे से उस मनचले के कंधे पर किसी ने कसकर हाथ रखा।

लड़का पलटा – सामने आरव खड़ा था। उसकी आँखों में अंगार जल रहे थे, चेहरा ग़ुस्से से लाल।

आरव गरजते हुए बोला – "बहुत देर से देख रहा हूँ तेरा नाटक।" – और अगले ही पल उसके मुँह पर एक ज़ोरदार मुक्का जड़ दिया। लड़का गिरा, लेकिन फिर संभलकर उठने ही वाला था कि आरव ने उसे पकड़कर लगातार 2–3 और घूंसे दे मारे। अवनी सहमकर खड़ी रह गई। उसकी आँखों में आँसू आ गए। गोद में रोती अन्विका उसे और विचलित कर रही थी।

तभी निर्मलाजी और युग भी वहाँ भागकर पहुँचे। निर्मलाजी ने तुरंत अन्विका को गोद में लिया। युग ने अवनी से घबराकर पूछा तो उसने काँपती आवाज़ में सब बता दिया। लेकिन आरव अब भी रुका नहीं था। वह उसे बेरहमी से पीट रहा था।

उसकी आवाज़ गूंज उठी – "हाथ कैसे लगाया तूने अवनी को?"

भीड़ इकट्ठा हो गई थी। किसी ने पुलिस को कॉल कर दिया। लोग बस वीडियो बना रहे थे, पर कोई बीच में जाने की हिम्मत नहीं कर रहा था। निर्मलाजी घबराकर रो पड़ीं – "आरव बहुत ग़ुस्से में है, इसे रोकना अब मुश्किल है, पुलिस आ गयी तो क्या होगा, अब क्या करें ?"

युग ने उसे पकड़ने की कोशिश की, मगर आरव का ग़ुस्सा काबू में आने वाला नहीं था। लड़का अब बुरी तरह जख़्मी हो चुका था। अवनी का दिल काँप उठा। उसे समझ आ गया था, आरव को अब सिर्फ़ वही रोक सकती है। उसने हिम्मत की और धीरे से उसके पास पहुँची। आरव घुटनों के बल बैठा लगातार उस लड़के को पीटे जा रहा था।

अवनी भी घुटनों के बल उसके पास बैठ गई। उसने उसके कंधे पर हाथ रखा , सिर उसकी पीठ पर टिका दिया और कन्धों को सहलाते हुए धीरे से फुसफुसाई – "श्शश… शांत हो जाओ आरव… बस… और नहीं…"

उसके स्पर्श और आवाज़ ने जैसे आरव के भीतर के तूफ़ान को थाम लिया। उसकी पकड़ ढीली हो गई। उसने लड़के को छोड़ दिया।वह लड़का लड़खड़ाते हुए उठा और भाग गया, कुछ सेकंड तक आरव और अवनी वहीं ज़मीन पर बैठे रहे। फिर अवनी ने उसका हाथ पकड़कर उठाया।

भीड़ अब छँट चुकी थी।निर्मलाजी और युग दोनों इस दृश्य से हिल चुके थे। उनकी आँखों में अनगिनत सवाल थे। अवनी ने धीरे से आरव का हाथ छोड़ दिया और

युग के पास आकर खड़ी हो गई। युग बस उसे देखता रह गया, उसकी आँखों में उलझन, हैरानी और दर्द उमड़ आया।

लेकिन अवनी चुप रही। सब बिना कुछ कहे कार में जाकर बैठ गए। रास्ते भर सन्नाटा पसरा रहा। बाहर गाड़ियों की आवाज़ें थीं, मगर अंदर हर किसी के दिल में सिर्फ़ सवालों का शोर गूंज रहा था।

अवनी और युग को घर छोड़कर जब कार घर के आगे आकर रुकी, तब तक अन्विका निर्मलाजी की गोद में ही सो चुकी थी। निर्मलाजी और आरव घर पहुँचे। आरव ने धीरे से अन्विका को उठाया और बेडरूम में जाकर बड़े प्यार से बिस्तर पर सुला दिया। पीछे से धीमे कदमों की आहट आई। उसने मुड़कर देखा — निर्मलाजी दरवाज़े पर खड़ी थीं। उनकी आँखों में ढेर सारे सवाल तैर रहे थे, जैसे भीतर उमड़ता सागर किसी भी पल छलक पड़ेगा।

आरव उनके कुछ कहने से पहले ही बोल पड़ा — "सॉरी माँ, आप युग से बातें कर रही थीं, लेकिन मेरी नज़र उस लड़के पर पड़ गई थी जो अवनी को छेड़ रहा था। मुझसे रहा नहीं गया।"

निर्मलाजी की आँखें भर आईं। उन्होंने थरथराती आवाज़ में कहा — "आरव, आज तक तुम्हारे गुस्से को कोई काबू में नहीं कर पाया तुम्हारी बुआ के अलावा... मैं भी नहीं। लेकिन अवनी ने... एक ही पल में वो कर दिखाया जो... जो..."

उनकी आवाज़ रुँध गई। आँसू पलकों से फिसल पड़े - "...जो बस वही कर सकती है... जो तुझे बहुत अच्छे से जानती हो ... समझती हो। आरव, मेरी एक गलती की वजह से आज तुम अकेले हो। मैं हमेशा सोचती हूँ कि... काश अवनी जैसी कोई लड़की मिल जाए तो... तुम्हारी दूसरी शादी कर दूँ।"

यह कहते ही उनके आँसू छलक पड़े। उनकी आँखों में पछतावे की एक गहरी परत थी।

आरव कुछ देर चुप खड़ा रहा। फिर उनकी हथेली थामकर हल्की हँसी के साथ बोला — "दूसरी शादी? कौन करेगा माँ, दूसरी शादी... मुझसे? मुझे नहीं करनी अब कोई शादी। मैं ऐसे ही ठीक हूँ।"

उसकी हँसी में एक टीस थी, एक छुपा हुआ दर्द। दर्द से ज़्यादा ये एक तंज था।

निर्मलाजी उसे देखती रह गईं। वह जानती थीं — आरव अब भी अपने अतीत के बोझ से मुक्त नहीं हो पाया। उनकी आँखें डबडबा गईं। काँपती आवाज़ में बस इतना कह पाईं — "मुझे माफ़ कर दो बेटा " और अगले ही पल वे फफककर रो पड़ीं। जैसे बरसों का दर्द एक ही बार में बाहर आने को तरस रहा हो।

आरव ने धीरे से उन्हें कंधे से थामकर कहा — "जाने दो माँ, अब सो जाओ। रात बहुत हो गई है।"

निर्मलाजी बुझा हुआ मन लेकर कमरे से चली गईं।आरव लौटकर अन्विका के पास बैठ गया। उसकी छोटी-सी मासूम की साँसें उसके दिल को शांति देतीं, पर आँखों में पुरानी यादें तैरने लगीं। अतीत उसे चैन से कहाँ बैठने देता था, उधर, जब अवनी और युग घर पहुँचे तो सन्नाटा पसरा हुआ था। मम्मी और आर्यम पहले ही सो चुके थे।

युग बिना कुछ कहे बेडरूम में चला गया और चुपचाप कपड़े बदलने लगा। अवनी भी कमरे में आई, पर उसके चेहरे पर हल्की घबराहट और बोझिलता साफ़ दिख रही थी। उसने धीरे से कहा —"मैं जानती हूँ युग, मेरा आरव को इस तरह रोकना आपको अच्छा नहीं लगा।"

युग ने कपड़े रखते हुए पलटकर उसकी ओर देखा - "नहीं, वो बात नहीं है। अवनी, मुझे पता नहीं क्यों, हमेशा ऐसा लगता है.... कि तुम और आरव पहले से एक-दूसरे को जानते हो?"

अवनी का दिल धक से रह गया। कुछ पल के लिए उसकी साँसें अटक गईं। फिर बनावटी सहजता के साथ बोली — "न-नहीं युग, ऐसा तो कुछ भी नहीं है।"

युग ने गंभीर निगाहों से उसे देखा और कहा —"हम्म... वैसे आरव को ऐसे ही शांत करना है, ये तुम्हें किसने बताया?"

अवनी ने गहरी साँस ली और सहज बनने की कोशिश करते हुए बोली —"ये मैडिटेशन का पार्ट हैं , युग। तुम जानते हो ना मैं मेडिटेशन की क्लासेस जाती थी। मुझे लगा, अगर वो बहुत गुस्से में है तो शायद इसी तरह, प्यार से उसे शांत किया जा सकता है।"

युग मुस्कुराया, पर उसकी आँखों में हल्की शंका अब भी बाकी थी - "अच्छा? मुझ पर तो कभी ये टेक्निक अप्लाई नहीं की तुमने।"

अवनी हँस दी -"आपको इतना गुस्सा आता भी है?"

युग ने हल्की मुस्कान के साथ कहा —“फिर भी… आई आल्सो नीड योर हग यार .”

अवनी ने नटखट अंदाज़ में कहा — “आव्व्व …” - और अगले ही पल वह उसके गले लग गई। दोनों हँस दिए।

लेकिन अवनी की आँखों में वो हँसी देर तक टिक नहीं सकी। उसकी आँखों के सामने अब भी वही दृश्य घूम रहा था — आरव का फटता हुआ ग़ुस्सा, उसकी मुट्ठियों की मार और वो पल जब उसने उसे प्यार से थामकर शांत किया था।

युग के सो जाने के बाद अवनी चुपचाप खिड़की के पास जाकर बैठ गई। बाहर रात का अंधेरा और चाँदनी फैली थी। वह शून्य में देखते हुए बुदबुदाई — “आरव, तुम मेरी ज़िंदगी में वापस क्यों आये ? हर बार तुम्हारा सामना करना कितना मुश्किल हो जाता है, और युग के सवालों का जवाब देना, उससे भी ज़्यादा। हे भगवान… मेरी ज़िंदगी में मुश्किलें क्या कम थीं, जो आरव को फिर से भेजकर और बढ़ा रहे हो?”

वह सोचती रही, और धीरे-धीरे अतीत के पन्नों में खो गई।

फ्लैशबैक

कोर्ट से छः महीने की अवधि मिलने के बाद अवनी अपने मम्मी–पापा के साथ ग्वालियर पहुँची।

जैसा हमेशा होता है, किसी घर में ज़रा सी आँच लगते ही खबरें आग की तरह फैल जाती हैं।

रिश्तेदार, पड़ोसी, जान–पहचान वाले, सबके सब घर आने लगे।

कोई उसे समझाने आता,कोई ढाँढस बंधाने, तो कोई बस ताने कसने और पीठ पीछे उसके चरित्र पर सवाल उठाने।

यही तो है हमारा समाज, जब तक हम ख़ुद किसी पीड़ा से नहीं गुज़रते, तब तक दूसरों के दुःख को समझना मुश्किल होता है। और तब तक हम उन तकलीफ़ों को बस **मनोरंजन का साधन** बना लेते हैं।

खैर… हम भी इसी समाज का हिस्सा हैं, तो यह कटु सत्य हम पर भी उतना ही लागू होता है।

जैसे ही खबर अनामिका तक पहुँची, वह बिना देर किए ग्वालियर पहुँच गई। अनामिका को देखते ही अवनी और उसकी माँ फफककर उससे लिपट गईं। घर का माहौल सिसकियों से भर गया। अनामिका की आँखों से भी आँसू थम नहीं रहे थे, उसे गहरा पछतावा था कि उसने हिमांशु के बारे में ठीक से पड़ताल किए बिना यह रिश्ता घर में रखा था। वह अपने आप को दोषी मान रही थी।

लेकिन अब… जो होना था, वह हो चुका था। अवनी अपनी ज़िंदगी के कई साल इस रिश्ते में गँवा चुकी थी। वो समय अब किसी भी हाल में लौटाया तो नहीं जा सकता था। अब सवाल था उसके आने वाले कल का।

कोई रिश्तेदार उसे कहता –"बेटा, नए रिश्ते की तलाश करो, वक्त सब ठीक कर देगा।"

कोई सलाह देता – "आगे पढ़ाई करो, खुद को मज़बूत बनाओ।"

अवनी सब सुनती रही, लेकिन उसके भीतर का मन, अब पूरी तरह टूट चुका था। ग्वालियर उसे कैद-सा लगने लगा था। उसे लगने लगा कि लोग उसकी हालत को प्रदर्शनी बना चुके हैं। हर नज़र में या तो हमदर्दी थी या सवाल, इसलिए उसका मन अब यहाँ से उब चुका था।

एक दिन उसने अपने पापा से कहा –"पापा, मैं यहाँ और नहीं रहना चाहती। मैं भोपाल लौट जाना चाहती हूँ।"

पापा ने बुझे मन से कहा –"तुम्हें जैसा उचित लगे बेटा, लोगों की बातें सुनने की कोई ज़रूरत नहीं है।

जो तुम्हें सही लगे, वही करो।"

माँ की आँखें भर आईं। "बेटा, हमसे बहुत बड़ी गलती हो गई। अब तुम्हारी ज़िंदगी का हर फ़ैसला सिर्फ तुम्हारा होगा। आगे अगर तुम्हें कोई पसंद आए, तो बिना झिझक हमें बता देना।"

अवनी अपने कमरे में सामान पैक कर रही थी। उसकी छोटी बहन अवंती भी उसकी मदद कर रही थी।

अवंती (मासूमियत से) - "दीदी, एक बात पूछूँ?"

अवनी - "हम्म्म…"

"दीदी, वो लड़का कौन था? संजय भैया का दोस्त?"

अवनी ने चौंककर उसकी तरफ देखा – “क्यों पूछ रही है?”

अवंती चहककर बोली - “दीदी, वो बहुत अच्छा लड़का है। जब वो घर से जा रहा था, तो बार–बार आपको पलटकर देख रहा था।मुझे तो लगता है, वो आपको पसंद करता है। दीदी, तुम तो उसी से शादी कर लेना।”

अवनी ने तुरंत उसे टोक दिया – “चुप कर ”

अवंती तुरंत चुप हो गई। लेकिन, जैसे ही आरव का नाम उसके ज़ेहन में आया— अवनी के होंठों पर अनायास मुस्कान तैर गई। अगले ही दिन अवनी भोपाल लौट आई। घर पहुँचते ही उसने सबसे पहले संजय और आरव को फोन किया। फोन उठते ही दोनों की आवाज़ में खुशी छलक उठी।

संजय ने तुरंत कहा –“अवनी, हमें तुमसे मिलना है।”

ठीक है, आ जाना। घर के दरवाज़े हमेशा खुले हैं।”

अगले ही दिन शाम को दरवाज़े पर घंटी बजी। अवनी ने दरवाज़ा खोला तो सामने संजय खड़ा था। जैसे ही उसकी नज़र संजय पर पड़ी, उसका दिल भर आया। वह खुद को रोक न पाई और संजय के गले लग गई।

अवनी फूट-फूटकर रो पड़ी। संजय ने उसे कसकर थाम लिया और धीरे-धीरे उसके सिर पर हाथ फेरते हुए कहा— "बस... अवनी... बस करो... रोने की ज़रूरत नहीं है अब।"

कुछ देर तक वह उसे ऐसे ही अपने सीने से लगाए रहा। फिर दोनों अंदर आ गए। संजय हमेशा की तरह उसके लिए गिफ्ट्स लाया था। अवनी ने भीगी आँखों से उसकी ओर देखा और हल्की मुस्कान दी—"संजय, तुम कभी मेरे लिए गिफ्ट लाना नहीं भूलते, ना?"

संजय की मुस्कान और गहरी हो गई —"अवनी, अब तुम्हें रोनाधोना छोड़ना होगा। बस कुछ महीने और फिर तुम उस राक्षस की कैद से आज़ाद हो जाओगी। उन बुरी यादों को भुला दो। अब तुम्हारी नई ज़िंदगी शुरू होने वाली है। और हम सब तुम्हारे साथ हैं।"

अवनी की आँखें फिर से भीग गईं, लेकिन इस बार उनमें दर्द के साथ-साथ सुकून की एक हल्की सी किरण भी थी।शायद पहली बार उसने भीतर से राहत महसूस की थी। डिनर के बाद अवनी ने आदत से मजबूर होकर फिर से टिफ़िन पैक कर दिए।

संजय ने हँसते हुए कहा—"यार, तुम ये सब करना बंद कर दो। तुम्हें पता है, अब तो अभय तरह-तरह के सवाल करता है। कहता है— भइया, हमें आपकी बहन से मिलना है! अब तुम ही बताओ, मैं क्या करूँ?"

अवनी हँस पड़ी — "ये तुम्हारा सरदर्द है, तुम ही निपटो। लेकिन टिफ़िन तो लेकर जाना ही पड़ेगा उस बुद्धू के लिए, जिसे आज मुझसे मिलने का समय नहीं मिला।"

संजय भी हँस पड़ा और सिर हिलाकर बोला— "नहीं, ऐसी बात नहीं है अवनी। आरव भी तुमसे मिलना चाहता है लेकिन अकेले, शायद कल।"

थोड़ी देर रुककर वह बोला— "ठीक है अवनी, मैं चलता हूँ। तुम ध्यान रखना अपना। गुड नाइट।"

अवनी ने हल्की मुस्कान दी और धीरे से बोली— "ठीक है,बाय, गुड नाइट।"

संजय के जाते ही कमरे में सन्नाटा छा गया। अवनी खिड़की के पास खड़ी होकर आसमान की ओर देखने लगी। उसने धीरे से मोबाइल उठाया,और आखिरकार उसने आरव को एक मैसेज टाइप किया—

"हाई "

कुछ ही पल में स्क्रीन पर रोशनी चमकी।

आरव का जवाब आया— "कैसी हो?"

अवनी ने मुस्कुराने की कोशिश की, उसने लिखा—"मैं ठीक हूँ, तुम आए नहीं?"

आरव ने तुरंत रिप्लाई किया—"मैं तुमसे अकेले में मिलना चाहता हूँ, कल मिलें?"

ये पढ़कर अवनी का दिल तेज़ी से धड़कने लगा। उसने लिखा— "हाँ, ठीक है। लेकिन मैंने तुम्हारे लिए भी खाना बनाया था, तुम आए क्यों नहीं।"

आरव की आँखों में हल्की मुस्कान तैर गई, उँगलियाँ स्क्रीन पर चलीं—"टिफ़िन तो भेज ही दिया होगा तुमने। पता है मुझे। आदत से बाज़ थोड़ी आओगी तुम।"

अवनी का चेहरा लाल हो गया। उसने महसूस किया कि उसकी धड़कनों को जैसे आरव ने दूर से सुन लिया हो। हँसते हुए उसने लिखा—"इतने अच्छे से जानते हो मुझे?"

आरव ने कुछ पल रुककर गहरी साँस ली और फिर टाइप किया—"हम्म, लेकिन मैं तुम्हें पूरा जानना चाहता हूँ। किसी किताब के हर पन्ने की तरह, पूरा पढ़ना चाहता हूँ तुम्हें। तुम्हारी हर मुस्कान, हर खामोशी, सब कुछ।"

ये पढ़कर अवनी का दिल जैसे सीने से बाहर निकलने लगा।उसने हिचकिचाते हुए लिखा—"क... कल शाम को... मिलते हैं आरव।"

ये मैसेज भेजते ही उसने जल्दी से फोन बंद कर दिया। उधर, आरव ने उसकी आख़िरी लाइन पढ़कर आँखें बंद कीं। होंठों पर मुस्कान थी, पर दिल में एक हल्की-सी बेचैनी, धीरे से फुसफुसाया— "कल, सिर्फ़ तुम और मैं।"

उसके चेहरे पर एक चमक थी, अब वह बेसब्री से अगले दिन की शाम का इंतज़ार करने लगा।

अगले दिन शाम को डोरबेल बजी। अवनी ने दरवाज़ा खोला। सामने आरव खड़ा था। दोनों एक-दूसरे को देखते ही हल्के से मुस्कुराए। अवनी की धीमी-सी मुस्कान में अपनापन था—आरव को जैसे वही मुस्कान लम्बे इंतजार का इनाम लग रही थी।

अवनी – "अंदर आओ।"

आरव मुस्कुराया – "बाद में, अभी चले?"

अवनी बिना कुछ कहे बस सिर झुकाकर हँस दी, दोनों साथ में बाहर निकल पड़े।

भारत भवन के बाहर, आरव ने बाइक पार्क की।अवनी बिना कुछ कहे चुपचाप भीतर चली गई और सीढ़ियाँ चढ़ते हुए सीधे टैरेस पर पहुँच गई।

जब तक आरव एंट्रेंस टिकट लेने में व्यस्त था, अवनी टैरेस की दीवार के पास जाकर खड़ी हो चुकी थी।

दोनों हाथ उसने दीवार पर टिकाए और गहरी साँस भरते हुए सामने के बड़े तालाब के दृश्य में खो गई।

यह वही जगह थी, जहाँ उसे अब सुकून मिलने लगा था। शांत सी जगह, ठंडी हवा के झोंके, और सामने लहरों से चमकता तालाब पीछे से आरव धीरे-धीरे आया। उसकी नज़रें कुछ पल तक सिर्फ़ अवनी पर ही टिकी रहीं। शाम का धुँधलका, हवा के झोंकों से उड़ते उसके खुले बाल, और वह शांत-सी खड़ी अवनी, यह सब आरव के दिल को गहराई तक छू गया।

वह पास आया और बिना कुछ कहे उसके पीछे खड़ा हो गया। उसने अपने दोनों हाथ अवनी के हाथों पर रख दिए। हवा में उड़ती अवनी की ज़ुल्फ़ें उसके गालों से टकराईं। उनकी खुशबू में खोते हुए आरव की साँसें गहरी होने लगीं।

अवनी ने पलटकर एक नज़र उसकी ओर देखा और मुस्कुरा दी। उस मुस्कान ने आरव का दिल पिघला दिया। दोनों फिर साथ खड़े होकर झील की लहरों को देखने लगे।

अवनी – "थैंक यू, आरव।"

आरव – "किस बात के लिए?"

अवनी – "सबसे पहले तो मुझे हिमांशु की कैद से आज़ाद करवाने के लिए, और उसके बाद, इतनी सुंदर-सी जगह से मिलवाने के लिए। आरव, मैं कितनी बार भारत भवन आई हूँ, लेकिन मैं कभी इस जगह नहीं आई थी।"

आरव मुस्कुराया – "हम्म, क्युकि यहाँ तुम्हारा मेरे साथ आना लिखा था।"

अवनी उसकी बात सुनकर बस मुस्कुरा दी। आरव ने उसकी ओर देखते हुए धीरे से पूछा – "अवनी, अब तुम ठीक हो न?"

अवनी ने एक लंबी साँस ली और सिर हिलाया – "हाँ " - कहकर वह पलटी। उसके खुले बाल चेहरे पर आ गए।

आरव ने बेहद नरमी से अपनी उँगलियों के कोमल स्पर्श से उसकी ज़ुल्फ़ों को हटाया और कान के पीछे कर दिया। दोनों की नज़रें कुछ पल तक एक-दूसरे में उलझ गईं।

आरव ने धीरे से मुस्कुराकर कहा – "कॉफ़ी पियोगी?"

अवनी ने हल्की मुस्कान के साथ कहा – "नहीं, मन नहीं है, घर चलते हैं।"

आरव – "ठीक है "

दोनों बाइक पर निकल पड़े, बीच रास्ते आरव ने मुस्कुराते हुए कहा – "अवनी… कुछ खाओगी?"

अवनी – "नहीं, मैं घर पर बना लूँगी।"

आरव हँस पड़ा – "रहने दो मेरी माँ, फिर ढेर सारे टिफ़िन पैक कर दोगी। बाहर ही खाते हैं।"

अवनी उसकी बात सुनकर मुस्कुरा दी। बाइक “बापू की कुटिया” के सामने रुक गई।

रेस्टोरेंट के भीतर आरव बोला – “कुछ ऑर्डर कर लो अपनी पसंद का।”

अवनी – “मैं यहाँ कभी नहीं आई। मुझे पता नहीं यहाँ क्या अच्छा मिलता है।”

आरव – “यहाँ का राजमा-राइस खाकर देखो… तुम्हें बहुत पसंद आएगा।”

अवनी – “ओके।”

आरव ने एक प्लेट राजमा-राइस ऑर्डर किया। दोनो ने एक ही प्लेट में खाना शुरू किया।

अवनी का चेहरा चमक उठा – “वाव, आरव ... ये तो बहोत टेस्टी हैं |”

आरव हँस दिया। डिनर के बाद दोनों बाहर निकले।

आरव – “आइसक्रीम?”

अवनी – “श्योर.”

आरव – “कौनसा फ्लेवर?”

अवनी – “रस्पबेरी डॉली.”

आरव मुस्कुराया – “वो तो मुझे भी बहुत पसंद है।”

दोनों ने आइसक्रीम खाई और फिर घर लौट आए।

गेट पर, आरव –“बाय .”

अवनी हिचकिचाई, उसकी आवाज़ धीमी हो गई – “मत जाओ, आज, यहीं रुक जाओ ना” – वो किसी छोटी बच्ची सी इठलाती हुई बोली|

आरव ने कुछ पल सोचा, फिर मुस्कुरा कर बोला – “ओके”

अवनी की आँखें चमक उठीं।वह मुस्कुराई और कॉफ़ी बनाने चली गई।

आरव ने फ़ोन निकाला और संजय को मैसेज किया – “आज अवनी के पास ही रुका हूँ। वो स्पाई अभय कहाँ है?”

संजय – “डोंट वरी , वो आज खुद मयंक के हॉस्टल में रुका है। मैसेज आया था उसका, बोला भैया को बता देना। शायद तुम्हारा कॉल कनेक्ट नहीं हो पा रहा।”

आरव – “हम्म, कल आता हूँ।”

संजय – “हम्म, शरारत मत करना मेरी बहन के साथ ”

आरव – “अरे यार, अनिल समझे हो क्या?”

संजय – “बाय”

तभी अवनी कॉफ़ी लेकर आई।दोनों ने साथ बैठकर कॉफ़ी पी।

आरव ने पूछा – “फाइनल डेट कब की है कोर्ट की?”

अवनी उदास होकर बोली – “5 महीने बाद है, बस हिमांशु कोर्ट पहुँचे उस दिन।”

आरव ने उसका हाथ थाम लिया – “डोंट वरी, अब सब ठीक हो जाएगा।”

अवनी उसकी तरफ़ देख कर हल्का मुस्कुरा दी।

आरव – “म्मम, वैसे मैं कहाँ सोऊँ? यहाँ हॉल में? या दूसरे बेडरूम में?”

अवनी हल्के से हँस दी – “ज़रूरत नहीं है, मेरे बेडरूम में चलो।”

आरव – “ तुम्हें कोई दिक़्क़त तो नहीं?” अवनी ने मुस्कुराकर बस कमरे की ओर क़दम बढ़ा दिए।

आरव भी मुस्कुराया और उसके पीछे-पीछे चला गया। बेडरूम में दोनों एक ही बेड पर थे।

अवनी ने टीवी ऑन किया और रिमोट आरव को पकड़ा दिया – “जो देखना हो देख लो।”

आरव – “तुम क्या देखोगी?”

अवनी – “मैं तो ये बुक पढ़ूँगी।” कहकर उसने एक किताब दिखा दी।

आरव – “ओके.”

उसने टीवी पर एक म्यूज़िक चैनल लगा दिया, जहाँ एक रोमांटिक गाना चल रहा था।

अवनी ने चश्मा लगाकर किताब खोल ली। आरव ने कुछ चैनल बदले, फिर ऊबकर टीवी बंद कर दिया।

बोर होकर वो किताब में घुसने लगा – “क्या पढ़ रही हो ज़रा बताओ?”

अवनी हल्के से हँसी – "इसमें वही सीन चल रहा है। लड़का-लड़की बेड पर हैं। लड़की बुक पढ़ रही है। लड़का टीवी देखकर ऊब गया और उसने टीवी बंद कर दी "

आरव मुस्कुराया – "फिर?"

अवनी शर्माकर लाल हो गई – "अब, दोनों, ने किस किया, और... और फिर..."

आरव ज़ोर से हँस पड़ा – "समझ गया! तो...हमें आगे क्या करना चाहिए?"

अवनी घबराई हुई-सी आवाज़ में बोली – "मुझे नहीं पता..." चश्मा उतारकर किताब बंद कर दी और झट से रजाई के अंदर घुस गई।

आरव मुस्कुराया और वह भी रजाई में चला गया। उसने अवनी की कमर पर हाथ रखा और उसकी पीठ से सर टिकाकर लेट गया। अवनी का दिल ज़ोर-ज़ोर से धड़कने लगा। वो घबराने लगी, आरव के इतने करीब तो वो पहले कभी नहीं थी, आरव की खुशबू उसे बेचैन किये जा रही थी, पर कुछ देर बाद उसे महसूस हुआ कि आरव सचमुच सो चुका है।

उसके चेहरे पर हल्की-सी मुस्कान आ गई। उसने अपनी कमर से लिपटे उसके हाथ को कसकर थामा और आँखें मूँद लीं। वह भी उसी सुकून के साथ सो गई, अवनी की आँख खुली तो उसने देखा कि आरव पूरी रात उसे बाँहों में थामे सोया रहा। कितने दिनों बाद उसे भी इतनी सुकून भरी नींद आई थी।

वो धीरे से मुस्कुराई, फिर आरव का हाथ अपनी कमर से अलग किया और चुपचाप उठ गई।

खुले बालों का जूड़ा बनाकर जब उसने पलटकर आरव की ओर देखा, तो वह गहरी नींद में था—चेहरे पर मासूमियत और चैन की परछाई। अवनी उसकी ओर देखती रही... होंठों पर हल्की-सी मुस्कान उभरी।

फिर वह उठकर अपने कामों में लग गई। नहा-धोकर बाहर आई तो देखा कि आरव अब उठ चुका था और फोन में व्यस्त था।

अवनी ने हल्के से कहा – "गुड मोर्निंग."

आरव – "हम्म, गुड मोर्निंग. मुझे अब चलना चाहिए।"

अवनी – "अरे, कॉफ़ी तो पी लो।"

आरव – “नहीं अवनी, अभी जाना पड़ेगा। वो स्पाई अभय आ गया तो सौ सवाल करेगा, शाम को मिलता हूँ।”

वह उठा, बाल सँवारे, जैकेट पहना। अवनी उसे बस उदास निगाहों से देखती रही। आरव ने उसकी नज़रों को पढ़ लिया। वह उसके पास आया, माथे पर एक नरम-सा चुम्बन दिया और उसके गालों को सहलाकर बाहर निकल गया।

अवनी उसे जाते हुए देर तक देखती रही, फिर एक गहरी साँस लेकर अपने कामों में लग गई। नाश्ता किया और कॉलेज चली गई। दूसरी ओर, आरव तेज़ बाइक चलाते हुए अपने फ़्लैट पहुँचा। भीतर आया तो देखा राहुल और विवेक अब भी घोड़े बेचकर सो रहे थे। संजय किचन में था।

आरव जल्दी से उसके पास पहुँचा – “अभय आया?”

संजय – “नहीं, अभी नहीं आया।”

आरव ने राहत की साँस ली। संजय मुस्कुराया – “और, कैसी कटी रात?”

आरव के होंठों पर भी मुस्कान आई – “हम्म, अच्छी रही। तुम्हारी बहन सेफ है ” दोनों हँस दिए।

संजय गंभीर होकर बोला – “आगे क्या सोचा है?”

आरव – “अभी कुछ नहीं सोचा, बस जो चल रहा है, चलने दो।”

जब दो लोग परस्पर ऐसे संबंध में होते हैं जिसका कोई नाम नहीं होता, लेकिन दोनों को एक-दूसरे के साथ समय बिताना अच्छा लगता है, तब यह दुनिया का सबसे सुंदर रिश्ता होता है। वो बस वर्तमान में जीना चाहते हैं, भविष्य की चिंता किए बिना ।उनकी एक अपनी काल्पनिक दुनिया होती हैं, जिसमे वे आनंदित हैं, वे दोनों नहीं समझना चाहते भविष्य की योजनाओं को, समाज की अवधारणाओं को, वे उन्मुक्त आकाश में किसी पंछी की तरह उड़ते रहते हैं और कल्पनाओं के सागर में गोते लगते रहते हैं |

तभी विवेक और राहुल उबासी लेते हुए किचन में आए।

विवेक – “कहाँ ग़ायब थे भाई रातभर?”

राहुल – “कहाँ होगा ? अवनी के साथ ही होगा ।”

विवेक ने शरारती मुस्कान के साथ कहा – "ओह्हो... क्या बात है... भाभीजी के साथ? मज़े हैं भाई के तो!"

आरव चिढ़कर बोला – "सब तुम्हारे जैसे नहीं होते। हम बस साथ थे।"

विवेक – "हाँ भैया... भगवान आदमी हो तुम।"

संजय ने बात काटी – "लो, चाय पियो। नहीं तो तुम बकवास ही करते रहोगे।"

सबने चाय पी और फिर अपने-अपने कामों में लग गए। आरव, विवेक और राहुल कॉलेज चले गए, संजय होटल चला गया। अब आरव और अवनी रोज़ शाम को मिलने लगे। कभी भारत भवन, कभी वी.आई.पी रोड, कभी बस यूँ ही इधर-उधर घूमना, लेकिन रात को जब आरव अलविदा कहता तो अवनी की आँखों में हमेशा उदासी उतर आती। आरव उसे समझाता, मुस्कुराकर मनाता और चला जाता।

एक शाम दोनों पार्क में बैठे थे। आरव घास पर लेटा हुआ था, अवनी उसके बालों को उँगलियों से सहला रही थी, दोनों मौन थे, लेकिन फिर भी आखों आखों में बातें चलती रही|

प्रेम में मौन रहना भी एक तरह का संवाद होता हैं, प्रेम उस स्वत्छंद कविता की तरह होता हैं, जो अपने ख़ामोशी में भी कुछ ना कुछ गुनगुनाता रहता हैं, प्रेमी युगल को संवाद करने के लिए शब्दों की आवश्यकता नहीं होती | कुछ ऐसा ही रिश्ता था आरव और अवनी का भी |

रात होने को आई, अचानक वहीं से किसी की शादी की बारात गुज़री—ढोल, शहनाइयाँ, रोशनी, पूरा माहौल जगमगा उठा। दोनों कुछ देर तक उस तरफ़ देखते रहे। तभी अवनी के मन में एक टीस सी उठी और अनायास ही वो आरव से कुछ पूछ बैठी - "आरव... एक बात बोलूँ?"

आरव – "हम्म..."

अवनी – "एक दिन तुम्हारी भी ऐसी ही बारात निकलेगी। तुम भी दूल्हा बनकर घोड़ी पर सजे-धजे बैठे रहोगे, और फिर... तुम्हारी भी शादी हो जाएगी "

उसकी आँखें भीग गईं। इतने समय से वो दोनों साथ थे, लेकिन कभी कोई वादा नहीं कर पाए थे।

आरव ने नज़रें झुका लीं। धीरे से बोला – "पता नहीं... मैं... शादी ही नहीं करूँगा।"

अवनी के दिल पर जैसे छुरियां चल गयी उसने चाहा था कि आरव कहे— "मेरी दुल्हन तो तुम ही हो अवनी, या फिर, मेरी बारात तो तुम्हारे दरवाज़े पर ही आएगी।" पर यह सुनने को न मिला।

उसकी पलकों पर आँसू आ गए।वो चुपचाप हो गई। आरव सब समझ रहा था, लेकिन वह कोई ऐसा वादा नहीं करना चाहता था जिसे निभा ही न पाए।

अवनी ने धीरे से कहा – "आरव, मुझे घर जाना है। प्लीज़ मुझे घर छोड़ दो।"

आरव कुछ नहीं बोला। चुपचाप बाइक उठाई और उसे घर ड्रॉप कर दिया। अवनी बिना कुछ कहे भीतर चली गई। दरवाज़ा बंद करके वहीं बैठ गई और फूट-फूट कर रो पड़ी। आरव बाहर खड़ा देखता रहा, फिर पलटकर चला गया। लेकिन उसके मन में भी तूफ़ान था। बाइक चलाते हुए बार-बार अवनी का उदास चेहरा उसकी आँखों में घूम रहा था। आधे रास्ते में उसने अचानक बाइक रोकी। सोच में डूबा और फिर तेजी से बाइक मोड़कर वापस अवनी के घर पहुँचा।

उसने डोरबेल बजाई। अवनी ने दरवाज़ा खोला। उसकी आँखें रोने की वजह से लाल थीं। आरव ने बिना कुछ कहे उसे बाँहों में भर लिया। दोनों कसकर एक-दूसरे से लिपट गए।अवनी अब भी रो रही थी।

आरव की आवाज़ धीमी थी लेकिन दृढ़ –"अवनी, मैं तुमसे कोई वादा तो नहीं कर सकता। लेकिन ये भी सच है कि मैं तुमसे बहुत प्यार करता हूँ। मैं तुम्हारे अलावा अब किसी और का नहीं हो सकता। आगे क्या होगा, ये मैं नहीं जानता, लेकिन मैं पूरी कोशिश करूँगा कि हमारे रिश्ते को मंज़िल मिले।"

अवनी की रुलाई थम ही नहीं रही थी। आरव ने उसे थोड़ा अलग किया और उसके गालों पर दोनों हाथ रख दिए। अवनी ने आँसुओं से भीगी आँखों से उसकी ओर देखा। उसकी नज़रों में उम्मीद, दर्द और मोहब्बत—सब कुछ एक साथ था।

आरव ने आगे झुककर उसके होंठों पर अपने होंठ रख दिए। उस पल के बाद उनके बीच की सारी दूरियाँ पिघल गईं। दोनों के बीच की हर दीवार अब ढह गई। उस रात, शब्दों की जगह साँसों ने ले ली, और झिझक ने आत्मसमर्पण कर दिया। सारी मजबूरियाँ, जो उन्हें पास आने से रोकती थीं, कहीं पीछे छूट गईं। अब वो दो नहीं रहे — बस एक एहसास के साथ अब पूरी तरह एक-दूसरे के हो गए।

अध्याय 10

आजकल अवनी के दिल में एक डर हमेशा बना रहता था—कहीं वो आरव को खो न दे।

आरव उसकी आँखों में वह डर पढ़ लेता था। कई बार बिना कुछ कहे ही उसके हाथों को थाम लेता और मुस्कुराकर इतना भर कहता—**"मैं यहीं हूँ, कहीं नहीं जा रहा।"** ये सुनकर अवनी के दिल को थोड़ी देर के लिए सुकून मिलता।

इसी बीच अदालत में अवनी के तलाक़ की आख़िरी सुनवाई थी। लेकिन उस दिन भी हिमांशु हाज़िर नहीं हुआ।अवनी बेहद निराश हो गई। कोर्ट की तरफ़ से तो उसे समन भेज दिया गया था, मगर दूसरी तरफ़ से कोई जवाब नहीं था।

जब अवनी के पापा ने हिमांशु के पापा से शिकायत की, तो उन्होंने लाचारगी में कहा— "हिमांशु ने अपना नम्बर बदल लिया है, अब वो हमारे भी सम्पर्क में नहीं है। जैसे ही कोई ख़बर मिलेगी, मैं आपको बताऊँगा।"

ये सुनकर अवनी की आँखें भर आईं। उसे लगा जैसे उसका अतीत उसे बार-बार बाँध लेना चाहता है। लेकिन इस बार उसके पास सहारा था—उसके अपने। परिवार, संजय और आरव ने उसे संभाला, उसे हिम्मत दी।

समय धीरे-धीरे आगे बढ़ता रहा। इस बीच आरव का भी एमबीए का आख़िरी सेमेस्टर आ गया। कॉलेज कैंपस में उसका एक बड़ी फ़ाइनेंस कंपनी में चयन हुआ। पर यह नियुक्ति इंटर्नशिप बेस पर थी और उसके लिए आरव को हैदराबाद हेडक्वाटर जाना था।

आरव का मन अवनी को छोड़कर जाने का नहीं था। रातों को वह सो नहीं पाता था। सोचता— "कैसे रहूँगा मैं अवनी से दूर?"

लेकिन अवनी और संजय ने ही उसे समझाया, उसे प्रेरित किया कि यह उसके भविष्य के लिए ज़रूरी है।

जिस रात आरव को हैदराबाद जाना था, उसने पूरी रात अवनी के साथ बिताई। उसकी आँखों में यही डर साफ़ झलक रहा था—"मैं तुम्हें छोड़कर नहीं जाना चाहता।"

अगले दिन अवनी उसके साथ रेलवे स्टेशन पहुँची। हालाँकि अभय ने कहा था कि वह आरव को ड्रॉप करेगा, मगर आरव ने मना कर दिया। वह जाने से पहले का सारा वक़्त सिर्फ़ अवनी के साथ बिताना चाहता था |

प्लैटफ़ॉर्म पर बैठकर, आरव ने अवनी का हाथ कसकर थाम रखा था। दोनों चुप थे। ना कोई हँसी, ना कोई बातचीत। बस खामोशी और धड़कनों की आवाज़। दोनों के दिल रो रहे थे, मगर किसी ने अपनी आँखों का बाँध नहीं तोड़ा। क्युकि अगर एक भी टूटता तो दूसरे को सम्भालना मुश्किल हो जाता। इसलिए दोनों बस चुपचाप बैठे, एक-दूसरे की मौजूदगी को महसूस करते रहे।

कुछ देर बाद ट्रेन की अनाउंसमेंट हुई और ट्रेन आई आरव ने आख़िरी बार अवनी का हाथ दबाया, उसकी आँखों में देखा, और ट्रेन में चढ़ गया। अवनी वहीं खड़ी रही…स्टेशन की भीड़ में उसकी नज़र बस उस डिब्बे पर टिकी रही, जिसमें उसका आरव बैठा था। और थोड़ी देर में ट्रेन उसकी नजरों से ओझल हो गई|

आरव हैदराबाद पहुँच चुका था। उसकी इंटर्नशिप शुरू हो चुकी थी। दिनभर वह पूरे मन से काम में डूबा रहता, लेकिन सच तो यह था कि एक पल के लिए भी अवनी का ख़याल उसके ज़हन से अलग नहीं होता। उसे बस इंतज़ार था—इन दो महीनों के पूरे होने का।

रात को जैसे ही वह अपने कमरे पर लौटता, सबसे पहला काम होता अवनी को कॉल करना।

उधर अवनी भी मानो उसी की कॉल के इंतज़ार में रहती। घंटों-घंटों बातें चलतीं। हँसी, ठिठोली, कभी रूठना, कभी मनुहार | इस दूरी ने उनके प्यार को कम नहीं किया था—बल्कि और गहरा बना दिया था।

दो महीने बाद आरव की इंटर्नशिप ख़त्म हुई। उसकी मेहनत और लगन देख कंपनी ने उसे हैदराबाद हेड ऑफिस में ही ब्रांच मैनेजर की स्थायी पोस्ट ऑफर की। पैकेज भी बड़ा था। लेकिन आरव के लिए यह सब मायने नहीं रखता था। उसने वह ऑफर ठुकरा दिया। उसे चाहिए था भोपाल। चाहे वहाँ पद असिस्टेंट ब्रांच मैनेजर का ही क्यों न हो और तनख़्वाह भी कम क्यों ना हो—उसे तो बस अवनी के साथ रहना था।

यह बात उसने किसी को नहीं बताई। और चुपचाप भोपाल आकर जॉइनिंग ले ली। उसके भोपाल लौटने पर सबसे ज़्यादा खुश अवनी थी। उसे ज़रूर यह सोचकर

हैरानी हुई कि आरव को भोपाल ही कैसे अलॉट हुआ, लेकिन खुशी के आगे सवाल फीके पड़ गए। उनका मिलना-जुलना फिर से शुरू हो गया। अब अवनी को एक नया शौक चढ़ गया—आरव का टिफ़िन बनाना। वह रोज़ सुबह उसके लिए लंच तैयार करती, खुद ऑफिस जाकर उसे टिफ़िन देती और फिर कॉलेज जाती। हालाँकि आरव का ऑफिस और अवनी का कॉलेज शहर के बिल्कुल अलग-अलग हिस्सों में थे, लेकिन अवनी ने यह रूटीन अपनी आदत बना ली थी। कई बार आरव ने उसे मना भी किया, लेकिन अवनी नहीं मानी|

आरव के ऑफिस के लोग भी अब अवनी को पहचानने लगे थे। हैदराबाद से लौटने के बाद आरव के प्यार जताने का तरीका भी बदल गया था। अब वह अवनी को अक्सर छोटे-छोटे सरप्राइज़ देता। कभी मिलने के लिए उसे किसी जगह बुलाता, और जैसे ही अवनी पहुँचती, वह अचानक पीछे से आकर उसका हाथ पकड़ लेता, कभी उसके उड़ते बालों पर हल्की-सी फूँक मार देता, अवनी हर बार चौंकती और फिर खिलखिलाकर हँस पड़ती।

एक बार आरव के कुछ कलीग्स ने मिलकर मूवी जाने का प्लान बनाया। आरव ने अवनी को भी साथ बुलाया। सब लोग सिनेमा हॉल पहुँचे। आरव के कलीग्स में एक लड़की भी थी—पल्लवी। पल्लवी कॉलेज के दिनों में आरव की क्लासमेट रह चुकी थी और अब विवेक की गर्लफ्रेंड थी। पल्लवी बार-बार आरव से कह रही थी—“चलो ना अंदर, फिल्म शुरू होने वाली है।”

लेकिन आरव वहीं बाहर खड़ा था। उसकी नज़रें बस गेट की तरफ़ टिकी थीं, जहाँ से उसे अवनी आती नज़र आनी थी। अवनी थोड़ी देर से पहुँची। आरव का दिल घबराने लगा, तभी दूर से आती गाड़ी की तेज़ रफ़्तार और ब्रेक की चरमराहट सुनाई दी। अवनी स्कूटी से उतरी, जल्दी-जल्दी पार्किंग में गाड़ी लगाई। अभी वह गाड़ी लॉक ही कर रही थी कि पीछे से आरव आ गया। उसने हल्के से उसकी ज़ुल्फ़ों पर फूँक मारी। अवनी मुस्कुराई और बिना पलटे बोली— “आरव, सिग्नल तोड़कर आई हूँ। अब चालान आया तो तुम ही भरना।”

इतना कहकर वह पलटी, और दोनों एक-दूसरे को देखकर ज़ोर से हँस पड़े। सिनेमा हॉल के बाहर आरव ने अवनी का परिचय पल्लवी से करवाया। पल्लवी आधुनिक सोच वाली, खुली प्रवृत्ति की लड़की थी।

लेकिन अवनी को देखते ही उसके मन में एक अजीब-सी जलन उठी। अवनी ने यह बात सहजता से भाँप ली थी। मगर उसने अनदेखा किया।

फिल्म शुरू हुई। सब अपनी सीटों पर बैठ गए। फिल्म देखते वक्त आरव ने चुपके से अवनी का हाथ थाम लिया। पल्लवी को यह बिल्कुल अच्छा नहीं लगा। वह बार-बार गुस्से से उन्हें देखती रही।

दरअसल, कॉलेज में आरव उसकी पहली पसंद रहा था। उसने आरव को प्रपोज़ भी किया था। लेकिन आरव ने साफ़ मना कर दिया था |

आरव को जलाने के लिए ही पल्लवी ने विवेक को अपना बॉयफ्रेंड बनाया था। वो विवेक के साथ हर हद पार कर चुकी थी ताकि विवेक यह सब आरव को बताए और आरव जले।लेकिन आरव को कभी कोई फ़र्क़ ही नहीं पड़ा। फिल्म ख़त्म होने के बाद सब बोट क्लब गए। वहाँ घूमे, फिरे, लेकिन पूरे समय पल्लवी के ताने चलते रहे। वह बार-बार अवनी को नीचा दिखाने की कोशिश करती— "वाह आरव, तुम्हें तो आंटीजी जैसी लड़कियाँ पसंद हैं !"

विवेक ने झल्लाकर उसे टोका भी— "पल्लवी, अवनी, आंटी नहीं हैं। हमारी ही उम्र की हैं।"

लेकिन पल्लवी नहीं मानी। उसके व्यंग्य रुकने का नाम ही नहीं ले रहे थे। अवनी पर इन बातों का कोई असर नहीं पड़ा। आरव को भी कोई फ़र्क़ नहीं पड़ा। हाँ, विवेक ज़रूर परेशान हो गया। उसे अच्छा नहीं लगा कि उसकी गर्लफ्रेंड इस तरह की ओछी हरकतें कर रही थी।

रात को सब अपने-अपने रास्ते हो गए। आरव, अवनी को ड्रॉप करने उसके घर पहुँचा। हवा में हल्की ठंडक थी, लेकिन अवनी का मन भीतर से उथल-पुथल से भरा था। जैसे ही आरव ने बाइक रोकी वो बोला - "अवनी... पल्लवी की बातों का बुरा मत मानना, वो थोड़ी सी मुँहफट है।"

अवनी ठहाका मारकर हँस पड़ी, लेकिन उस हँसी में एक चुभन भी थी— "हाँ, जैसा विवेक वैसी ही उसकी गर्लफ्रेंड। लेकिन आरव, एक बात बोलूँ?"

आरव ने उसकी आँखों में झाँकते हुए सिर हिलाया—"हाँ, बोलो।"

अवनी ने गहरी साँस ली और सीधे कहा— "मुझे तो लगता है, भले वो विवेक की गर्लफ्रेंड है, लेकिन असल में उसका इंटरेस्ट तुममें है।"

आरव हँस पड़ा— "हाँ, उसने पहले मुझे ही प्रपोज़ किया था, कॉलेज में।"

ये सुनते ही अवनी का चेहरा उतर गया - "अच्छा... और तुमने क्या जवाब दिया?"

आरव ने हँसते हुए ही जवाब दिया— "मैंने कुछ रिप्लाई ही नहीं किया। और वैसे भी, अब वो विवेक के साथ है।"

अवनी ने गुस्से में पाँव पटका और बिना कुछ कहे अंदर चली गई। आरव मुस्कराता हुआ उसके पीछे-पीछे घर में घुस आया। अवनी अंदर नाराज़ बैठी थी। उसकी आँखें भर आईं थीं। तभी आरव ने उसका हाथ थाम लिया। अवनी उसकी ओर पलटी, आँखों से आँसू ढुलक पड़े।

अवनी (रुँधे गले से) - "तुमने उससे ये क्यों नहीं कहा कि तुम पहले से ही किसी से प्यार करते हो?"

आरव ने उसके गाल को हल्के से छुआ और नरम स्वर में कहा— "तुम्हें क्या लगता है अवनी? वो तुमसे इतनी चिढ़ क्यों रही थी?"

अवनी थोड़ी देर चुप रही, फिर उसकी आँखों में चमक लौट आई। होंठों पर हल्की मुस्कान आई और वो आरव के गले लग गई - "फिर भी, तुम उससे ज़रा बचकर रहना।"

आरव ने हल्की हँसी के साथ जवाब दिया— "अरे इतना क्यों सोचती हो? वो विवेक के साथ तो अपनी सारी हदें पार कर चुकी है।"

अवनी झटके से अलग हुई और हैरानी से बोली—"और ये तुम्हें किसने बताया?"

आरव ने कंधे उचकाते हुए कहा—"विवेक ने, और यहाँ तक कि पल्लवी ने खुद।"

अवनी ने भौहें सिकोड़ लीं, आवाज़ में तीखापन था— "राइट, क्युकि वो चाहती है कि तुम्हें ये पता चले और तुम जलो, वरना कौन अपनी इतनी पर्सनल बातें किसी और से शेयर करता है?"

आरव ने उसका चेहरा थाम लिया—"अवनी, तुम बहुत ज़्यादा सोच रही हो।"

अवनी की आँखें गीली थीं, लेकिन स्वर दृढ़ था— "अच्छा? तो क्या तुमने या मैंने कभी ये शेयर किया है किसी से कि हम भी कई रातें साथ में गुज़ार चुके हैं?"

आरव चौंका, फिर उसका हाथ कसकर थाम लिया— "नहीं अवनी, ये हमारी पर्सनल बातें है। और मैं कभी नहीं चाहता कि कोई तुम्हारे कैरेक्टर पर उँगली उठाए। इसलिए मैंने ये बात किसी से नहीं कही, यहाँ तक कि संजय से भी नहीं।"

अवनी की आँखें भर आईं। उसने धीरे से कहा— "यही तो मैं तुम्हें समझाना चाहती हूँ आरव, अगर कोई लड़का-लड़की सचमुच एक-दूसरे से प्यार करते हैं

और उनके बीच कुछ हो भी जाता है तो, वो सारी दुनिया में उसका ढिंढोरा नहीं पीटते। चाहे वो कितने भी मॉडर्न क्यों न हों क्युकि वो अपने उन निजी पलों की इज़्ज़त करते हैं। विवेक तो पागल है, लेकिन पल्लवी? वो सिर्फ मॉडर्न नहीं, शातिर है।"

आरव ने उसके आँसू पोंछे और मुस्कराकर बोला— "मुझे पता है तुम मेरे लिए पज़ेसिव हो। डोंट वरी मैं उससे दूर ही रहूँगा। अब तो खुश?"

अवनी ने हल्की मुस्कान के साथ सिर हिला दिया।

आरव ने मज़ाकिया अंदाज़ में कहा— "चलो अब चलता हूँ, वरना वो स्पाई अभय अपनी जासूसी शुरू कर देगा। वैसे भी, आजकल उसे मुझ पर शक है।"

अवनी खिलखिला उठी। आरव ने उसके माथे पर प्यार से चुम्बन दिया और मुस्कुराते हुए बाहर निकल गया।

इधर अभय के मन में पिछले कुछ दिनों से हलचल मची हुई थी। उसे अपने बड़े भाई आरव पर शक होने लगा था। कई बार उसने आरव को देर रात तक फोन पर उलझा देखा, कई बार बाहर से देर से लौटते हुए, और तो और, अक़्सर बाहर ही खाना खा लेना। सब कुछ उसकी नज़रों से बच नहीं पाया।

और फिर, जैसे किसी ने उसके मन के शक पर मुहर लगा दी हो—एक दिन कॉलेज के दोस्तों से सुनने को मिला कि उन्होंने आरव को कई बार अवनी मैडम के साथ देखा है। ये सुनते ही अभय का दिमाग़ सुन्न हो गया। उस दिन से उसने अवनी से अनजाने ही दूरी बना ली।

अवनी ने उसके व्यवहार में यह परिवर्तन महसूस तो किया, लेकिन उसे लगा कि शायद अभय को अपनी माँ की याद ज़्यादा सताने लगी होगी। लेकिन असली झटका उसे तब लगा जब एक दिन क्लास में अभय का एक क्लासमेट मज़ाक उड़ाते हुए बोला— "अभय, सुना है, अवनी मैडम तुम्हारी भाभी हैं!"

अभय खामोश रहा। लड़का ठहाका लगाकर बोला— "तभी तो, तुम पर इतनी मेहरबान रहती हैं। अरे तुम उनके प्यारे-प्यारे देवरजी जो ठहरे! हम भी सोच रहे हैं, कोई मैडम-वेडम पटाई जाए, कॉलेज लाइफ़ मस्त कट जाएगी।"

दूसरा लड़का बीच में कूद पड़ा— "और ये भी सुना है, अवनी मैडम तो तुम्हारे भैया की रातें भी रंगीन कर रही हैं।"

ये शब्द सुनते ही अभय का खून खौल उठा। ग़ुस्से में उसकी आँखें लाल हो गईं। अगले ही पल उसने उस लड़के को गिराकर बुरी तरह पीटना शुरू कर दिया। क्लास में अफरा-तफरी मच गई। कुर्सियाँ, टेबलें फेंकी जाने लगीं। दूसरे लड़के भी बीच में कूद पड़े और देखते ही देखते क्लास एक रणभूमि बन गई। कुछ स्टूडेंट्स दौड़कर स्टाफरूम पहुँचे और टीचर्स को बुलाया। सब मिलकर लड़ाई छुड़ाने में लग गए।

जब अवनी को इस घटना का पता चला, तो उसका कलेजा मुँह को आ गया। वो भागती हुई क्लासरूम पहुँची। उसने सबसे पहले अभय को पकड़कर अलग किया और ज़ोर से चिल्लाई— "अभय! ये क्या कर रहे हो तुम? दिन-ब-दिन तुम्हारी बद्तामिज़ियाँ बढ़ती जा रही हैं। ये क्या तरीक़ा है तुम्हारा? और कब तक बचाती रहूँगी मैं तुम्हें?"

अभय ने झटके से उसका हाथ छुड़ा दिया और भरे ग़ुस्से में बोला— "बस कीजिए आप! हमारी माँ बनने की कोशिश मत कीजिए। हम अपने मसले खुद हल कर लेंगे। और वैसे भी, ये सब आपकी ही वजह से हुआ है।"

ये सुनते ही अवनी सन्न रह गई। जैसे किसी ने उसके कानों में बिजली गिरा दी हो। अभय पैर पटखता हुआ बाहर पार्किंग की तरफ चला गया। अवनी की साँसें तेज़ हो गईं। वो तुरंत उसके पीछे भागी और उसका हाथ पकड़कर बोली— "अभय… रुको। इसका क्या मतलब है? जो भी हुआ, वो मेरी वजह से हुआ?"

अभय ने पलटकर उसकी आँखों में देखा। उसके चेहरे पर दर्द और गुस्सा दोनों थे - "बनिए मत, आप सब जानती हैं। आपका मेरे भाई के साथ चक्कर चल रहा है ना? आपको परवाह भी है अपनी इज़्ज़त की? कॉलेज में सबको पता है, सब आपका मज़ाक उड़ाते हैं, सबने देखा है आपको मेरे भाई के साथ, हाथों में हाथ डालकर घूमते हुए। कोई बहोत बड़ा शहर नहीं है आपका भोपाल!"

अवनी का दिल धक से रह गया। वो कुछ बोल ही नहीं पाई।

अभय ने जैसे उसकी चुप्पी को ही सबूत मान लिया - "आपको पूरी दुनिया में मेरा भाई ही मिला टाइमपास करने को? आप मैरिड हैं! आपका तलाक हो रहा है, ये आपका पर्सनल मैटर है। अगर दूसरी शादी करनी ही है तो कोई अपने जैसा ढूँढ लीजिए ना ! कोई तलाकशुदा, कोई विधुर या भाग गई हो किसी की पत्नी उसे छोड़कर, ऐसे बहुत मिल जाएँगे आपको मैट्रिमोनी ऐप पर आपकी तरह, सेकंड

हैण्ड, लेकिन प्लीज़ मेरे भाई का पीछा छोड़ दीजिए। मेरी माँ को पता चला ना, तो वो खुदकुशी कर लेंगी!”

अभय के मुँह से निकला हर शब्द जैसे आग बनकर अवनी के दिल में उतर रहा था। उसकी आँखों से आँसू बह निकले। वो पत्थर की तरह जड़ खड़ी रह गई। अभय इतना कहकर वहाँ से चला गया।

अभय के मुंह से अपने लिए इतने कठोर शब्द सुनकर अवनी का दिल बुरी तरह टूट गया, और रात को अकेले में उसके कानों में वही शब्द गूंजते रहे— "सेकंड हैंड मटेरियल… तलाकशुदा… अपने जैसा ढूँढ लो…"

अवनी ने सोचा— “क्या सचमुच? अभय सही तो कह रहा है| हमारे समाज का नियम ही तो यही है। अगर कोई तलाकशुदा, विधवा हैं , तो उसे अपने जैसा कोई ढूँढना चाहिए क्युकि अब वो सेकंड हैंड की श्रेणी में आ चूका हैं, उसकी वैल्यू कभी भी नए ब्रांड अविवाहित व्यक्ति के बराबर नहीं हो सकती।”

उसकी आँखें फिर छलक पड़ीं। आरव के साथ उसने जो दुनिया बनाई थी—प्यार और सपनों से भरी हुई, आज उसी पर सवाल खड़े हो गए थे। समाज की नज़रों में वो रिश्ता ग़लत था। वो जिसे प्यार समझ रही थी, वही अब एक्स्ट्रा मैरिटल अफेयर की श्रेणी में आ गया था। और पूरी रात अवनी खुद के विचारों से लड़ती रही। सोचती रही। और हर सोच के साथ, उसके दिल में अपने ही रिश्ते के लिए घृणा बढ़ती चली गई।

अगले दिन सुबह अवनी ने जैसे ही टिफ़िन तैयार किया, उसने तुरंत संजय को कॉल किया— “संजय, ज़रा एक काम करोगे? आरव का लंचबॉक्स उसके ऑफिस पहुँचा देना। मुझे कॉलेज के लिए देर हो रही है।”

कुछ देर बाद जब संजय आरव के ऑफिस पहुँचा और टिफ़िन उसकी टेबल पर रखा तो आरव थोड़ा चौंक गया - “अरे... तुम? अवनी कहाँ है?” आरव ने पूछा।

संजय हँसते हुए बोला—“उसे कॉलेज के लिए लेट हो रहा था, इसलिए उसने मुझे भेज दिया।”

आरव ने हल्की मुस्कान दी, मगर मन के भीतर कहीं हल्की सी बेचैनी भी हुई। उसने तुरंत अवनी को मैसेज किया— “अवनी आज तुम आई नहीं, शाम को मिले?”

लेकिन काफी देर तक कोई जवाब नहीं आया, आरव की बेचैनी बढ़ने लगी, उसने फिर लिखा— "ठीक हो? कॉल करूँ?"

अब भी कोई जवाब नहीं। उसकी चिंता और बढ़ गई। आख़िरकार उसने कॉल मिला दी। फोन उठते ही उधर से अवनी की धीमी और हिचकिचाती आवाज़ आई—"हाँ... आरव... मैं ठीक हूँ। बस... वो... अनामिका दीदी और उनकी फैमिली आई हैं। घर पर गेस्ट हैं, इसलिए रिप्लाई नहीं कर पाई। सॉरी आरव, और शायद... कुछ दिन तो गेस्ट यहीं रहेंगे... मैं तुमसे मिल नहीं पाऊँगी।"

आरव ने बस इतना कहा—"हम्म, कोई बात नहीं, सी यू लेटर।" और फोन रख दिया। मगर उसके दिल को गहरी टीस लगी। रात को अचानक अवनी के घर की डोरबेल बजी। दरवाज़ा खोलते ही सामने आरव खड़ा था।

अवनी हैरान रह गई—"आरव? तुम... यहाँ?"

"हाँ... मैंने सोचा मैं भी मिल लूँ तुम्हारी दीदी और उनके परिवार से।" इतना कहते ही वो अंदर चला आया।

अवनी का चेहरा सिहर उठा। आरव ने घर में चारों ओर नज़रें दौड़ाईं और पूछा— "कहाँ हैं दीदी? कहाँ हैं गेस्ट, अवनी?"

अवनी चुप रही, सिर झुका लिया। उसकी आँखें भर आईं।

आरव ने उसका कंधा पकड़ा और गुस्से से बोला— "तुमने मुझसे झूठ बोला ना अवनी? कोई गेस्ट नहीं आए हैं यहाँ, है ना?"

अवनी की आँखों से आँसू फूट पड़े। आरव के शब्द और भारी हो गए— "क्या अब तुम मेरा साथ छोड़ना चाहती हो? मन भर गया है मुझसे ? बोलो अवनी!"

अवनी ने काँपते होंठों से कहा— "नहीं आरव, ऐसी कोई बात नहीं है।"

आरव का गुस्सा और दर्द फूट पड़ा— "तो फिर क्या बात थी अवनी? अगर मिलने का मन नहीं था तो सीधे कह देती—आरव, आज मूड नहीं है। क्या मैंने कभी ज़बरदस्ती की है तुमसे? लेकिन तुमने झूठ बोला...!"

उसकी आवाज़ टूटने लगी— "ठीक है, अगर अब तुम मुझसे नहीं मिलना चाहती, तो मैं खुद तुम्हें इस रिश्ते से आज़ाद करता हूँ।" इतना कहकर उसने कंधा छोड़ दिया और दरवाज़े की ओर बढ़ गया।

अवनी उसके पीछे दौड़ी— "नहीं आरव... रुको... ऐसी बात नहीं है... मेरी बात तो सुन लो... आरव...!"

लेकिन आरव आँसू छुपाता हुआ तेज़ कदमों से बाहर निकल गया। दरवाज़े पर खड़ी अवनी सिसकती रह गई| आरव ग़ुस्से से तमतमाता हुआ फ्लैट पहुँचा। जैसे ही उसने दरवाज़ा खोला, एक जोरदार "धाआआड़" की आवाज़ के साथ उसने उसे बंद कर दिया। डर और हैरानी से सब सकपका गए। बिना किसी से कुछ कहे वो सीधे अपने कमरे में गया और बिस्तर पर औंधा लेट गया। उसने तकिए में चेहरा छुपा लिया और फूट-फूटकर रोने लगा। संजय को हैरानी हुई। वो पिछले कुछ दिनों से नोटिस कर रहा था कि अभय का बर्ताव बदला-बदला सा है, आज अवनी भी अजीब सी लगी और अब आरव, .वो चिंतित हो उठा और सीधे आरव के कमरे में चला गया। उसने देखा कि आरव का पूरा बदन सिसकियों से हिल रहा था।

संजय ने उसके कंधे पर हाथ रखा— "आरव??क्या बात है? इतना परेशान क्यों हो?"

आरव अचानक उठ बैठा, आँखें लाल और सूजी हुई थीं - "संजय, मुझे लगता है, अवनी का अब मन भर गया है मुझसे, वो ये रिश्ता तोड़ना चाहती है।"

सुनते ही संजय का दिल धक से रह गया - "क्या? ये सब अवनी ने तुमसे कहा?"

आरव ने धीमे स्वर में जवाब दिया— "नहीं, पर उसने झूठ बोला मुझसे। कहा घर में मेहमान आए हैं, लेकिन कोई नहीं था। अगर मिलना नहीं चाहती थी तो सीधे मना कर देती, झूठ क्यों बोला?"

फिर उसने पूरी बात बताई।

संजय ने गहरी साँस ली - "आरव, तुमने बहुत जल्दी फैसला ले लिया। अवनी ऐसी लड़की नहीं है, शायद कोई मजबूरी हो, एक बार उसकी बात समझने की कोशिश तो करो।"

आरव ज़िद में बोला— "मुझे कुछ नहीं सुनना! अगर वो अब मुझसे नहीं मिलना चाहती तो इस रिश्ते को खींचने का कोई मतलब नहीं।" इतना कहकर वो फिर रो पड़ा और संजय के गले लग गया। संजय ने उसे कसकर थाम लिया, उसे बहुत देर तक चुप कराता रहा। लेकिन दिल में ठान चुका था— "वो इस सच्चाई की तह तक ज़रूर जाएगा।"

दरवाज़े के बाहर खड़ा अभय सब सुन चुका था। उसका मन विचलित था। एक तरफ उसे आरव और अवनी दोनों के लिए बुरा लग रहा था, दूसरी तरफ उसे डर भी था कि अगर माँ को पता चला तो घर में तूफ़ान खड़ा हो जाएगा। फिर भी, अवनी के इस फ़ैसले ने उसके मन में अवनी के लिए कहीं न कहीं इज़्ज़त और बढ़ा दी थी।

कॉलेज में सर्दियों की छुट्टियाँ शुरू हो गईं। अभय लखनऊ चला गया, इस उम्मीद में कि शायद अब तक आरव और अवनी का रिश्ता ख़त्म हो चुका होगा। इधर अवनी ने कई बार आरव से संपर्क करने की कोशिश की। लेकिन न वो कॉल उठाता, न मैसेज का जवाब देता। यहाँ तक कि लंचबॉक्स के लिए भी उसने संजय से कहकर अवनी को मना करवा दिया। संजय कुछ समझ नहीं पा रहा था। आख़िरकार, रविवार को उसने सीधे अवनी के घर जाने का निश्चय किया।

रविवार को संजय अवनी के घर पंहुचा, अवनी दरवाज़ा खोलते ही उसे देखकर चौंकी—"अरे... संजय, तुम?"

संजय ने सीधे सवाल किया—"अवनी, क्या हो गया है तुम दोनों के बीच? इतना प्यार करते हो एक-दूसरे से, कोई छोटी-मोटी बात पर इतना बड़ा झगड़ा तो हो नहीं सकता। सच बताओ।"

अवनी की आँखें भर आईं, उसने रुँधे स्वर में कहा— "संजय, मुझे लगता है आरव मेरी वजह से अपनी ज़िंदगी बर्बाद कर रहा है। देखो ना, पल्लवी से पता चला कि उसे इंटर्नशिप के बाद हैदराबाद हेड ऑफिस में ब्रांच मैनेजर की पोस्ट मिली थी, लेकिन उसने वो ठुकरा दी, सिर्फ मेरे लिए वापस आ गया, और फिर उसकी फैमिली, वो कभी हमें स्वीकार नहीं करेगी।"

संजय ने समझाने की कोशिश की— "हाँ, सही है, पर यहाँ भी उसे प्रमोशन मिल ही जाएगा। और उसने सोच-समझकर ही फ़ैसला लिया होगा। रही बात फैमिली की, वो वक्त मिलाकर बात करेगा ना फैमिली से। अवनी, बात ये नहीं है। तुम मुझसे कुछ छुपा रही हो।"

अवनी हिचकिचाई, फिर बोली— "आरव की माँ मुझे कभी एक्सेप्ट नहीं करेंगी, अगर उन्हें पता चला तो वो जान भी दे सकती हैं। मैं डिवोर्सी हूँ, 'सेकंड हैंड मटीरियल' और आरव की ज़िंदगी अभी शुरू ही हुई है। उसके माता-पिता के कुछ सपने होंगे उसके लिए, मैं नहीं चाहती कि वो मेरी वजह से अपने परिवार से लड़ जाए।"

संजय गंभीर हो गया— "ये सब तुमसे किसने कहा?"

अवनी चुप थी उसके आँसू छलक पड़े।

संजय ने सीधा कहा—"अभय ने, है ना?"

अवनी चुप रही, उसकी आँखों से जवाब झलक गया।

संजय ने निराशा से सिर हिलाया— "अवनी, अगर अभय को सब पता चल भी गया था तो तुमने मुझे या आरव को क्यों नहीं बताया? हम मिलकर संभालते ना। तुमने ऐसे उल्टे-सीधे फैसले अकेले ले लिए?"

अवनी ज़ोर से रो पड़ी और संजय के गले लग गई - "हाँ संजय, अब मुझे बहुत बुरा लग रहा है, मैं आरव से माफ़ी माँगना चाहती हूँ। लेकिन वो मेरा फोन तक नहीं उठाता, मैसेज का जवाब नहीं देता। मैंने उसका दिल तोड़ा है, वो बहुत दुखी होगा ना?"

संजय ने उसके आँसू पोंछते हुए कहा— "हाँ दुखी तो है, लेकिन तुम भी तो कम दुखी नहीं हो। अवनी, चिंता मत करो। मैं उससे बात करूँगा। और देखो, एक काम कर सकते हैं हम, 10 जनवरी को आरव का बर्थडे है। उस दिन तुम छुट्टी ले लेना, आरव ऑफिस में रहेगा। तुम फ्लैट पर आ जाना, हम सब मिलकर सरप्राइज़ तैयार करेंगे। शायद उसका दिल पिघल जाए।"

अवनी की आँखों में उम्मीद की चमक लौटी जैसे अंधेरे में अचानक कोई दीपक जल उठा हो। अब वो बेसब्री से आरव के जन्मदिन का इंतज़ार करने लगी।

आरव के बर्थडे के दिन सुबह से ही संजय और विवेक पूरे जोश में थे। आरव ऑफिस चला गया था और उसी समय संजय, अवनी को लेकर फ्लैट पहुँचा। अवनी की आँखों में डर और उम्मीद दोनों तैर रही थीं – "संजय, आज मुझे आरव की पसंद का बनाना है, बताओ ना उसे सबसे ज़्यादा क्या पसंद है?"

संजय मुस्कुराया – "वैसे तो तुम जो भी बनाती हो, आरव को वो सब पसंद हैं फिर भी उसे चिकन सबसे ज्यादा पसंद है, लेकिन तुम तो वेजी हो ना, तुम कुछ भी बना दो, उसे अच्छा लगेगा।"

"चिकन??" सुनते ही अवनी जैसे पत्थर-सी जम गई। उसका चेहरा सफेद पड़ गया। पर अगले ही पल उसने दृढ़ नज़रों से संजय की ओर देखा – "नहीं संजय, आज मैं ही चिकन बनाऊँगी।"

संजय की आँखें चौड़ी हो गईं – "अवनी, तुम पागल हो गई हो क्या? चिकन की शक्ल तक कभी देखी है तुमने? रहने दो, मैं बना दूँगा। तुम बाकी की चीज़ें बना लेना।"

अवनी ने होंठ भींच लिए। आँखों में आँसू थे लेकिन आवाज़ में ज़िद – "नहीं संजय, अगर आरव को चिकन पसंद है, तो मैं उसके लिए वही बनूंगी।"

संजय चुपचाप मार्केट से सारा सामान ले आया।किचन में संजय, विवेक और अवनी तीनों साथ गए। जैसे ही संजय ने चिकन एक बाउल में निकाला, अवनी के गले में अजीब-सा उबाल उठा। वो ज़ोर से मुँह पर हाथ रखकर पीछे हटी, संजय तुरंत बोला –"अवनी! मैंने कहा था ना तुमसे, ये सब मत करो। तुमसे नहीं होगा।"

लेकिन अवनी ने मुँह पर रुमाल बाँधा और काँपते हाथों से चिकन उठाया। आँखें भीग रही थीं, मगर उसने हार नहीं मानी। संजय की गाइडेंस में उसने पूरा चिकन तैयार किया। बीच-बीच में उसे कई बार उबकाई हुई, मगर उसने खुद को सँभाल लिया। खाना तैयार होने के बाद जैसे ही उसने मुँह से रुमाल हटाया, वो भागकर सिंक तक गई और उल्टी कर दी।

विवेक घबरा गया –"अवनी! बस करो, अब तुम बाहर जाओ। बाक़ी मैं और संजय कर लेंगे।"

संजय की आँखों में भी दर्द उमड़ आया । लेकिन अवनी के दिल में सिर्फ़ एक ज़िद थी –आरव को मनाना। उसने डेकोरेशन भी खुद किया, हॉल बलून और लाइट्स से जगमगा उठा। शाम हुई। डोरबेल बजी। संजय ने अवनी को किचन में छुपा दिया। विवेक ने दरवाज़ा खोला। आरव अंदर आया और सजावट देखकर दंग रह गया - "ये सब, किसने किया? तुम लोगों को इतना सब आता है?"

संजय और विवेक ने 'ना' में सिर हिलाया | "तो फिर…?"

तभी किचन से अवनी बाहर आई। आँखों में डर, होंठों पर हल्की मुस्कान –" हैप्पी बर्थडे आरव"

आरव अवनी को देखकर जैसे पत्थर का हो गया। एक पल उसकी आँखें अवनी की आँखों में उलझ गईं।

लेकिन अगले ही पल वो फट पड़ा। उसने अवनी का हाथ पकड़कर ज़ोर से खींचा और दरवाज़े तक ले आया - "आरव… सुनो तो ", मगर उसने धक्का देकर अवनी को बाहर कर दिया और दरवाज़ा ज़ोर से बंद कर दिया - "धड़ाम!"

संजय गुस्से में बोला –"आरव! ये क्या बदतमीज़ी है? अवनी ने कितने प्यार से तुम्हारे लिए तैयारी की है!"

आरव दहाड़ा – "तो किसने कहा था उसे ये सब करने को? मुझे दिखावे का प्यार नहीं चाहिए!"

बाहर अवनी दरवाज़ा पीट रही थी – "आरव… प्लीज़, मेरी बात तो सुनो, मुझसे गलती हो गई, मुझे माफ़ कर दो…"

भीतर से आरव चिल्लाया – "चली जाओ यहाँ से! मुझे तुम्हारी शक्ल भी नहीं देखनी।"

अवनी वहीं दरवाज़े पर माथा टिकाकर रो पड़ी। संजय का धैर्य टूट गया। उसने आरव को धक्का देकर कहा – "ये कैसा प्यार हैं तुम्हारा? अगर सचमुच करते तो कम से कम एक बार उसकी बात सुन लेते । गलती मेरी थी जो उसे यहाँ लाया। अब मैं ही उसे छोड़कर आता हूँ।"

वो बाहर गया। अवनी ज़मीन पर बैठी रो रही थी। संजय ने उसे उठाया। अवनी उसके गले लग गई और ज़ोर-ज़ोर से रोने लगी - "संजय, मुझे नहीं लगता आरव अब मुझे कभी माफ़ करेगा"

संजय ने उसे सँभालते हुए कहा – "अरे, उसका बाप भी माफ़ करेगा! तुम चिंता मत करो, घर चलो अभी।"

घर पहुँचकर उसने झटपट मैगी बनाई और अवनी के सामने रख दी – "लो, मैगी खा लो। सुबह से कुछ खाया भी नहीं।"

अवनी ने आँसू पोंछते हुए खा लिया। चेहरे पर हल्की मुस्कान लौटी - "मुझे पता है संजय, तुम हो तो सब ठीक हो जाएगा।"

संजय हँसा - "अब देखना, उस गधे की ऐसी क्लास लूँगा कि खुद तुमसे माफ़ी मांगेगा।"

उधर फ्लैट में आरव गुस्से से दीवार पर मुक्का मार चुका था। विवेक बोला – "तुम्हें ऐसा नहीं करना चाहिए था आरव। उस बेचारी ने तुम्हें मनाने के लिए क्या-क्या नहीं किया। तुम्हारा पसंदीदा चिकन भी बनाया उसने, मुंह पर रुमाल बाँधकर, उल्टियाँ रोकते हुए…"

आरव सन्न रह गया। उसकी आँखें भर आईं। वो किचन में गया, कैसरोल में देखा तो सचमुच चिकन रखा था। उसके आँसू छलक पड़े। संजय जब लौटा, आरव बालकनी में खड़ा था। जैसे ही संजय ने कंधे पर हाथ रखा, आरव फटकर उसके गले लग गया।

संजय ने धीरे कहा –“अगर इतना प्यार करते हो उससे, तो माफ़ क्यों नहीं कर देते?”

आरव टूटी आवाज़ में बोला –“क्युकि उसने अब तक ये नहीं बताया, कि उसने मुझसे झूठ क्यों बोला?”

संजय ने समझाया – “क्योंकि अभय को सब पता चल चुका है। और उस दिन कॉलेज में उसने अवनी को बहुत बुरा-भला कहा था।”

आरव सन्न रह गया – “अगर ऐसा था तो वो मुझे बता भी तो सकती थी”

संजय – “वो नहीं चाहती थी कि तुम अभय से लड़ो। बस इसलिए चुप रही।”

आरव की आँखों से आँसू बह निकले। संजय मुस्कुराया –“उसने तुम्हारे लिए चिकन बनाया है आरव, अब चलो, खा लो।”

आरव हिचकिचाया –“लेकिन ”

संजय हँसा –“अरे चिंता मत करो, उसे मैगी खिला कर आया हूँ। अब चलो, हमें भी भूख लगी है।”

इतना सुनकर आरव हल्के से मुस्कुरा दिया। तभी विवेक बाहर आया – “साला इनकी लड़ाई में हम भूखे मर रहे हैं।”

संजय ने हँसते हुए कहा –“चल आ जा तू भी।”

उसी समय राहुल भी घर आ गया। और चारों ने मिलकर डिनर किया।हँसी-ठिठोली के बीच, आरव के दिल में बस एक ही टीस थी –अवनी के आँसू।

अगले दिन आरव ऑफिस पहुँचा। बाहर मौसम कुछ ज़्यादा ही सर्द था। गहरी धुंध और घने काले बादलों से घिरा आसमान किसी अन्होनी का आभास दे रहा था। ठंडी हवा हड्डियाँ तक चीर रही थी। ऑफिस के गेट के बाहर अवनी खड़ी थी, चुपचाप, उसी का इंतज़ार करते हुए। आरव ने एक पल उसकी तरफ देखा, पर बिना कुछ कहे सीढ़ियाँ चढ़ता हुआ ऑफिस के अंदर चला गया।

अवनी वहीं खड़ी रह गई। उसके चेहरे पर जिद साफ़ झलक रही थी। उसके मन में विचार उठा – "संजय ने तो कहा था कि वो आरव से बात करेगा, लेकिन ये अब तक नाराज़ है? ठीक है, मैं भी आज यहाँ से हिलने वाली नहीं हूँ। देखती हूँ, कब तक नाराज़ रहता है?"

आरव अपने केबिन में बैठा था। बार-बार उसका ध्यान खिड़की से बाहर जाता। नीचे खड़ी अवनी उसके दिल को खींच रही थी। कई बार उसने उठकर जाने की ठानी, पर हर बार काम का बोझ उसे रोक लेता।

दोपहर से शाम, और शाम से रात होने लगी। आरव अपने केबिन में ही था कि तभी उसका एक कुलीग आया—"आरव , अब बाकी कम कल कर लेना, बाहर बहुत तेज़ बारिश हो रही है।"

बारिश का नाम सुनते ही आरव का दिल धक से रह गया। उसकी आँखों के सामने अवनी का चेहरा कौंधा—"अवनी? वो तो सुबह से नीचे खड़ी है!"

आरव हड़बड़ा गया –"कब से हो रही है बारिश?"

कुलीग बोला – "करीब दो घंटे से। तुझे नहीं पता? बादल गरज रहे हैं, ठंडी हवा चल रही है।"

अराव भागा-भागा खिड़की तक गया। नीचे देखा—अवनी बेहोश पड़ी थी। पूरी भीगी हुई, ठंडी बारिश में। उसके पैरों तले ज़मीन खिसक गई। वो बिजली की तरह सीढ़ियाँ उतरता हुआ बाहर भागा।

"अवनी उठो… अवनी ! आँखें खोलो…", आरव उसका सर अपनी गोद में सिर रखकर चिल्ला रहा था, पर अवनी बेसुध थी। इतने में उसका कुलीग कार ले आया। दोनों ने मिलकर अवनी को पिछली सीट पर लिटाया। आरव पागलों की तरह कार दौड़ाने लगा। उसके हाथ काँप रहे थे। आँखों में आँसू थे। बार-बार शीशे से पीछे झाँकता – "अवनी, मुझे माफ़ कर दो, मेरी नाराज़गी ने तुम्हें यहाँ पहुँचा दिया।"

फ्लैट पहुँचते ही उसने अवनी को अपनी बाँहों में उठाया और जैसे तैसे दरवाज़े की घंटी बजाई। संजय ने जैसे ही दरवाज़ा खोला, सामने आरव की गोद में भीगी हुई बेहोश अवनी को देखकर दंग रह गया - "आरव ये क्या हुआ इसे?"

आरव ने कुछ नहीं कहा। सीधे अंदर भागा, उसे बेड पर लिटाया - "बाद में बताता हूँ, पहले इसे होश में लाना है।"

विवेक भी दौड़ा आया – "ये तो पूरी भीगी हुई है। सबसे पहले इसके कपड़े बदलो।"

दोनों बाहर चले गए। आरव काँपते हाथों से अवनी को अपना लोवर और शर्ट पहनाया। उसके हाथ काँप रहे थे, आँखों से आँसू बह रहे थे। तभी संजय गरम तेल लेकर आया, और विवेक हेयर ड्रायर। संजय ने उसके पैरों की मालिश शुरू की, विवेक उसके भीगे बाल सुखाने लगा, और आरव उसके हाथ सहलाता हुआ बार-बार पुकार रहा था— "अवनी?? उठो ना… प्लीज उठो…" उसकी आँखों से आँसू टपकते जा रहे थे।

संजय ने गुस्से से कहा – "आरव, ये सब कैसे हुआ?"

आरव ने पूरी बात बताई। संजय भड़क उठा –"तुम भी ग़ज़ब करते हो यार! मैंने सोचा था अब तुम्हारी नाराज़गी खत्म हो गई होगी, बाहर खड़ी थी वो सुबह से, और तुम?? एक बार उससे बात कर लेते तो ये सब ना होता। हद है यार, सच में।" वो गुस्से में हॉल की तरफ चला गया। विवेक भी थोड़ी देर बाद चला गया।

आरव ने दरवाज़ा बंद किया और अवनी के पास बैठ गया। उसने उसे कंबल ओढ़ाया और उसका हाथ थाम लिया - "अवनी मुझे माफ़ कर दो प्लीज उठो |"

उसकी आवाज़ काँप रही थी। आँसू गालों पर बह निकले। आँसू की एक बूंद ढुलककर अवनी के गालो पर गिरी, तभी अवनी के हाथ में हल्की-सी हलचल हुई। आरव चौका, अवनी ने धीरे से आँखें खोलीं और अगले ही पल उठकर बैठ गई।

उसकी भी आँखों से आँसू बह निकले - "आरव, मुझे माफ़ कर दो… प्लीज…"

वो रोती हुई खड़ी हो गई। आरव ने तुरंत उसे बाँहों में भर लिया। दोनों एक-दूसरे से लिपटकर फूट-फूटकर रोने लगे।

अवनी - "आरव, तुमने मुझे माफ़ कर दिया ना?"

आरव ने उसके चेहरे से भीगे बाल हटाए –"वो तो कब का कर दिया था, पगली, लेकिन आइंदा ऐसी हरकत मत करना। मैं तुमसे बात कर ही लेता ना, इतने दिन नाराज़ थोड़ी न रह सकता हूँ तुमसे। पर तुमने तो हद ही कर दी अवनी"

अवनी ने सिसकते हुए कहा –" आरव, मैं तुम्हारी नाराज़गी नहीं सह सकती। अगर फिर नाराज़ हुए, तो मैं मर ही जाऊँगी|"

आरव ने उसके आँसू पोंछे, और उसके होंठों पर गहरा चुंबन रख दिया। तभी बाहर से विवेक की आवाज़ आई – " आरव ! होश आ गया अवनी को? या डॉक्टर बुलाएँ?"

आरव मुस्कुराया –"हाँ, होश आ गया है। अब सब ठीक है।" दोनों एक-दूसरे की आँखों में देखते हुए मुस्कुरा दिए। थोड़ी देर बाद संजय कमरे में आया।

उसने अवनी को देखते ही कहा –"हद करती हो यार अवनी ! ये क्या तरीका हुआ मनाने का? जान ही निकाल दी हमारी!"

अवनी ने जीभ दबाकर कान पकड़ लिए।

संजय ने उसे गले लगा लिया –"अब कभी मत करना ऐसा। कुछ हो जाता तुम्हें तो? क्या जवाब देता मैं अंकल आंटी को?"

इतने में विवेक कॉफ़ी लेकर आया। सब हॉल में बैठे, कॉफ़ी पीते हुए बातें करने लगे। डिनर के बाद अवनी वहीं रुक गई। वो बेडरूम में सो गई, और बाकी सब हॉल में ही। पर उस रात आरव और अवनी के दिलों के बीच जो दूरियाँ थीं, बारिश ने धुलकर मिटा दीं।

अध्याय 11

वैलेंटाइन वीक आने वाला था। आरव के ऑफिस के कुछ दोस्त गोवा ट्रिप प्लान कर रहे थे। आरव ने उसमें अवनी को भी शामिल कर लिया। लेकिन अवनी थोड़ी घबराई हुई थी – "आरव, मुझे पापा से परमिशन लेनी पड़ेगी। फिर कॉलेज से भी एक हफ्ते की छुट्टी लेनी होगी | और आरव, फिर वहाँ पर पल्लवी भी तो होगी, वो तो मुझे वैसे ही पसंद नहीं करती।"

आरव ने उसके हाथ को दबाते हुए मुस्कुराकर कहा – "अरे तुम पल्लवी की चिंता मत करो, बस तुम पापा से पूछकर बता दो। अगर तुम नहीं चलोगी तो मैं भी नहीं जाऊँगा। वैसे भी, संजय भी आ रहा है। और तुम्हारा अगला नॉवेल भी तो गोवा बेस्ड है ना, वहाँ तुम्हें ढेर सारे आइडियाज़ मिल जाएँगे।"

अवनी ने मुस्कुराते हुए कहा –"तो फिर तो पापा परमिशन दे देंगे, मैं शाम तक बताती हूँ।"

अवनी के पापा ने हाँ कर दी। रिज़र्वेशन्स हुए और आखिरकार पूरी टीम तैयार हो गई। आरव, अवनी, संजय, विवेक, पल्लवी और ऑफिस के चार–पाँच दोस्त, कुल मिलाकर दस लोग निकल पड़े गोवा के लिए।

जैसे ही पल्लवी ने अवनी को देखा, उसका पूरा मूड खराब हो गया। उसने सोचा था कि ये उसके लिए आरव के करीब आने का सबसे अच्छा मौका है, लेकिन अवनी की मौजूदगी ने उसके सारे प्लान पर पानी फेर दिया। ट्रेन के पूरे सफर में वो अवनी पर तंज कसने से बाज़ नहीं आई।

विवेक ने कई बार टोका, लेकिन पल्लवी का अंदाज़ वही रहा। संजय को तो पल्लवी पर बहुत गुस्सा आ रहा था। लेकिन आरव ने अवनी और संजय को समझाया – "तुम बस नजरअंदाज करो, ये चाहती ही यही है कि तुम लोग रियेक्ट करो।"

गोवा पहुँचकर उन्होंने एक बड़े रिसोर्ट में कमरे बुक किए। लड़कों ने दो कमरे लिए और लड़कियों का एक कमरा था। लेकिन अवनी ने साफ़ कह दिया कि वो पल्लवी के साथ नहीं रहेगी। उसने सिंगल कमरा ले लिया। पल्लवी अपनी खास सहेलियां चारु और सीमा के साथ थी।

सभी थोडा आराम करके नीचे लंच के लिए इकट्ठा हुए। लंच के बाद सब बीच की और निकल पड़े। आरव ने दूर से अवनी को बैठने के लिए इशारा किया, जहाँ एक कुर्सी लगी हुई थी। अवनी ने सफेद शर्ट और शॉर्ट पहन रखी थी, सिर पर कैप थी। वो एक चेयर पर आराम से लेट गयी और अपनी अगली नॉवेल की स्क्रिप्ट लिख रही थी। बाकी सारे लड़के समंदर किनारे वॉलीबॉल खेलने लगे।

तभी पल्लवी, चारु और सीमा वहाँ बिकनी में आई। पल्लवी ने ये सब जानबूझकर किया था, आरव को रिझाने के लिए। वो तीनों इतराती हुई बीच पर चली आ रही थीं।

विवेक ने हैरानी से पूछा –"कहाँ जा रही हो तुम तीनों?"

पल्लवी जानबूझकर अवनी के पास जाकर बोली –"स्विमिंग करने जा रहे हैं, अब आंटियों के बस की कहाँ ये सब पहनना और स्विमिंग करना।"

उसके तंज पर अवनी ने आरव की तरफ देखा और दोनों हल्के से मुस्कुरा दिए।

विवेक ने छेड़ते हुए कहा –"तुम्हें आती भी है स्विमिंग?"

पल्लवी चिडकर बोली –"और क्या, आंटियों की तरह गँवार समझा है क्या?"

इतना कहकर वो तीनों पानी की तरफ बढ़ गईं। उस दिन समंदर की लहरें काफ़ी ऊंची थी, हवाए तेज़ चल रही थी, उस दिन तो कोई बेवकूफ ही होता जो स्विमिंग के बारे में सोचता भी, लेकिन पल्लवी के दिमाग में अलग ही फितूर सवार था, चारु और सीमा घबरा गईं और उन्होंने स्विमिंग से मना कर दिया। लेकिन पल्लवी नहीं मानी। उसे तो बस अवनी को नीचा दिखाना था। वो और आगे बढ़ गई। अचानक एक तेज़ लहर आई और पल्लवी उसका सामना नहीं कर पाई। वो बहक गई और डूबने लगी। घबराकर चिल्लाने लगी।

आरव ने तुरंत विवेक से कहा –"अरे देख, पल्लवी डूब रही है, जा, बचा उसे।"

विवेक हड़बड़ा गया –"मैंने थोड़े ही बोला था उसे मरने को! मुझे तो तैरना भी नहीं आता।"

आरव दौड़ने ही वाला था कि तभी अवनी वहाँ पहुँच चुकी थी। उसने बिना सोचे-समझे समुद्र में छलांग लगा दी और तैरती हुई पल्लवी तक पहुँच गई। पल्लवी का वज़न अवनी से ज़्यादा था, लेकिन फिर भी उसने पूरी ताक़त लगाकर उसे किनारे तक खींचा। ये नज़ारा देखकर सब लोग हैरान रह गए। खासकर आरव। उसे तो पता ही नहीं था कि अवनी को स्विमिंग भी आती है।

सभी भागकर किनारे तक पहुँचे। पल्लवी बेहोश थी। अवनी ने उसके सीने को पम्प किया, ऑक्सीजन दी। कुछ देर बाद पल्लवी को होश आया। लेकिन जैसे ही उसने अवनी को सामने देखा, गुस्से में उसे धक्का दे दिया।

विवेक चिल्लाया –"क्या कर रही हो? उसने तुम्हारी जान बचाई है।"

पल्लवी ने गुस्से में आरव की तरफ देखा और बिना कुछ बोले चेंजिंग रूम की ओर चली गई।

संजय बड़बड़ाया –"अजीब अहसान फरामोश लड़की है, थैंक्यू तक नहीं बोली अवनी को।"

लेकिन इन सब बातों से बेखबर, आरव अब भी अवनी को देख रहा था | अवनी उठी और बस हल्के से मुस्कुरा दी। शाम को सब रिसोर्ट लौट आए। रात में अवनी अकेली स्विमिंग पूल में थी। पानी में तैरते हुए वो पूरी तरह तनावमुक्त दिख रही थी। आरव चुपचाप किनारे आकर उल्टा लेट गया, उसका चेहरा अवनी की तरफ था। अवनी पास आई और मुस्कुराकर बोली –"ऐसे क्या देख रहे हो?"

आरव हंसते हुए बोला –"कमाल हो यार तुम, इतनी अच्छी स्विमिंग आती है तुम्हें, लेकिन कभी बताया ही नहीं?"

"कभी मौका ही नहीं मिला बताने का। गोल्ड मेडलिस्ट रह चुकी हूँ स्कूल टाइम में, स्टेट लेवल स्विमिंग कॉम्पटीशन में।"

"वाह…! स्विमिंग के साथ अगर कराटे-वराटे भी सीख लेती, तो हिमांशु और रजत जैसे लोगों से भी खुद को बचा लेती।"

अवनी हँस पड़ी –"अपना-अपना इंटरेस्ट है, मुझे स्विमिंग पसंद थी। अच्छा चलो, हाथ दो।"

आरव ने उसका हाथ पकड़कर उसे पूल से बाहर खींचा। दोनों साथ में उठे और अंदर चले गए डिनर के लिए। रात को रिसोर्ट के बुफेट एरिया में डिनर का समय । पूरा बुफेट एरिया रोशनी में नहा रहा था, संगीत चल रहा था और हर चेहरा उत्साह से दमक रहा था। लेकिन भीड़ के बीच पल्लवी एक कोने में जली-भुनी सी बैठी थी। वजह साफ़ थी—आरव का ध्यान हर वक्त संजय और अवनी के इर्द-गिर्द ही घूम रहा था। उसे आरव से बात करने का, उसके करीब आने का ज़रा भी मौका नहीं मिल पा रहा था।

इसी बीच रिसोर्ट का एक स्टाफ माइक लेकर आया और अनाउंस किया – "लेडीज़ ऐंड जेंटलमैन, वैलेंटाइन वीक के मौके पर कल शाम यहीं पर सिंगिंग कॉम्पिटिशन ओर्गनाइस किया जा रहा हैं। आप सभी गेस्ट इसमें भाग ले सकते हैं। जो भी इस कॉम्पिटिशन में भाग लेना चाहें, वे आज ही अपना नाम रिसेप्शन पर रजिस्टर करवा दें। विनर के लिए अट्रेक्टिव प्राइसेस भी होंगे।"

जैसे ही घोषणा हुई, वहाँ मौजूद सभी गेस्ट ने ज़ोरदार तालियाँ बजाईं। कई लोग बेहद उत्साहित दिखाई दे रहे थे। पल्लवी के चेहरे पर तुरंत चालाकी भरी मुस्कान तैर गई। उसने मन ही मन सोचा – "यही सही मौका है अवनी को नीचा दिखाने का।"

डिनर ख़त्म होते ही पल्लवी सीधे रिसेप्शन पर गई और नाम लिखवा दिया। आरव ने अवनी की ओर देखकर हल्की सी मुस्कान दी और बोला – "मुझे पता है, ये कॉम्पिटिशन तुम ही जीतोगी।"

संजय ने भी हँसते हुए चुटकी ली – "हाँ, और वो तितली और भी ज़्यादा जल-भुन कर राख हो जाएगी।"

अवनी मुस्कुरा दी। लेकिन आरव ने खुद ही रिसेप्शन जाकर अवनी का नाम भी दर्ज करवा दिया।

अगले दिन शाम को रिसोर्ट का सेमिनार हॉल वैलेंटाइन वीक की थीम पर बेहद खूबसूरती से सजाया गया था। लाल और काले गुब्बारे, फूलों की सजावट और टिमटिमाती लाइट्स माहौल को और भी रोमांटिक बना रहे थे। हर सीट भरी हुई थी | मंच पर होस्ट इंटर हुए मुस्कुराते हुए प्रोग्राम शुरू किया। एक के बाद एक पार्टिसिपेंट्स ने अपनी शानदार प्रस्तुतियाँ दीं। फिर नाम पुकारा गया – "पल्लवी।"

पल्लवी उठ खड़ी हुई। जाते-जाते उसने अवनी की ओर तिरछी नज़र डाली और फिर इतराती हुई मंच पर पहुँच गई। आरव ने हल्की मुस्कान के साथ अवनी की ओर देखा। पल्लवी ने गाना शुरू किया। गाना अच्छा चुना था, लेकिन उसके सुर और ताल बिगड़े हुए थे। दर्शक आपस में हँसने लगे, कुछ लोग मज़ाक उड़ा रहे थे। फिर भी अवनी ने शालीनता से ताली बजाई।

लेकिन जब पल्लवी नीचे उतरी तो उसने ऐसे मुस्कुराकर अवनी को देखा जैसे उसने वर्ल्ड कप जीत लिया हो। उसकी तिरछी मुस्कान में ज़हर झलक रहा था।

अब बारी आई लास्ट पार्टिसिपेंट की। होस्ट ने नाम पुकारा – "अवनी।" आरव और संजय दोनों ने एक साथ कहा –"ऑल द बेस्ट!"

अवनी धीमे से मुस्कुराई और मंच की ओर बढ़ी। पूरा हॉल मानो थम सा गया। आरव और संजय गर्व से उसे देख रहे थे। वहीं दूसरी ओर पल्लवी की आँखों में जलन साफ़ नज़र आ रही थी।

अवनी ने म्यूजिक टीम को अपना गीत बताया, उसने चुना था फिर कुछ पल के लिए उसने आँखें बंद कीं, भगवान का नाम लिया और गाना शुरू किया। उसकी आवाज़ जैसे ही गूंजी, पूरा हॉल सन्नाटे में डूब गया। हर कोई उसकी आवाज़ के जादू में बंधता चला गया।

जब उसने ये पंक्तियाँ गाईं –

"मौसमी प्रीत नहीं, वो जो बीत जाए, दूर ही सही हम दोनों, पर हैं नहीं पराए...

जैसे सदियों से ही मिलते नहीं चाँद-तारे, फिर भी आसमान में लगते दोनों कितने प्यारे..."

आरव के दिल में हलचल मच गई। उसने महसूस किया, कि ये गीत अवनी ने उसी के लिए चुना था।

जैसे ही गीत खत्म हुआ, पूरे हॉल में गड़गड़ाहट के साथ तालियाँ बजीं, कई गेस्ट ने खड़े होकर तालियों के साथ सम्मान दिया । जजेस की टीम ने भी अवनी की गायकी की जमकर तारीफ़ की। विवेक ने भी मुस्कुराते हुए कहा – "कमाल कर दिया अवनी, सच में जादू हैं तुम्हारी आवाज में |"

पल्लवी का चेहरा तमतमा उठा। जल-भुनकर वो वहीं से ग़ुस्से में पैर पटकती हुई बाहर चली गई। उसके पीछे-पीछे चारु और सीमा भी।

डिनर के समय जब रिजल्ट की घोषणा हुई, अवनी का नाम विनर के तौर पर घोषित किया गया। हॉल तालियों से गूंज उठा। आरव को ज़रा भी आश्चर्य नहीं हुआ। उसने तो पहले ही पता था कि अवनी जीतेगी। वो बिना सोचे समझे अवनी की ओर बढ़ा और उसे कसकर गले से लगा लिया। अवनी की धड़कनें तेज़ हो गईं। दूर खड़ी पल्लवी ने ये नज़ारा देखा तो उसका तन-बदन जल उठा। आँखों में आँसू और दिल में आग लिए वो बाहर निकल गई।

अगले दिन रिसोर्ट के स्टाफ ने वैलेंटाइन डे के मौके पर फिर से घोषणा की –"गुड इवनिंग लेडिस एंड जेंटलमेन, कल रात एक और धमाकेदार कार्यक्रम होगा, "इंडो

– वेस्टर्न डांस कॉम्पिटिशन"। आपमें से जो भी गेस्ट इस कॉम्पिटिशन में भाग लेना चाहें, आज ही रिसेप्शन पर जाकर अपना नाम लिखवा दें।"

इस बार पल्लवी ने ठान लिया था – "अगर अवनी ने भाग लिया, तो चाहे कुछ भी करना पड़े, मैं उसे डांस नहीं करने दूँगी। जीतना तो दूर की बात है, इस बार उसे हर हाल में नीचा दिखाना है।"

रात को जब उसने रिसेप्शन पर जाकर लिस्ट चेक की तो उसमें अवनी का नाम देखकर उसकी आँखों में शैतानी चमक जाग उठी। अब वो अपने डांस प्रैक्टिस पर ध्यान देने के बजाय, बस अवनी को हराने और नीचा दिखाने की साज़िशें रचने लगी | पल्लवी रातभर अपने कमरे में बैठी सास-बहू वाले पुराने एपिसोड देखती रही। उसकी आँखों में एक ही ख्वाहिश थी—किसी भी तरह अवनी को नीचा दिखाना। सुबह-सुबह रिसोर्ट से बाहर निकल गई। कुछ देर बाद जब लौटी तो उसके हाथ में थीं छोटी-छोटी काँच की गोलियाँ, और चेहरे पर एक शातिर मुस्कान ।

उस दिन वेलेंटाइन डे था। आरव ने निश्चय कर लिया था कि आज वह अवनी के सामने शादी का प्रपोजल रखेगा। शाम को सब तैयार होकर सेमिनार हॉल पहुँचे। कंटेस्टेंट अपने-अपने पहनावे में आ चुके थे, लेकिन पल्लवी और अवनी दोनों कहीं नज़र नहीं आ रही थीं।

आरव ने अवनी को कई बार कॉल किया, लेकिन उसने कॉल नहीं उठाया। संजय बेचैन होकर बोला—

"आरव, तुम एक बार उसके कमरे में जाकर देख लो। पल्लवी भी अब तक नहीं आई है, मुझे घबराहट हो रही है।"

आरव तेज़ी से दूसरे माले पर पहुँचा और अवनी के कमरे का दरवाज़ा खटखटाया। दरवाज़ा खुलते ही सामने जो दृश्य था, उसने आरव की जैसे साँसें रोक दीं। अवनी ने वही साड़ी पहन रखी थी, जो आरव ने उसे उसके बर्थडे पर गिफ्ट में दी थी। अवनी ने उसे इंडो-वेस्टर्न अंदाज़ में पहना किया था। कानों में बड़ी-बड़ी झुमकियाँ, बालों में हल्की-सी कर्ल्स, चेहरे पर कोमल-सा मेकअप, अवनी बेहद खूबसूरत लग रही थी।

आरव कुछ बोल ही नहीं पाया। उसकी नज़रें अवनी पर ठहर-सी गईं। अवनी ने झेंपते हुए हँसकर कहा—

"सॉरी, वो मैं यूट्यूब से इंडो-वेस्टर्न स्टाइल में साड़ी पहनना सीख रही थी। तुम्हारा कॉल नहीं देख पाई... आरव, मैं ठीक लग रही हूँ ना?"

आरव ने धीरे से उसे अपनी ओर खींच लिया और उसके माथे पर एक चुम्बन रख दिया। फिर उसका हाथ पकड़कर नीचे ले आया। सेमिनार हॉल में जब दोनों ने प्रवेश किया तब तक पल्लवी वहाँ पहुँच चुकी थी। अवनी और आरव को साथ देखकर उसके चेहरे पर जलन और गुस्से की लकीरें उभर आईं। प्रोग्राम शुरू हुआ। होस्ट ने एक-एक करके सभी कंटेस्टेंट को बुलाना शुरू किया। सबने अपनी-अपनी प्रस्तुतियाँ दीं। अगला नाम था—अवनी का।

अवनी का नाम सुनते ही पल्लवी सतर्क होकर सबसे आगे की कुर्सी पर जा बैठी। संजय ने फौरन आरव को सतर्क किया— "आरव, मुझे लग रहा है ये कुछ गड़बड़ करने वाली है।"

विवेक भी बोला— "हाँ, मुझे भी यही लगता है, पहले इसने लिस्ट से अपना नाम हटाया था और सुबह-सुबह जाने कहाँ चली गई थी?"

पर आरव पूरी दृढ़ता से बोला— "करने दो उसे जो करना है। मुझे अवनी पर पूरा भरोसा है।"

स्टेज पर अवनी पहुँची। उसने होस्ट को अपना गाना बताया जो एक हिंदी और अरबी गीत का फ्युसन था। अवनी ने एक बार आरव और संजय की ओर देखा। वह थोड़ी घबरायी हुई थी। संजय और आरव ने उसे दूर से अंगूठा दिखाया। अवनी मुस्कुरा दी। उसने आँखें बंद कीं।

बत्तियां बंद हुई, एक फोकस लाइट बस अवनी पर थी। गीत बजने लगा। हिन्दी पंक्तियों पर उसने क्लासिकल डांस किया और अरबी पंक्तियों पर बेली डांस। जैसे ही उसकी बेली मूवमेंट्स शुरू हुईं, तालियों की गड़गड़ाहट से पूरा हॉल गूँज उठा।

पल्लवी अब मौके की तलाश में थी। उधर आरव ने मन बना लिया कि गीत खत्म होने से पहले वह मंच पर ही अवनी के सामने शादी का प्रपोजल रखेगा । वह उठकर मंच की ओर बढ़ने ही वाला था कि पल्लवी ने अपनी चाल चली। उसने चुपके से वे काँच की छोटी-छोटी गोलियाँ मंच की ओर लुढ़का दीं।

अवनी का पैर उन पर पड़ा और वह फिसल गई। लेकिन गिरने से पहले ही, आरव ने दौड़कर उसे अपनी बाहों में थाम लिया। उसी पल गीत भी ख़त्म हो गया। बत्तियां जलाई गयी, पूरा हॉल तालियों से गूँज उठा। लोग खड़े होकर ताली बजा रहे थे।

लेकिन इन सबसे बेखबर, अवनी और आरव बस एक-दूसरे की आँखों में खोए हुए थे। आरव ने दुनिया की परवाह किए बिना अवनी को अपनी बाहों में उठाया और वहाँ से ले गया। पल्लवी की सारी चालें नाकाम हो गईं, वो गुस्से से तमतमा उठी।

एक गेस्ट ने यहाँ तक कह दिया— "इस कॉम्पिटिशन में कौन जीता ये तो पता नहीं, लेकिन प्यार में ये लड़की ज़रूर जीत गई।" विनर की घोषणा डिनर के वक्त होनी थी। उधर आरव अवनी को सीधे उसके कमरे में ले गया।

कमरे में पहुँचकर उसने अवनी को धीरे से बाँहों से निचे उतारा, अवनी की धडकनें तेज़ थी, तभी आरव बोला— "अवनी, आज वेलेंटाइन डे के दिन मैं तुमसे कुछ कहना चाहता हूँ।"

अवनी की आँखें अब भी नम थीं। उसने पलकों को झुकाकर इजाज़त दी।

आरव ने धीरे-धीरे कहा—"अवनी त्रिपाठी... मैं, आरव सिंह... तुमसे बहुत प्यार करता हूँ। और अपनी पूरी ज़िंदगी तुम्हारे साथ बिताना चाहता हूँ। क्या तुम मुझसे शादी करोगी?"

आरव की और से शादी का प्रस्ताव सुनकर अवनी का दिल भर आया, अवनी खुशी से आँसुओं में डूब गई और आरव के सीने से लग गई।

आरव ने उसे बाहों में समेटते हुए कहा—"जानता हूँ, आगे का सफ़र मेरे लिए मुश्किल होगा। अगले महीने मैं लखनऊ जा रहा हूँ। मैं पूरी कोशिश करूँगा, माँ को मनाने की। मुझे विश्वास है, वो समझ जाएँगी।"

अवनी कुछ नहीं बोली। वह बस आरव के सीने से लगकर सिसकती रही। उस पल दोनों के दिल एक हो चुके थे।और धीरे-धीरे, रात की खामोशी में उनका प्यार सीमाओं से आगे बढ़ गया। उधर, पल्लवी का रो-रोकर बुरा हाल था। उसे अच्छी तरह पता था—अगर आज अवनी और आरव एक ही कमरे में हैं, तो उनके बीच अब वो सब हो चुका होगा, जो वो खुद आरव के साथ चाहती थी। वो जान चुकी थी कि आरव और अवनी अब ऐसे रिश्ते में बँध गए हैं जहाँ उसके लिए कोई जगह नहीं बची। उसकी सारी योजनाएँ धरी की धरी रह गईं। अब उसका गुस्सा पागलपन की हद तक बढ़ता जा रहा था..|

अगले दिन पूरी टीम गोवा घूमने के लिए निकली। चारों ओर समंदर की लहरें, नीला आसमान, धूप में चमकती रेत और दोस्तों की हंसी। लेकिन उस भीड़-भाड़ के बीच अवनी के चेहरे पर एक अलग ही चमक थी। उसकी आँखों में ख़ुशी का

समंदर था, होंठों पर मुस्कान। संजय ने उसे गौर से देखा और मौका पाकर पास आया - "क्या बात है अवनी? आज तो तुम ऐसे खिली जा रही हो जैसे आरव ने तुम्हारे आगे शादी का प्रस्ताव रख दिया हो?"

अवनी ने शर्म से नज़रें झुका लीं और होंठों पर दबी-दबी मुस्कान आ गई।

संजय (चकित होकर) - "क्या?... नहीं?... सच में?"

अवनी ने धीरे से सिर उठाकर मुस्कुराते हुए हाँ में सिर हिला दिया। संजय खुशी से झूम उठा और तुरंत अवनी को गले से लगा लिया।

संजय (भावुक होकर) –" मैं तुम्हारे लिए बहुत खुश हूँ अवनी। अब बस आरव की माँ की 'हाँ' मिल जाए।"

अवनी के चेहरे पर एक ऐसी लाज थी जिसे शब्दों में कहना मुश्किल था। उधर पल्लवी इस टूर में शामिल नहीं हुई थी। सबको पता था कि कल रात डांस कॉम्पिटिशन में हारने के बाद से वो गहरे सदमे में थी। इतनी चालें, इतनी साज़िशें करने के बावजूद भी अवनी ने न सिर्फ़ कॉम्पिटिशन जीता, बल्कि आरव का दिल भी। पर कोई नहीं जानता था कि पल्लवी अब कौन सा कदम उठाने वाली है।

कहा जाता है— "एकतरफा प्यार में हारा हुआ इंसान या तो हार मानकर पीछे हट जाता हैं, या फिर और भी ज्यादा खूंखार हो जाता है।" पल्लवी दूसरी श्रेणी में थी। उसने ठान लिया था कि गोवा ट्रिप ख़त्म होने से पहले, किसी भी हालत में अवनी और आरव को अलग करना है।

शाम को सब लोग रिसोर्ट लौटे। रिसोर्ट में उस रात सभी गेस्ट के लिए बड़ी पार्टी का आयोजन था।

म्यूज़िक, लाइट्स और डांस से पूरा हॉल जगमगा रहा था। लेकिन उसी माहौल में पल्लवी अपनी घिनौनी चाल बुन रही थी। उसने रिसोर्ट के एक वेटर को बहुत सारे पैसे दिए और सख्त लहज़े में कहा— "सुनो, उस लड़की की कोल्ड ड्रिंक में ये नींद की गोलियाँ मिला देना। "

वेटर हिचकिचाया— "मैडम, ये ग़लत है, मैं ऐसा नहीं कर सकता।"

लेकिन जैसे ही उसने पैसों की मोटी गड्डी देखी, उसका ईमान डगमगा गया। उसने काँपते हाथों से सिर हिला दिया—"ठीक है मैडम "

पल्लवी के चेहरे पर जीत की खतरनाक मुस्कान थी। उसकी योजना साफ़ थी— "जैसे ही अवनी बेहोश होगी, मैं किसी भी बहाने से आरव के क़रीब पहुँच जाऊँगी।"

मौका देखते ही वेटर ने अवनी की कोल्ड ड्रिंक में गोलियाँ मिला दीं और उसे दिया। उधर आरव, संजय, विवेक और बाक़ी दोस्त बीयर पी रहे थे। पल्लवी बार-बार नज़रें आरव पर डाल रही थी। जब उसने देखा कि आरव थोड़ी देर के लिए अकेला है, तो उसने अचानक बीयर पीने का नाटक किया और लड़खड़ाती हुई उसके पास जाकर गिर पड़ी - "आरव, मुझे, चक्कर आ रहे हैं…"

वो उसके ऊपर ही बेहोश हो गयी, आरव घबरा गया। उसने चारों ओर विवेक को ढूँढा, पर वो कहीं नज़र नहीं आया। मजबूरी में आरव ने खुद ही पल्लवी को उठाया और उसके कमरे तक ले गया। जब वो पल्लवी को बिस्तर पर लेटा रहा था तब सीमा, जो कमरे में छुपी हुई थी, छुपकर मोबाइल से वीडियो बनाने लगी।

नीचे पार्टी एरिया में, अवनी पर दवा का असर हो चुका था। वो लड़खड़ाते हुए बाहर निकल गई और सीधे स्विमिंग पूल के पास पहुँच गई। एक पल में उसका संतुलन बिगड़ा और वो पानी में गिर गई।

विवेक ने देखा तो वो घबराकर दौड़ा। उसने छलांग लगाई और बड़ी मुश्किल से अवनी को बाहर निकाला।

लेकिन अवनी बेहोश थी। विवेक उसे गोद में उठाकर उसके कमरे की ओर ले गया। इसी बीच चारु ने उन्हें देख लिया। उसने चोरी-छिपे उनकी कुछ तस्वीरें गलत ऐंगल से खींच लीं— ठीक वैसे जैसे "इश्क़" फिल्म में आमिर और काजोल की ली गई थीं। विवेक ने अवनी को बेड पर लिटाया और उसे होश में लाने की कोशिश करने लगा। लेकिन तस्वीरें कुछ और ही कहानी कह रही थीं।

उधर कमरे में पल्लवी नाटक जारी रखे हुए थी - "आरव, मैं तुमसे कितना प्यार करती हूँ, तुम क्यों नहीं समझते? तुम क्यों हमेशा अवनी - अवनी करती रहते हो? तुम्हे मेरा प्यार दिखाई नहीं देता क्या?"

वो बार-बार आरव के क़रीब आने की कोशिश कर रही थी। आरव, नशे की हालत में होते हुए भी हर बार उसे दूर करता और गुस्से में कहता— "पल्लवी! सुनो, मैं सिर्फ़ अवनी से प्यार करता हूँ। और किसी से नहीं।"

पल्लवी के चेहरे पर पागलपन उतर आया था, तभी चारु ने उसे विवेक और अवनी की तस्वीरें भेज दीं।

पल्लवी ने जहरीली हँसी हंसते हुए फोन आरव के सामने बढ़ाया— "किस अवनी की बात कर रहे हो तुम? वो अवनी, जो इस वक़्त विवेक की बाहों में है?"

आरव ने जैसे ही तस्वीरें देखीं, उसका खून खौल उठा। बिना एक शब्द कहे, वो कमरे से बाहर निकल पड़ा। उधर सीमा आरव और पल्लवी का बनाया वीडियो, अवनी को भेज चुकी थी। आरव जब अवनी के कमरे में पहुँचा, उसने देखा— विवेक अवनी के पास बैठा है! गुस्से से आग बबूला होकर उसने विवेक का हाथ झटका और उसे धक्का दे दिया - "तू क्या कर रहा था मेरी अवनी के साथ? पहले दिन से तेरी गंदी नज़र उस पर थी, और आज तूने हद कर दी! हिम्मत कैसे हुई उसे छूने की?"

और वो विवेक को बेतहाशा पीटने लगा। विवेक बार-बार सफाई देता रहा—"नहीं आरव! तुम ग़लत समझ रहे हो ", लेकिन आरव ने एक भी बात नहीं सुनी। शोर सुनकर संजय और बाकी दोस्त भी आ गए।

संजय (गुस्से में) - "आरव रुक जा! किसी ने जानबूझकर अवनी को नींद की दवा दी है, सुन तो सही!"

लेकिन आरव का गुस्सा चरम पर था - "यही होगा संजय! इसी ने किया है! ये पहले भी अवनी की ड्रिंक में वोडका मिला चुका है, पता है न तुम्हें? ये मेरी अवनी के साथ गलत करने की कोशिश कर रहा था!"

और वो फिर विवेक को पीटने लगा। तभी पल्लवी, चारु और सीमा भी भागते हुए वहाँ पहुँच गईं। इसी बीच अवनी को होश आने लगा। वो अब भी नशे में थी, लेकिन सामने का नज़ारा देखकर उसकी रूह काँप गई। वो लड़खड़ाती हुई उठी और पीछे से आरव को कसकर पकड़ लिया, ठीक वैसे ही जैसे हमेशा करती थी। उसके स्पर्श से आरव की पकड़ ढीली पड़ गई।

संजय ने मौका देखकर सच सामने रखा— "आरव! विवेक की कोई गलती नहीं है। सारा खेल इस वेटर का है।" - उसने वेटर की कॉलर पकड़कर उसे आरव के सामने खड़ा कर दिया।

वेटर काँपते हुए बोला—"सर, मुझसे ग़लती हो गई, मैंने खुद कुछ नहीं किया। एक मैडम ने पैसे दिए थे कि इस लड़की की ड्रिंक में नींद की दवा मिला दूँ।"

आरव ने उसकी कॉलर और कस दी—“कौन सी मैडम?”

वेटर रोते हुए पल्लवी की तरफ़ उँगली उठा दी—“जी… जी सर… वो मैडम थीं।“

जैसे ही पल्लवी का नाम आया, सब हैरान रह गए। किसी को यक़ीन नहीं हो रहा था कि पल्लवी इतनी नीच हरकत कर सकती है। सभी की नज़रें अब पल्लवी पर टिक गईं। वो किसी मुजरिम की तरह सिर झुकाए खड़ी थी, घबराहट और शर्म से रो रही थी। आरव ग़ुस्से से तमतमाता हुआ पल्लवी के पास पहुँचा। उसके चेहरे पर लालिमा थी और आँखों में आग जल रही थी। अवनी पीछे से उसे रोकने की कोशिश कर रही थी, लेकिन इस समय आरव का ग़ुस्सा सातवें आसमान पर था।

पल्लवी के पास पहुँचते ही वह फट पड़ा— “पल्लवी, पहले दिन से तुम्हारी हरकतें देख रहा हूँ। जलन एक अलग बात होती है, लेकिन उस जलन में अंधी होकर तुम आज इतना बड़ा क़दम उठा लोगी, ये मैंने कभी नहीं सोचा था। डांस कॉम्पिटिशन वाले दिन भी तूमने अवनी को नीचे गिराने की कोशिश की थी। उस वक़्त मैंने तुम्हारी हर ग़लती नज़रअंदाज़ कर दी, क्योंकि तुम मेरी दोस्त थी, लेकिन आज तुमने सारी हदें पार कर दीं। तूमने अवनी की जान लेने की कोशिश की है।”

इतना कहते-कहते आरव ग़ुस्से से काँपने लगा और पल्लवी पर हाथ उठाने ही वाला था कि घबराई हुई पल्लवी पीछे हट गई। उसी वक़्त अवनी ने झट से आरव का हाथ थाम लिया।

अवनी की टूटी, काँपती आवाज़ गूँजी—“क्या कर रहे हो आरव?”

पल्लवी ज़मीन पर बैठते ही रो पड़ी। उसका गला रुँध चुका था—“आरव… मैं… मैं अवनी को जान से नहीं मारना चाहती थी। बस उसे बेहोश करना चाहती थी… ताकि मैं तुम्हारे क़रीब आ सकूँ। लेकिन… मैंने नहीं सोचा था कि ऐसा कुछ हो जाएगा…”

इतने में अवनी के फ़ोन पर सीमा का भेजा हुआ वीडियो चला। उसने काँपते हाथों से फ़ोन आरव को दिखाया - “आरव, देखो… इसका इरादा हमें एक-दूसरे से अलग करने का था।”

आरव दाँत भींचते हुए बोला— “जो भी हो, लेकिन इसने जो किया वो बिल्कुल ग़लत था। पल्लवी, अवनी से माफ़ी माँगो।”

पल्लवी फूट-फूटकर रोने लगी। अवनी उसके पास गई, उसके काँपते कंधों पर हाथ रखा और धीमे स्वर में बोली— “पल्लवी, प्यार कभी छीनकर या ज़बरदस्ती

हासिल नहीं किया जाता। प्यार को सिर्फ़ प्यार से ही जीता जा सकता है। मैं समझ सकती हूँ, तुम आरव से बहुत प्यार करती हो । लेकिन अगर सच में उससे प्यार करती हो तो उसकी खुशी में ही तुम्हारी खुशी होनी चाहिए। मैं तुमसे ये सब इसलिए नहीं कह रही क्युकि आरव मुझसे प्यार करता है, बल्कि इसलिए कह रही हूँ क्युकि मैंने प्यार को बहुत क़रीब से महसूस किया है। हम जिसे सच में चाहते हैं, उसके दर्द की कल्पना तक नहीं कर सकते। अगर तुम्हे मुझसे प्रॉब्लम है तो मैं तुम्हारे सामने कभी नहीं आऊँगी, तुम्हारी और आरव की ज़िंदगी से दूर चली जाऊँगी। लेकिन क्या इससे तुम आरव का प्यार पा लोगी?"

पल्लवी ज़ोर-ज़ोर से रोने लगी। देर तक आँसुओं में भीगने के बाद उसने काँपती आवाज़ में कहा—"अवनी... मुझे माफ़ कर दो। आरव को पाने के लिए मैंने ना जाने कितने धोखे किए... लेकिन ये भूल गई कि आरव ने कभी मुझे चाहा ही नहीं। वो तो हमेशा से तुम्हारा था। मुझे माफ़ कर दो आरव। सच कहूँ तो इन सास-बहू वाले नाटकों ने मेरा दिमाग़ ही ख़राब कर दिया था।"

उसकी बात सुनकर सब हँस पड़े। अवनी ने पल्लवी को गले से लगा लिया। फिर अवनी आरव की ओर मुड़ी और मुस्कराकर बोली— "चलो... अब तुम्हारी बारी है। तुम भी माफ़ी माँगो।"

आरव हैरान हुआ—"किससे?"

अवनी ने भौंहे उठाकर कहा—"विवेक से... और किससे? कितना मारा है तुमने बेचारे को।"

आरव शर्मिन्दा-सा सिर झुकाकर विवेक के पास गया, जो अब भी ज़मीन पर कराह रहा था। आरव उसके बगल में बैठ गया और धीरे से बोला—"माफ़ कर दे यार... ग़लती हो गई।"

विवेक गुस्से से बोला—"माफ़ कर दूँ? साले... कुत्ते की तरह धोया तूने मुझे। मेरी बात तक नहीं सुनी। तुझे तो नरक में भी जगह नहीं मिलेगी।"

ये सुनकर सब हँस पड़े। आरव ने विवेक को हाथ देकर उठाया। अवनी ने दूर से विवेक को हाथ जोड़कर माफ़ कर देने का इशारा किया।

विवेक ने गहरी साँस ली—"चल... तेरे लिए नहीं, लेकिन अवनी के कहने पर तुझे माफ़ कर देता हूँ। वरना तुझे पीट-पीटकर अधमरा कर देता।"

आरव हँसते हुए बोला—“ठीक है भाई, जब चाहे पीट लेना, अभी तो गले लग जा।”

दोनों गले मिले। तभी आरव को एक बात याद आई। उसने भौंहे सिकोड़ते हुए पूछा— “लेकिन एक बात बता… तू तो कह रहा था कि तुझे तैरना नहीं आता। फिर स्विमिंग पूल में कूदकर अवनी को कैसे बचा लिया?”

विवेक शरारत से मुस्कराया— “देखो-देखो… अभी भी शक करता है। अरे मुझे तो इस मोटी भैंस को नहीं बचाना था? वरना तैरना-वैरना सब आता है मुझे।”

पल्लवी तमतमाकर बोली— “मोटी भैंस किसे बोला?” और गुस्से में उसके पास पहुँच गई।

विवेक ने उसका हाथ पकड़ा और खींचकर अपनी बाँहों में भर लिया—“तुझे और किसे।”

पल्लवी उसके गले लगकर फूट पड़ी—“मुझे माफ़ कर दो विवेक… मैंने बस तुम्हारा इस्तेमाल किया, आरव को पाने के लिए। लेकिन फिर भी तुम मुझे बर्दाश्त करते रहे|”

विवेक ने गहरी साँस लेकर कहा—“कोई नहीं, जाने दे।” सभी ने ताली बजा दी। तभी अचानक अवनी के चेहरे का रंग उड़ गया। उसके माथे पर पसीना छलक आया और वह लड़खड़ाकर बेहोश हो गई। सब घबरा गए।

संजय घबराए स्वर में बोला—“आरव, लगता है दवाइयों का असर इस पर बहुत ज़्यादा हो गया है। इसे अभी आराम की ज़रूरत है।”

आरव ने चिंतित होकर सिर हिलाया—“हाँ संजय, तुम सब जाओ। मैं यहीं इसके पास रुकूँगा।”

उसने अवनी को गोद में उठाया, धीरे से बिस्तर पर लिटाया और उसके पास ही बैठ गया। सब अपने-अपने कमरों की ओर चले गए।

कुछ देर तक आरव अवनी के पास ही बैठा रहा। कभी उसके गालों को थपथपाता, कभी उसकी बिखरी लटों को सँवारता, तो कभी उसके माथे पर पसीने की बूँदें पोछता। उसके चेहरे पर चिंता साफ़ झलक रही थी, पर आँखों में सिर्फ़ प्यार था।

थोड़ी देर बाद अवनी को होश आया। आँखें धीरे-धीरे खुलीं तो उसने सबसे पहले आरव को अपने पास बैठे देखा। हल्की-सी मुस्कान उसके होंठों पर आई, मगर वह

अभी भी नींद की आगोश में डूबी हुई थी। टूटी, काँपती सी आवाज़ में उसने कहा—“आरव, अब सब ठीक है। देखो… ऐसा लग रहा है जैसे कोई बड़ा-सा तूफ़ान आकर गुज़र गया हो।”

आरव उसकी बात सुनकर हल्का-सा मुस्कुराया और उसके बहुत करीब आकर बोला—“हाँ, लेकिन उस तूफ़ान की औक़ात नहीं थी कि वो हमारा कुछ बिगाड़ पाता।”

यह कहते हुए उसने अवनी के माथे पर एक गहरा, सुकून भरा चुम्बन छोड़ दिया। अवनी मुस्कराती हुई उसके पास लेट गई और अपना सिर आरव के कंधे पर रख दिया। दोनों ने एक-दूसरे का हाथ थाम लिया और अपनी उँगलियाँ आपस में फँसा लीं। आरव बार-बार उसके नाज़ुक हाथों को चूमता जा रहा था, मानो उन चुम्बनों में उसका सारा प्यार उमड़ आया हो।

अवनी हल्की-सी हँसी हँसते हुए बोली—“अगर आज मैं सच में मर जाती तो तुम क्या करते?”

आरव ने तुरंत भौंहें चढ़ा लीं और हल्के ग़ुस्से में बोला—“कैसी पागल जैसी बातें कर रही हो तुम?”

अवनी ने शरारत से मुस्कराते हुए कहा—“अरे, ऐसे ही पूछ रही हूँ। प्लीज़ बताओ ना”

यह प्रश्न कि "अगर मैं मर जाऊँ तो क्या करोगे?" — नवप्रेम में डूबे युगल प्रायः एक-दूसरे से पूछ ही बैठते हैं। यद्यपि यह प्रश्न क्षणिक भावना की उपज होता है, परन्तु इसका उत्तर जीवन की यथार्थता से नहीं, हृदय की कोमलता और प्रेम की तीव्रता से दिया जाता है। वास्तव में किसी एक के मृत्यु हो जाने पर भी दूसरे का जीवन रुकता नहीं है। समय अपनी गति से चलता रहता है, पीड़ा धीरे-धीरे स्मृति बन जाती है, और जीवन पुनः नए रंगों से भर उठता है। परन्तु प्रेम की उस मादक अवस्था में जब यह प्रश्न उठता है, तब उत्तर में सत्य नहीं, बल्कि संवेदना और समर्पण बोलते हैं। उत्तर कुछ ऐसा होता है —"तुम नहीं रहे तो मैं कैसे जीवित रहूँगा?" या "तुम्हारे बिना जीवन की कोई कल्पना ही नहीं।" या फिर "मैं भी तुम्हारे पीछे चला आऊँगा।" ऐसे उत्तर, भले ही यथार्थ से परे हों, परन्तु वे उस क्षण में दोनों प्रेमियों को एक विशेष सुख, एक अद्भुत संतोष प्रदान करते हैं।यह प्रेम का

ही सौंदर्य है — जहाँ भावनाएँ तर्क पर भारी पड़ती हैं, और कल्पनाएँ ही यथार्थ से अधिक मधुर प्रतीत होती हैं।

आरव ने गहरी साँस लेकर कहा—"तो मैं भी मर जाता।"

अवनी खिलखिलाकर हँसी— "हट, क्यों मरते तुम?"

आरव ने उसकी आँखों में गहराई से झाँकते हुए कहा— "क्युकि तुम्हारे बिना जी ही नहीं सकता। बस अब चुप रहो, फ़ालतू बातें मत करो।"

अवनी ने मासूमियत से होंठ भींचते हुए कहा— "ठीक है, तो फिर दूसरी बातें करते हैं। अच्छा ये बताओ, हमारे बच्चे होंगे तो उनके नाम क्या रखोगे?"

आरव हँस पड़ा—"अब ये बच्चे कहाँ से आ गए?"

अवनी ज़िद्दी अंदाज़ में बोली—"बताओ ना , प्लीज़"

आरव ने उसकी मासूमियत पर मुस्कुराते हुए कहा—"लगता है दवाइयों का असर ज़्यादा हो गया है तुम्हारे दिमाग़ पर।"

अवनी ने मुँह फुला लिया—"बताओ ना"

आरव ने हार मानते हुए मुस्कराकर कहा— "ठीक है, मुझे तो एक लड़की चाहिए, बिल्कुल तुम्हारी जैसी, सुंदर-सी गुड़िया। उसका नाम मैं रखूँगा—अन्विका।"

अवनी की आँखें चमक उठीं—"वाह, कितना प्यारा नाम सोचा है तुमने। इसमें लॉजिक क्या है?"

आरव मुस्कराकर बोला— "अरे यार, कोई लॉजिक-वॉजिक नहीं है, बस अवनी की बेटी—अन्विका।"

अवनी ने हँसते हुए सिर हिलाया—"ओह्ह… अच्छा।"

आरव ने प्यार से पूछा—"अब तुम बताओ?"

अवनी ने मासूम खुशी के साथ कहा—"मुझे तो एक बेटा चाहिए, बिल्कुल तुम्हारे जैसा। उसका नाम होगा—आर्यम।"

आरव ने हल्के आश्चर्य से मुस्कराकर कहा— "वैसे नाम तो बहुत अच्छा है, लेकिन इसमें क्या लॉजिक है?"

अवनी ने आँखें झुकाकर कहा— "लॉजिक तो इसमें भी कुछ खास नहीं है, बस आरव और महक का कॉम्बिनेशन—आर्यम।"

आरव हँस पड़ा और उसके गाल पर चुटकी लेते हुए बोला— “हाँ, मेरी माँ! अब चलो सो जाओ, वैसे तो तुम बहुत सो चुकी हो, लेकिन फिर भी थोड़ा और आराम कर लो। कल हमें निकलना भी है।”

अवनी ने आँखें बंद करते हुए मुस्कराकर कहा—“ठीक है, आर्यम और अन्विका के पापा, गुड नाइट।”

आरव खिलखिलाकर हँस पड़ा—“गुड नाइट।”

कुछ ही देर में अवनी गहरी नींद में सो गई। उसके चेहरे पर मासूम मुस्कान थी। आरव उसे देर तक निहारता रहा। उसकी आँखों में नर्मी और होंठों पर हल्की मुस्कान थी। उसके मन में बस एक ही बात चल रही थी— “सच में, पागल है ये लड़की। कितनी जल्दी माफ़ कर दिया इसने पल्लवी को”

उसने प्यार से अवनी को सीने से लगाया और उसका सिर अपनी छाती पर रखते हुए खुद भी आँखें बंद कर लीं। थोड़ी ही देर में दोनों नींद की मीठी दुनिया में खो गए।

अध्याय 12

गोवा की रंगीन और यादगार यात्रा अब बीते पन्नों में सिमट चुकी थी। अगले ही दिन पूरी टीम हँसी-मज़ाक और खुशनुमा यादों के साथ भोपाल लौटने लगी। इस बार वापसी की राह पर न तो किसी के मन में कोई कड़वाहट थी, न कोई शिकवा, न कोई शिकायत। बस हल्के-फुल्के ठहाके, खट्टी-मीठी बातें और हंसी-खुशी के पल बिखरे हुए थे।

सब अपने-अपने दिनचर्या में व्यस्त हो गए। लेकिन इसी बीच विवेक से अनजाने में एक गलती हो गई। मारे ख़ुशी के उसने गोवा ट्रिप की सारी तस्वीरें सोशल मीडिया पर डाल दीं और उसमें आरव को टैग भी कर दिया।

लखनऊ में बैठे अभय की नज़र इन तस्वीरों पर पड़ी। तस्वीरों में अवनी को देखकर उसके माथे पर बल पड़ गए। उसे तुरंत समझ आ गया कि आरव और अवनी अब फिर से एक हो चुके हैं। बिना पल गंवाए उसने अपनी माँ से बात करने का फ़ैसला कर लिया।

अभय ड्रॉइंगरूम में आया। माँ सोफ़े पर बैठी अख़बार पढ़ रही थीं - "माँ, मुझे आपसे भैया के बारे में कुछ बात करनी है।"

माँ – "हाँ बेटा बोलो, क्या बात है?"

अभय – "माँ... वो बात ये है कि... भैया को एक लड़की से प्यार हो गया है।"

यह सुनते ही माँ का चेहरा तमतमा उठा। गुस्सा जैसे सातवें आसमान पर जा पहुँचा - "मैंने उसे साफ कहा था... कि वो सिर्फ उसी से शादी करेगा, जिसे मैं चुनूँगी। ये किसी से प्यार-व्यार कैसे कर सकता है?"

अभय – "माँ, वैसे... वो लड़की बहुत अच्छी है। बस... उसका तलाक़ होने वाला है। अगर आप एक बार उनसे मिल लें तो... मैं आपको उनकी फ़ोटो दिखाऊँ?"

माँ – "मुझे नहीं देखनी उसकी शक़ल... और ना ही उसका नाम वाम जानना है। पहली शादी निभा नहीं पाई, तो अब मेरे बेटे को फँसा लिया? उसका नंबर है तुम्हारे पास?"

अभय घबराकर बोला – "जी माँ… नंबर तो है। लेकिन एक बार सुन तो लीजिए माँ, वो वाक़ई बहुत अच्छी है।"

माँ – "अभय… मैंने कहा ना, मुझे कुछ नहीं सुनना! बस… अभी उस को फ़ोन मिलाओ।"

इधर अवनी के घर पर उस समय संजय बैठा था। दोनों इसी बारे में चर्चा कर रहे थे कि आरव अगले दिन लखनऊ जाकर अपने माँ-बाप से शादी की बात करने वाला है। तभी अचानक अवनी का फ़ोन बजा।

स्क्रीन पर अभय का नाम देखकर अवनी ठिठकी। कुछ संकोच हुआ, लेकिन फिर भी उसने कॉल उठा लिया - "हैलो अभय…"

अभय – "नमस्ते मैडम … वो… माँ आपसे बात करना चाहती हैं।"

अवनी ने आश्चर्य से संजय की ओर देखा। संजय ने इशारे से कहा – "स्पीकर पर डालो।"

तभी फ़ोन से गूँजी एक तेज़, कड़कती हुई आवाज़ – "हैलो!"

अवनी – "जी… नमस्ते आंटी।"

माँ (गरजते हुए) – "सुनो लड़की… तुम जो कोई भी हो, मेरी एक बात कान खोलकर सुन लो। मेरे लड़के से दूर रहो!"

अवनी (हल्की काँपती आवाज़ में) – "आंटी… आप आरव की बात कर रही हैं?"

माँ – "हाँ, मैं अपने बड़े बेटे आरव की ही बात कर रही हूँ। तुमसे तुम्हारी पहली शादी तो निभी नहीं… और अब तुम मेरे बेटे के पीछे पड़ गई? सारी दुनिया में तुम्हें मेरा ही बेटा मिला? अरे, अपने जैसा ढूँढो ना कोई, मेरे बेटे का जीवन क्यों बरबाद करने पर तुली हो? हमारे भी कुछ अरमान हैं अपने बेटे के लिए। ऐसे कैसे उसे किसी सेकंड-हैंड लड़की के हवाले कर दूँ? तुम्हें दूसरी शादी करने का इतना ही शौक़ है तो किसी अपने जैसे को देखो, लेकिन मेरे बेटे का पीछा छोड़ दो। और अगर ज़रा सी भी शर्म बाक़ी है तो दूर हो जाना मेरे बेटे से। ख़बरदार… अगर इस बारे में तुमने उससे एक भी शब्द कहा तो!"

इतना कहकर माँ ने फ़ोन कट कर दिया। अवनी वहीं जड़वत खड़ी रह गई। आँसू उसकी आँखों से ऐसे बहे कि रुकने का नाम ही नहीं ले रहे हों। उसका दिल किसी ने नोंच लिया हो, ऐसा दर्द था। संजय ने सब कुछ सुना था। वह तुरंत अवनी के पास

आया, उसके काँपते कंधों को थामते हुए बोला – "अवनी, मत रोओ, देखो, कल आरव खुद आ रहा है ना लखनऊ? वो आमने-सामने बात करेगा तो, शायद कोई हल निकल आए। अवनी, सुन रही हो न मुझे? मैं क्या कह रहा हूँ?"

लेकिन अवनी के कानों तक कुछ पहुँच ही नहीं रहा था। उसकी आँखें छलक पड़ीं। वह संजय के गले लगकर फफक उठी – "संजय, मैंने आरव को पाने से पहले ही खो दिया।", इतना कहते ही वह ज़ोर-ज़ोर से रोने लगी।

संजय ने उसे ढाँढस बँधाया – "नहीं अवनी, अभी आंटी तुम्हें जानती नहीं हैं, इसलिए ऐसा कह रही हैं। आरव समझाएगा उन्हें… चिंता मत करो "

अवनी (रुँधी आवाज़ में) – "संजय, आरव को इस कॉल के बारे में मत बताना। मैं नहीं चाहती कि मैं माँ-बेटे के प्यार के बीच दीवार बन जाऊँ।"

संजय ने गहरी साँस ली और सिर हिलाया – "नहीं बताऊँगा।"

काफी देर बाद किसी तरह संजय ने उसे शांत किया और अपने फ्लैट लौट गया। लेकिन अवनी उसके जाने के बाद भी देर रात तक रोती रही। आरव की माँ के कहे हर शब्द उसके कानों में ज़हर की तरह गूँज रहे थे। कुछ दिन पहले अभय ने भी उसे ऐसे ही कटु शब्द कहे थे। आज अपने सेकंड हैण्ड कहलाने पर उसका मन भीतर तक आहत हो गया। एक तरफ हिमांशु, जो बार-बार कोर्ट के समन को नज़रअंदाज़ करता आ रहा था, जिसकी वजह से तलाक़ अब तक पूरा नहीं हो पाया। दूसरी तरफ उसके माथे पर ये ठप्पा कि वह "सेकंड-हैंड" है। उसे साफ लग रहा था कि आरव की माँ कभी भी उनके रिश्ते को स्वीकार नहीं करेगी। और इसी उधेड़बुन में वह सारी रात आँसुओं में डूबती रही।

उधर आरव की आँखों से भी नींद कोसों दूर थी। वह सोचता रहा – "एक हफ़्ता अवनी के बिना कैसे रहूँगा? माँ के सामने हमारे रिश्ते की बात कैसे छेड़ूँगा? क्या माँ मान जाएँगी… या…", उसके चेहरे पर गहरी चिंता की लकीरें थीं। तभी दरवाज़ा खुला। संजय अंदर आया। उसने एक नज़र आरव पर डाली। आरव अपने ही विचारों में डूबा हुआ था। संजय का दिल भारी था। बहुत कुछ कहना चाहता था… पर शब्द गले में ही अटक गए। उसने कुछ न कहा, बस चुपचाप भीतर चला गया। कमरे की खामोशी में सिर्फ़ आरव की बेक़रार साँसें गूँज रही थीं।

अगले दिन सुबह, आरव संजय के साथ स्टेशन के लिए रवाना हुआ। सुबह की ठंडी हवा में भी संजय का मन भारी था। गाड़ी की खिड़की से बाहर देखते हुए

उसकी आँखें खाली-सी लग रही थीं। जैसे किसी गहरी सोच में डूबा हो। थोड़ी देर बाद आरव ने खामोशी को तोड़ते हुए कहा –"क्या बात है संजय? तुम ऐसे उदास क्यों हो रहे हो जैसे तुम्हारी गर्लफ्रेंड तुम्हें छोड़कर जा रही हो?"

संजय ने एक फीकी हँसी दी, लेकिन उस हँसी में दर्द छिपा था – "और नहीं तो क्या, तुम हमारी गर्लफ्रेंड से कम हो क्या? आधे से ज़्यादा वक्त तो तुम्हारे साथ ही बिता देते हैं हम।"

दोनों ठहाका मारकर हँस पड़े। लेकिन संजय के दिल में उठी कसक उस हँसी में भी दब नहीं पाई। उसे पता था कि आरव और अवनी के बीच का रिश्ता सिर्फ़ मोहब्बत नहीं, बल्कि एक गहरी डोर है। पर उसी डोर को टूटते देखने का डर उसे भीतर से कचोट रहा था। कुछ देर बाद गाड़ी आकर अवनी के घर के सामने रुकी। आरव बाहर निकला, लेकिन देखा कि संजय वहीं गाड़ी में ही ठहरा रहा। आरव ने चौंककर पूछा –"तुम नहीं चलोगे अंदर?"

संजय ने नज़रें झुकाकर कहा –"नहीं… तुम जाओ। मैं यहीं रुकता हूँ।"

आरव ने उसकी ओर अजीब निगाहों से देखा। वह समझ नहीं पाया कि उसका सबसे करीबी दोस्त अंदर क्यों नहीं जाना चाहता। लेकिन बिना कुछ और कहे वह भीतर चला गया। दरवाज़ा खुला, और सामने अवनी खड़ी थी। जैसे ही उसकी नज़र आरव पर पड़ी, उसकी आँखों से आँसुओं की बाढ़ फूट पड़ी। वह बिना कुछ कहे सीधे उसके गले से लिपट गई।

आरव ने उसे बाँहों में भर लिया और हौले से कहा – "अरे यार, ये क्या बात हुई अवनी? सिर्फ़ एक हफ़्ते के लिए तो जा रहा हूँ। इतना तो तुम तब भी नहीं रोई थी जब मैं दो महीने के लिए हैदराबाद गया था।"

लेकिन इस बार बात अलग थी। अवनी जानती थी कि इस जुदाई के पीछे कितने तूफ़ान छिपे हैं। माँ की सख़्त आवाज़ अभी भी उसके कानों में गूँज रही थी – "मेरे बेटे से दूर रहना !", वह चाहकर भी आरव को ये सच्चाई नहीं बता पा रही थी। उसकी चुप्पी ही उसकी सबसे बड़ी मजबूरी थी। वह बस रोती रही, आरव के सीने से चिपकी हुई।

आरव ने उसकी पीठ सहलाते हुए समझाया –"तुम जानती हो ना, मैं क्यों जा रहा हूँ, चिंता मत करो। इस बार खुशखबरी लेकर ही लौटूँगा। माँ को मनाकर ही दम लूँगा।"

अवनी जानती थी कि माँ कभी नहीं मानेंगी। पर उसकी आँखें आरव को तोड़ना नहीं चाहती थीं। इसलिए वह चुप रही, बस उसकी ओर देखती रही।

आरव उसकी आँखों में अनकहे आँसू देखकर घबरा गया। उसने उसे अपने से अलग किया और पूछा –"अवनी, तुम ऐसा क्यों रिएक्ट कर रही हो, जैसे हम आख़िरी बार मिल रहे हों? मुझे बहुत घबराहट हो रही है।"

अवनी ने काँपती आवाज़ में बात मोड़ दी – "नहीं आरव, बस तुम्हें एक हफ़्ते के लिए अपनी आँखों में क़ैद करना चाहती हूँ। तुम्हारा चेहरा जी भरकर देख लेना चाहती हूँ। जब तुम लखनऊ चले जाओगे, तो मैं तुम्हें वीडियो कॉल भी नहीं कर पाऊँगी ना।"

आरव ने उसकी ओर देखते हुए उदासी से कहा –"हम्म, वो तो है। लेकिन मैं कहीं बाहर जाकर तुम्हें वीडियो कॉल लगा लूँगा। चिंता मत करो । अच्छा, अब निकलता हूँ। तुम स्टेशन चल रही हो?"

अवनी ने सिर हिलाकर मना कर दिया –"नहीं आरव, तुम जाओ। मैं खुद को संभाल नहीं पाऊँगी।"

आरव एक पल चुप खड़ा उसे देखता रहा। फिर झुककर उसके माथे को चूमा और धीमे कदमों से बाहर निकल गया। अवनी भी उसके पीछे दरवाज़े तक आई। गाड़ी में बैठने से पहले आरव ने पलटकर देखा। अवनी वहीं खड़ी थी, उसकी आँखों में उदासी का समंदर भरा था। उसकी निगाहें जैसे कह रही थीं – "मत जाओ…"

आरव ने हाथ हिलाकर उसे बाय कहा और गाड़ी में बैठ गया।

लेकिन संजय अभी भी बाहर ही खड़ा था। उसकी आँखों में भी नमी तैर आई थी। उसने एक नज़र अवनी की ओर डाली। अवनी की आँखें भी भर आईं। उन दोनों की आँखों के बीच जैसे कोई अनकही बात, कोई अनजाना दर्द तैर गया हो। संजय कुछ कह नहीं सका। बस गाड़ी में बैठ गया। दोनों स्टेशन की ओर निकल पड़े।

पीछे खड़ी अवनी तब तक उन्हें देखती रही जब तक गाड़ी उसकी आँखों से ओझल नहीं हो गई। उसका दिल जोर-जोर से धड़क रहा था। उसे लग रहा था जैसे यह मुलाक़ात सचमुच उनकी आख़िरी मुलाक़ात हो|

आरव के जाते ही अवनी ने धीरे-धीरे दरवाज़ा बंद किया और सीधा अपने बेडरूम में चली गई। जैसे ही वह बिस्तर पर बैठी, उसकी आँखों से आँसुओं की धार तेज़ी से बहने लगी। कमरे की चार दीवारें उसकी सिसकियों से गूँज उठीं। वह बार-बार

खुद से पूछ रही थी – “क्या सचमुच मैं उसके लायक नहीं? क्या मैं वाकई सिर्फ़ एक बोझ हूँ? क्या आरव की ज़िन्दगी में मेरी कोई जगह नहीं?”

आँसू पोंछते-पोंछते उसका सारा शरीर काँपने लगा। वह तकिये में मुँह छुपाकर रोती रही, तब तक जब तक थककर उसकी आँखें बंद नहीं हो गईं।

उधर स्टेशन पर भी माहौल भारी था। ट्रेन का इंतज़ार करते हुए संजय पूरे रास्ते खामोश रहा। आरव को उसकी ये चुप्पी खटक रही थी। उसने झुंझलाकर आखिर पूछ ही लिया –"यार, तुम दोनों भाई-बहन आज अजीब बर्ताव कर रहे हो। उधर अवनी बस रोती ही जा रही थी, और इधर तुम एक शब्द भी नहीं बोल रहे। सच कहूँ तो, तुम दोनों का ये व्यवहार देखकर मुझे बहुत घबराहट हो रही है। कहीं कोई बात तो नहीं, जो तुम लोग मुझसे छुपा रहे हो?"

संजय अचानक हड़बड़ा गया। उसकी आँखों में एक पल के लिए डर झलक गया, लेकिन तुरंत उसने मुस्कराकर बात को टाल दिया –"अरे नहीं, ऐसा कुछ नहीं है। बस, हम दोनों को तुम्हारे बिना रहने की आदत नहीं है ना, इसलिए थोड़े उदास हो गए।"

आरव हल्का-सा हँस पड़ा –"अरे यार, तुम तो बिल्कुल लड़कियों जैसी बातें कर रहे हो।"

इतना कहकर उसने जैसे माहौल हल्का करने की कोशिश की। लेकिन उसके भीतर खुद भी एक अजीब-सी बेचैनी थी। तभी ट्रेन प्लेटफॉर्म पर आकर रुकी। आरव ने गहरी सांस ली और कहा –"चलो, ट्रेन आ गई है। मैं चलता हूँ अंदर। और हाँ, सुनो, अवनी का ख़याल रखना। पता नहीं क्यों, लेकिन इस बार उसे छोड़कर जाते हुए मेरा दिल बहुत घबरा रहा है। जैसे… जैसे कुछ पीछे छूट रहा हो।"

आरव की आँखों में बेचैनी साफ झलक रही थी। संजय ने तुरंत बात सम्भालते हुए कहा – "अरे नहीं, तुम बेवजह ज़्यादा सोच रहे हो। तुम बस निश्चिंत होकर जाओ। मैं उसका पूरा ध्यान रखूँगा। और हाँ… जो भी वहाँ हो, मुझे ज़रूर बताना। ऑल द बेस्ट।"

आरव मुस्कराकर संजय के गले लगा और उसकी पीठ थपथपाई –"थैंक यू भाई।"

फिर अपना सामान लेकर कोच में चढ़ गया। अपनी सीट पर बैठते ही उसने खिड़की से बाहर देखा। संजय प्लेटफ़ॉर्म पर खड़ा था और उसकी ओर देख रहा था। ट्रेन धीरे-धीरे सरकने लगी।

संजय ने ट्रेन जाते ही एक गहरी सांस छोड़ी। उसके दिल में दर्द और डर दोनों थे। उसने मन ही मन सोचा – "आशा करता हूँ, तुम जो चाहते हो, वही हो आरव। लेकिन कल आंटी ने फ़ोन पर अवनी से जो कुछ कहा, उसके बाद मुझे तो नहीं लगता कि वो कभी मानेंगी।" उसकी आँखें भीगने लगीं, लेकिन उसने उन्हें रोक लिया।

उधर ट्रेन के डिब्बे में बैठा आरव बेचैनी से सीट पर हिलता रहा। उसकी आँखों के आगे बार-बार माँ का चेहरा घूम रहा था। "अगर वो मान ही न पाईं तो, अवनी का क्या होगा? क्या मैं अपने प्यार के लिए माँ का दिल तोड़ पाऊँगा?", उसके दिल में सवालों का तूफ़ान मचा हुआ था।

और उसी वक़्त, अपने कमरे में बंद अवनी, तकिये पर सिर टिकाए एक और फ़ैसला कर चुकी थी। उसकी आँखों से बहते आँसू अब रुक चुके थे वो मन ही मन बुदबुदाई –"अगर आरव के जीवन की खुशियाँ हमारी जुदाई में छिपी है, तो मैं वही करूँगी। मैं उसकी ज़िन्दगी पर बोझ नहीं बनूँगी।"

घर पहुँचते ही आरव ने सबसे पहले झुककर अपने माँ-पापा के चरण छुए। पापा उसे देखकर बहुत खुश हो गए । मगर माँ के चेहरे पर मुस्कुराहट की जगह सख़्त नाराज़गी थी। आरव ने नज़रें मिलाई तो माँ ने पलटकर देखना तक ज़रूरी नहीं समझा। आरव हैरान था। "माँ मुझसे क्यों नाराज़ हैं? आखिर बात क्या है?" उसने कई बार वजह जानने की कोशिश की, लेकिन माँ चुप्पी साधे रही।

रात में डिनर के बाद बेचैन आरव छत पर आ गया। ठंडी हवा चल रही थी, पर उसके दिल में तूफ़ान मचा था। तभी पीछे से अभय आया। उसके चेहरे पर अपराधबोध साफ़ झलक रहा था।

आरव ने गौर से उसे देखा और चिंतित होकर पूछा –"क्या बात है अभय? तू क्यों परेशान है?"

अभय ठिठक गया। गले में जैसे शब्द अटक गए। फिर काँपती आवाज़ में बोला – "कुछ नहीं भैया... वो... मैंने कॉलेज में अवनी मैडम से बहुत बद्तमीज़ी कर दी थी, बाद में मुझे बहुत पछतावा हुआ। मुझे माफ़ कर दो भैया।", उसकी आँखों में पश्चाताप के आँसू छलक उठे।

आरव हल्का-सा मुस्कुराया और उसे गले से लगा लिया – "चल छोड़, जाने दे, अवनी ने इस बारे में मुझे कुछ नहीं बताया। वो नहीं चाहती थी कि हम दोनों भाइयों

के रिश्ते में कोई दरार आए। मुझे तो ये बात संजय ने बताई थी। अवनी बहुत अच्छी लड़की है अभय, बस उसकी शादी ग़लत इंसान से हो गई थी। इसमें उसकी क्या गलती?"

अभय की आँखों से आँसू बह निकले। वह और भी बहुत कुछ कहना चाहता था, मगर शब्द गले में ही फँस गए। वो सिर्फ़ इतना ही कह सका –"भैया... आप अवनी से शादी कर लीजिए... जल्दी।"

आरव ने उसके कंधे पर हाथ रखकर कहा –"इसी के लिए तो आया हूँ, बस एक बार माँ से बात कर लूँ। लेकिन माँ न जाने किस कारण मुझसे नाराज़ हैं?"

अभय का दिल काँप उठा। उसे सच मालूम था लेकिन ज़ुबान बंद रही। हकलाते हुए बोला –"भैया... माँ माने या ना माने... आप तो अवनी से शादी कर ही लेना।"

आरव को उसकी बातें अजीब लगीं। जैसे अभय उससे कुछ छुपा रहा हो। मगर उसने कुछ नहीं कहा। दोनों भाई धीरे-धीरे नीचे आ गए।

अगले दिन आरव माँ के साथ मंदिर गया। पूजा के बाद मंदिर के बाहर ही उसने माँ से बात करने की ठानी। मौका पाकर बोला –"माँ, मुझे आपसे एक ज़रूरी बात करनी है।"

माँ की आँखों में ग़ुस्से की लपटें थीं –"मुझे पता है तुम्हारी ज़रूरी बात। ज़रूर किसी से प्यार कर बैठे हो, और अब उसी से शादी करना चाहते हो।"

आरव सन्न रह गया –"आपको कैसे पता माँ?"

माँ –"माँ हूँ मैं तुम्हारी, तुम्हें अच्छे से जानती हूँ।"

आरव हल्का-सा हँसा और माँ को गले लगाते हुए बोला –"माँ, आपसे बेहतर मुझे कौन समझ सकता है। माँ, एक बार आप उस लड़की से मिल लीजिए, आपको बहुत पसंद आएगी। बिल्कुल वैसी ही है जैसी बहू आप चाहती हैं। बस, उसका तलाक़ होने वाला है माँ। उसके पहले पति ने उसके साथ बहुत गलत किया। तलाक़ होते ही हम शादी कर लेंगे।"

माँ का ग़ुस्सा भड़क उठा –"जब तुम सब कुछ तय करके ही आए हो तो मुझसे क्यों पूछ रहे हो? जाओ कर लो शादी, मेरी इजाज़त की क्या ज़रूरत है तुम्हें?"

आरव ने तुरंत सफ़ाई दी –"नहीं माँ, कोई फ़ैसला नहीं लिया मैंने। बस आपको बता रहा हूँ। ये बातें तो मैं फ़ोन पर भी कह सकता था, लेकिन मैंने सोचा आमने-सामने बैठकर सब कुछ समझाऊँ।"

माँ तिलमिलाकर बोली – "हाँ ये ही कि कैसे उस लड़की ने तुम्हें अपने प्रेम जाल में फँसाया और तुम फँस गए।"

आरव ने दृढ़ आवाज़ में कहा –"माँ, आप ग़लत समझ रही हैं। उसने मुझे नहीं फँसाया। वो बहुत अच्छी लड़की है। आप खुद मिलेंगी तो जान पाएंगी माँ।"

माँ ने कड़वी हँसी हँसी –"मुझे नहीं मिलना किसी से। और सुन लो, मैं कभी अपने बेटे की शादी किसी सेकंड हैंड लड़की से क्यों करवाऊँ? मेरा हीरे जैसा बेटा और वो... छोड़ी हुई औरत? ये क्या मेल हुआ? उसे अपने जैसा ही ढूँढना चाहिए। कोई तलाक़शुदा, या जिसकी बीवी भाग गई हो, मर गई हो... वही। तुम्हारे लिए तो मैं हीरे जैसी बहू ढूँढूँगी।"

आरव का धैर्य जवाब दे गया। वह गरज उठा –"माँ, आप कैसी बातें कर रही हैं? अगर उसकी शादी ग़लत इंसान से हो गई तो इसमें उसकी क्या गलती?!"

माँ भी पीछे नहीं हटी – "गलती है। पति कैसा भी हो, लड़की की डोली एक बार उठी तो वो लौटकर सिर्फ़ अर्थी में जाती है। ये पति को छोड़ देना, फिर दूसरे मर्द पर डोरे डालना, ये सब बदचलन लड़कियों के काम हैं। समझे तुम? दूर रहो उससे।"

आरव की आँखें लाल हो गईं। उसने काँपती आवाज़ में कहा –"माँ, कितनी घटिया सोच है आपकी। भगवान न करे कल को हम तीनों भाई-बहनों में से किसी के साथ ऐसा हो, तब भी क्या आप यही कहेंगी?"

माँ तड़प उठी –"आरव! उस लड़की के लिए तुम अपनी माँ से ऐसी बातें कर रहे हो? देखो उसने कैसा काला जादू कर दिया है तुम पर। सुन लो, अगर उस लड़की से शादी करनी है तो पहले मुझे ज़हर दे देना!"

इतना कहकर माँ वहाँ से चली गई। आरव वहीं धम्म से बैठ गया। उसकी आँखों में नमी थी, दिल में भारीपन। उसने तो सोचा था माँ उसकी बातें समझेंगी, मगर यहाँ तो सब उल्टा हो गया। अब माँ और अवनी में से किसी एक को चुनना मतलब... हर हाल में टूट जाना।

घर लौटकर उसने पापा को सब बता दिया। पापा ने माँ को समझाने की बहुत कोशिश की, मगर माँ अड़ गई – "या तो मैं... या तो वो।"

दो दिन बीत गए। हर बार माँ ज़हर खाने की धमकी देती रही। आरव का दिल पिघलता गया, मगर वह माँ की हठ के आगे मजबूर हो गया। उधर अवनी का सब्र जवाब दे गया। दो दिन तक आरव का फोन न आने पर उसने सब समझ लिया। जरुर माँ ने मना कर दिया होगा, और संकोच में आरव कॉल नहीं कर पा रहा होगा। उसने आँसू पोंछे, बैग पैक किया और पापा को फोन लगाया - "पापा, अब मेरा मन नहीं लग रहा है भोपाल में। मैं वापस आ रही हूँ। ये फ्लैट किसी को किराए पर दे दीजिए। मैं हमेशा के लिए लौट रही हूँ पापा।"

पापा घबरा गए – "अवनी? बेटा, क्या हुआ? सब ठीक तो है न?"

अवनी ने टूटी आवाज़ में कहा – "हाँ पापा, सब ठीक है। बस अब इस शहर में दिल नहीं लगता। मैं वापस आ रही हूँ। दो दिन बाद असम जा रही हूँ। असम साइंस एंड टेक्नोलॉजी यूनिवर्सिटी में मेरा सिलेक्शन हो गया है असिस्टेंट प्रोफेसर के लिए। मैं वहाँ चली जाऊँगी।"

पापा चौंक गए –"बेटा, अचानक? कैसे?"

अवनी – "अचानक नहीं पापा, मैंने बहोत पहले अप्लाई किया था, अब रेस्पोंस आया हैं। मैं कल ही आ रही हूँ।"

अगले दिन वह संजय को लेकर स्टेशन पहुँची। संजय ने उसे रोकने की बहुत कोशिश की – "अवनी, मत करो ऐसा। आरव टूट जाएगा। उसका फोन तो आने दो एक बार, तुम बहुत जल्दबाज़ी में निर्णय ले रही हो।"

अवनी ने भीगी आँखों से कहा – "नहीं संजय, हो सकता है अभी आरव को बहुत तकलीफ़ हो मेरे इस निर्णय से, लेकिन अगर मैं उसकी ज़िन्दगी में रही, तो उसकी ज़िन्दगी और कठिन हो जाएगी। तुमसे विनती है, उसे मत बताना कि मैं असम जा रही हूँ। प्लीज़..."

संजय की आँखों से भी आँसू बह निकले। दोनों चुपचाप रोते रहे। मगर अवनी ने एक कठोर निर्णय ले लिया था। वह वापिस ग्वालियर लौट गई, और आरव को बिना बताए हमेशा के लिए उससे दूर हो गई।

ग्वालियर पहुँचने के बाद से ही अवनी हमेशा उदास और चुप-चुप सी रहने लगी थी। उसके चेहरे की चमक कहीं गुम हो चुकी थी। मम्मी-पापा और अवन्ती अक्सर उसे इस हालत में देखते तो उनका दिल रो पड़ता था। वे चाहते हुए भी उससे कुछ

पूछ नहीं पाते थे। ऐसा लगता मानो अवनी के चारों ओर कोई अदृश्य दीवार खड़ी हो गई हो, जिसमें कोई भी झाँक नहीं पा रहा था।

एक रात डिनर के बाद जब सब अपने-अपने कमरों में चले गए, अवनी अपने कमरे में आई। अचानक उसका जी मचलने लगा और उसे तेज़ उल्टियाँ होने लगीं। वह हड़बड़ा गई। उसी पल उसे ख्याल आया कि उसके पीरियड्स भी मिस हो चुके हैं। उसके पैरों तले ज़मीन खिसक गई। अगले ही दिन सुबह-सुबह वो मेडिकल स्टोर गई और प्रेग्नेंसी टेस्ट किट लेकर आई। काँपते हाथों से टेस्ट किया और उसका डर सच साबित हुआ। वो प्रेग्नेंट थी।

उस पल अवनी बुरी तरह टूट गई। कमरे के दरवाज़े बंद करके वह घंटों तक रोती रही। उसकी आँखों से बहते आँसू उसके दिल के दर्द को बयान कर रहे थे। उसे ऐसा लगा मानो दुनिया उसके लिए थम गई हो, आरव और उसके प्यार की निशानी अब उसके पेट में थी, लेकिन अफ़सोस कि वो अब आरव से हमेशा के लिए दूर जा चुकी थी, आरव को कभी पता भी नहीं चल पायेगा कि उसकी कोख में दोनों का प्यार दस्तक दे चूका हैं, यह सोचकर उसका दिल और भी बुरी तरह काँप उठा। इसराज़ को अपने दिल में दबाना कितना कठिन होगा, ये सिर्फ वही जानती थी।

लेकिन उसने ठान लिया कि ये बात वो किसी को नहीं बताएगी। अगले ही दिन, भारी मन और आँसुओं से भरी आँखों के साथ वह असम के लिए रवाना हो गई।

उधर, आरव लगातार अपनी माँ को मनाने की कोशिशें करता रहा। हर दिन वह उम्मीद से बात करता कि शायद आज माँ का दिल पिघल जाए। मगर हालात और बिगड़ते गए। एक दिन अचानक, माँ ने गुस्से में नींद की ढेर सारी गोलियाँ खा लीं। घर में हड़कंप मच गया। उन्हें फौरन अस्पताल में भर्ती कराया गया। डॉक्टरों की मेहनत से माँ की जान बच गई। जब उन्हें होश आया तो आरव का धैर्य टूट गया। उसकी आँखों से आँसू बह निकले। उसने माँ का हाथ कसकर पकड़ा और रोते हुए बोला –"माँ, आप पागल हो गई हो क्या? अगर आपको कुछ हो जाता तो मैं... मैं जी ही नहीं पाता। आप जैसा कहेंगी, मैं वैसा ही करूँगा। लेकिन एक वादा कीजिये, दुबारा कभी ऐसा कदम मत उठाइएगा।"

माँ की आँखों से भी आँसू बहने लगे। वह फूट-फूटकर बोलीं –"बस, तू उस लड़की को हमेशा-हमेशा के लिए भुला दे। मैं यही चाहती हूँ।"

आँखों में आँसू दबाए हुए, आरव ने चुपचाप सिर हिलाकर 'हाँ' कर दी।लेकिन उस 'हाँ' के साथ ही उसका पूरा अस्तित्व जैसे बिखर गया। दो दिन बाद, उसकी ट्रेन भोपाल के लिए थी। जाने से पहले उसने माँ -पापा के पैर छुए। माँ बेहद भावुक हो गईं।

आँखों में आँसू लिए जाते-जाते उसने बस इतना कहा –"माँ... मैं अवनी से शादी नहीं करूँगा। लेकिन, अब ज़िंदगी में कभी किसी और से भी शादी नहीं करूँगा।", इतना कहकर वह भारी दिल और गीली आँखों के साथ वहाँ से चला गया।

माँ सन्न रह गईं। पापा ने धीरे से कहा –"निर्मला, कहीं तुम्हारी ज़िद हमारे बेटे की पूरी ज़िंदगी तबाह ना कर दे।", इतना कहकर वे अंदर चले गए। माँ वहीं बैठी रह गईं, रोती हुई।

भोपाल लौटने के बाद, उस दिन आरव की हिम्मत ही नहीं हुई कि अवनी को फोन करे। लेकिन अगले दिन, हिम्मत जुटाकर वह उसके घर पहुँचा। दरवाज़े की घंटी बजाई, दरवाज़ा खुला, पर सामने एक अनजान शख़्स खड़ा था। आश्चर्य से आरव ठिठक गया।

वो बोला –"जी... अवनी?"

उस शख़्स ने सीधे कहा –"वो तो अब यहाँ नहीं रहती। हमने यह फ्लैट किराए पर लिया है।", और इतना कहकर दरवाज़ा बंद कर दिया।

यह सुनते ही आरव के पैरों तले ज़मीन खिसक गई। वह सन्न खड़ा रह गया - "बिना बताए, वो कहाँ चली गई?" वह भागा-भागा अपने घर आया और बार-बार अवनी को फोन करने लगा। लेकिन उसका नंबर लगातार स्विच ऑफ आ रहा था। बेचैन होकर वह सीधा संजय के पास पहुँचा –"संजय! अवनी अपने फ्लैट में नहीं है। उसका नंबर भी बंद है। वो कहाँ गई? तुम्हें तो पता होगा ना?", उसकी आवाज़ में घबराहट और आँसू दोनों मिले हुए थे।

संजय ने नज़रें झुकाकर धीमे स्वर में कहा – "आरव, वो शायद तुम्हारी माँ का जवाब पहले से जानती थी। इसलिए सब छोड़कर चली गई। कहाँ गई? मुझे भी नहीं पता।"

ग़ुस्से से तड़पते हुए आरव चिल्लाया – "अरे, कैसे नहीं पता? भाई हो तुम उसके! पूछो उसके मम्मी-पापा से, ढूँढो ना उसे!"

संजय की आँखों में भी आँसू आ गए। उसने टूटी आवाज़ में कहा –"हम पूछ चुके, उन्हें भी नहीं पता कि अवनी कहाँ गई।"

आरव गुस्से में तड़पकर बोला – "मैं मान ही नहीं सकता कि उसके मम्मी पापा को पता ना हो, संजय जरूर वो हमसे छुपा रहे हैं, तुम पता करो ना, मैं .... मैं मर जाऊंगा अवनी के बिना..." –कहते हुए आरव वही घुटने के बल बैठ गया रोता हुआ|

संजय चुपचाप निचे सर झुकाए खड़ा था|

ये देखकर आरव पूरी तरह बिखर गया। उसकी आँखें लाल हो गईं, वह काँपते हुए बोला – "उसके मम्मी पापा को भी नहीं पता, ऐसा तो हो नहीं सकता, वो बता नहीं रहे ये अलग बात हैं लेकिन वो कैसे चली गई... बिना बताए... मुझे छोड़कर? संजय, वो जानती थी कि मैं उसके बिना जी नहीं पाऊँगा। वो ऐसा नहीं कर सकती... वो ऐसा कभी नहीं कर सकती|" उसकी हालत इतनी खराब हो चुकी थी कि संजय उसे सँभाल भी नहीं पा रहा था।

कई दिनों तक आरव ने अवनी को ढूँढने की पूरी कोशिश की। सोशल मीडिया, कॉलेज, दोस्तों से पूछताछ, हर जगह मैसेज... लेकिन हर कोशिश बेकार। अंत में वह हार गया। उसकी हालत जल बिन तड़पती मछली जैसी हो गई। अब उसे किसी चीज़ से फर्क ही नहीं पड़ता था। वह भीतर से बिल्कुल खोखला और बेजान हो गया। वो जहां से चला आखिरकार घूमफिरकर वापस वही पहूँच गया, जैसे जिंदगी रत्तीभर भी आगे बढ़ने को तैयार न हो|

संजय सब समझता था। उसका दिल बार-बार चाहता कि सच बता दे कि अवनी असम में है। लेकिन अवनी को दिया हुआ वचन उसे रोक लेता। और सच्चाई यह भी थी कि अब बताकर भी क्या करता? माँ कभी नहीं मानेंगी, और अब दोनों की शादी असंभव थी। आख़िरकार लंबे समय तक इस सदमे में रहने के बाद आरव ने लखनऊ ट्रांसफ़र ले लिया।

इधर जब माँ को पता चला कि वह लड़की खुद ही आरव को छोड़कर चली गई, तो उन्होंने राहत की साँस ली। और बेटे के लिए नई लड़कियाँ ढूँढने लगीं। उधर असम में अवनी ने युग को अपना जीवनसाथी चुन लिया और कुछ महीनों बाद, लखनऊ में आरव की शादी रितु से करवा दी गई, यह था वो मोड़ जहाँ दोनों की ज़िंदगियाँ हमेशा के लिए अलग रास्तों पर मुड़ गईं। एक तरफ़ अवनी आँसुओं और मजबूरी में लिए गए फ़ैसलों के साथ, और दूसरी तरफ़ आरव टूटा हुआ, लेकिन अपनी माँ की ख़ुशियों के लिए बेजान-सा।

अध्याय 13

वर्तमान में

उस रात भी अवनी नींद से कोसों दूर थी। खिड़की के पास रखे सोफ़े पर बैठी वह घंटों तक अतीत के पन्ने पलटती रही। उसकी आँखें छत को ताक रही थीं, लेकिन मन कहीं और भटक रहा था ,उन दिनों में, जब उसकी दुनिया आरव के इर्द-गिर्द घूमती थी। न जाने कितनी देर तक वह अपने ही दर्द और यादों में डूबी रही और आख़िरकार उसी सोफ़ा पर लेटे-लेटे नींद ने उसे घेर लिया।

उधर, उसी रात आरव भी बेचैन था। करवट दर करवट बदलता रहा। उसके दिमाग़ में बार-बार वही सवाल उठता – “आख़िर ऐसी कौन-सी वजह थी कि अवनी मुझे छोड़ गई, और तब, जब वह मेरे बच्चे की माँ बनने वाली थी?”, यह सोचकर उसका दिल एक बार फिर बिखर जाता।

सुबह, जब युग ने देखा कि अवनी अब भी सोफ़े पर ही सोई हुई है। वह पास आकर हल्के से बोला –

“क्या बात है अवनी? आजकल किस सोच में इतनी गुम रहती हो कि यहीं सोफ़े पर सो जाती हो? तुम ठीक तो हो ना?”

अवनी हड़बड़ाकर उठ बैठी और होंठों पर बनावटी मुस्कान के साथ बोली – “अरे नहीं युग, ऐसी कोई बात नहीं, बस कभी-कभी नींद नहीं आती तो यहाँ बैठ जाती हूँ, पता ही नहीं चलता कब नींद लग जाती है। चलो, मैं नहा लेती हूँ, आप आर्यम को उठा दीजिए।”

कहते हुए वो तेज़ क़दमों के साथ बाथरूम की ओर चली गई। युग उसे जाते हुए देखता रहा। उसके मन में बेचैनी थी – “अवनी का बर्ताव आजकल कुछ बदला-बदला क्यों है? क्या परेशानी हो सकती है उसे? मेरी चिंता अलग बात हैं, लेकिन कुछ दिनों से उसकी आखों में बेचैनी की वजह कुछ और ही लग रही हैं”

बाथरूम से निकलकर अवनी ने रोज़ की तरह खुद को घर के कामों में झोंक दिया। नाश्ता और टिफ़िन बनाए, फ़टाफ़ट आर्यम को तैयार किया और उसे स्कूल भेज दिया। फिर बिना रुके कॉलेज चली गई।

इधर युग की हालत भी अब बिगड़ने लगी थी। हॉस्पिटल के चक्कर, डॉक्टरों की मीटिंग्स और लगातार होती कीमोथेरेपी, इन सबसे उसका शरीर कमजोर होता जा रहा था। आखिरकार उसने ऑफिस से वर्क फ्रॉम होम ले लिया। अब बाहर जाना लगभग बंद हो गया था। इसी बीच एक दिन आर्यम के स्कूल से पिकनिक का नोटिस आया। बच्चों को भोजपुर ले जाया जाना था और छोटे बच्चों के साथ उनके पैरेंट्स के जाने की व्यवस्था भी थी।

आर्यम इस पिकनिक को लेकर बेहद उत्साहित था। वह बार-बार मम्मी-पापा से इसके बारे में बात करता। लेकिन अवनी ने साफ़ मना कर दिया। कारण था – युग की तबीयत। इतनी दूर की यात्रा उनके लिए ठीक नहीं थी।

युग ने अवनी को समझाने की कोशिश की –"अवनी , देखो, बच्चों का दिल दुखाना अच्छी बात नहीं है। आर्यम कितना उत्साहित है इस पिकनिक को लेकर। तुम चली जाओ उसके साथ। मैं ठीक हूँ, मेरी चिंता मत करो।", लेकिन अवनी का मन नहीं माना।

उधर, अन्विका ने भी ज़िद पकड़ ली कि वह पिकनिक तभी जाएगी जब आर्यम और अवनी आंटी भी साथ जाएंगे। आरव ने ये बात अपनी माँ को बताई, जो इस समय अभय के घर पर थीं।

निर्मलाजी ने फ़ोन पर कहा –"ठीक है, मैं अवनी से बात करती हूँ। वो मना नहीं करेगी।"

उन्होंने तुरंत अवनी को कॉल किया और अन्विका की ज़िद का हवाला देकर निवेदन किया –"अवनी बेटा, तुम भी आर्यम को लेकर पिकनिक पर चली जाओ। बच्ची का दिल मत तोड़ो।"

लेकिन अवनी ने शालीनता से इंकार कर दिया –"आंटी, मुझे इस बार माफ़ कीजिएगा। मैं नहीं जा पाऊँगी। युग की तबीयत अब ठीक नहीं रहती। मैं उन्हें इस हालत में अकेला छोड़कर नहीं जा सकती।"

इतना कहकर उसने फ़ोन काट दिया। सरलाजी भी वहीं बैठी थीं। उन्होंने अवनी को डाँट दिया –

"अवनी, ये क्या तरीका है बड़ों से बात करने का? क्यों मना कर दिया तुमने? चली जाओ ना। वो बच्ची भी तुम्हारे बिना रह नहीं पाती। युग के साथ मैं हूँ, मैं संभाल लूँगी।"

इस बार अवनी भी चिढ़कर बोल उठी –"अगर उनकी बच्ची ज़िद्दी है तो इसमें मेरी क्या गलती है? हर बार उसकी ज़िद के आगे क्यों झुकें हम? ऐसे करने से तो हम उसकी आदतें और बिगाड़ देंगे। उन्हें चाहिए कि वे अपनी बच्ची को समझाएँ। युग की तबीयत इतनी बिगड़ रही है और उन्हें अपनी बच्ची की ज़िद की चिंता है, हमारी नहीं! हर जगह, हर वक्त मैं उसके लिए उपलब्ध नहीं हूँ।" इतना कहकर वह गुस्से में कमरे के अंदर चली गई। युग और मम्मी अवाक रह गए। अवनी ने आज तक इस लहजे में कभी बात नहीं की थी।

युग उसके पीछे कमरे में गया।उसने धीमे लेकिन सख्त स्वर में कहा – "अवनी, ये कैसी बातें कर रही थी तुम? उस बच्ची अन्विका के लिए ऐसे शब्द कैसे कह दिए? वो तुम्हें कितना चाहती है, तुम्हें माँ जैसा मानती है।"

अवनी का धैर्य टूट गया। वह तुनककर बोली –"हाँ, लेकिन मैं उसकी माँ नहीं हूँ! कि हर बार उसकी उल्टी-सीधी ज़िद पूरी करती रहूँ।"

युग की आवाज़ भी ऊँची हो गई – "अवनी, आजकल तुम्हें हो क्या गया है? कुछ घंटों की ही तो बात है। वैसे भी कॉलेज जाती ही हो तुम रोज़, तो थोड़ी देर के लिए पिकनिक पर क्यों नहीं जा सकती बच्चों को लेकर? दो-तीन दिन के लिए थोड़ी ना जाना है। और मैं इतना भी बीमार नहीं हूँ कि खुद का ख्याल न रख पाऊँ। मम्मी भी हैं यहाँ मेरी देखभाल के लिए।" – युग ने अवनी का हाथ पकड़कर अपनी और खींचा और कहा –"अवनी, हो ना हो, वजह कुछ और है।"

अवनी की आँखें नम हो गईं। वह रोते हुए बोली –"नहीं, दूसरी कोई वजह नहीं है। कॉलेज जाना अलग बात है, लेकिन आपको छोड़कर मैं पिकनिक-विकनिक नहीं जा सकती। आप समझिए ना मेरी बात को..."

आख़िरकार वह सिसक पड़ी। युग ने उसे अपनी बाँहों में समेट लिया। धीरे से कहा – "मैं ठीक हूँ अवनी। तुम चिंता मत करो। तुम जाओ, आर्यम का भी बहुत मन है। उसकी खुशी के लिए ही सही, तुम जाओ। जब वो खुश होगा, तो मुझे भी अच्छा लगेगा।"

अवनी चुप रही, वो जानती थी कि युग आर्यम से कितना प्यार करता हैं, वो उसे उदास नहीं देख सकता| अवनी की खामोशी को ही युग ने स्वीकृति मान लिया।

उसने तुरंत आरव को कॉल किया – "हेलो आरव, हाँ... अवनी और आर्यम भी जाएँगे पिकनिक। तुम कल इन्हें यहीं से साथ लेकर स्कूल ले जाना।"

अवनी का मन अब भी जाने का बिल्कुल नहीं था। लेकिन युग से और बहस करने की उसमें हिम्मत नहीं बची थी। अगले दिन सुबह, आरव अन्विका के साथ अवनी और आर्यम को लेने उनके घर पहुँचा।

अंदर आकर उसने युग और सरलाजी से मुलाक़ात की। कुछ देर की बातचीत के बाद, चारों – आरव, अवनी, आर्यम और अन्विका स्कूल के लिए निकल पड़े।

स्कूल पहुँचने तक गाड़ी के भीतर अजीब-सा सन्नाटा पसरा रहा। पिछली सीट पर आर्यम और अन्विका की मस्ती, उनकी खिलखिलाहट गूँज रही थी, पर सामने की सीटों पर बैठा आवरण-सा मौन आरव और अवनी के दिलों पर भारी था। दोनों को लग रहा था कि एक-दूसरे से कुछ कहना चाहिए, मगर क्या कहें?बीते हुए सालों की दीवारें उनके बीच खड़ी थीं।

आख़िरकार आरव ने ही चुप्पी तोड़ी। उसकी आवाज़ धीमी, मगर चिंता से भरी थी – "युग का इलाज ठीक चल रहा है न? मेरा मतलब, डॉक्टर सब सही हैं न? या फिर अगर ज़रूरत हो तो हम उसे मुंबई, दिल्ली या कहीं और भी ले जा सकते हैं।"

अवनी की नज़रें खिड़की के बाहर जमी रहीं। उसने गहरी साँस भरते हुए कहा – "नहीं, डॉक्टर तो बहुत अच्छे हैं। युग के लिए तो खास तौर पर मुंबई से स्पेशल डॉक्टर ही आते हैं। बस उनकी तबीयत इन दिनों थोड़ी गिर रही है। डॉक्टर कह रहे हैं कि किमियोथैरेपी के साइड इफेक्ट्स हैं, चिंता की बात नहीं।"

आरव ने कुछ पल चुप रहकर फिर धीरे से कहा – "अवनी, अगर तुम्हें मेरी किसी भी तरह की मदद चाहिए, तो हिचकिचाना मत। फाइनेंशियली भी अगर कोई दिक्कत हो तो मुझे बता देना।"

अवनी का दिल धक से रह गया। उसने एक नज़र भरकर आरव को देखा। वो आरव, वही पुराना आरव, जो कभी उसकी हर तकलीफ़ में उसके आगे ढाल बनकर खड़ा रहता था, आज फिर उसके सामने खड़ा था।उसकी पलकों में नमी तैर आई। जवाब देने को शब्द नहीं मिले, बस धीमी-सी "हम्म" कहकर उसने नज़रें मोड़ लीं और खिड़की से बाहर देखने लगी। आरव ने एक लम्बी साँस छोड़ी और वापस सड़क पर नज़रें जमा लीं। कुछ ही मिनटों में वे लोग स्कूल पहुँच गए।

पिकनिक का माहौल बच्चों के लिए जन्नत जैसा था। आर्यम और अन्विका दोनों एक ही सीट पर बैठ गए, खिलखिलाते हुए। लेकिन बस में चढ़ते ही आरव और अवनी की धड़कनों में हलचल मच गई।

उन्हें अपने कॉलेज की वो पिकनिक याद आ गई, जब उनकी दुनिया एक-दूसरे के इर्द-गिर्द घूमती थी।

आज हालात बदल चुके थे, मगर यादें तो वहीं की वहीं थीं। रास्ते भर बच्चे, पेरेंट्स और टीचर्स हँसी-मजाक में मशगूल रहे, लेकिन आरव और अवनी बस खामोशी में डूबे रहे।

भोजपुर पहुँचकर बच्चों और उनके माता – पिता के लिए खेल आयोजित किए गए। चारों तरफ़ हँसी-खुशी का माहौल था। इसी बीच आर्यम की क्लास टीचर, शिखा मैडम, अवनी की ओर बढ़ीं और मुस्कुराकर बोलीं – "मिसेज श्रेष्ठ, हम सब जानते हैं कि आपकी आवाज़ कितनी प्यारी है। आज भी कुछ सुनने को मिल जाए, तो सबका दिन बन जाएगा।"

अवनी थोड़ी झिझकी। उसकी नज़र अनायास ही आरव की ओर उठ गई। आरव कोने में चुपचाप खड़ा था। उसने हल्की-सी मुस्कान के साथ पलकें झपका दीं, जैसे कह रहा हो –"गाओ।"

अवनी ने आँखें बंद कीं। गहरी साँस भरी और स्वर छेड़ दिए – "प्यार के लिए चार पल कम नहीं थे..."

उसकी मधुर आवाज़ ने माहौल को थाम सा दिया। इस गीत के शब्दों ने आरव के दिल को जैसे अन्दर तक चीर दिया , हर शब्द आरव के दिल में उतरता चला गया, खासकर गीत की अंतिम पंक्ति – "तुम्हे हैं पता, बेवफ़ा हम नहीं थे", मानो अवनी आरव को बीते समय की परिस्थिति समझाना चाह रही हो,. अवनी की आँखें भीगी थीं, हर सुर में उसका छुपा दर्द बह रहा था।

गीत ख़त्म हुआ, कुछ गेम्स हुए और थोड़ी देर बाद सबने मिलकर लंच किया। पिकनिक का समापन हुआ और सब बस से लौट चले। वापसी के दौरान आर्यम पिछली सीट पर सो गया और अन्विका अवनी की गोद में। आरव ने गाड़ी को सीधे अपने घर की ओर मोड़ लिया।

अवनी ने चौंककर कहा –"ये… तुम अपने घर क्यों ले आयें? हमें तो …."

आरव ने नरम स्वर में बीच में ही कहा –"दोनों बच्चे सो रहे हैं। मैं चाहता हूँ थोड़ा और सो लें। जब आर्यम उठ जाएगा, तब मैं तुम्हें घर छोड़ दूँगा।", अवनी चुप रही।

घर पहुँचकर जब अवनी अन्विका को गोद में लेकर उतरने लगी और आरव ने हाथ बढ़ाया, लेकिन अन्विका रोते हुए अवनी से चिपक गई।

अवनी ने धीमे स्वर में कहा – "रहने दो, मैं इसे बेडरूम में सुला देती हूँ। तुम आर्यम को उठा लो।"

अवनी अंदर चली गई। आरव ने आर्यम को बाँहों में उठाया। निंद में डूबा आर्यम बुदबुदाया –"पापा…", और कसकर आरव से चिपक गया। आरव का दिल फट पड़ा। कैसी विडम्बना थी… अपना ही बेटा, जिसे उसे "किसी और का बेटा" मानकर जीना पड़ रहा था। वो उसे बेडरूम में ले गया, अवनी पहले ही अन्विका को सुला चुकी थी। आरव ने आर्यम को अन्विका के पास लिटा दिया और उसके बालों पर हाथ फेरने लगा।

अवनी ये दृश्य देख आँसुओं से भीग गई,लेकिन जल्दी से अपने आँसू पोंछ लिए। एक पल के लिए दोनों की नज़रें मिलीं। फिर अवनी चुपचाप उठी और हॉल में चली गई।

आरव भी कुछ देर बाद किचन में गया। उसने दो कप कॉफी बनाई और हॉल में ले आया।

कप आगे बढ़ाते हुए बोला – "कॉफी…"

अवनी ने उसकी ओर देखा, कप लिया और नज़रें झुका लीं। आरव भी सोफे पर उसके पास ही बैठ गया।

दोनों चुपचाप कॉफी पी रहे थे कि अचानक बाहर तेज़ हवाएँ चलने लगीं। खिड़की के पास रखी आरव की एक तस्वीर नीचे गिर पड़ी। अवनी जल्दी से उठी, तस्वीर उठाई और वापस टेबल पर रखी। हवा उसकी ज़ुल्फ़ों को बिखेर रही थी। आरव उस पल को देखता रह गया। उसने कॉफी का कप नीचे रखा और धीरे-धीरे अवनी के पीछे जाकर खड़ा हो गया।

वो उसके बिलकुल क़रीब था, उसकी उड़ती ज़ुल्फ़ों की खुशबू उसके दिल की गहराइयों तक उतर रही थी।

एक पल के लिए उसे लगा जैसे वक्त थम गया हो।

अवनी उस तस्वीर को बड़ी देर तक निहारती रही। ये वही तस्वीर थी—आरव की, जो उसने गोवा ट्रिप के दौरान खींची थी। उस तस्वीर में आरव की आँखों में वही चमक थी, वही मासूम खुशी, क्युकि ठीक उस तस्वीर से कुछ ही देर पहले आरव ने उसके आगे शादी का प्रस्ताव रखा था। उस पल की याद आते ही अवनी का

दिल भीग गया। उसकी आँखों में आँसू भर आए। वो तस्वीर, वो मुस्कान, और आज का यह सच—सब उसे भीतर तक तोड़ रहे थे।

तभी उसे अचानक अहसास हुआ कि आरव उसके बिलकुल पीछे खड़ा है। वो पलटी ,आरव उसके एकदम करीब था। अवनी के कदम लड़खड़ाए, वो घबराई और तुरंत एक-दो कदम पीछे हट गई, लेकिन आरव आगे बढ़ा… और अवनी की घबराहट और बढ़ गई, उसकी आँखों से आँसू बहने लगे।

वो द्वंद में थी—न युग से बेवफ़ाई कर सकती थी…और न ही आरव को अपने करीब आने से रोक पा रही थी। उसने घबराहट में आँखें बंद कर लीं, लेकिन आँसू लगातार बहते रहे। आरव उसके बेहद करीब आया, फिर अचानक रुक गया। उसने अवनी को एकटक देखा और फिर धीमे स्वर में बोला—"आँखें खोल दो अवनी… घबराओ मत। मैं कुछ गलत नहीं करूँगा तुम्हारे साथ। मैं जानता हूँ, अपनी और तुम्हारी मर्यादाओं को।"

ये कहकर आरव पीछे हट गया। अवनी ने धीरे-धीरे आँखें खोलीं… देखा तो आरव उससे दूर जा चुका था।

वो कुछ दूरी पर जाकर अवनी की ओर पीठ करके खड़ा हो गया।

फिर टूटी हुई आवाज़ में बोला— "पता है अवनी, तुम्हारे चले जाने के बाद मैं बिखर सा गया था। प्यार से नफ़रत हो गई थी मुझे। कितना ढूँढ़ा तुम्हें… हर जगह। कॉलेज में… सोशल मीडिया पर… हर कोने में।

लेकिन तुम कहीं नहीं मिली, संजय भी कुछ बताने को तैयार नहीं था। ढूँढ़ते-ढूँढ़ते मैं थक इतना थक गया कि मैंने भोपाल छोड़ दिया, तोड़ दिया था नाता इस शहर से, जहां तुम्हारी यादें बसती थी, लखनऊ गया, तो माँ ने शादी करवा दी। और जब से अन्विका मेरी ज़िंदगी में आई…तभी मुझे जीने की एक नयी वजह मिली, वरना मैं तो कब का मर चुका था, अवनी…"

आरव की आवाज़ भर्रा रही थी।आँखों से आँसू बहे जा रहे थे। वो बरसों का दर्द आज अवनी के सामने उड़ेल देना चाहता था -"जब दुबारा इस शहर में लौटकर आया, और तुम्हें देखा…तो मेरे सारे सवाल फिर से जाग गए। क्यों छोड़ गई थी तुम मुझे उस वक़्त?क्यों किसी और के पास चली गई?"

ये कहते हुए आरव रो पड़ा, और अवनी सिर झुकाए, किसी गुनाहगार की तरह रोती रही।

अचानक आरव पलटा, उसकी आँखों में एक चमक थी—"लेकिन अवनी... धीरे-धीरे अब मुझे मेरे सवालों के जवाब मिल रहे हैं। मैं जानता हूँ कि युग तुम्हारा पति है...लेकिन तुम्हारे दिल के किसी कोने में...मेरी यादें अब भी ज़िंदा हैं। और मैं ये भी जानता हूँ अवनी...कि... आर्यम... युग का नहीं...मेरा बेटा है।"

ये सुनते ही अवनी के पैरों तले ज़मीन खिसक गई।उसने आरव को देखा... फिर मुँह पर हाथ रखकर ज़ोर-ज़ोर से रोने लगी, आरव तुरंत उसके पास आया, उसके कंधों पर हाथ रखकर बोला— "बस अवनी... अब मुझे बस एक सवाल का जवाब चाहिए, अगर तुम प्रेग्नेंट थी...तो तुम मुझे छोड़कर क्यों चली गईं?

मेरा इंतज़ार क्यों नहीं किया? हो सकता था, ये जानकर कि तुम मेरे बच्चे की माँ बनने वाली हो...

मैं हमारे लिए कोई ठोस कदम उठाता। माँ को भी मना लेता, लेकिन तुमने तो मुझे ये मौका तक नहीं दिया, मेरा इंतज़ार तक नहीं किया, क्यों अवनी? ऐसी क्या मजबूरी थी... कि जब तुम्हें मेरी सबसे ज़्यादा ज़रूरत थी...तुमने मुझे छोड़ दिया?"

अवनी फूट-फूटकर रोती हुई ज़मीन पर बैठ गई, आँसू उसके गालों से होते हुए ज़मीन भिगो रहे थे। आरव भी वहीं बैठ गया। उसकी आवाज़ काँप रही थी— "अवनी... मैं आज भी अंदर से बहुत खाली हूँ। बहुत मिस करता हूँ तुम्हें। देखो न... तुम मेरे सामने हो... मेरे पास हो... लेकिन तुम मेरी नहीं, अब किसी और की हो चुकी हो। मैं तुम्हें देख तो सकता हूँ...लेकिन छू नहीं सकता..."

ये कहते हुए आरव रोता हुआ अवनी के पास और झुक गया। उसने अपना सिर अवनी की गोद में रख दिया - "अवनी... मैं बहुत अकेला हूँ तुम्हारे बिना, जानता हूँ... कि अब तुम मेरी कभी नहीं हो सकती। फिर भी दिल तुम्हारी ओर क्यों खिंचा चला जाता है? जीना तो कब का भूल चुका था, साँस लेना तक मुश्किल हो गया था, मैं बहुत तड़पा हूँ अवनी तुम्हारे बिना, तुम सोच भी नहीं सकती..."

आरव किसी छोटे बच्चे की तरह रो रहा था। उसकी नाक से बहते आँसू वो अवनी के दुपट्टे से पोंछ रहा था। अवनी काँपते हाथों से उसके सिर पर हाथ फेरने लगी। उसके बालों को सहलाने लगी। आँसू उसके भी रुक नहीं रहे थे। कुछ देर बाद आरव का मन हल्का हुआ। उसने धीरे से अपना सिर अवनी की गोद से हटाया। एक नज़र उसे देखा, अवनी भी भीगी पलकों से उसे देख रही थी।

आरव ने टूटी आवाज़ में कहा—"माफ़ करना अवनी, मुझे ये सब नहीं कहना चाहिए था। ना ही इस तरह तुम्हारी गोद में सिर रखने का मेरा कोई हक़ है।"

वो उठकर बालकनी में चला गया। खुद को सँभालने की कोशिश करता हुआ, मगर आँसू फिर बह निकले। अवनी भी उठी, बालकनी में आई, उसने आरव का हाथ पकड़ा और उसे अपनी ओर घुमा दिया। दोनों की आँखें आँसुओं से भरी थीं। आरव बोला—"जानती हो अवनी? तुम्हारे बिना ये जिन्दगी गुज़र तो रही हैं…लेकिन मुझसे गुजारी नहीं जा रही।"

आरव की बात सुनते ही अवनी टूट गई, उसने अपने दोनों हाथ आरव के चेहरे पर रख दिए, आँखों से बहते आँसुओं के साथ उसने आरव का चेहरा ढक लिया, और उन्ही हाथों को चूम लिया। फिर अचानक रोती हुई बेडरूम की ओर भाग गई, बिना कुछ कहे।

आरव बालकनी में खड़ा बहुत देर तक बिलखता रहा। और अवनी बेडरूम में जाकर बच्चों के पास ज़मीन पर बैठ गई।उसने घुटनों में मुँह छुपा लिया और रोने लगी। उस पल दोनों का दर्द… दोनों की तड़प…

दोनों की हालत…शायद ही कोई समझ सकता था।

आर्यम अचानक नींद से जागा और माँ को ज़मीन पर बैठे आँसुओं में भीगा देखा। वह धीरे से उठकर उनके पास आया और मासूमियत से बोला – "मम्मी, आप क्यों रो रही हो? पापा की याद आ रही है क्या?"

आर्यम को सामने देखकर अवनी टूट गई। उसने उसे खींचकर अपने सीने से कस लिया और फूट-फूटकर रोने लगी। बच्चे ने अपनी नन्ही हथेलियों से माँ का चेहरा थामा और भोलेपन से कहा –"चलो मम्मी... घर चलते हैं... पापा के पास।"

अवनी ने भर्राए गले से सिर हिलाया, आँसू पोंछे और आर्यम को गोद में उठाकर बाहर निकलने लगी। तभी सामने से आरव आ गया।

अवनी ने नज़रें झुका लीं और धीमे स्वर में बोली – "आरव, हमें अब चलना चाहिए, शाम होने वाली है। लेकिन अन्विका तो सो रही है, मैं कैब बुला लेती हूँ। तुम बेवजह परेशान मत हो।"

आरव ने उसकी ओर देखे बिना कहा –"उसकी ज़रूरत नहीं। मैंने संजय को कॉल कर दिया है, वो आ ही रहा है। वो तुम दोनों को घर छोड़ देगा।"

इतने में डोरबेल बजी। आरव ने दरवाज़ा खोला तो सामने संजय, उसकी पत्नी और बेटा खड़े थे। वे सब अंदर आए। आर्यम और कुश खिलखिलाते हुए खेल में लग गए। संजय की पत्नी ने अवनी को गले लगाया। पर जब संजय से दोनों की आँखें मिलीं, तो उसे समझने में देर नहीं लगी कि दोनों ने आज अपने दिल का बोझ एक-दूसरे के सामने खोल दिया।

कुछ देर बाद संजय अपनी पत्नी और बेटे के साथ अवनी और आर्यम को उसके घर तक छोड़ने आया, फिर अपनी पत्नी और बेटे को अवनी के घर छोड़कर लौटकर वह फिर आरव के पास आ गया। इस समय अन्विका उठ चुकी थी और आरव उसे नाश्ता करवा रहा था।

संजय पास आया, अन्विका के सिर पर प्यार से हाथ फेरते हुए धीमे स्वर में बोला –"आरव, तुम ठीक हो?"

आरव ने उसकी ओर देखा, अचानक खड़ा हो गया और गहरी भर्राई आवाज़ में फट पड़ा –"संजय, तुम्हें पता था ना ... आर्यम... मेरा बेटा है?", कहते-कहते उसकी आँखें भर आईं और आँसू ढलक पड़े।

संजय ने सिर झुका लिया। उसकी आँखें भी नम हो गईं। उसने बस हल्के से "हूँ..." में जवाब दिया।

आरव गुस्से में कांप उठा। उसने चीखकर कहा –"मतलब तुम जानते थे? जानते थे कि आर्यम मेरा बेटा है, फिर भी संजय, तुमने इतनी बड़ी बात मुझसे छिपाई?"

संजय ने आँखें मूँद लीं, गहरी साँस ली और टूटी आवाज़ में बोला –"आरव... जब अवनी का परिवार भोपाल शिफ्ट हुआ और मैं उससे मिलने गया... तो उसकी गोद में तीन महीने का बच्चा था। मैंने उसे देखा तो मुझे शक हुआ, क्योंकि मैं जानता था... अवनी तुमसे जुदा होकर इतनी जल्दी किसी और के करीब नहीं जा सकती। जब मैंने उस नन्हें आर्यम को गोद में लिया... अवनी की आँखें आँसुओं से भरी हुई थीं। मैं चुपचाप उसे देखता रहा... और वो बस यही कह पाई... "संजय... ये आरव के प्यार की निशानी है।" उसकी बात सुनकर मेरा दिल भी चकनाचूर हो गया। लेकिन उसी पल अवनी ने मुझसे वचन लिया कि ये राज मैं कभी तुमसे शेयर ना करूं। मैं... मजबूर था मेरे दोस्त... मुझे माफ़ कर दो।"

संजय की आँखों से आँसू बह निकले। आरव की आँखों में आक्रोश और पीड़ा थी। वह काँपती आवाज़ में बोला –"तो फिर संजय, तुम ये भी जानते होंगे कि वो मुझे छोड़कर क्यों गई? मेरा लखनऊ से लौटने का इंतज़ार क्यों नहीं किया?"

संजय ने सिर उठाया उसने धीमी लेकिन दृढ़ आवाज़ में कहा –"हाँ आरव, मैं जानता हूँ। तुम्हारे लखनऊ जाने से एक दिन पहले मैं अवनी से मिला था। उस दिन वो बहुत खुश थी, उसे पूरा भरोसा था कि तुम अपनी माँ को मना लोगे और तुम्हारा रिश्ता शादी तक पहुँच जाएगा। लेकिन,उसी दिन अवनी को अभय का फ़ोन आया और.........और फिर आंटी ने अवनी से बात की। उन्हें तुम्हारे और अवनी के रिश्ते के बारे में सब पता चल चुका था। यहाँ तक कि उसके तलाक़ की बात भी...

आरव... उस दिन आंटी ने अवनी को बहुत बुरी तरह अपमानित किया। उसे तुम्हारी ज़िंदगी से दूर रहने का आदेश दिया। यहाँ तक कह दिया कि अगर अवनी ने तुम्हारा साथ नहीं छोड़ा, तो वो अपनी जान दे देंगी। उन्होंने अवनी को कसमें खिला दीं कि वो न सिर्फ तुमसे अलग हो जाए, बल्कि तुम्हें इस बारे में कभी बताए भी नहीं।

आरव, उस दिन मैंने अवनी को बुरी तरह टूटते हुए देखा। वो जान चुकी थी कि तुम्हारी माँ इस रिश्ते को कभी स्वीकार नहीं करेंगी। फिर भी... तुम्हारे जाने के बाद उसने 2-3 दिन तुम्हारे फ़ोन का इंतज़ार किया।

लेकिन जब तुम्हारी तरफ़ से कोई जवाब नहीं आया, तो वो समझ गई कि तुम भी माँ की नाराज़गी की वजह से आगे नहीं बढ़ पा रहे। और अवनी ... तुम्हारे और तुम्हारी माँ के रिश्ते को कभी खराब नहीं करना चाहती थी।

इसीलिए उसने ना कोई मैसेज किया... ना बार-बार फ़ोन... जैसे दूसरी लड़कियाँ करतीं। उसने तुम्हें मजबूर करने की जगह, ख़ुद को ही तुम्हारी ज़िंदगी से निकाल दिया।

वो चुपचाप सब छोड़कर चली गई। हाँ, जाते-जाते उसने मुझे बताया था कि वो असम जा रही है। लेकिन उसने मुझसे वचन लिया कि मैं तुम्हें कभी कुछ नहीं बताऊँगा। न उसकी मजबूरी, न उसका पता, कुछ भी नहीं। उस वक़्त वो ख़ुद भी नहीं जानती थी कि वो माँ बनने वाली है। आरव... मैं चाहकर भी तुम्हें कुछ नहीं बता सका।", संजय की आवाज़ टूट गई।

ये सब सुनते ही आरव के पैरों तले ज़मीन खिसक गई। दिल दहल गया। अब उसे सच समझ आ गया था – उसकी माँ ही उनके बीच दीवार बन गई थी। और आज... वही माँ अवनी जैसी बहू चाहती है!

उसके भीतर आक्रोश और वेदना का ज्वालामुखी फट पड़ा। आँसुओं का सैलाब उमड़ आया। वह हिचकियों में फफक पड़ा और बार-बार बस यही कहता रहा – "माँ... मेरी माँ ही मेरी खुशियों की दुश्मन बनी... अवनी... अवनी... तुमने इतना सब कुछ अकेले कैसे सहा? और मैं? मैं हर चीज के लिए बस तुम्हे ही दोष देता रहा"

संजय उसके पास बैठा उसे सँभालने की कोशिश करता रहा, मगर आरव के दर्द का समंदर उस रात थमने का नाम नहीं ले रहा था| सच्चाई सामने आने के बाद आरव के मन में अवनी के लिए बची-खुची कड़वाहट भी पूरी तरह धुल चुकी थी। अब वह उसके लिए सिर्फ़ वही पुराना आरव था, जिसके दिल में कहीं न कहीं अवनी लिए केवल चिंता बची रह गई थी।

इसी बीच एक रात अचानक युग की तबियत बिगड़ गई। उसके सीने में भारीपन और साँस लेने में तकलीफ़ होने लगी। अवनी घबराकर बार-बार पानी पिलाने लगी लेकिन हालात काबू में नहीं आए। आधी रात का समय था, और वह अकेले युग को हॉस्पिटल ले जाने की हिम्मत नहीं कर पा रही थी।

उसने सबसे पहले संजय को कॉल किया लेकिन कॉल बार-बार आउट ऑफ़ रीच जा रहा था। घबराहट में काँपते हाथों से उसने आरव का नंबर मिलाया।

फ़ोन की घंटी बजी और आरव ने देखते ही रिसीव कर लिया।

"अवनी? इतनी रात को? क्या बात है?" – उसकी आवाज़ में बेचैनी साफ़ थी।

अवनी रोते हुए बोली –"आरव, प्लीज़... अगर घर आ सकते हो तो तुरंत आ जाओ। युग की तबियत बहुत बिगड़ रही है, मैं अकेले उन्हें हॉस्पिटल नहीं ले जा पाऊँगी।“

"हाँ अवनी , मैं बस अभी आ रहा हूँ। तुम बिल्कुल मत घबराना।"

उसने सोती हुई अन्विका को गोद में उठाया, कार की पिछली सीट पर लेटाया और गाड़ी सीधी अवनी के घर की ओर दौड़ा दी। पंद्रह मिनट में ही वह पहुँच गया।

सरलाजी ने दरवाज़ा खोला। आरव ने तुरंत अन्विका को उनकी गोद में दे दिया और बिना देर किए युग के कमरे की ओर भागा। वहाँ का नज़ारा देख उसका दिल दहल गया।

अवनी युग के सिरहाने बैठी उसे सँभालते हुए फूट-फूटकर रो रही थी और युग को साँस लेने में बहोत तकलीफ़ हो रही थी। आरव ने बिना एक पल गवाए युग को सहारा दिया और बाहर ले आया।

अवनी ने जाते-जाते सरलाजी से कहा –"मम्मी, आप प्लीज़ अन्विका और आर्यम का ध्यान रखिए, हम लोग अभी हॉस्पिटल जा रहे हैं।"

सरलाजी खुद घबराई हुई थीं लेकिन सिर हिलाकर बच्चों के पास चली गईं।

कुछ ही देर में आरव, अवनी और युग हॉस्पिटल पहुँच गए। अवनी ने पहले ही डॉक्टर से फ़ोन पर बात कर ली थी, इसलिए डॉक्टर तुरंत युग को इमरजेंसी में ले गए। अवनी का रो-रोकर बुरा हाल था। आरव उसके कंधे पर हाथ रखकर बार-बार कहता रहा –"अवनी , हिम्मत रखो, सब ठीक होगा।"

सरलाजी लगातार फ़ोन पर युग का हाल पूछती रहीं। लगभग एक घंटे बाद डॉक्टर बाहर आए। अवनी दौड़कर उनके पास गई और कांपते स्वर में पूछा –"डॉक्टर, क्या हुआ? अब कैसे हैं युग?"

डॉक्टर ने भरोसा दिलाया –"घबराने की बात नहीं है। ये कीमोथैरेपी के साइड इफ़ेक्ट्स हैं। युग बहुत कमज़ोर हो चुके हैं। अभी वे स्टेबल हैं। कल शाम तक डिस्चार्ज कर देंगे। आप चिंता मत कीजिए।"

अवनी ने राहत की साँस ली। आँखों से आँसू बहते रहे मगर चेहरे पर चैन लौट आया। उसने तुरंत सरलाजी को फ़ोन किया और सब बताया।

फ़ोन रखते ही उसने आरव की ओर देखा और धीरे से कहा –"आरव... थैंक यू सो मच, इतनी रात को मेरे साथ यहाँ आने के लिए। अन्विका परेशान हो रही होगी, तुम चाहो तो घर चले जाओ। अगर वो उठ गई और तुम्हें या मुझे आसपास नहीं देखा तो बहुत रोएगी।"

आरव ने हल्की मुस्कान के साथ कहा –"कैसी बातें कर रही हो? अपनों से कोई थैंक यू कहता है क्या? रही बात अन्विका की, अब वो सीधे सुबह ही उठेगी, तुम चिंता मत करो। फिर भी तुम्हारी तसल्ली के लिए मैं आंटी को कॉल कर देता हूँ।"

उसने तुरंत सरलाजी को फ़ोन लगाया –"आंटी, मैं यहीं हॉस्पिटल में रुका हूँ, अवनी के साथ। कभी भी कुछ ज़रूरत पड़ सकती है। आप ज़रा अन्विका का ध्यान रखिएगा, वो उठी तो नहीं ना?"

सरलाजी ने आश्वस्त किया –"अन्विका तो गहरी नींद में है। और बेटा, तुमने बिल्कुल ठीक किया। तुम वहीं रुको। अवनी अकेले घबरा रही होगी। अगर अन्विका उठी तो मैं तुम्हें तुरंत कॉल कर दूँगी।

फ़ोन कटने के बाद अवनी ने कृतज्ञता से आरव की ओर देखा। आँखों में आँसू तैर रहे थे लेकिन उनमें एक सुकून भी था। फिर वह वापस युग के पास चली गई।

आरव भी उसके पीछे कमरे में आया। उसने धीमे स्वर में कहा – "अवनी , तुम चाहो तो घर चली जाओ। मैं यहाँ युग के पास रुकता हूँ। तुम बच्चों के साथ रहोगी तो मुझे भी सुकून रहेगा।"

अवनी का मन युग के पास से हटने का नहीं था। मगर आरव की बात में सच्चाई थी। आर्यम तो ठीक था लेकिन अन्विका अकेले नहीं रह पाती। सरलाजी के बस की बात भी नहीं थी उसे सँभालना।

कुछ पल युग का हाथ थामे, उसके गाल सहलाते हुए अवनी खामोश बैठी रही। आरव उसे गहराई से देखता रहा, जैसे उसके हर आँसू को अपने दिल में समेट लेना चाहता हो। आख़िरकार अवनी उठी। आरव से कार की चाबी ली और दरवाज़े तक गई। जाने से पहले पलटकर एक बार फिर युग और आरव दोनों को देखा... और बिना कुछ कहे वहाँ से चली गई।

गाड़ी चलाते समय उसके मन में विचारों का तूफ़ान था - "ये कैसी विडंबना है भगवान? एक तरफ़ अतीत, एक तरफ़ वर्तमान... दोनों एक साथ।आरव... जिसे मैंने बीच मझधार में छोड़ दिया... वो आज भी मेरी मदद के लिए एक पैर पर खड़ा हो जाता है। मैं उसका सामना नहीं कर पाती... हमेशा यही सोचती हूँ कि मैंने उसके साथ ग़लत किया।और युग... बेचारा... उसे तो ये तक नहीं पता कि आरव ही मेरा अतीत है, आर्यम का पिता है।वो अपनी ज़िंदगी की जंग लड़ रहा है... और मैं... दो दुनियाओं के बीच पीसी जा रही हूँ। ये कैसी परीक्षा है मेरी?"

आँखों से आँसू बहते रहे, और स्टीयरिंग पकड़े उसके हाथ काँपते रहे। घर पहुँचकर उसने सरलाजी को सब विस्तार से बताया। फिर सीधा बच्चों के पास चली गई और उनके बीच बैठकर सिसकते हुए रात गुज़ार दी। सुबह होते ही अवनी जल्दी

उठी। उसने नाश्ता तैयार किया और दोनों बच्चों को तैयार करके हॉस्पिटल जाने की तैयारी करने लगी। तभी अन्विका ज़िद करने लगी—आंटी , मैं भी हॉस्पिटल जाऊँगी... प्लीज़..."

अवनी ने पहले उसे समझाने की कोशिश की, लेकिन जब अन्विका नहीं मानी तो उसे साथ ले लिया। हॉस्पिटल पहुँचने पर अवनी ने राहत की साँस ली, क्योंकि युग को होश आ चुका था। उसे स्थिर देखकर उसके चेहरे पर खुशी झलक उठी। अन्विका दौड़कर आरव की गोद में चढ़ गई।

युग ने धीमे स्वर में कहा—"अवनी, पूरी रात आरव ने मेरा बहुत खयाल रखा।"

अवनी ने आरव की ओर देखा और हल्की-सी मुस्कान उसके होंठों पर आ गई- "युग, मैं नाश्ता लाई हूँ, आप नाश्ता कर लीजिए, मैं डॉक्टर के पास से होकर आती हूँ।" फिर उसने आरव की ओर देखते हुए कहा— "आरव... तुम चाहो तो घर चले जाओ। थक गए होगे... थोड़ा आराम कर लेना, फिर फ्रेश होकर आ जाना। मम्मी नाश्ता लगा देंगी। अन्विका को मैंने खिला दिया है।"

इतना कहकर वह डॉक्टर के केबिन की ओर चली गई। उधर, युग अन्विका से बातें करता रहा। थोड़ी देर बाद अन्विका ने ज़िद शुरू कर दी—"मुझे मोबाइल में गाने देखना हैं!"

आरव ने मुस्कुराकर उसे सोफ़े पर बैठाया और बच्चों वाले वीडियो खोलकर मोबाइल पकड़ा दिया। तभी एक नर्स आई और बोली—"सर, इनकी रिपोर्ट्स आ गई हैं। आप रिसेप्शन से रिसीव कर लीजिए और पेमेंट भी कर दीजिए।"

आरव ने सिर हिलाया और बाहर चला गया। इधर, अन्विका मोबाइल पर खेलते-खेलते ग़लती से गैलरी में चली गई। वह फोन लेकर युग के पास आ गई और बोली— "अंकल, देखो ना, मेरा गाना नहीं बज रहा।"

युग ने हँसते हुए उसके हाथ से फोन लिया। जैसे ही स्क्रीन पर नज़र पड़ी, उसकी सांस अटक गई। गैलरी में अवनी की पुरानी तस्वीर थी। उसने तुरंत अपने फ़ोन में विडियो लगाकर अन्विका को पकड़ा दिया और आरव का फ़ोन देखने लगा, उसने गौर से देखा—हाँ,ये वही अवनी थी, सालों पहले की तस्वीर। युग चौंक उठा—आरव के फोन में अवनी की पुरानी तस्वीर?

उसने चुपचाप फोन में और देखा। एक-एक कर कई पुरानी तस्वीरें सामने आ गईं। कॉलेज की पिकनिक, गोवा की यादें, उनमें संजय, विवेक और बाकी दोस्त भी थे।

पर सबसे ज्यादा तस्वीरें आरव और अवनी की साथ में थीं—ऐसी तस्वीरें, जिनसे साफ झलक रहा था कि दोनों के बीच गहरा रिश्ता रहा है।

एक वीडियो भी मिला—अवनी का कॉलेज पिकनिक में गाया हुआ गाना। युग के पैरों तले ज़मीन खिसक गई। आँखें फैल गईं और हाथ काँपने लगे। उसे विश्वास ही नहीं हो रहा था कि आरव ही अवनी का अतीत है। वही, अवनी का पहला प्यार और शायद, आर्यम का पिता भी।

लेकिन इतनी बड़ी बात अवनी ने उससे अब तक छुपाई क्यों? तभी उसे आभास हुआ कि आरव वापस आने ही वाला है। घबराकर उसने फोन तुरंत अन्विका को पकड़ा दिया और अपना फोन वापस ले लिया।

थोड़ी ही देर में आरव अंदर आया और सहज स्वर में बोला— "रिपोर्ट्स नॉर्मल हैं, युग, घबराने जैसी कोई बात नहीं है। शाम तक डिस्चार्ज हो जाओगे। मैं चलता हूँ, अवनी भी आती ही होगी। तुम अपना ध्यान रखना, शाम को फिर आता हूँ।"

युग ने एक फीकी मुस्कान दी। आरव अन्विका को लेकर चला गया। थोड़ी देर बाद अवनी लौट आई। वह युग के पास बैठ गई और उसका हाथ थाम लिया - "युग, कल रात मैं बहुत घबरा गई थी। संजय को कॉल किया, पर उसका फोन आउट ऑफ रीच था। अच्छा हुआ आरव आ गया और वक्त पर तुम्हें हॉस्पिटल ले आया।"

युग ने अवनी को गहरी नज़रों से देखा और धीमे स्वर में कहा— "हम्म, अच्छा आदमी है वो..."

उसकी आँखें अवनी के चेहरे पर टिकी रह गईं और फिर अचानक पूछ बैठा— "अवनी, मेरी वजह से तुम्हें बहुत परेशानी होती है ना?"

अवनी की आँखें भर आईं। उसने तुरंत उसका हाथ दबाया और बोली— "कैसी बातें कर रहे हो, युग आप? अब ज़्यादा मत बोलिए, आराम कीजिए। शाम को घर जाना है।"

युग चुपचाप लेट गया। अवनी उसके पास रखे टिफ़िन और बाकी सामान समेटने लगी। लेकिन युग के मन में अब तूफ़ान उठ चुका था। उसकी आँखों में बेचैनी और सवाल थे।

शाम को आरव हॉस्पिटल पहुँचा। डॉक्टरों ने युग को डिस्चार्ज कर दिया था। तीनों मिलकर घर लौट आए। रात को डिनर के समय भी युग कुछ खोया-खोया-सा बैठा

रहा। आरव और अन्विका खाना खाकर अपने घर चले गए। डिनर के बाद युग अपने कमरे की खिड़की के पास खड़ा था। ठंडी हवा चल रही थी, पर उसके मन में एक अलग ही तूफ़ान उठ रहा था। वह गहरी सोच में डूबा बुदबुदाया— "जबसे अवनी की मुलाक़ात आरव से हुई है, तभी से उसके चेहरे पर यह बेचैनी है, शायद अपने अतीत और वर्तमान के बीच झूल रही है।"

तभी अवनी कमरे में आई और उसे खामोशी से खिड़की के पास खड़ा देख बोली— "क्या बात है, युग? कहाँ खोए हुए हो?"

युग ने उसकी ओर देखा और हल्की-सी मुस्कान दी— "नहीं, कुछ नहीं, बस ऐसे ही।"

अवनी ने पास आकर ज़िद भरे स्वर में कहा— "ना... कुछ तो सोच रहे हैं आप। लेकिन क्या सोच रहे हैं, ये मुझे नहीं पता... प्लीज़ बताओ ना।"

वह उसके और क़रीब आ गई। युग ने धीरे से उसकी दोनों हथेलियाँ थाम लीं। उसकी आँखें गीली हो गईं और स्वर भारी हो गया—"अवनी... मुझे लगता है... अब मैं ज़्यादा दिन... नहीं जी पाऊँगा।"

अवनी की आँखों में गुस्सा और दर्द दोनों झलक उठे। वह रुआंसी होकर बोली— "युग... आप फिर ये कैसी बेकार बातें करने लगे? डॉक्टर कह रहे हैं आप ठीक हो... फिर आप क्यों..."

लेकिन युग ने उसे बीच में ही रोक दिया— "अवनी... डॉक्टर कुछ भी कहें। लेकिन मुझे समझ आ चुका है... सच्चाई से ना तो मैं भाग सकता हूँ और न ही तुम।"

"युग..." अवनी की आँखें भर आईं।

पर युग ने उसका हाथ कसकर पकड़ा और कहा— "अवनी... कुछ मत कहो। बस मेरी बातें ध्यान से सुनो... प्लीज़। मैं जो कहने जा रहा हूँ, उसे समझने की कोशिश करना।"

उसका गला भर आया, आवाज़ काँप रही थी—"अवनी... मुझे हर वक़्त बस यही चिंता सताती है कि मेरे बाद तुम्हारा क्या होगा। अगर कभी माँ को भी कुछ हो गया... तो तुम और आर्यम अकेले पड़ जाओगे।"

अब अवनी की आँखों से आँसू छलकने लगे, पर युग ने बोलना जारी रखा— "अवनी... मैं चाहता हूँ कि मेरे बाद... तुम आरव का हाथ थाम लो। वो बहुत

अच्छा इंसान है। वो भी तो बहुत अकेला है... और फिर अन्विका भी तुम्हें अपनी माँ जैसा मानती है। तुम सब साथ में... एक परफ़ेक्ट फैमिली लगोगे।"

यह सुनते ही अवनी का चेहरा सफ़ेद पड़ गया। उसके सीने में जैसे किसी ने तीर चुभो दिया हो। उसकी आँखें गुस्से और दर्द से भर आईं। रोते हुए वह बोली— "युग... आपने सोचा भी कैसे... कि आपके बाद मैं किसी और का हाथ थाम सकती हूँ? मैंने आपसे कितनी बार कहा है—आपने मुझे और आर्यम को नया जीवन दिया है। आपके अलावा मैं किसी और के बारे में सोच भी नहीं सकती।"

"अवनी, लेकिन..." युग ने कहना चाहा।

पर अवनी ने उसे रोक दिया— "बस युग... आपने आज कह दिया। आज के बाद ये बात मत कहिएगा। मेरा जवाब हमेशा 'ना' ही रहेगा। आपने सोचा भी कैसे ये सब? युग, मुझे किसी की ज़रूरत नहीं है। मैं आपकी यादों के सहारे पूरा जीवन काट सकती हूँ। आप... आप क्यों नहीं समझते... कि मैं आपसे प्यार करती हूँ।"

इतना कहकर वह फूट-फूटकर रो पड़ी और युग के सीने से लिपट गई।

युग ने अवनी की काँपती देह को अपने बाँहों में भर लिया। पहली बार उसे अहसास हुआ कि सचमुच अवनी का दिल बदल चुका है। हाँ, शायद आरव को देखकर पुरानी यादें ताज़ा हो जाती हैं, लेकिन अब उसके दिल में वो भावनाएँ नहीं हैं। अब उसके दिल की हर धड़कन सिर्फ़ युग के लिए है।

युग की आँखें नम हो गईं। उसने अवनी के कान में फुसफुसाया—"कमाल की बात है ना अवनी, ज़िंदगी भर मैं तुम्हारे प्यार के लिए तरसता रहा, और तुम्हारा प्यार मिला भी तो कब? जब मेरा इस दुनिया से जाने का वक़्त आ गया।"

दोनों देर तक एक-दूसरे की बाँहों में लिपटे रोते रहे। मानो आँसुओं में ही उनका दर्द, उनका प्यार, सब बह रहा हो। फिर युग ने धीरे से अवनी को अपने सीने से अलग किया। उसके गाल सहलाए, उसकी आँखों में गहराई से देखा और उसके होंठों पर एक प्यार भरा चुम्बन दिया।

वह रात दोनों के प्यार की यादगार रात बन गई। उस रात युग को पहली बार अवनी के प्रेम में पूर्ण समर्पण का एहसास हुआ। उसे लगा जैसे आज उसने सचमुच अवनी को पूरी तरह पा लिया हो |

अगले दिन सुबह, आरव युग से मिलने आया। हॉल में बैठी सरला जी को उसने आदर से नमस्ते किया और फिर एक नज़र चुपके से किचन की ओर डाली, जहाँ

अवनी चुपचाप काम में लगी थी। उसकी नज़रें जैसे ही अवनी पर पड़ीं, उसका दिल ज़रा-सा ठहर गया, पर अवनी का ध्यान उस पर नहीं गया| बिना कुछ कहे, आरव सीधा युग के कमरे में चला गया।

"हाय, कैसे हो अब युग?" – आरव ने हल्की मुस्कान के साथ पूछा।

युग ने गहरी साँस लेकर कहा –"बस यार, बोर हो रहा हूँ। घर में बैठे-बैठे तो और ज़्यादा बीमार-सा लगता है।"

आरव हल्के-से हँस पड़ा –"तो चलो, थोड़ा बाहर घूमकर आते हैं।"

युग को जैसे यही सुनना था। उसने तुरंत हामी भर दी। दोनों नीचे आए। अवनी ने अचानक दोनों को एक साथ निकलते देखा तो हैरान रह गई।

"आरव, तुम कब आए? और युग को कहाँ ले जा रहे हो?" – अवनी ने उलझन से पूछा।

"थोड़ा घुमाकर ले आता हूँ बाहर से।" – आरव ने जल्दी से जवाब दिया।

अवनी की आवाज़ में हल्की-सी नाराज़गी थी –"अरे, ऐसे कैसे? युग की तबीयत ठीक नहीं है।"

आरव हँसते हुए बोला – "अरे तुम तो जबरन ही उसे बीमार बना दो, बिल्कुल ठीक है वो। थोड़ी बाहर की हवा खाएगा तो और बेहतर महसूस करेगा।"

अवनी ने ज़ोर देते हुए कहा –"आरव, मैं मना कर रही हूँ ना!"

आरव ने ज़िद में जवाब दिया – "तुम करती रहो मना… हम तो चले।"

अवनी ने नाराज़ होकर कहा – "आरव… तुम्हें पता है ना… तुम बहुत ज़िद्दी हो। और अन्विका बिलकुल तुम पर गई है।"

आरव हल्का-सा मुस्कुराया – "हाँ हूँ ज़िद्दी, और मैं ले जा रहा हूँ युग को बाहर। अब जाओ तुम, खाना बनाओ। हमें परेशान मत करो।"

युग चुपचाप खड़ा दोनों की नोकझोंक देख रहा था। उसे लगा मानो किसी पति-पत्नी के बीच सामान्य बहस चल रही हो। लेकिन इस बहस की परतों में भी उसके प्रति अवनी की चिंता साफ़ झलक रही थी।

अवनी लाचार होकर चुप रह गई।आरव युग को कार में बिठाकर ले गया। सरला जी सब देख रही थीं, उनके चेहरे पर हल्की-सी मुस्कान आ गई – "दोनों में कितनी

गहरी दोस्ती हो गई है ना… जाने दो बेटा, युग भी थोड़ा बाहर जाएगा तो उसे अच्छा लगेगा।"

अवनी बस चुप रह गई और फिर से किचन में चली गई।

कार ड्राइव करते हुए आरव बीच-बीच में युग से हल्की-फुल्की बातें करता रहा। कुछ देर बाद उसने पूछा – "तो युग… बाहर आकर कैसा लग रहा है?"

युग खिड़की से बहती हवा को महसूस करते हुए बोला – "हाँ… अब थोड़ा हल्का-सा लग रहा है। वैसे आरव, एक बात कहूँ?"

"हाँ, बोलो।" – आरव ने मुस्कुराकर कहा।

युग ने धीरे-से कहा –"कभी-कभी तुम्हें और अवनी को देखकर लगता है… तुम दोनों एक-दूसरे को बहुत अच्छे से जानते हो।"

आरव थोड़ा हड़बड़ा गया - "नहीं तो… ऐसा कुछ नहीं है। चलो, पिज़्ज़ा खाने चलोगे?"

युग मुस्कराया लेकिन सिर हिला दिया –"नहीं… आज मन नहीं है। कहीं ऐसी जगह चलें जहाँ थोड़ी शांति हो?"

आरव ने गहरी नज़र युग पर डाली और कार को भारत भवन की ओर मोड़ दिया। कुछ ही देर में दोनों वहाँ की ऊँची छत पर थे, जहाँ से बड़ी झील और आधा भोपाल साफ़ दिखाई देता था, हवा में एक सन्नाटा और दिलों में अनकही बातें तैर रही थीं।

आरव ने गंभीर स्वर में पूछा – "क्या बात है युग? तुम कुछ कहना चाहते हो क्या?"

युग ने उसकी आँखों में देखते हुए कहा – "हाँ… अभी थोड़ी देर पहले मैंने तुमसे एक सवाल किया था… कि तुम और अवनी एक-दूसरे को बहुत अच्छे से जानते हो।"

आरव ने हल्के से कहा –"हाँ तो?"

युग ने गहरी नज़रें डालते हुए कहा – "और तुमने कितनी आसानी से झूठ बोल दिया… कि ऐसा कुछ नहीं है।"

आरव सन्न रह गया - "युग… तुम कहना क्या चाहते हो?"

युग की आँखों में हल्की नमी थी - “आरव, मैंने तुम्हारे मोबाइल में तुम्हारे और अवनी के पुराने फोटो देखे हैं। आरव… अवनी वही है ना… जिसे तुम बहुत प्यार करते थे? और वैसे भी अवनी तुम्हे कितने हक से ‘तुम’ कहती हैं, जबकि मुझे सिर्फ ‘आप’” |

आरव जैसे पत्थर का हो गया। उसकी ज़ुबान पर कोई शब्द नहीं आया। युग ने उसकी चुप्पी को ही जवाब मान लिया - “आरव… मुझे तुम दोनों के अतीत से कोई शिकायत नहीं है। लेकिन आज मैं तुमसे कुछ माँगना चाहता हूँ। प्लीज… इंकार मत करना।”

युग की आवाज़ भर्रा गई - “आरव… मेरे जाने के बाद… तुम अवनी का हाथ फिर से थाम लेना, मैं जानता हूँ आर्यम तुम्हारा बेटा है, मेरे जाने के बाद उसे एक पिता मिल जाएगा… और अवनी और तुम्हें… तुम्हारा खोया हुआ प्यार, प्लीज आरव… ना मत कहना।”

आरव के होंठों पर हल्की हँसी आ गई, लेकिन आँखें भीग चुकी थीं -“युग… क्या फर्क पड़ता है कि आर्यम किसका बेटा है? उसे पिता का प्यार तो तुमसे ही मिला है ना, और रही बात अवनी से शादी करने की… तो क्या तुम्हें लगता है कि अगर मैं हाँ भी बोल दूँ, तो अवनी हाँ कहेगी? नहीं युग… मैं उसे तुमसे ज़्यादा अच्छे से जानता हूँ। उसने जीवनसाथी के रूप में तुम्हें चुना है, अब वो कभी पलटकर नहीं देखेगी।

मैं… बस उसका अतीत हूँ… उसका प्रेमी। लेकिन तुम उसका वर्तमान हो। अवनी ऐसी लड़की है युग… जो एक बार जिसका हाथ थाम ले, तो उसे कभी नहीं छोड़ती। उसके पहले पति ने उसे कभी प्यार नहीं दिया, मैं उसे प्यार तो दे पाया… लेकिन शादी का वचन नहीं दे पाया, और तुम… तुमने न केवल उसे सच्चा प्यार दिया… बल्कि समाज के बंधनों से ऊपर उठकर उसे अपनाया, उससे शादी की, उसे परिवार में जगह दी और उसके बच्चे को अपना लिया, युग… उसने तुम्हें दिल से स्वीकार कर लिया है, अब तुम इस दुनिया में रहो या न रहो… वो किसी और के पास कभी नहीं जाएगी। चाहे वो मैं ही क्यों ना हूँ।”

युग की आँखों से आँसू छलक पड़े। आरव ने उसकी पीठ थपथपाई और धीमे स्वर में कहा – “युग… ये सब मत सोचो। जितना जीवन बचा है… उसे अवनी और आर्यम के साथ प्यार से बिताओ, मैंने उसकी आँखों में तुम्हारे लिए वही प्यार देखा

है… जो कभी मेरे लिए हुआ करता था, मैं बस उसका अतीत हूँ… मुझे उसका वर्तमान बनाने की कोशिश मत करो।”

ये कहते हुए आरव ने युग का हाथ थाम लिया और उसे धीरे से कार में बैठाया। रास्ते भर दोनों चुप रहे… सिर्फ हवा की सरसराहट और दिलों की धड़कनों की आवाज़ सुनाई दे रही थी। फिर आरव ने युग को वापस घर पहुँचा दिया।

युग के जीवन के अंतिम दिन जैसे उत्सव बन गए थे। उसने अवनी और आर्यम के साथ हर पल को ऐसे जिया, मानो आने वाले कल का कोई भरोसा न हो। कभी सब साथ मिलकर बाहर घूमने जाते, कभी डिनर पर जाते, और रातें… अक्सर अवनी उसकी बाँहों में सिमटकर बिताती। युग की हर मुस्कान, हर छुअन, हर लम्हे में ये एहसास छिपा था—वो मरने से पहले, अवनी के साथ बिताए हर पल को दिल में समेट लेना चाहता हो। उसके चेहरे की चमक से लगता जैसे कुछ ही दिनों में वो पूरा जीवन जी लेना चाहता हो।

लेकिन… ये चमक ज़्यादा दिनों तक टिक न सकी। कुछ ही दिन बाद उसकी तबीयत फिर बिगड़ने लगी। डॉक्टरों ने इस बार साफ़ कह दिया था—“अब कुछ ज़्यादा उम्मीद नहीं है…”

अवनी का रो-रोकर बुरा हाल था। उसकी आँखें हमेशा लाल रहतीं और हाथ काँपते हुए युग का माथा सहलाते रहते। आरव ने माँ को फ़ोन कर सब कुछ बताया। निर्मला जी ये सुनते ही घबरा गईं। उन्होंने ज़िद पकड़ ली कि उन्हें तुरंत भोपाल जाना है। अभय ने अपनी पत्नी को लखनऊ में ही छोड़ा और माँ को लेकर भोपाल आ गया।

भोपाल पहुँचते ही निर्मला जी सबसे पहले हॉस्पिटल पहुँचीं। जैसे ही उन्होंने युग को बिस्तर पर लेटे देखा, उनकी रुलाई फूट पड़ी। अभय ने जब कमरे में अवनी को देखा तो सन्न रह गया। चेहरा बिलकुल नहीं बदला था, वही अवनी … मगर हालात सब बदल चुके थे। फिर भी उसने खुद को संभाला और चुपचाप कमरे के कोने में खड़ा रहा। युग की हालत देखकर निर्मला जी खुद को रोक न सकीं। उनके आँसुओं ने कमरे का सन्नाटा तोड़ दिया। अवनी और सरला जी, जो पहले ही ग़म में डूबी थीं, निर्मला जी को रोते देख फूट-फूटकर रो पड़ीं।

दुख में जब कोई अपना साथ होता है, तो उसके साथ दुःख के सारे बाँध टूट जाते हैं। बस ऐसा ही हुआ—सरला जी निर्मला जी से लिपटकर रोती रहीं। कमरे की हवा में सिर्फ़ सिसकियाँ और भारीपन था।

निर्मला जी ने युग के सिर पर हाथ फेरा। युग ने धीमे से आँखें खोलीं, उन्हें देखा और हल्की मुस्कान दी। उसकी आँखों ही उनका अभिवादन किया। शब्दों की ताक़त उससे छिन चुकी थी, लेकिन आँखों की भाषा सब कह गई। अभय ये सब देख न सका। वो चुपचाप कमरे से बाहर निकल गया।

बाहर संजय और आरव खड़े थे, अभय ने आरव के कंधे पर हाथ रखा। आरव की आँखें भीगी हुई थीं। अभय की आँखों में सवालों का तूफ़ान था। आरव ने लंबी साँस लेकर उसे सब कुछ बता दिया। अभय को यकीन ही नहीं हो रहा था कि अवनी, ऐसे मोड़ पर फिर से भैया से मिली होगी। लेकिन सच उसके सामने था… और सच से भागना असंभव। रात को सब घर लौट गए। सिर्फ़ आरव, संजय और अवनी ही हॉस्पिटल में ठहर गए। अवनी के मम्मी-पापा भी आ चुके थे, लेकिन उन्होंने भी बेटी की हालत देख उसे अकेला नहीं छोड़ा।

सुबह हुई। अवनी डॉक्टर से मिलने बाहर गई हुई थी। तभी युग ने कांपती आवाज़ में आरव को पुकारा— "आरव…"

आरव तुरंत पलटकर उसके पास गया। युग ने हाथ पकड़ते हुए कहा— "आरव प्लीज़… एक मरते हुए आदमी की आख़िरी इच्छा पूरी कर दो। मेरे जाने के बाद… अवनी का हाथ थाम लेना। मेरी अवनी … अकेली रह जाएगी इस दुनिया में। आरव, उसे तुमसे अच्छा जीवनसाथी और कोई नहीं मिलेगा। आरव, प्लीज़… मेरे लिए इतना कर देना।"

संजय चौक गया, आरव की आँखें भर आईं। उसने धीमे स्वर में कहा— "युग… ऐसी बातें मत करो। तुम ठीक हो जाओगे।"

लेकिन युग जैसे ज़िद पर अड़ा था। उसकी साँसें तेज़ हो रही थीं, लेकिन उसके शब्दों में विनती थी -आरव… वादा करो।"

आरव ने उसे जैसे-तैसे समझाने की कोशिश की। संजय एकटक ये सब देखता रहा| युग की आँखों में आँसू थे। आरव ने उसका माथा सहलाया, और किसी तरह उसे शांत किया। कुछ देर बाद अवनी कमरे में लौटी। युग ने उसे देखा, मुस्कुराया, और जैसे सारी ताक़त उसी मुस्कान में डाल दी। फिर उसने धीरे-धीरे आँखें बंद कर लीं। "युग…" अवनी घबराकर उसके पास दौड़ी। उसका हाथ पकड़कर बार-बार उसका नाम पुकारने लगी।

"युग… उठो… मेरी बात सुनो…" लेकिन युग अब इस दुनिया की आवाज़ों से परे जा चुका था।

संजय भागकर डॉक्टर को बुलाने गया। डॉक्टर आये , उन्होंने नब्ज़ टटोली, आँखें बंद कीं और भारी आवाज़ में बोले— "आई एम सॉरी, ये अब नहीं रहे।"

ये सुनते ही अवनी जैसे ज़मीन पर बैठ गई। उसकी चीख ने पूरे हॉस्पिटल को गूँज दिया। "यु.........ग…"

उसके आँसू थम ही नहीं रहे थे। संजय ने उसे पकड़कर सँभालने की कोशिश की, लेकिन वो बुरी तरह टूट गयी थी । युग को घर लाया गया। पूरा परिवार ग़म में डूब गया सिसकियाँ, रोने की आवाज़ें और दर्द का समंदर हर ओर फैला हुआ था। सरला जी, अवनी और छोटा-सा आर्यम… तीनों को सँभालना सबके लिए मुश्किल हो रहा था। अवनी तो जैसे बेजान-सी हो चुकी थी। आख़िरकार वो समय आया, जब युग की अर्थी उठी। छोटे-से आर्यम ने, काँपते हाथों से… अपने पापा को मुखाग्नि दी। पूरा आसमान भी जैसे रो पड़ा। युग चला गया। पीछे छोड़ गया—रोती हुई माँ, टूटी हुई पत्नी और पिता खो चुका बच्चा। अवनी के घर का माहौल ग़मगीन था। युग को खो देने के बाद हर कोई बिखर चुका था, जैसे किसी ने एक ही झटके में उनकी दुनिया छीन ली हों।

आरव का परिवार अक्सर अवनी के घर आता-जाता रहता। निर्मला जी जब भी अवनी को चुपचाप, उदास बैठी देखतीं, उनके दिल में अजीब-सी वेदना उठती। एक रात निर्मला जी चुपचाप ड्रॉइंग रूम के सोफे पर बैठी गहरी सोच में डूबी थीं। आँखों में नमी थी, दिल में बोझ। तभी अभय ने आकर देखा।

"क्या बात है माँ? क्या सोच रही हो?" उसने चिंता से पूछा।

निर्मला जी ने धीमे स्वर में कहा—"अभय, मैं सोच रही हूँ… अवनी कितनी अकेली पड़ गई है ना। वो बहुत अच्छी लड़की है। लेकिन इतना बड़ा पहाड़-सा जीवन… अब अकेले कैसे काटेगी वो? अभय… वैसे तो ये सही समय नहीं है ये सब बातें करने का… पर तुझसे तो कह ही सकती हूँ।"

अभय ने उन्हें गौर से देखा। माँ की बातों का मतलब वो समझ रहा था, मगर अनजान बनते हुए बोला—"कौन-सी बात, माँ?"

निर्मला जी ने गहरी साँस भरी— "यही कि आरव भी अकेला है… अन्विका को भी माँ की ज़रूरत है, और वो अवनी को माँ जैसा ही मानती है। उधर आर्यम को भी पिता चाहिए। अगर मैं अवनी का हाथ आरव के लिए माँग लूँ तो…?"

अभय हँस पड़ा। उसकी हँसी में व्यंग्य की चुभन थी— "सोच लेना माँ, क्योंकि अवनी तो अब सेकंड हैंड है ना।"

निर्मला जी के चेहरे पर दर्द उतर आया —"अभय… क्यों ऐसा बोल रहे हो? मानती हूँ, अपनी ज़िद में मैं एक बार गलती कर चुकी हूँ। पर कब तक… कब तक उसी गलती के लिए मुझे कोसते रहोगे?"

अभय ने फिर व्यंग्य किया— "अरे माँ… अवनी भैया से एक क़दम आगे ही है। वो सेकंड हैंड नहीं, अब वो थर्ड हैंड है। और हाँ, एक बात और, आप उन्हें पहले ही एक बार ठुकरा चुकी हैं। कहीं ऐसा ना हो कि इस बार वो आपके प्रस्ताव को ठुकरा दें।", इतना कहकर अभय हँसता हुआ खड़ा हो गया।

ये सुनते ही निर्मला जी के पैरों तले ज़मीन खिसक गई। उनकी आँखें फैल गईं। काँपती आवाज़ में उन्होंने पूछा—"क्या… क्या कह रहे हो अभय…? अवनी वही लड़की है… जिसे आरव प्यार करता था?"

अभय मुस्कराया, होंठों पर कड़वाहट भरी मुस्कान थी— "हाँ, वही है… मेरी अवनी मैडम।"

निर्मला जी की आँखों से रुलाई फूट पड़ी। आँसू थमने का नाम नहीं ले रहे थे - "हे भगवान… मैंने अपने अहंकार में आकर कितनी बड़ी गलती कर दी। अवनी जैसे हीरे को मैंने ठुकरा दिया… और वो… वो तो जानती थी कि मैं ही वो औरत हूँ जिसके कारण वो आरव से दूर हुई। लेकिन फिर भी… फिर भी उसने कभी मेरा अपमान नहीं किया, हमेशा मेरी इतनी इज़्ज़त की, मेरे सामने हँसती-मुस्कुराती रही…"

अभय ने ठंडी साँस ली और कटु स्वर में कहा—"हाँ माँ, ऐसी ही है वो। तभी तो उस समय मैंने आपसे कहा था, माँ, एक बार मिल लीजिए उनसे। पर आप अपनी ज़िद पर अड़ी रहीं। अब… अब क्या फ़ायदा माँ?"

इतना कहकर अभय वहाँ से चला गया। निर्मला जी पछतावे में डूबी फूट-फूटकर रोती रहीं। कुछ देर बाद दरवाज़ा खुला। आरव घर आया। उसने माँ को रोते देखा तो घबराकर उनके पास पहुँच गया - "माँ… क्या हुआ? आप क्यों रो रही हो?"

माँ की आँखें आँसुओं से भरी थीं। उन्होंने काँपते होंठों से पूछा— “आरव… क्या अवनी वही लड़की है… जिसे तुम प्यार करते थे?”

आरव ने हल्की-सी हँसी हँसी। हँसी में दर्द छुपा था -“अब इन सब बातों का क्या मतलब माँ?”

निर्मला जी की सिसकियाँ और तेज़ हो गईं। उन्होंने बेटे को गले लगा लिया - “मुझे माफ़ कर दो बेटा… मुझसे बहुत बड़ी गलती हो गई। इतनी अच्छी लड़की को ठुकरा दिया मैंने…”

आरव ने माँ को संभालते हुए उनके आँसू पोंछे। धीमे, भारी स्वर में कहा— “माँ, आपको पता है… आपने सिर्फ़ एक अच्छी बहू ही नहीं खोई… बल्कि अपना पोता भी खो दिया।”

निर्मला जी सन्न रह गईं। आँसुओं के बीच काँपती आवाज़ में बोलीं—“ये… ये क्या कह रहे हो आरव?”

आरव की आँखों में दर्द और गर्व मिला-जुला था। “हाँ माँ… आर्यम आपका पोता है। आपका खून… मेरा बेटा।”, इतना कहकर आरव वहाँ से चला गया।

निर्मला जी के पास अब सिर्फ़ पछतावा रह गया था। पछतावा और अनगिनत आँसू। निर्मलाजी ने मन में अब एक बात ठान ली— जो रिश्ता उनके अहम् के कारण टूटा था, अब वही रिश्ता वो फिर से जोड़कर रहेंगी। युग की रसोई वाले दिन का मौका पाकर निर्मलाजी धीरे से अवनी के मम्मी पापा के पास पहुँचीं। उनके चेहरे पर हिचक और आँखों में संकोच था, मगर दिल में एक ही इरादा।

निर्मलाजी ने धीमे स्वर में कहा—"भाईसाहब, मीरा बहनजी... मैं आप दोनों से अवनी के बारे में कुछ बातें करना चाहती हूँ।"

अवनी के पापा–मम्मी चौंक गए। पलभर को दोनों एक-दूसरे को देखने लगे। फिर खुद को सँभालते हुए पापा बोले—"जी कहिए।"

निर्मलाजी ने हिम्मत बटोरी—"वैसे तो ये समय इन बातों का ठीक नहीं है... लेकिन अवनी कह रही थी कि आप लोग कल वापस जा रहे हैं... इसलिए मैंने सोचा आज ही आप दोनों से उसकी ज़िन्दगी के बारे में बात कर लूँ।"

अवनी के पापा ने हैरानी से पूछा—"अवनी की ज़िन्दगी के बारे में? हम समझे नहीं..."

निर्मलाजी का गला सूख रहा था, पर उन्होंने बात पूरी की—"भाईसाहब, दरअसल बात ऐसी है कि मैं अपने बेटे आरव के लिए, आपसे, अवनी का हाथ माँगना चाहती हूँ। आप मेरी बातों को गलत मत समझिएगा... मगर अवनी मुझे शुरू से ही बहुत पसंद है। युग के जाने के बाद से वो बहुत अकेली हो गई है, और मेरा आरव भी अकेला है। दोनों पहले से एक-दूसरे को जानते हैं, और देखिए ना, अन्विका भी उसे कितना चाहती है। आर्यम को भी पिता का सहारा मिल जाएगा "

उनकी बात सुनकर अवनी के पापा–मम्मी फिर से एक-दूसरे को देखने लगे। इस बार अवनी की माँ ने धीरे से कहा— "वैसे बात तो आप बिल्कुल सही कह रही हैं लेकिन अवनी के जीवन को लेकर कोई भी निर्णय अब हमारा नहीं है। इस बारे में आपको सरला जी से ही बात करनी होगी। और वैसे भी, ये समय सही नहीं है, उनसे ये विषय छेड़ने का। उन्होंने अभी-अभी अपना जवान बेटा खोया है। आप चाहें तो सही समय देखकर उनसे बात कर लीजिएगा।"

निर्मलाजी ने गहरी साँस ली। उनकी आँखों में उम्मीद की चमक लौट आई। उन्हें ये तसल्ली थी कि अवनी के माता-पिता भी इस रिश्ते के विरोध में नहीं हैं। कुछ दिन ऐसे ही बीत गए। लेकिन निर्मलाजी के दिल में एक हलचल, एक उथल-पुथल लगातार चल रही थी। वो अब देर नहीं करना चाहती थीं। अवनी को जल्द से जल्द अपनी बहू के रूप में अपनाना चाहती थीं।

कुछ समय बाद अवनी के घर का माहौल कुछ हद तक सामान्य हो चुका था, जिंदगियों की गाड़ी धीरे धीरे पटरी पर लौट रही थी, लेकिन अवनी के दिल में अब भी युग की यादों की परछाइयाँ तैरती रहती| एक दिन निर्मलाजी अभय के साथ अवनी के घर पहुँचीं। सरला जी कमरे में बैठी थीं। उनके चेहरे पर अब भी बेटे को खोने का गहरा दुख साफ झलक रहा था। अक्सर वे युग को याद करके रो पड़ती थीं।

निर्मलाजी ने धीरे से उनके पास बैठते हुए कहा—"सरला बहन... मैं आपसे अवनी के बारे में कुछ कहना चाहती हूँ।"

सरला जी ने आँसुओं को पोंछते हुए कहा—"जी, कहिए।"

निर्मलाजी ने हिचकते हुए स्वर में कहा—"देखिए सरला बहन, मेरी बात का बुरा मत मानिएगा... पर... युग अब हमारे बीच नहीं रहा। इस बात का सबसे गहरा असर अवनी और आर्यम के जीवन पर पड़ रहा है। हमारा–तुम्हारा क्या है बहन?

हम तो एक दिन चले ही जाएँगे... लेकिन पीछे रह जाएँगी कुछ अधूरी ज़िन्दगियाँ। यही सोचकर मैं आपके पास एक निवेदन लेकर आई हूँ।"

सरला जी चौंक गईं—"निर्मलाजी... कैसा निवेदन?"

निर्मलाजी ने काँपते स्वर में कहा—"जी... वो... मैं सोच रही थी... क्यों न हम आरव और अवनी की शादी करवा दें? दोनों बच्चों को माँ–बाप का सहारा मिल जाएगा, और उनका अपना जीवन भी संवर जाएगा।"

सरला जी ने लंबे मौन के बाद शांत स्वर में उत्तर दिया—"सोच तो मैं भी यही रही थी... कि मेरे बाद अवनी और आर्यम का क्या होगा। जाने से पहले अगर इन्हें कोई सहारा मिल जाए... तो मेरा दिल हल्का हो जाएगा। आपने ये बात कहकर मेरे मन का बोझ सचमुच कम कर दिया। आपका प्रस्ताव मुझे स्वीकार है। लेकिन पहले मुझे अवनी से बात करनी होगी।"

निर्मलाजी की आँखें चमक उठीं। उन्होंने भावुक होकर कहा—"आपने मेरी बात सुनी, समझी... इसके लिए आपका बहुत-बहुत धन्यवाद। मुझे पूरा विश्वास है कि अवनी को आप ही समझा पाएँगी।", इतना कहकर दोनों थोड़ी देर चुप रहीं। कमरे में एक भारी खामोशी छा गई।

लेकिन उसी खामोशी के बाहर... दरवाज़े की ओट में खड़ी अवनी सब सुन चुकी थी। हर शब्द, हर वाक्य उसके दिल को चीर गया था। उसकी आँखों से आँसुओं की धार लगातार बह रही थी। काँपते कदमों से वो अपने कमरे में चली गई। और जैसे ही दरवाज़ा बंद किया... उसका कमरा सिसकियों से गूंज उठा।

रात का समय था।बाहर चारों तरफ़ सन्नाटा पसरा हुआ था। हवाओं की सरसराहट खिड़की से भीतर आकर कमरे की खामोशी को और गहरा बना रही थी। आर्यम कब का सो चुका था। मासूम चेहरे पर नींद की शांति थी। मगर उसी कमरे के कोने में, मद्धम रोशनी में सोफ़े पर बैठी अवनि जाने किन गहरे विचारों में डूबी थी।उसकी आँखें शून्य में टिकी थीं। दिल जैसे किसी बोझ से दबा हो।

मन में विचारों का सैलाब उमड़ रहा था—"ये कैसा इम्तिहान हैं वक़्त का? जब मैं आरव से शादी करना चाहती थी, उस वक्त सारे हालात हमारे ख़िलाफ़ थे। हर ओर रुकावटें थीं, हर रास्ता बंद था। तब हम एक-दूसरे को चाहते हुए भी, पास आकर भी दूर थे...और आज... आज जब सब चाहते हैं कि मैं और आरव एक हो जाएँ...

हर कोई कह रहा है कि यही सही है... फिर भी ... क्यूँ मेरे दिल में खुशी की जगह खालीपन है? क्यूँ ये दिल मानने को तैयार नहीं?"

उसकी आँखें भर आईं। उसने पलभर के लिए अपनी पलकों को बंद किया।पलकों के अंधेरे के पीछे एक चेहरा साफ़ उभर आया—युग का।युग का वही हँसता, मुस्कुराता, बेफ़िक्र सा चेहरा... जिसकी याद ने उसकी आत्मा को झकझोर दिया। अवनि का सीना फट पड़ा। उसकी रुलाई ज़ोर से फूट निकली। आँसुओं की धार उसके गालों को भिगोने लगी। उसने फूटते हुए शब्दों में कहा—"नहीं युग... अब मुझे कोई नहीं चाहिए...", कमरा उसकी सिसकियों से गूँज उठा।

मन भी कितना विचित्र होता है...जिस क्षण किसी को पाने की अभिलाषा सर्वाधिक प्रबल होती है, यदि उसी क्षण वह न मिले —तो फिर समय बीत जाने पर उसका सारा आकर्षण, सारा मोल ख़त्म हो जाता है। फिर भले ही पूरी सृष्टि मिलकर वही व्यक्ति, वही क्षण लौटाने की कोशिश करे, सब व्यर्थ प्रतीत होता है... बस एक रिक्तता रह जाती है —जिसे कोई भर नहीं सकता।

"आरव अच्छा है, सच्चा है... उसने मुझे हमेशा सम्मान दिया, सहारा दिया। मगर... क्या मेरा दिल अब भी उसके लिए वही जगह बना पाएगा? जब सब ठीक था, तब हमें एक दुसरे का साथ ना मिला... और अब... अब जब हर कोई हमें साथ देखना चाहता है... तो क्यूँ मेरा दिल मानने को तैयार नहीं, मैं अब क्या करूँ? क्या सचमुच मैं अपने अतीत से कभी आज़ाद नहीं हो पाऊँगी? क्या मैं अपने दिल को ये यकीन दिला पाऊँगी कि ज़िन्दगी फिर से शुरू हो सकती है? या फिर युग की यादें ही मेरी आख़िरी मंज़िल हैं...?", हर सवाल पर उसकी आत्मा टूटती जा रही थी।अवनि ने करवट बदली। मगर बेचैनी और बढ़ गई। आँसू थमने का नाम ही नहीं ले रहे थे। कभी छत को ताकती, कभी तकिये में मुँह छुपा लेती। पूरी रात उसने बस यही किया— करवटें बदलना, आँसुओं से भीगना और युग की यादों में डूबना। उस रात उसकी हर करवट में उसका दिल युग की परछाई ढूँढ रहा था।

अध्याय 14
अंतिम अध्याय

अगली सुबह का उजाला जैसे घर के भीतर आने से हिचक रहा था। चारों तरफ़ एक अजीब सी निस्तब्धता थी — जो न पूरी ख़ामोशी थी, न ही पूरा सुकून। सरलाजी अपने कमरे में खिड़की के पास बैठी थीं। बाहर धूप थी, मगर उनके मन पर अब भी युग की विदाई का अँधेरा पसरा हुआ था। उनके चेहरे की झुर्रियों में थकान और बेचैनी दोनों साफ झलक रही थीं। थोड़ी देर तक चुप बैठने के बाद उन्होंने धीमे स्वर में आवाज़ दी —"अवनी... बेटा, ज़रा मेरे पास आना।"

अवनी जानती थी कि मम्मी क्यों बुला रही हैं, दिल में हलचल थी, पर चेहरे पर संयम, उसने धीरे से कमरे का दरवाज़ा खोला —"जी मम्मी, आपने बुलाया?"

सरलाजी ने एक पल उसे देखा, जैसे आँखों से ही बहुत कुछ कहना चाहती हों - "आओ बेटा, यहाँ मेरे पास बैठो... मुझे तुमसे एक ज़रूरी बात करनी है।"

अवनी चुपचाप आगे बढ़ी, और सरलाजी के पास जाकर बैठ गई। सरलाजी ने उसका हाथ अपने काँपते हाथों में थामा। आँखें हल्की भीग गईं। आवाज़ भर्रा गई — "अवनी... मेरी बात ध्यान से सुनना। देखो बेटा, युग तो अब इस दुनिया में नहीं रहा... उसकी बस यादें रह गई हैं, हमारे दिलों में। लेकिन... ज़िन्दगी यहीं तो नहीं रुकती ना।"

अवनी की आँखें नम हो गईं। उसने नज़रे झुका लीं। उसके भीतर जैसे फिर वही तूफ़ान उमड़ा जिसे वो हफ़्तों से दबा रही थी। सरलाजी की आवाज़ कांपी — "अवनी... जीवन का कोई भरोसा नहीं होता। किसी भी रोज़ ऊपरवाला मुझे भी अपने पास बुला सकता है..."

अवनी ने तुरंत बीच में रोक दिया —"मम्मी, आप ऐसी बातें मत कीजिए... आपके बिना मैं और आर्यम बहुत अकेले हो जाएँगे।"

सरलाजी ने उसके बालों पर हाथ फेरा —"यही तो मैं भी सोच रही हूँ बेटा। अगर मैं इस दुनिया से चली जाऊँ तो कौन संभालेगा तुम दोनों को? तुम्हारे भी मम्मी-पापा

कब तक साथ रहेंगे? अवनी, मेरी इस चिंता का बस एक ही समाधान मुझे नज़र आता है..."

उन्होंने गहरी साँस ली, आँसू पोंछे, और कहा —"अवनी, मैं चाहती हूँ कि मेरी जीते-जी मैं तुम्हारी दूसरी शादी करवा दूँ।"

कमरे में जैसे एक पल के लिए समय ठहर गया। अवनी की आँखों से आँसू झरने लगे —"मम्मी, मैं युग को भी इस बात के लिए साफ़ मना कर चुकी हूँ और अब आपसे भी हाथ जोड़कर निवेदन करती हूँ —मैं किसी और से शादी नहीं कर सकती। कृपया मेरी मनःस्थिति को समझिए, मैं युग के अलावा अब अपने जीवन में किसी और को स्थान नहीं दे सकती।"

सरलाजी ने उसके हाथ को थामे रखा। उनकी आँखों में ममता और चिंता दोनों थीं - "अवनी, एक बार मेरा प्रस्ताव तो सुन लो, मैं किसी अजनबी की बात नहीं कर रही हूँ। मैं तो चाहती हूँ कि तुम आरव का हाथ थाम लो। तुम दोनों एक-दूसरे को जानते हो, निर्मलाजी भी तुम्हें बहुत चाहती हैं, अन्विका तो तुम्हें अपनी माँ जैसा मानती है। और फिर आर्यम का भी तो सोचो बेटा, उसे भी पिता की ज़रूरत है, वो अभी कितना छोटा है।"

अवनी की रुलाई फिर से फूट पड़ी —"मम्मी, मैं... मैं आर्यम को माँ और पिता दोनों का प्यार दूँगी। लेकिन दूसरी शादी के बारे में मैं सोच भी नहीं सकती।"

सरलाजी का स्वर भर्रा गया —"अवनी... एक बार मेरी बात को आराम से बैठकर सोचो। जल्दबाज़ी में कोई निर्णय मत लो।"

अवनी ने धीरे से सिर उठाया, आँखों में दृढ़ता थी —"मम्मी, मैं निर्णय ले चुकी हूँ ।"

इसके बाद कमरे में कुछ देर गहरी चुप्पी रही। बस दीवार घड़ी की टिक-टिक गूँज रही थी।

फिर अवनी ने अपने निर्णय के बारे में मम्मी को बताना शुरू किया —ऐसा निर्णय, जिसने सरलाजी के दिल को जैसे तोड़ दिया। उन्हें यकीन ही नहीं हुआ कि अवनी ने इतना बड़ा क़दम अकेले उठा लिया था। आँखों से आँसू बहे, पर लफ़्ज़ नहीं निकले। वो जानती थीं, अवनी के फैसले के आगे अब कुछ कहना व्यर्थ है। भले ही मन रो रहा था, पर उन्होंने भारी दिल से अवनी की बात को स्वीकार कर लिया। सरलाजी ने बस धीरे से उसका सिर अपने सीने से लगा लिया। दोनों रो रही थीं —

एक माँ जिसने बहुत कुछ खो दिया था, और एक पत्नी जिसने अब जीते जी जीना छोड़ दिया था।

कमरे की खामोशी में उस रात दो दिल टूटे —एक माँ का, और एक स्त्री का |

निर्मलाजी पिछले कई दिनों से सरलाजी और अवनी के उत्तर का इंतज़ार कर रही थीं। मन में हज़ारों विचार उमड़-घुमड़ रहे थे, परंतु खुद फोन करके पूछने की हिम्मत वो नहीं जुटा पा रही थीं। हर शाम उनकी निगाह दरवाज़े की ओर टिकी रहती — शायद कोई समाचार, कोई संदेश, या बस एक आहट|

कुछ दिनों बाद दरवाज़े की घंटी बजी। आऱव ने जाकर दरवाज़ा खोला। सामने एक नौजवान खड़ा था। उसने बिना कुछ बोले एक पार्सल आऱव के हाथ में पकड़ा दिया और चला गया। आऱव ने दरवाज़ा बंद किया। निर्मलाजी पास ही खड़ी थीं। उन्होंने पूछा, “कौन था, आऱव?”

आऱव ने कहा, “कुछ नहीं माँ, कोई पार्सल लाया है… आपने कुछ मंगवाया था क्या?”

निर्मलाजी ने आश्चर्य से सिर हिलाया, “नहीं तो! ज़रा खोलकर देखो।”

आऱव ने पैकेट खोला — अंदर कुछ काग़ज़ और एक लेटर था। जैसे ही उसने काग़ज़ों पर नज़र डाली, वो चौंक गया — वो अवनी के घर के काग़ज़ थे।

काँपते हाथों से उसने लेटर उठाया। लेटर पर साफ़-साफ़ लिखा था —“आऱव”, वो चौक गया – “लेटर? वो भी मेरे लिए ?”

उसका गला सूख गया। उसने धीरे से पत्र खोला और पढ़ना शुरू किया— *“आऱव, मुझे पता है, ये लेटर देखकर तुम्हें अजीब लगेगा… लेकिन कुछ बातें ऐसी होती हैं जो सामने कहने की हिम्मत नहीं होती, इसलिए मुझे ये सब लिखकर कहना पड़ रहा है।*

आऱव, आंटी घर आई थीं — हमारे रिश्ते की बात लेकर। उन्होंने मम्मी से इस विषय में चर्चा की। मम्मी भी चाहती हैं कि मैं तुमसे शादी कर लूँ। यहाँ किसी की भी मंशा गलत नहीं है… सब अपनी-अपनी जगह सही हैं।

आंटी शायद अपनी पुरानी गलती सुधारना चाहती होंगी, या फिर उन्हें अन्विका और तुम्हारी चिंता होगी… और मम्मी शायद ये सोच रही हों कि उनके जाने के बाद आर्यम और मुझे कोई सहारा मिले।

पर आऱव... मैं अपने मन का क्या करूँ? मेरा मन इस बात के लिए मान ही नहीं रहा।

मैं जानती हूँ — तुम आज भी मुझसे उतना ही प्यार करते हो जितना पहले करते थे। तुम्हारे प्यार पर मुझे कभी शक नहीं रहा। शायद अगर मैं चाहूँ तो आज भी तुम्हारे साथ वो 'परफेक्ट फैमिली' बना सकती हूँ... पर मैं अपने दिल से झूठ नहीं बोल सकती। उस वक्त जब मुझे तुम्हारी सबसे ज़्यादा ज़रूरत थी, तुम मेरे पास नहीं थे।

और जब तुम लौटे... तब तक मैं बहुत दूर निकल चुकी थी। आरव अकेलापन, खालीपन सिर्फ तुम्हारे हिस्से नहीं आया, कुछ मेरे हिस्से में भी था और उस एकांत में, उस खालीपन में... युग मेरे जीवन में आया।

शायद मैं उससे कभी प्रेम नहीं कर पाई — क्योंकि मेरे भीतर तुम्हारी यादें तब भी जीवित थीं, जिन्हें मैंने कभी मुरझाने नहीं दिया, बल्कि उन्हें अपने आँसुओं से सींचती रही। जब भी आर्यम को देखती हूँ, उसमें तुम्हारी झलक साफ नज़र आती है। मेरे लिए भी किसी और के साथ जीवन बिताना आसान नहीं था, आऱव...

पर जब किसी चीज़ या इंसान की सबसे ज़्यादा ज़रूरत होती है और वो उस समय न मिले —तो बाद में उसकी कीमत नहीं रह जाती। अब मेरी मनःस्थिति कुछ और है। युग के अंतिम समय में मैंने उसे हर वो खुशी दी, जिसका वो हकदार था। मैंने अपनी शादी को पूरी निष्ठा से निभाया।

अब उसके जाने के बाद...मैं उसकी स्मृतियों से बेवफ़ाई नहीं कर सकती। मुझे विश्वास है, तुम मेरे इस निर्णय को समझोगे। इस बार मैं बिना बताये नहीं बल्कि तुम्हे बताकर जा रही हूँ, मैं मम्मी और आर्यम के साथ वापस असम जा रही हूँ। हमारे नंबर वही रहेंगे। अन्विका को जब भी मेरी ज़रूरत होगी —मैं हमेशा उसे उसके पास, उसके साथ मिलूंगी, पर बाकी समय... तुम्हें और उसे मज़बूत बनना होगा, आंटी से कहना, मुझे उनसे कोई शिकायत नहीं है।

आऱव...

तुम्हारे साथ बिताए वो ढाई साल —मेरे जीवन के सबसे खूबसूरत, सबसे यादगार साल थे। उन ढाई सालों में मैंने अपनी पूरी ज़िंदगी जी ली, उनकी यादें मेरे अंदर हमेशा वैसी ही ताज़ा रहेंगी — जैसे कल ही की बात हो। तुमने मुझे इतना प्यार दिया कि अब मुझे अपनी ज़िंदगी से कोई शिकायत नहीं।

आऱव, अपना, आंटी का और अन्विका का ख़याल रखना। मैं घर के ये काग़ज़ तुम्हें देकर जा रही हूँ। वो किराए का घर छोड़ दो, और इस घर में शिफ़्ट हो जाओ।अब ये तुम्हारा घर है…

और मैं… हमेशा तुम्हारी, जो कभी हो ना सकी

अवनी।"

लेटर पढ़ते-पढ़ते आऱव की आँखों से आँसू टपकने लगे। निर्मलाजी ने पूछा - "क्या लिखा है उसमें, आऱव? किसका लेटर हैं?" पर उसके होंठों पर कोई शब्द नहीं आया। उसने चुपचाप वो लेटर माँ के हाथ में थमा दिया।

निर्मलाजी ने जैसे ही पढ़ा — उनकी रुलाई फूट पड़ी - "आऱव… अवनी तो हमेशा के लिए चली गई??"

आऱव कुछ पल तक शून्य में देखता रहा, फिर हल्की मुस्कान के साथ बोला - "मुझे पहले से पता था, माँ… उसका जवाब यही होगा। क्या करूँ… ऐसी ही तो है… **मेरी अवनी**।"

ये कहकर वो चुपचाप अपने कमरे के अंदर चला गया। निर्मलाजी वहीं खड़ी रहीं — आँसू बहते रहे, दिल अतीत के एक गलत फैसले के पछतावे से भीगता रहा। उनकी आँखों में अब केवल एक ही प्रश्न था — "क्या उन्होंने सच में एक माँ का फ़र्ज़ निभाया?" और दूसरी ओर,आऱव के हिस्से फिर एक बार आया —नितांत एकांकीपन, जहाँ अब न कोई आवाज़ थी, न कोई उम्मीद… सिर्फ़ अवनी की यादें थीं — जो अब भी उसी ताज़गी से उसके दिल में सांस ले रही थीं।

अब अंत में रह जाता हैं बस एक सवाल, क्या सच में यहीं अंत होना चाहिए था इस कहानी का? क्या एक कहानी 200 – 250 पन्नों में सिमटकर किसी की जिंदगी की संपूर्ण यात्रा बयाँ कर सकती हैं? क्या सच में आरव के साथ न्याय हुआ? उसके निश्छल, निष्कपट, निःस्वार्थ प्रेम का क्या यहीं परिणाम मिलना चाहिए था उसे? या उसे उसके हिस्से का वो प्रेम मिलना चहिये था, जिसका वो भी हक़दार था | उसके जीवन का सफ़र तो कभी शुरू ही नहीं हो पाया, वो तो आज भी वही हैं, उसी मील के पत्थर पर जहां लिखा हैं – **"जीरो किलोमीटर".**

यदि आपको मेरी ये कहानी पसंद आई हो तो अपनी प्रतिक्रिया जरुर दीजियेगा, आप सभी पाठकों के उत्तर की मुझे प्रतीक्षा रहेगी, साथ में मैं यह भी जानना चाहूंगी कि क्या आरव की प्रेम कहानी का इसी तरह अंत होना चाहिए था, या कहानी सिर्फ 200 – 250 पन्नों से आगे और भी हो, जहां आरव के जीवन का सफ़र फिर आगे बढे, एक नयी शुरुवात के साथ

धन्यवाद